जहा जगतके कल्याणकी
साधना हुओ
अुस पुण्यभूमिको

निवेदन

सत्याग्रहकी दूसरी लडाअीके कैदीकी हैसियतसे मुझे सन् १९३२ के अप्रैल महीनेमें साबरमती सेंट्रल जेलसे विसापुर जेलमें बदल दिया गया। वहा परिचित और अपरिचित बहुतसे मित्र थे। धर्मशाला जैसी बैरकोमे ८० से १०० आदमी रहते थे। रातको व्यालूके बाद बातचीत होती थी। कुछ मित्रोने दक्षिण अफ्रीका की, वहाके सत्याग्रह-आन्दोलनकी और फिनिक्स आश्रमके जीवनकी बाते पूछी। मैंने सारी बाते दिलचस्पीके साथ सबको सुनाअी। तीन-तीन चार-चार दिन तक रातको देर तक जागकर सब लोग रसपूर्वक मेरी बाते सुनते रहते। अिस कथाके बारेमे दूसरी बैरकोवाले भाअियोको मालूम हुआ। मुझे वहाका बुलावा भी मिला। अिस तरह अेक-अेक करके कोअी चार बैरकोके भाअियोने मेरी कथा सुनी। स्वर्गीय श्री फूलचन्दभाअी बापूजी शाहको यह कथा बहुत पसन्द आअी। अुन्होने मुझसे आग्रह किया कि मैने जो बातें मित्रोसे कही, अुन्हे मै अपनी भाषामें लिख डालू। लेकिन मेरे पास समय कहा था? सुबहके छह बजेसे शामके छह बजे तक जेलके रसोअीघरकी देखभाल मेरे जिम्मे थी। और बैरक बन्द हो जानेके बाद तो थका-मादा होनेके कारण आराम लेनेकी अिच्छा होती थी। परन्तु स्व० फूलचन्दभाअीने मुझे छोडा नही, लिखनेके साधन लाकर मुझे दे दिये। दक्षिण अफ्रीकाकी बातें और फिनिक्सके पूज्य महात्माजीके जीवनकी बाते लिखना आसान नही था। वे सत्यसे जरा भी दूर नही होनी चाहिये। अिसके सिवा, महात्माजीके कितने ही जीवन-प्रसगोका वर्णन भी अुसमे आता। अुनका वर्णन करनेमें मुझे बहुत सावधान रहनेकी जरूरत थी। 'दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास' के दोनो भाग, 'आत्मकथा' के दोनो भाग आदि पुस्तकें मैने जुटा ली। अुन्हें मै पढ गया और बादमे लिखने बैठा। अिस तरह अनियमित समय निकालकर ये प्रकरण मैने लिख डाले। सन् १९३३ के नवम्बरमें जेलसे निकलनेके बाद पूज्य गाधीजीसे मिलने मै वर्धा गया, तब लिखे हुअे प्रकरणोकी बात मैने अुनसे कही। अुन्होने अिस रचनाको देखनेकी अिच्छा प्रगट की और सूचना दी कि अुनके देखे बिना मै अुसे न छपवाअू। रचनाकी

मूल प्रति मैंने अुन्हे सौप दी। लगभग दो वर्ष तक वह रचना अुनके पास पडी रही। पिछले साल ८ जुलाअीको अुन्होने मुझे अचानक सेगाव वुलवाया। चार-पाच दिनमे जैसे-तैसे समय निकालकर अुन प्रकरणोमे से जो प्रकरण अुनके निजी जीवनके सम्बन्धमे, कुछ प्रवृत्तियोके सम्वन्वमे और साथियोके जीवनके विषयमे थे अुन्हे मैं अुनके सामने पढ गया। कुछ प्रसगोके वारेमे अुनसे स्पष्टीकरण कर लिया। लिखे हुअे प्रकरणोमे से दो प्रकरण निकाल देनेकी और दूसरोमे कुछ कमी-बेशी करनेकी मुझे सूचना मिली। स्वर्गीय अिमामसाहब बावजीरकी वात अुन्होने जैसी मुझे बताअी अुस परसे मैने वह प्रकरण लिखा। दक्षिण अफ्रीकाके साथियोमे से मिस श्लेशिन सम्बन्धी अेक मनोरजक प्रकरण पूज्य बापूजीने निकलवा दिया और सुझाया कि अुस प्रसगका वर्णन करनेके लिअे मुझे अुन वहनसे ही प्रार्थना करनी चाहिये। अैसा न हो तो शायद मै अुन बहनके साथ न्याय नही कर सकूगा। मैने अुन वहनसे वह दिलचस्प प्रसग लिख भेजनेकी विनती की। मगर मेरी विनती अुन्होने स्वीकार न की। अिन प्रकरणोमे जो हकीकतें लिखी गअी है अुनकी सचाअीके वारेमे और भी निश्चित होनेके लिअे श्री छगनलाल गाधीके पास ये प्रकरण भेजनेकी सूचना मुझे वापूजीने की। अुस सूचना पर मैंने तुरन्त अमल किया। श्री छगनलाल गाधीने भी अिनकी जाच-पडताल कर ली।

अिस तरह अिन प्रकरणोमे पूज्य गाधीजीके जीवन-प्रसग और अुनके साथ गुथी हुअी हकीकते मेरी यादके आधार पर लिखी गयी है। अुनकी सचाअीके बारेमे यथाशक्ति सावधानी रखी गअी है। जेलमें ये प्रकरण लिख लेनेके बाद मेरे स्नेही श्री नरहरिभाअी परीख और श्री गोकुलभाअी भट्टने मेरी रचनामे रही भाषाकी अशुद्धि और अव्यवस्थित हिज्जोको सुधारा। पूज्य गाधीजीका कुछ प्रकाशित और अप्रकाशित पत्र-व्यवहार मेरे पास था। अुसका समावेश भी अुससे सम्बन्ध रखनेवाले प्रसगोमे मैंने कर दिया है।

अिन प्रकरणोके अेकत्र समूहको क्या नाम दिया जाय, यह प्रश्न भी मेरे सामने था। अिसमे श्री नरहरिभाअी, श्री किशोरलालभाअी और श्री काकासाहवने मेरी मदद की। ‘गाधीजीका तपोवन’, ‘सत्याग्रहका पौधा’, ‘स्वराज्यकी साधना’, ‘स्वराज्यकी पूर्व-तैयारी’, ‘दक्षिण अफ्रीकामे २१ वर्ष’ और ‘गाधीजीकी साधना’ आदि अनेक नाम सुझाये गये। अिनमे ‘गाधीजीकी साधना’ मुझे सब तरहसे अुपयुक्त नाम लगा। अिस प्रकार अिस पुस्तकके

तैयार होनेमे अनेक स्नेहियोका प्रयत्न रहा है। अुसके लिअे मै अिस स्थान पर अुनके प्रति आभार प्रदर्शित न करू तो मेरा अविवेक होगा। और अिस पुस्तककी प्रस्तावना लिखना स्वीकार करके श्री काकासाहबने मुझे अत्यन्त अृणी बनाया है।

गाधीजीके वसीयतनामेवाले प्रकरणमें मूल पत्र पहले हाथमें न आनेके कारण अुस पत्रका सार लिखनेका मैने अुल्लेख किया है। परन्तु बादमें मूल पत्र मिल जानेसे वह पूरा दे दिया गया है। आशा है मित्रगण अुतनी भूल सुधार लेंगे।

मै जानता हू कि अिस पुस्तकमे बहुतसे दोष है। मै लेखक या साहित्यका शौकीन नही, दिलमे जो अुठी अुसी भाषामें मैंने अिसे लिख डाला है। अिस-लिअे अिसमे जो भूले रह गअी है, अुनके लिअे मुझे क्षमा करनेकी विद्वान पाठकोसे मेरी प्रार्थना है। अिस पुस्तककी बडी कमी तो यह है कि गाधीजीके जीवनके लिखने जैसे कअी प्रसग अभी अधूरे रह गये है। यह पुस्तक हिन्दुस्तानकी जनताको रुचिकर लगी तो अिसके दूसरे सस्करणमें वृद्धि करनेकी मै कोशिश करूगा। अभी तो अिसीसे सन्तोष कर लेनेकी पाठकोसे मेरी विनती है।

सेवा-मन्दिर, नडियाद, **रावजीभाअी मणिभाअी पटेल**

आषाढ सुदी ७, १९९४

दूसरी आवृत्तिके निवेदनसे

अिस नये सस्करणमे पूज्य बाके अवसानके बाद अेक प्रश्न अुपस्थित हो गया था, जिसके सम्बन्धमे सफाअी देना जरूरी है।

दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहकी आखिरी लडाअीमे पू० बा शरीक हो, अिसके लिअे बापूजीने कोशिश की थी। पुस्तकके 'शुभ आरभ' नामक प्रकरणके बारेमे थोडी सफाअी देनेकी जरूरत है। 'दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास' मे अिस सम्बन्धमे बापूजीने कुछ और ही लिखा है। अुन्होने लिखा है कि "सत्याग्रहकी लडाअीमे स्त्रियोको शामिल करनेका विचार होने पर श्री छगनलाल गाधीकी पत्नी काशीबहन और श्री मगनलाल गाधीकी पत्नी सतोकबहनसे मैने पहले बात की और अुन्हे तैयार किया। बादमे बा अुममे शामिल हुअी।" परन्तु ये प्रकरण प्रकाशित करनेसे पहले मै अिन्हे बापूजीके सामने पढ गया था। अुस समय मैने बापूजीकी स्मृतिकी भूलके बारेमे अुनका ध्यान खीचा था और अूपरके प्रकरणके बारेमे मैने अुन्हे विश्वास दिलाया था। बापूजी भी असमजसमे पडे। अुन्होने पू० बाकी गवाही परसे अिस बारेमे फैसला करनेका निश्चय किया। अुन्होने बाको बुलाया और हम दोनोकी बात अुनके सामने रख दी। बाने बताया "रावजी-भाअीकी सारी बात सच है। यह तो मुझे अितना स्पष्ट याद है जैसे कल सवेरे ही हुआ हो।" अिस परसे बापूजीने कहा "तब तो मेरी याददाश्तकी भूल हुअी है। अुस पुस्तक (द० अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास) के नये सस्करणमे वह भूल सुधारनी होगी।"

साबरमती-मन्दिर, अहमदाबाद, **रावजीभाअी मणिभाअी पटेल**
मार्गशीर्ष बदी १२, २०००

पार्श्वभूमि

दक्षिण अफ्रीकाकी विजयके अन्तमें वहाका काम समेट कर गाधीजी विलायत चले गये थे और फिनिक्स आश्रमके तमाम भाअियोको अुन्होने हिन्दुस्तान भेज दिया था। गाधीजीके आने तक अिन सबकी देखभालका काम मि० अेन्ड्रूजने अपने पर ले लिया था। फिनिक्स-दलके लोग पहले कागडी गुरुकुलमें थोडे दिन रहे और बादमें कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुरके शान्तिनिकेतनमें आये। अिसी अर्से (सन् १९१४) में मैं भी शान्तिनिकेतन जा पहुचा। अिस-लिअे स्वाभाविक रूपमें ही मैं फिनिक्स-दलके लोगोमें मिल गया। वहा सुबह-शाम मै प्रार्थना कराता, अपनी हिमालय-यात्राकी बातें सुनाता और शामके समय अिन लोगोके साथ ही खाता और सुबह-शाम जमीन खोदनेसे या अैसे ही और कामोमें भाग लेता था। अैसे वातावरणमें फिनिक्सकी मडलीके मुखिया श्री मगनलालभाअी गाधीसे मेरा परिचय हुआ। दक्षिण अफ्रीकाकी लडाअी अुनके लिअे ताजी ही थी। अिन आश्रमवासियोने असाधारण विजय प्राप्त करके देशके लिअे अेक नया रास्ता खोला था। सिर्फ राज-नीतिक क्षेत्रमें ही नहीं, परन्तु जीवनके सारे अग-प्रत्यगोमें विशेष पद्धतिसे रहनेके प्रयोग वे कर रहे थे। अैसे वायुमडलमे रोज शामको और कभी कभी रातके बारह बजे तक मैं श्री मगनलालभाअीके मुहसे बापूजीकी बातें सुना करता था। कोअी कट्टर सनातनी जिस श्रद्धासे रामायण और महा-भारत सुनता है, अुसी श्रद्धासे मैं यह कथा सुनता था। मगनलालभाअी अपने स्वभावके अनुसार अपनी बातें अेक तरहसे कहते थे। मगनभाअी पटेल दूसरी तरहसे कहते थे। देवदास, रामदास और प्रभुदास तीसरा ही सुर छेडते थे। सब जेलमे जानेके लिअे ट्रान्सवालमें कैसे घुसे? श्री मणिलाल मिस्टर लैल कैसे हो गये? सन्तोकबहनने क्या क्या किया? छोटेसे रामदासने जेलमें अुपवास करके गोरोको कैसे चकित किया? स्वार्थत्यागपूर्वक जेलसे बाहर रहे हुअे श्री मगनलालभाअी छोटेसे देवदासकी मदद लेकर हजारो आदमियोको कैसे सभालते थे? सुरेन्द्र मेढ और प्रागजीभाअी जेलमे कैसे तिकडम करते थे?

मि० पोलाक और मिस श्लेशिन, मि० वेस्ट और मिस वेस्ट, मि० कैलनबैक और मि० रीच कैसे लोग है? जेलमे और अदालतमे दुभापियेका काम करते हुअे अदालतकी तरफसे पतिका अपनी पत्नीसे यह सवाल पूछना कि तुम्हारी शादी हुअी या नही कितनी मजेदार वात थी? वापूजी और जनरल स्मट्स अेक-दूसरेको छकानेकी कैसी कोशिश करते थे? सर वेजामिन रॉवर्ट्सनने दक्षिण अफ्रीकामे आकर क्या किया? गोखलेजीका वहा क्या असर हुआ? ओलिविया श्राअिनर नामकी वहन कौन और कैसी थी?—अैसे अैसे अनेक किस्मे और रेखाचित्र सुननेको मिलते थे। मेरे लिअे फुरसतकी अिन कहानियोमे से दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास जीवित हो गया।

गाधीजीकी 'आत्मकथा' से अुनका लिखा हुआ 'दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास' अधिक विस्तृत और अविक रोमाचकारी है। परन्तु गाधीजीने अपने अितिहासमे जो नही लिखा अैसा वहुत-कुछ अिस अितिहाससे पहले ही मुझे शान्तिनिकेतनकी अिस निशीथ-कथासे मिल गया था। गाधीजीकी 'आत्मकथा' और 'सत्याग्रहका अितिहास' देखनेके वाद मेरे मनमे कअी वार यह विचार अुठता था कि अुनकी पूर्तिके तौर पर जो छोटी-छोटी वाते मैंने शान्तिनिकेतनमे सुनी थी अुन्हे कोअी अिकट्ठी करके लिख दे तो देशको वडा लाभ हो। मगर मै किससे कहू? मगनलालभाअी तो अैसा कुछ लिखनेवाले थे नही। मणिलाल दक्षिण अफ्रीका गये हुअे थे। रामदास निवृत्तिमार्गी, देवदास आगे और आगे दौडनेवाले और प्रागजीभाअी हाथ आनेवाले जीव नही थे। अिसलिअे मैंने प्रभुदासको ही ललचाना पसन्द किया। प्रभुदासने वचपनकी वाते याद कर-करके कुछ प्रकरण लिख डाले और मैंने अुनका कामचलाअू नाम दिया 'तच्च सस्मृत्य सस्मृत्य'। मगनलालभाअी अुन्हे अूपर-अूपरसे देख गये। देव-दासने अुन्हे जाच लिया। आजकल ये प्रकरण प्रभुदासकी तरफसे 'जीवनका प्रभात' शीर्पकसे 'कुमार'* मे छप रहे है। वचपनके स्मरणोकी ये टिप्पणिया गाधीजीकी अुस समयकी साधनाका तादृश चित्र अुपस्थित करती है और खूब गहरी है। परन्तु मुझे कल्पना नही थी कि कोअी मगनलालभाअीकी तरह ही लिखनेवाला तैयार हो जायगा। अिसलिअे नवजीवनकी तरफसे जब अिस प्रस्तुत पुस्तकके प्रूफ देखनेको मिले तव मुझे वहुत आनन्द हुआ। तुरन्त मनमे यह समा गया कि अिसीमे गाधीजीकी साधना हमे मिलेगी।

---

* गुजराती मासिक।

सारी पुस्तक पढनेके बाद अिसमें अेक ही कमी मालूम होती है और वह है गाधीजीके पत्रोकी। अिसमें रावजीभाअीने कही-कही थोडे पत्र दिये है और वे कीमती है, परन्तु हमें यह न भूलना चाहिये कि गाधीजीका मानस अुनकी सार्वजनिक रचनाओमें जितना व्यक्त हुआ है, अुससे भी अधिक अुनके पारदर्शक, प्रेमपूर्ण, अतर्मुखी और सच्चे हृदयसे लिखे गये पत्रोमें प्रगट हुआ है। गाधीजीके सारे पत्र अिकट्ठे करके छापे जाय, तो वह सग्रह शायद अुनकी सार्वजनिक रचनाओ और भाषणोसे भी बढ जायगा। और अुसमें गाधीजीका मानस निर्मल दर्पणकी तरह पूर्णरूपसे प्रतिबिम्बित हुआ हमें मिल जायगा।

गाधीजीकी साधनाका माहात्म्य ही अितना बडा है कि अुसकी नोध रखनेवाले लोग आश्चर्यजनक ढगसे निकल आते है। शायद युगपुरुषोका यह कुदरती अधिकार ही है।

अनेक प्रयोग करके और अनेक प्रकारसे चिंतन करके दृढ बनाये हुअे विचारोका शब्द-सगठन अवश्य कीमती वस्तु है, परन्तु ये ही विचार और आदर्श सकुचित प्रयोगके कच्चे स्वरूपमें जब हमारी नजरके सामने खडे होते है, तब अुनका महत्त्व और अुनका आकर्षण कुछ और ही होता है। दक्षिण अफ्रीकाकी साधना भारतवर्षकी विशाल तपस्याकी प्रयोग-भूमि कहलायेगी। वहाके ग्रीन रूम (नेपथ्य) मे जो तैयारी हुअी, अुसीको व्यापक रूपमें गाधीजी पिछले पच्चीस वर्षसे राष्ट्रके सामने प्रस्तुत कर रहे है।

गाधीजीकी ‘आत्मकथा’ या अुनके सत्यके प्रयोगोका वर्णन विश्व-साहित्यमे अपना स्थान ले चुका है। अुनकी शैली पर देश-देशातरके लोग मुग्ध है। अनेक साधकोने अुससे प्रेरणा प्राप्त की है। फिर भी कहना पडता है कि कअी तरहसे अिस ग्रथसे हमे पूरी तृप्ति नही होती। सत्यनिष्ठ गाधीजीने जितना लिखा है, अुतना तो सब यथार्थ ही है। परन्तु अुनसे हम जो जानना चाहते है, वह सब अिसमें आ गया है अैसा नही कह सकते। जीवनका आदर्श निश्चित करनेसे पहले मनमे जो ‘भवति न भवति’ चलता है, जो मनोमथन सारे जीवनको प्रक्षुब्ध कर डालता है, अुसका वर्णन अिस ‘आत्मकथा’ मे कही नही मिलता। अमुक घटना हो गअी अिसलिअे मैंने यह निश्चय किया — अिस तरह गाधीजी लिख डालते है। परन्तु अुस निश्चय पर पहुचनेसे पहले कितनी बौद्धिक कठिनाअियोमें से अुन्हे गुजरना पडा, कितने सकल्प-विकल्प करने पडे, अिसका

अुल्लेख कही नही मिलता। और निर्णय हो जानेके बाद भी शरीरको, अुसकी आदतोको, चित्तवृत्तिको और वासनाओको अुस दिशामे मोडनेमे कितनी मेहनत करनी पडी, कितनी घाटिया पार करनी पडी और अुसके लिअे आत्मशक्ति पैदा करनेमे हार-जीतके कितने अुतार-चढावोमे से गुजरना पडा, यह सब अुन्होने कही नही लिखा है। मानो निश्चय और सिद्धिके बीच कोअी अन्तर ही न था। और अैसा ही हुआ हो तो भी अितनी प्रबल सकल्प-शक्ति पैदा करनेके लिअे अुन्होने क्या क्या किया, यह तो हमे मिलना ही चाहिये।

पहलेसे ही गाधीजीके साथ रहनेवाले और गाधीजीकी सारी जीवन-प्रेरणा समझनेवाले कुछ साथियोने निरीक्षण करके गाधीजीका आन्तरिक चरित्र लिख दिया होता, तो वह अुनकी 'आत्मकथा' पर प्रकाश डालनेवाला अेक महाभाष्य हो जाता। और दुनियाने अैसे ग्रथका अुनकी 'आत्मकथा' से भी अधिक स्वागत किया होता। परन्तु यह कार्य अैसा कोअी 'अपर गाधी' ही कर सकता था, जिसकी विभूति गाधीजीकी विभूतिके बराबर हो। अिसके अभावमे साधारण श्रेणीके लोगोमे से जो गाधीजीके साथ रहे और श्रद्धा तथा निष्ठाके साथ जिन्होने गाधीजीके कार्यमे भाग लिया है, अुन्हे अपने-अपने अनुभवकी जानकारी मानव-हितके लिअे शब्दबद्ध करनी चाहिये। और गाधीजीकी फुरसतका लाभ मिले तो अुनसे अुसकी जाच करवा लेनी चाहिये। अिस दृष्टिसे देखने पर रावजीभाअीने यह साधन-ग्रथ लिखकर हमारी अुत्तम सेवा की है और गाधीमत तथा गाधीकार्यका अध्ययन करनेवालोके लिअे कीमती सामग्री प्रस्तुत की है।

हम लोग अितने बेपरवाह न होते, तो किसी न किसीने पूज्य बाके चरणोमे बैठ कर अुन्हीसे सवाल पूछ-पूछ कर अुनसे मिल सकनेवाली जानकारी अिकट्ठी कर ली होती, 'आत्मकथा' मे और 'सत्याग्रहके अितिहास' मे जिन-जिन लोगोका जिक्र आता है अुनके पास पहुच कर अुनके तत्कालीन सस्मरणोको विस्मृतिके प्रवाहमे बह जानेसे बचा लिया होता। जिन्होने मनुष्य-जातिके अुद्धारका अिस युगका अेकमात्र मार्ग ढूढ निकाला है, अुनकी जीवन-साधना की अेक अेक विगत भी यथासभव हमे अेकत्र कर लेनी चाहिये। चीन और जापान, अिटली और जर्मनी, अिंग्लैण्ड, अमेरिका और फ्रास, रूस और स्पेन आदि देशोकी आजकलकी हालत देखनेमे सहज ही खयाल हो सकता है कि मनुष्य-जाति विनाशके किनारे पर कैसे पहुची है। अैसे समय आत्मा

पर अटल विश्वास रखकर जिन्होने आशाकी अेकमात्र किरण दुनियाके सामने रखी है, अुनकी जीवन-साधना केवल व्यक्तिगत महत्त्वकी नही बल्कि सामाजिक महत्त्वकी वस्तु है, यह हमें जानना चाहिये।

सत्याग्रहका रहस्य जाननेकी अिच्छा रखनेवाले, दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहके अितिहासका अध्ययन करना चाहनेवाले और गाधीजीके जीवनकी गहराअीमे अुतरनेकी अिच्छा रखनेवाले सभी लोगोको यह पुस्तक अवश्य ही पढनी चाहिये। शक लोगोके सामने जूझकर देशको स्वतत्र करनेवाले शालिवाहन राजाके बारेमें यह दतकथा प्रचलित है कि अुस राजाके पास अेक अद्भुत रसायन था, वह अपने कुम्हारके यहा जाकर मिट्टीके सिपाही बनाकर अुस रसायनसे अुन्हे जिन्दा कर लेता था और लडाअीमे अुनका अुपयोग करता था। अिस दतकथाका रहस्य हम चाहे जो समझे। परन्तु गाधीजीके पास हम अैसा अेक रसायन अवश्य देखते है, जिससे वे मिट्टीके आदमियोमे तेजस्वी आत्म-परायण सिपाही तैयार कर सके है। अत प्रत्येक शिक्षकको अनिवार्य रूपमे यह ढूढ निकालना चाहिये कि गाधीजीकी अिस कला या कीमियाका रहस्य क्या है। चारदीवारीके बीच छोटे-बडे बच्चोको लेकर बैठ गये और अुनमे थोडी-बहुत जानकारी भर दी या अुन्हे भाषा-प्रवीण बना दिया, यह सच्ची शिक्षा नही है। परन्तु आबालवृद्ध स्त्री-पुरुषोको जीवनके द्वारा शिक्षा देकर अुनके भीतरका सुप्त दैवी अग जाग्रत करना, अुन्हे अपने अमृत अुत्तराधिकारका भान कराना और अैसी सज्जनता, अैसा पराक्रम और अैसी शान्ति अुनके जीवनमे पैदा करके बताना जिसकी कल्पना भी नही हो सकती, अिसीका नाम सच्ची शिक्षा है। अैसे शिक्षक अब तक दुनियामे दस-बीससे ज्यादा शायद ही हुअे होगे। अिन सबमे गाधीजीकी विभूति विशेष रूपमे सामने आती है। अपने ही जीवन-कालमें करोडो आदमियोवाले सपूर्ण राष्ट्रको हाथमे लेकर अुसके अैतिहासिक अमिट दुर्गुणोको जानते और अनुभव करते हुअे भी अुसकी जनता पर विश्वास रखकर अुन्होने जो अेक बडा व्यापक प्रयोग करके दिखाया है, अुसकी मिसाल विश्वके अितिहासमे दूसरी नही मिलती। अिस प्रयोगके आरम्भमे जिन्हे प्रौढ विद्यार्थी बननेका सम्मान मिला है, अुन्हीमे से अेक जीवनार्थीके अनुभवका यह वर्णन है।

गाधीजीका माहात्म्य, अुनके कार्यका स्वरूप और अुसका विस्तार लोगोके सामने है। परन्तु गाधीजीकी अपनी जीवन-साधना और साथ ही दूसरोका

जीवन बनानेकी अुनकी जीवन-कला अुनके अपने लिखे हुअे ग्रथोमे पूर्णतया प्रगट नही हुअी है और न कभी होगी। जब अुनके असख्य पत्र छपेगे, तभी गाधीजीके जीवन-प्रयोग और अुनकी आत्मकथा अपने विश्वतोमुखी अनत पहलुओ द्वारा चमकेगी। और अुसमे जो कुछ कमी रहेगी, वह अैसे साधन-ग्रथोके द्वारा पूरी होगी।

अेक शका मनमे अुठे बगैर नही रहती। शीशमहलमे जब चन्द्रज्योति जलाअी जाती है, तब शीशेके अुभरे हुअे असख्य टुकडो द्वारा दसो दिशाओमे अुसके प्रतिबिम्ब जल अुठते है और अैसा मालूम होता है मानो चारो ओर दीपोत्सव हो रहा है और अनन्त चन्द्रज्योतिया पृथ्वी पर अुतर आअी है, अब तो कभी भी अिस सीमित ससारमे अधकारका प्रवेश फिरसे होगा ही नही। हम भूल जाते है कि चद्रज्योति तो यहा अेक ही है और आसपास जो जलता और चमकता दिखाअी देता है वह केवल अुसकी महिमा ही है। प्रतिबिम्ब कितने ही क्यो न हो, दुनियाकी समृद्धि तो मूल बिम्बोके जितनी ही होती है। कही अैसा ही अनुभव करना तो अिस जमानेके नसीबमे नही लिखा है? श्रद्धा कहती है कि अैसा नही होगा। ये प्रतिबिम्ब नही है, परन्तु 'चिरागसे चिराग जलता है' अिस न्यायसे सचमुच छोटे-बडे असख्य दीपक जल अुठे है। अिनमे से कुछ थोडे जलकर बुझ जायगे, कुछ धुआ ही पैदा करेगे, परन्तु जिनके पास अपार स्नेह होगा वे तो अपनी ज्योतिकी किरणे अधकारपूर्ण भविष्यमें दूर-दूर तक पहुचाकर भविष्य कालको अुज्ज्वल करेगे। अितना ही नही, वे आगे आनेवाले स्नेहभीने मिट्टीके दीपकोको भी जलाकर दीपमालाकी परपराको अखड बनाये रखेगे।

और निरी अश्रद्धा भी अैसा आश्वासन देती है कि भले ही यह दुनिया दीप-सम्मेलन न हो और केवल शीश-महल ही हो, परन्तु जिस कारीगरने मिट्टीकी दीवारकी जगह दर्पणके ये गोल टुकडे बनाकर अुन्हें दीवारमे जडा और अुनके पेटमे रसायनका लेप करके अुन्हें ज्योतिसे प्रदीप्त होनेकी शक्ति प्रदान की, अुसकी भी विश्वसेवा कुछ कम नही है। भविष्यमे आनेवाले प्रत्येक दीपकके, प्रत्येक चन्द्रज्योतिके कृतार्थ होनेके लिअे जिसने यह परिस्थिति अुत्पन्न की, वह भी कम विश्व-कल्याणकृत् नही है।

हम आर्य लोगोके अेक सनातन सिद्धान्त पर गाधीजीका अटल विश्वास है। और वह सिद्धान्त है पिण्ड-ब्रह्माण्ड न्यायका तथा 'श्रेष्ठ और अितरजन'

का। 'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे' के न्याय पर ही गांधीजी चलते आये है। अुनकी यह अेक अटल श्रद्धा है कि अपने आसपासकी प्रत्यक्ष परिस्थितिके प्रति हम सत्यनिष्ठासे वफादार रहेंगे, तो विश्वकी सारी समस्याओंका हल हमें जरूर मिलेगा। अुनकी दूसरी अुतनी ही अटल श्रद्धा यह है कि श्रेष्ठ लोग जैसा आचरण करेंगे वैसा ही आचरण 'अितरजन' यानी साधारण जनता भी करेगी। अर्थशास्त्रमें ग्रेशहैमके अिस सिद्धान्तका अुल्लेख आता है कि जब खोटा सिक्का चलनमें आ जाता है तब खरा सिक्का या तो देश-निकाला भोगता है या सुनारकी कुल्हडीमें पिघल जाता है। जब जब समाजमें जडता फैलती है, तब तब अिसी ग्रेशहैमके न्यायसे धर्मकी ग्लानि और अधर्मका अभ्युत्थान होता है। परन्तु यही सिद्धान्त यदि सार्वभौम होता, तो दुनियाके लिअे कोअी आशा ही नही रह जाती। ज्यों ज्यों समय बीतता जाता त्यों त्यों युगशक्तिका ह्रास होता जाता और अन्तमें दुनियाके भाग्यमें विनाश ही रह जाता। अधर्माभिभवके अिस सिद्धान्तके विरुद्ध अवतार-सर्जनका सिद्धान्त काम करता है। अतअेव दुनियाके लिअे कुछ आशा रहती है। कुछ लोगोंमें धर्म-प्रेरणा गहरी पैठ जाती है, कुछ लोगोंमें केवल अुसका प्रति-बिम्ब ही पडता है। जो केवल प्रतिबिम्बके ही अधिकारी है वे अपने हिस्सेमें आया हुआ या भाग्यमें लिखा हुआ युगकार्य पूरा करके फिर पहले जैसे ही बन जाते हैं। और जो युग-प्रेरणाको अपना लेते है और जिनमें स्थायी जीवन-परिवर्तन हो जाता है, वे अप्रतिम युगकार्य तो करते ही है, साथ ही अपना स्थायी अुद्धार भी कर लेते है।

यह भेद क्यों होता है? यह निरा सयोग नही है। यह कोअी दैवकी अकल लीला नही है। यह अेक अटल सिद्धान्त है, आसानीसे समझमें आने लायक है, और अैसा है कि अुसे समझकर प्रत्येक मनुष्य अुससे लाभ अुठा सकता है।

मानव-जीवन साधनाके लिअे है, सिद्धिके अुपभोगके लिअे नही है। जो साधनामें दृढ है अुनकी शक्ति बढती ही जाती है। जो सिद्धिसे ललचा कर या साधनाके व्यायामसे थक कर शिथिल हो जाते है वे नीचे गिर जाते हैं। पुरानी पूंजी पर थोडे दिन वे अपनी प्रतिष्ठा कायम रख सकते है, अपने अध पतनको अेक हद तक छिपा भी सकते है, परन्तु ठडसे ठिठुरती दुनिया यह जान जाती है कि अिन ओटोंमें गरमी नही रही।

गांधीजी जबसे हिन्दुस्तानमें आये हैं, तबसे हिन्दुस्तान गांधीजीकी साधनाके पीछे चलनेकी कोशिश करता रहा है। यह साधना जारी रखी जाय तो अुसके अन्तमें क्या क्या मिल सकता है, अिसकी झांकी भी भारतने कर ली है। परन्तु दुर्दैवसे अब साधना-निष्ठा कुछ मन्द पड गअी है। तत्त्वदर्शन अस्पष्ट हो गया है। श्रद्धा डगमगा गअी है। अैसे समयमें आशा है गांधीजीकी यह साधना गफलतमें पडे हुओंको सावधान करेगी और अनजान लोगोंको नअी दृष्टि प्रदान करेगी।

पूना,
१–३–'३९

दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर

अनुक्रमणिका

पहला भाग

दूसरा भाग

तीसरा भाग

गांधीजीकी साधना

पहला भाग

१

दक्षिण अफ्रीका

पृथ्वीके पाच खडोमे अफ्रीका अेक विशाल खड है। सारा खण्ड कुदरतकी वख्शिशोंमे भरपूर है। नील नदी तो मिस्रका गौरव मानी जाती है। मिस्रके लोग नील नदीके नामका गुणगान करते है, अुसे देवत्व प्रदान करते है, अुसकी पूजा करते हैं। मिस्रके राष्ट्रीय गीतोमे नीलका नाम बोलते ही मिस्र-वासियोको रोमाच होता है। अुसके नामसे देशभक्तिकी बाढ आ जाती है और अुसकी गोदमे मिस्रवासी अपना सर्वस्व अर्पण करते है। खण्डके पूर्वी किनारे पर तो मिस्रके पूर्वी किनारेसे लगाकर ठेठ केप आफ गुड होपके अन्तरीप तक कुदरतने मानो हरा गलीचा बिछा दिया हो, अैसा सुन्दर और सुखद दृश्य नजर आता है। मीठे फल-फूलोसे लदी हुअी सुन्दर वाटिकाअे देख-देखकर हमारी आखे तृप्त हो जाती है। पूर्वी अफ्रीकाके भीतरी हिस्सेमे विक्टोरिया न्याजा और अल्बर्ट न्याजा नामके दो विशाल और सुन्दर सरोवर है और अुनके आसपासका हराभरा प्रदेश जीवमात्रको आह्लाद देता है। अिस खण्डकी कुदरती वख्शिशोंमे जैसी विशेषता है, वैसी ही वनभूमिमें भी है। वनभूमिमें रहनेवाले वनराजकी गर्जना अुसके गौरवमे वृद्धि करती है। हाथियो और हथनियोके झुड छोटे-छोटे सरोवरोंमें जलक्रीडा करते हुअे जहा-तहा पाये जाते है।

दक्षिण अफ्रीकाकी रमणीयता तो अनोखी ही है। अुसके अुदरमें क्या नही है? मिठासका भूखा कोअी मानव पृथ्वीतल पर भटकता भटकता निराश हो गया हो, परन्तु यहा अुसकी भूख मिट जायगी। यहा मनचाही मिठास पाकर वह प्रसन्न हो जायगा। अभी तो यहाकी जमीन जितनी चाहिये अुतनी तैयार भी नही की गअी है। अैसे किसान अुसे काफी सख्यामे मिले नही है, जो अुसके पेटमे अपने बहुमूल्य पसीनेका खाद देकर अुसे पूरी तरह अुपजाअू बनायें। फिर भी आम, केले, अनन्नास, पपीते, नारगी और सतरे, सीताफल, रामफल और मेवसे लेकर स्वादिष्ठ अगूर तक यहा बहुतायतसे पैदा होते है। दुनियाके और किसी हिस्सेमें फलोके लिअे शायद ही अितनी अनुकूल भूमि और आबोहवा होगी। फिर और क्या चाहिये? सोना वहा होता है, हीरा वहा

मिल सकता है। कोयला भी वहा होता है। जमीन समतल नही है, परन्तु अपजाअू है। असमें भी नेटाल प्रान्त तो अलौकिक है। समुद्रके किनारे होने पर भी वह सूखी और सामान्य ठडी हवावाला, बगीचो और झाडियोमें भरा हुआ देश है।

नेटाल, ट्रान्सवाल, केप कालोनी और आरेंज रिवर फ्री स्टेट, अिन चार प्रान्तोसे दक्षिण अफ्रीका बना है। ये चार प्रान्त 'यूनियन आफ साअुथ अफ्रीका' नामक राज्यसस्थाके अधीन है। अिन चारो ही प्रान्तोके प्रतिनिधित्ववाली सयुक्त राज्य सभा असका राजकाज चलाती है। यह राज्य सभा 'यूनियन पार्लियामेण्ट' के नामसे प्रसिद्ध है। दक्षिण अफ्रीका 'रिपब्लिक'–प्रजासत्ताक– नही माना जाता। वह ब्रिटिश साम्राज्यका अेक भाग समझा जाता है। फिर भी ब्रिटिश राज्यकी सत्ता वहा नाममात्रको ही है। यह नाममात्रकी सत्ता दक्षिण अफ्रीकाकी जनताके हितमें बाधक नही है, बल्कि वहाकी जनताको असुसे लाभ ही होता है। दक्षिण अफ्रीकाके मूल निवासी सीदी (हब्शी) लोग है। हुकूमतकी बागडोर जनरल स्मट्स और हरजोग जैसे डच लोगोके हाथमें है। व्यापारका धन अग्रेज लोग लूटते है। और साथ साथ हिन्दुस्तानी लोग भी धन कमानेके लिअे वहा बसे हुअे है। अिस पचरगी आबादीके बारेमें हम आगे विचार करेंगे।

२

दक्षिण अफ्रीकाके मूल निवासी – जूलू

दक्षिण अफ्रीकाके मूल निवासियोको अमरीकाके हब्शियोकी तरह खास नाम लेकर नही पुकारा जाता। गोरी और दूसरी जनता अुन्हे काफिर कहती है। परन्तु यह सबोधन अपमानसूचक होनेके कारण सार्वजनिक रूपमें अिसका अुपयोग नही होता। अुन्हें खुद यह नाम सुनकर अपमान महसूस होता है। सरकार अपने कामकाजके लिअे 'नेटिव' शब्दका अुपयोग करती है। गोरे और हिन्दुस्तानी घरेलू भाषामें अुन्हे काफिर कहते है। नेटाल प्रान्तके मूल निवासियोके लिअे वहाके अेक जूलू नामके प्रदेश परसे जूलू सज्ञा काममें ली जाती है। अिस प्रकरणमे मैं नेटालके मूल निवासियोके सम्बन्धमें लिखना चाहता हू, अत अुनके लिअे जूलू शब्दका प्रयोग करना ठीक

है, जहा जहा पाठक जूलू शब्द पढे, वहा वहा समझ ले कि वह सारे दक्षिण अफ्रीकाके मूल निवासियोके लिअे काममे लिया गया है।

हिन्दुस्तानके कितने ही भागोमे बसनेवाली भील जाति, सूरतकी तरफकी कालीपरज (जिसे आजकल रानीपरजके नामसे पुकारते है) और अिसी तरहकी दूसरी जातियोमे बहुत साम्य है। जूलू लोग मानते है कि वे और अमरीकाके हब्शी अेक ही जातिके है और अिसलिअे यह मान लेना चाहिये कि अुनकी खासियतो, रिवाजो और मान्यताओ वगैरामे सादृश्य होगा। परन्तु सूरत जिलेके रानीपरज लोगोकी और भील जातिकी खासियतो, मान्यताओ, विवाहके रीति-रिवाजो और सगीत आदिकी पद्धतिमे और अिस जूलू जातिकी खासियतोमे बहुत साम्य है। दक्षिण अफ्रीकाके मेरे निवास-कालमे मैने अिस जूलू जातिके बारेमें काफी जान लिया है और अुसे जान लेनेके बाद मुझे अिस सारी जातिके प्रति आदर अुत्पन्न हो गया है। ससारकी जातिया आज तो अुत्क्रान्तिके पथ पर अग्रसर हो रही है। प्रत्येक जाति प्रगतिके मार्ग पर कूच कर रही है। आज जगली मानी जानेवाली जूलू जाति कभी न कभी ससारकी महान जातियोमें अपनी गिनती करायेगी। क्योकि यह जाति भी प्रगतिके मार्ग पर बढती चली जा रही है। फिर भी आज सभ्य होनेका दावा करनेवाली जातिया जिस जूलू जातिको जगली जाति मानती है, अुसके बारेमे हम सच्ची जानकारी प्राप्त कर ले तब हम जरूर विचारोके चक्करमे पड जाते है तथा सोचने लगते है कि हम सभ्य कैसे और वे जगली कैसे? अिसमे पाठकोको थोडा धीरज रखना पडेगा। यहा हमे कुछ तफसीलमे जाना पडेगा।

जूलू लोग आज भी ज्यादातर जगलमे ही रहते है। दक्षिण अफ्रीकामें राज्य करनेवाली गोरी जातिने जहा जहा छोटे या बडे गाव बसाये है, वहा घर बनाकर रहनेवाला जूलू शायद ही मिलेगा। और जो मिलेगा वह अीसाअी बन गया होगा। अीसाअी पादरीयोने अिस जातिमे पैर फैलाकर अुसके दो भाग कर दिये है – (१) नगे जूलू, (२) कपडे पहननेवाले जूलू।

नगे लोग जगलमे ही रहते है। वे बिलकुल नग्न तो नही रहते। स्त्री और पुरुष मर्यादा ढकनेके लायक ही कपडे या दूसरे साधन काममें लेते है। जहा जहा गोरे लोगोकी बस्ती होती है, वहा अैसी असभ्य (अर्धनग्न) हालतमे जानेकी अुन्हे कानूनमे मनाही कर दी गअी है। अिसलिअे बाजारसे

चीजें लाने, कचहरीके काम निवटाने या और किसी कामसे अैसे प्रदेशोमें जगलवासी जूलू लोग कपडे पहनकर जाते है। कुवारी कन्याअे लहगेके वजाय १२ से १८ अिंच पनेका अगोछा काममे लेती है और छाती ढक जाय अैसे चौकोर कपडेके टुकडेसे छाती ढक लेती है। विवाहिता स्त्रिया वैलके चमडेका लहगा पहनती है और कन्याओकी तरह कपडेके वडे टुकड़ेसे छातीका भाग ढक लेती है। पुरुष वस्तीमें तो पतलून और कोट या कमीजसे अपना वदन ढककर चलते है और जगलमे वाघके चमडेसे अपनी मर्यादा ढकते है। ये नगे लोग औसाअी वने हुअे नही होते। औसाअी वने हुअे जूलूओमे पुरुष यूरोपीय पोशाक पहनते है और स्त्रिया मलाअी पोशाक पहनती है। गैर-औसाअी जनताकी यह मान्यता है कि पोशाकमे गोरोकी नकल करना, गिरजोमे विश्राम-दिवस यानी रविवारके दिन टीपटाप करके जाना, गोरोके वावर्ची या कारकुनके रूपमे नौकरी करना, शराव और व्यभिचारकी छूट प्राप्त करना, अैश-आराम और भोग-विलासमे निर्वल वनना और जीवनमे नीति-अनीति या धर्म-अधर्मकी चिन्ता न रखना—ये औसाअी धर्म स्वीकार करनेवालोकी खासियते है। नगे जूलू अपने औसाअी वने हुअे भाअियोको शका और तिरस्कारकी नजरसे देखते है। गैर-औसाअी जूलू स्त्रियो और औसाअी जूलू स्त्रियोके झगडे मैने सुने है, और सुननेके वाद जिज्ञासाके खातिर और कभी कभी मजाकके खातिर मै गैर-औसाअी जूलू स्त्रीसे पूछता था "तुमने अुस वहनको ताने मारे, परन्तु कुछ भी हो, वह सभ्य है और तुम जगली हो। तुम अुसे अैसा कैसे कह सकती हो?" मेरा अुलाहना सुनकर वह वडे गर्वसे जवाव देती "कौन सभ्य है? कैसी सभ्यता? वेश्याकी तरह कपडे पहनकर नखरे करना, विलायती शराव पीकर पागल वनना, जवानकी चालाकीसे काम लेना, व्यभिचार करनेकी छूट प्राप्त करना और फिर गिरजेमें जाकर भोला मुह वनाकर भगवानको फुसलाना, क्या सभ्यताके यही लक्षण है? अैसे लोग सभ्य कहलाते हो तो हमे वैसे नही वनना है। हमे अपना जगलीपन ही मुवारक हो।"

अूपरकी चतुराअीभरी दलील सुनकर मै तो चकरा जाता था। फिर भी अुस वहनसे और वातें सुननेकी खातिर मै अुसका खडन करके कहता "तुम लोग तो अीर्षालु हो। ये लोग तुमसे कितने ज्यादा साफ और सभ्य दिखाअी देते है? तुम लोगोके कपडे कितने गदे और अरडीके तेलमें भीगे हुअे होते है

और तुम्हारे शरीरसे भी अुस तेलकी वदवू आती है। तुम्हे न तो वोलनेकी तमीज है, न कपडे पहननेकी तमीज है और न शहरी जिन्दगीको तुम समझती हो।" जैसे मेरी वात सुनकर व्याकुल हो जाती हो, अिस प्रकार वह वोल अुठती, "कोअी हर्ज नही, कोअी हर्ज नही। भले ही वे सुन्दर दीखनेकी कोशिश करे, भले ही वे वाहरी जीवनमे स्वच्छ दीखती हो, भले ही अुन्हे शहरमे रहना आता हो। परन्तु अुनके अन्त करण कितने काले है? तुम जानते हो वे कितने अधम और अनीतिपूर्ण है? हमारे शरीरसे चाहे वदव् आती हो, परन्तु हमारा हृदय कितना शुद्ध है। हम अपने भगवानसे डरते है, अुसे धोखा नही देते।"

यह स्पष्ट अुत्तर सुनकर भी मुझे सतोप न होता, तो मै और भी स्पष्टताके खातिर अुससे जिरह करता "नीति-अनीति तो थोडी वहुत सभीके साथ लगी हुअी है। अुससे विलकुल निर्लेप तो किसीको देखा नही। तुम अुन लोगोके चरित्र पर आक्षेप करती हो, परन्तु क्या तुम लोगोमे सभी शुद्ध होगे? वुराअी तो तुम लोगोमे भी होगी।" मेरा कहना पूरा होनेसे पहले ही वह वोल अुठती "हा, हा, तुम सच कहते हो। हममे भी वुराअी तो होगी। परन्तु नव्वे फी सदी वुराअी अुनमें और दस फी सदी वुराअी हममे होगी। अितना फर्क है। वे भी दस-पाच साल पहले हमारे भाअी-वन्द थे। अव भी वे हमारे भाअी-वन्द ही है। मै अुन पर आक्षेप नही करती। मेरा आक्षेप तो जिसे तुम सभ्यता कहते हो अुस पर है।"

अिस निरक्षर, अज्ञान और जगली मानी जानेवाली स्त्रीसे सभ्यता और असभ्यताका निरूपण सुनकर मै तो ताज्जुवमे पड जाता। अैसी मान्यता और दलीले मैने वहुत-सी गैर-अीसाअी स्त्रियोसे सुनी थी। और वारीकीसे जाच करने पर मालूम हुआ है कि अुनमे अतिशयोक्ति नही थी। अच्छे-वुरे लोग तो सभी जातियोमे होते है। परन्तु यह सभी जगह देखा गया है कि जूलू लोगोमे अीसाअी वन जानेके वाद अधिकतर लोगोका जीवन अिस प्रकार कलकित हो जाता है। जहा धर्म-परिवर्तन करना ही मनुष्यका मुख्य हेतु होता है, वहा धार्मिकता लोगोमे कम ही पैदा होती है। अितना ही नही, धर्म वदलनेवाले लोग परधर्मावलम्वी समाजके प्रचलित दोपोके शिकार वन जाते है। अीसाअी वने हुअे जूलू लोगोकी अैसी ही दयनीय दशा है।

३

जूलू कौमकी राजनीतिक स्थिति

जूलू दक्षिण अफ्रीकाके मूल निवासी है, वह अुनकी जन्मभूमि है। वहा रहना, वहाका राज्य करना और वहाका सारा वैभव भोगना अुनका जन्मसिद्ध अधिकार है, परन्तु पश्चिमकी भूखी जातिया वहा जा पहुची। अुनका रग गोरा होनेके कारण ही अुन्होने अैसा मान लिया है कि अिस पृथ्वीतल पर और सूर्य-मडल पर भी अुन्हीकी सत्ता होनी चाहिये, अुन्हीका बोलवाला होना चाहिये। अमरीकामे वे लोग जब स्थायी हो गये तो अपनी वेगार करानेके लिअे दक्षिण अफ्रीकाके निवासियोंको अपने गुलाम बनाकर ले गये और यहा जो लोग रहे अुन पर यहा आकर बसे हुअे गोरे लोगोने अपना आधिपत्य जमा लिया। स्वाभाविक रूपमे ही मानवोके मनमे यह अभिलाषा पैदा होती है कि हमारी सेवाके लिअे या हमारे साथ जो जाति रहती है, अुसकी भलाअी और अुन्नतिके लिअे कोशिश करनी चाहिये। परन्तु अिन गौराग जातियोके हृदयमे अैसी कोअी मानव-भावनाका अुद्‌भव ही नही हो सका। अुन्होने अपना स्वार्थ साधना शुरू कर दिया। अितना ही नही, जिस घरके वे मालिक बन बैठे है, अुसके मूल स्वामीको अुन्होने अूपर न अुठने दिया। पचासो वर्ष हो गये, फिर भी मूल जातियोकी शिक्षाका अुन्हे खयाल तक नही आया। मामूली पुलिसके सिपाहीसे अचे दर्जेकी नौकरीके लिअे भी अुनमे से किसीको नही रखा जाता, तब न्याय-विभाग, शिक्षा-विभाग और गृह-विभागकी तो बात ही क्या की जाय! अुन्हे लाठी या खेतीके लिअे जो औजार अुपयोगी हो अुनके सिवा अन्य कोअी हथियार भी रखनेकी अिजाजत नही है। किसी सरकारी नौकरीमें मैंने अेक भी जूलू नही देखा। वहाके गोरे लोगोको शायद शका होगी कि ये लोग मानव-जातिके है या तुच्छ पशु-पक्षी है? गाव-गाव म्युनिसिपैलिटिया होगी, परन्तु अुनका लाभ जूलूओको क्यो मिलने लगा? अिन लोगोके लिअे किसी जिलेमे किसी जगह सरकारी दवा-खाना मैंने नही देखा। फिर भी अेक साल जानवरोमे चेचकका रोग फैला तब अुसकी छूत लगनेके बहाने जगलमे रहनेवाले जूलू लोगोके हजारो जानवरोको

गोलीसे मार दिया गया। अिस तरह सैकडो साधन-सम्पन्न जूलू थोड़े ही दिनमे साधनहीन बन गये।

सरकारको अुनके लिअे कुछ करना नही पडता। वे अपनी रक्षा आप कर सकते है, अिसलिअे पुलिस विभागको किसीसे अुनकी रक्षा करनी नही पडती। फिर भी सरकार अुनसे फायदा बहुत अुठाती है। वह अुनमे से पुलिसके सिपाहियोकी भरती करके अुन्हे खास तौर पर गोरोकी रक्षा लिअे रखती है। जूलू लोगोको कर तो देना ही पडता है। फिर भी अितनेसे गोरी सरकारको सन्तोष नही हुआ। अुसने फी आदमी अेक नया कर लगा दिया। अिसका हेतु अेक ही था। किसी भी तरह जूलू लोगोको तगदस्ती और कगाल हालतमें रखना। कर या किसी भी कानूनके अमलके नीचे अुन्हें हमेशा दबाकर रखना। आज तक वहाकी सरकार अैसे दुष्ट हेतुवाला व्यवहार ही जूलू जातिके प्रति रखती है। सन् १९०४ मे वहाकी सरकारने जूलूओ पर जब मुण्ड-कर लगाया, तो अुस जातिमें भारी असतोष पैदा हुआ। जगलके किसी केन्द्रमे पुलिस सार्जण्ट कर अुगाहने गया, वहा जूलू लोगोने अुसे काट डाला। अितना कारण गोरी जातिके लिअे काफी था। अिसे गोरी जाति और सरकारने बडा रूप दे दिया। अुसे जूलू-विद्रोह मान लिया। फौजी स्वयसेवक सेनामें भरती हुअे नौजवानोको तुरन्त अिकट्ठा कर लिया गया। जमा हुअे नौजवानोके दिलोमे अब तक जूलूओके प्रति तिरस्कारका भाव ही पोषित किया गया था। अुनके हृदयोमे अपने घरके पालतू कुत्तेके बराबर भी जूलू मानवकी गिनती न थी। अैसे नौजवानोके दल नेटालका जूलू-विद्रोह दबानेको निकल पडे। सत्ताके नशेमे चूर अिन गोरे सैनिकोने सैकडो नही हजारो जूलूओका शिकार किया, मानो वे मनुष्योका शिकार करनेका ही अवसर ढूढ रहे हो। गाधीजी अिस जूलू-विद्रोहमे घायल होनेवालोकी सेवा करनेकी अिच्छासे स्वय-सेवकोकी अेक टोली लेकर गये थे। अुन्होने खुद बताया है कि वह जूलू-विद्रोह जैसा बिलकुल नही था। अिस बहानेसे जूलू जाति पर गोरोको आतक जमाना था। और गोरी सरकारने अपने अत्याचारोसे भयकर आतक फैलाया। घायलोकी सेवा करनेवाली टोलीको अेक भी गोरे घायलकी सेवा करनेका मौका नही आया। जो घायल हुअे या मारे गये, वे केवल जूलू ही थे। गोरोकी हथियारबन्द टोलीको देखकर अुसका आश्रय लेनेके लिअे जानेवाले जूलूओ पर भी बिना हिचकिचाहटके अुस टोलीने गोली चलाअी और कितनो ही को

निर्दयतासे मार डाला या घायल कर दिया। अिस तरह मिला हुआ मौका चूकनेवाली गोरी जाति नही थी। अिस प्रकार दक्षिण अफ्रीकाके सब प्रान्तोका राज्यशासन वहाकी मूल जातिके खूनसे सनकर कलकित बन गया है।

४

दक्षिण अफ्रीकाका औपनिवेशिक स्वराज्य

दक्षिण अफ्रीकामे रहनेवाले हिन्दुस्तानी लोगोके बारेमे कोअी विचार करनेसे पहले हम वहाकी राज्यसत्ता पर अेक नजर डाल ले। दक्षिण अफ्रीकाके चार प्रान्तोमे से नेटाल, केप कालोनी और आरेंज रिवर फ्री स्टेट—ये तीन प्रान्त अग्रेजोके अधिकारमे थे। ट्रान्सवाल प्रान्त डच लोगोके पास था। डच लोग हालैण्डके मूल निवासी है। वे भी ट्रान्सवालमे 'सेटलर्स' के रूपमे गये थे और बादमे अुन्होने अपनी सत्ता वहा जमाअी थी। परन्तु वे वहाकी भूमिके सगे पुत्र बनकर रहे, किसान बन गये और ट्रान्सवालकी अुन्नति और समृद्धिमे अपनी अुन्नति और समृद्धि मानने लगे। ट्रान्सवालके लगभग चारो ओर अग्रेजी सत्ता थी। अुनकी आखोमे ट्रान्सवालका स्वतत्र राज्य खटके बिना कैसे रहता? और अग्रेज व्यापारके लिअे तो घुस ही गये थे। सोनेकी खाने वहा ट्रान्सवालमे अग्रेज व्यापारियोने खोजी थी और अग्रेज कपनियोने अिन खानो पर अपना स्वामित्व जमा लिया था। फिर भी राजसत्ता डच लोगोकी होनेके कारण सोनेकी खानोका धधा मनमाने ढगसे बढानेमे अग्रेजोको अनेक कठिनाअिया महसूस हुअी। जिस भूमिमे ये खाने है अुस भूमिका स्वामित्व मिलने पर ही अुनका पूरा लाभ अुठाया जा सकता है, यह बात मि० चेम्बरलेन जब दक्षिण अफ्रीका आये तब अुन्हे सूझी। अुन्होने ट्रान्सवाल प्रान्त लेनेके लिअे पार्लियामेंटको अुकसाना शुरू कर दिया। परन्तु प्रश्न यह खडा हुआ कि ट्रान्सवालके साथ किस कारणसे लडाअी मोल ली जाय। परन्तु राजनीतिज्ञोको कारणोकी क्या कमी! 'तू नही तो तेरा बाप होगा,' अैसी भेडिया-वृत्ति तो अुनमे होती ही है। अुन्होने लडाअीके कितने ही कारण ढूढ निकाले। अुनमें से अेक कारण यह भी था कि ट्रान्सवालकी डच हुकूमत वहा रहनेवाले हिन्दुस्तानियो पर जुल्म करती है। परन्तु सच्चा कारण तो यह था कि सोनेकी खानोके लिअे अुनकी

नीयत विगड गअी थी। यह वोअर-युद्ध लगभग तीन साल तक चला। लार्ड रावर्ट्स प्रधान सेनापति थे। हिन्दुस्तानी फौजने भी वहा अपना खून वहाया। लडाअीमे कितने ही हत्याकाण्ड किये गये। और अुन हत्याकाण्डोमे अग्रेज फौजने निर्दोष डच स्त्रियो और वच्चोकी निर्मम हत्याअें कीं। वहादुर होने पर भी मुट्ठी भर डच लोग आखिर राक्षसी ब्रिटिश सल्तनतके सामने कहा तक टिकते? फिर भी तीन सालमे डच लोगोकी वहादुरीसे ब्रिटिश साम्राज्य थक गया। अन्तमे दोनो पक्षोमें सुलह हुअी। ट्रान्सवाल प्रान्तने ब्रिटिश साम्राज्यका आधिपत्य स्वीकार किया और अुसे साम्राज्यके अुपनिवेशके रूपमे स्वीकार किया गया। अुस समयमे अिन तीन प्रान्तोमे टान्सवाल भी मिल गया। सन् १९१० तक अिन चारो प्रान्तोका शासन स्वतत्र रूपसे होता रहा। सन् १९१० में दक्षिण अफ्रीकाका सघराज्य वना। अुसके मुख्य अधिकारी जनरल स्मट्स और जनरल वोथा वगैरा डच लोग रहे। चारो ही प्रान्तोके प्रतिनिधियोकी सयुक्त राज्य-सभा अपने मत्रिमडलके जरिये सारा शासन करती है। अुस मत्रिमडल या राज्य-सभाकी सत्तामें हस्तक्षेप करनेका वडी सरकारको कोअी अधिकार नही है। साम्राज्यकी ओरसे अेक प्रतिनिधि वहा रहता है। वह दक्षिण अफ्रीकाका गवर्नर जनरल कहलाता है। राज्यसभा जो जो कानून वनाती है, अुस पर वह नियमानुसार केवल हस्ताक्षर करता है। अुस प्रतिनिधिका वेतन वडी सरकार देती है।

अिस तरह वडी सरकारकी सत्ता दक्षिण अफ्रीकामे नाममात्रकी ही है। यूनियन जैक वहाका राज्य-ध्वज माना गया है। अिसके वदलेमे ब्रिटिश सरकार दस हजार गोरी सेना दक्षिण अफ्रीकामे रखती है। अिस फौजका सारा खर्च अिंग्लैण्डके खजानेसे दिया जाता है। अितने पर भी अुसका अुपयोग दक्षिण अफ्रीकाकी सरकार अपनी जनताके हितमे जरूरत पडने पर कर सकती है।

हमारे मनमे सहज ही प्रश्न अुठ सकता है कि अिंग्लैण्ड अिस तरह घाटा सहकर भी दक्षिण अफ्रीकामे नाममात्रकी सत्ता किस लिअे रखता होगा? अिसमे अिंग्लैण्डको क्या लाभ? अैसे प्रश्नोका हल वडा गहरा है। दोनो पक्ष अिसमे अपनी अपनी मर्यादा समझकर अेक-दूसरेका लाभ अुठाते है। दक्षिण अफ्रीकाकी जनता यह मानती है कि अिंग्लैण्डका झडा वहा रहे तो अिसमे अुसका कोअी नुकसान नही है। वह दक्षिण अफ्रीकाके हितमे वाधक नही

वन सकता। और जव वाधक वनेगा तव घडी भरमे अुसे अुतारकर फेक देनेकी शक्ति अुनमे है। अुस हालतमे अिग्लैण्ड चुपचाप वैठे रहनेके सिवा और कुछ नही कर सकता। अिसके सिवा ब्रिटिश साम्राज्यकी हिस्सेदारीकी छायामें ब्रिटिश साम्राज्यमे और दूसरे देशोमे भी दक्षिण अफ्रीकाके लोग व्यापारका और वसनेका लाभ अुठा सकते है। दूसरी तरफ अिग्लैण्ड अिस तरह मनका सतोष कर लेता है कि अैसे अुपनिवेशोके समूहसे वने हुअे साम्राज्यकी छाया तले वह विदेशी राज्योके साथ अपनी प्रतिष्ठा वनाये रख सकता है। अिग्लैण्डकी वढती हुअी आवादी और अुद्योगोके लिअे अुपनिवेशोमे सुन्दर स्थान मिलता है। दक्षिण अफ्रीकामे होनेवाले विदेशी आयातमें अिग्लैण्डको विना रोकटोक दूसरे देशोसे ज्यादा तरजीह मिल सकती है। अिस प्रकार अिग्लैण्डके मालका विशाल वाजार खुला रहता है। दक्षिण अफ्रीकाके लिअे तो सभी वरावर है। जो चीज जरूरी होते हुअे भी वहा तैयार नही होती, वह अिग्लैण्डसे आये या जर्मनीसे आये या और किसी देशसे आये, अिसमें अुसका कुछ विगडता नही। अिस प्रकार अेक-दूसरेके स्वार्थपूर्ण हेतु अैसी राजनीतिमे घुसे होते है। अिन स्वार्थोकी और अपनी-अपनी मर्यादाकी दृष्टिसे समझ-वूझकर दोनो पक्ष व्यवहार करते है। तथापि अिसमे अेक वात तो निश्चित है कि जव अिग्लैण्ड जरा भी दक्षिण अफ्रीकाके हितके विरुद्ध जायगा तव दक्षिण अफ्रीका तुरन्त ही साम्राज्यका जुआ अुतार फेकेगा। अैसा करनेमे अुसे कोअी रोक नही सकेगा। आजकल हिन्दुस्तानके लोग राष्ट्रीय काग्रेसके जरिये दक्षिण अफ्रीका जैसा जो औपनिवेशिक स्वराज्य मागते है वह अैसा ही औपनिवेशिक स्वराज्य होगा। जव जरूरी मालूम हो तव साम्राज्यके सम्वन्धसे अलग होनेके अधिकारवाला स्वराज्य ही औपनिवेशिक स्वराज्य है। आजकल दक्षिण अफ्रीकाको अैसा ही स्वराज्य मिला हुआ है।

अव यह देखें कि दक्षिण अफ्रीका अपने औपनिवेशिक स्वराज्यमे अपने मुल्कके हितकी किस तरह रक्षा करता है।

वहाकी जमीन अुपजाअू है — वहुत अुपजाअू है। वरसात वहुत अनुकूल है। चौमासेमे, जाडेमे और गरमीमें भी वहा वरसात होती रहती है। खेती अच्छी होती है, फिर भी वहाकी जमीन पर कोअी लगान नही है। साधारण किसान पर तो कर जैसी कोअी चीज होती ही नही। वडे किसानो पर आय-कर होता है। और वह आय-कर निश्चित आय पर

लिया जाता है। खास तौर पर किसानोके माथ सरकारी अफसरो और छोटे कर्मचारियोका विशेष सम्बन्ध न होनेसे किसान अुनके जुल्मोसे बचे रहते है। वे अिसी कोशिशमे लगे रहते है कि अुनकी जमीन अधिक अुपजाअू कैसे बने।

खेती नहरोसे बहुत समृद्ध होती है। परन्तु अिस पहाडी देशमे नहरोका अुपयोग नही हो सकता। अिसलिअे वहाकी सरकार किसानोको यह लाभ नही दे सकती। फिर भी अिसके अलावा दूसरे बहुत लाभ वह किसानोको पहुचाती है। किसानोको अच्छा बीज प्राप्त करनेमें कअी सुविधाअे देती है। खेती-विभाग लोगोका रुपया बरबाद करके निष्फल प्रयोग नही किया करता। परन्तु सालमें अेक दो बार खेती-बाडीका प्रदर्शन करके किसानोका अुत्साह बढाता है। अुनको आर्थिक सहायता देता है। यह तो खेती-विभागकी तरफसे मिलनेवाली मदद हुअी। अब यह देखे कि किसानोको अप्रत्यक्ष रूपसे और कितनी सहायता मिलती है।

जो फसल दक्षिण अफ्रीकामे पैदा हो सकती है वह सरकार वहाके किसानोसे पैदा कराती है। अैसी पैदावार विदेशोसे आकर देशकी पैदावारसे स्पर्धा न करे, अिसके लिअे सरकार विदेशी माल पर जकात लगाती है। वह जकात कितनी लगाअी जाती है, अिसके अुदाहरण मैं नीचे देता हू।

जो तम्बाकू वहा पैदा होने लगी, वह बिलकुल हलकी किस्मकी थी। फिर भी सरकारने अुस मालका स्वागत किया। आम तौर पर अिस तम्बाकूका बाजार-भाव चार या पाच पेनी फी रतल होगा। परन्तु विदेशी तम्बाकू वहा जाय तो अुस पर जकात ही फी रतल पाच शिलिंग ली जाती है। अिसलिअे बाहरकी तम्बाकू वहा किसी भी तरह नही पुसाती।

वहा जो गन्ना होता है अुसकी शक्कर बनती है। आम तौर पर अुस शक्करका भाव सौ रतलकी बोरीका आठसे दस शिलिंग होता है। अुसकी स्पर्धामे मोरीशसकी शक्कर आ सकती है। परन्तु बाहरकी शक्कर दक्षिण अफ्रीकाके बन्दरगाहमे घुसते ही अुस पर अितनी अधिक जकात लगाअी जाती है कि वह बीससे बाअिस शिलिंगकी सौ रतल पडती है। अिसलिअे दस-पाच वर्षमे कभी बरसातकी भारी कमीके कारण वहा गन्नेकी फसल न हो, तो ही विदेशी शक्कर अन्दर आ सकती है। अिस प्रकार खेतीकी हर पैदावारका सरकार विदेशी पैदावारसे संरक्षण करती है। वहा रेलवे सरकारकी है।

अुसके जरिये भी वहाकी पैदावारको बहुत प्रोत्साहन मिलता है। रेलवे रसीद पर माल भेजनेवाला यह प्रमाणपत्र दे कि अुसका माल दक्षिण अफ्रीकामे पैदा हुआ है, तो मालके रेलभाडेमे असाधारण फर्क पड जाता है। अुदाहरणके लिअे चावलकी दो सौ रतलकी बोरी डरबन स्टेशनसे बावन मील दूरके किसी स्टेशनको भेजनी हो, तो अुसका रेल-भाडा दो शिलिंग होता है। परन्तु मक्काकी दो सौ रतलकी बोरी जोहानिसबर्गसे चार सौ मील दूरके स्टेशनको भेजनी हो तो अुसका भाडा आठ पैस होता है। अिस भारी फर्कका कारण सिर्फ यही है कि चावल विदेशकी पैदावार है। चावल देशमे पैदा नही होता, अिसलिअे मजबूर होकर बाहरसे मगाना पडता है, परन्तु बन्दरगाहकी जकात और भारी रेल-भाडा लगाकर देशमे पैदा होनेवाले दूसरे अनाजका सरकार सरक्षण करती है। केप कालोनीमे बढिया अगूर ढेरो पैदा होते है। जोहानिस-बर्गमे अुसके लिअे अच्छा बाजार है। अिसलिअे रेलवे अुन अगूरोको अितने थोडे भाडेमे जोहानिसबर्ग ले जाती है कि केप टाअुनमे और चार सौ मील दूर जोहानिसबर्गमे वे अेक ही भाव बिकते है। ये सब बाते दक्षिण अफ्रीका कर सकता है, क्योकि वहा स्वराज्य है। स्वराज्य हरअेक दु खकी रामबाण दवा है।

५

दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी — १

अिंग्लैण्डके साहसी लोग नेटालमे आये और बस गये। अुन्होने देखा कि नेटालकी भूमिमे अनेक प्रकारकी फसलें पैदा हो सकती है। परन्तु जमीनमे जगल बहुत है। अुसे साफ करना चाहिये। अिसी तरह जमीनको तोडना चाहिये और फसले पैदा करनी चाहिये। यह अेक हाथसे नही हो सकता था। आकर बसनेवाले लोगोको थोडी-सी जमीनके मालिक बननेसे सतोष नही हो सकता था। अुन्हे तो जमीनके बडे बडे फार्म चाहिये थे। परन्तु अुनमें मजदूरी कौन करे? खेतीके काममे तो स्थिरतासे सख्त मेहनत करनेवाले चाहिये। दक्षिणी अफ्रीकाके जूलू लोग स्थिरतासे काम कर सकनेवाले साबित नही हुअे। जब तक गुलामीका कानून मौजूद था तब तक कानूनके जोरसे गोरे जरूरी काम जूलू मजदूरोसे जबरन करा लेते थे। परन्तु गुलामीका कानून रद होने पर जूलू मजदूरोने

स्थिरतासे काम नही दिया। अिसलिअे गोरे निवासियोने वडी सरकारके मारफत चीनसे मजदूर जुटानेका प्रवन्ध किया। परन्तु थोडे ही समयमे अुन्होने देखा कि ये मजदूर जमकर काम नही कर सकते, अिसलिअे अुन्हे वापस भेज दिया। अव अुनकी नजर हिन्दुस्तानकी तरफ गअी। हिन्दुस्तानके लोग खेती करनेवाले ठहरे और गरीव मजदूर खेती जानते ही है। हिन्दुस्तानसे काफी मजदूर मिल भी सकते थे। अिसलिअे नेटालका अेक शिष्ट-मडल भारत-सरकारके पास हिन्दुस्तान आया। अुसने भारत-सरकारके साथ सलाह-मशविरा करके यहासे गिरमिटिया* मजदूर जुटानेके लिअे वाकायदा महकमा खोलनेकी भारत-सरकारसे मजूरी ले ली। मजूरी देने और लेनेवाले मौसेरे भाअी ठहरे, अिसलिअे भारत सरकार अिनकार तो क्यो करने लगी? अैसी शर्तें तय हुअी जो नेटालके जमीदारोके अनुकूल हो। नेटालमे जो हिन्दुस्तानी मजदूर जाते, अुनकी रक्षा करनेवाला अेक विभाग सन् १८६० मे खोला गया। अुसके मुखियाको 'प्रोटेक्टर ऑफ् अिडियन अिडेन्चर्ड लेवरर्स'–हिन्दुस्तानी गिरमिटिया मजदूरोका रक्षक कहा गया। अिस विभागका खर्च नेटालका कृपि-विभाग अुठाता था और रक्षककी नियुक्ति भी वही करता था। अिसलिअे अिन गरीव अर्ध-गुलामीकी हालतमे गये हुअे हिन्दुस्तानी मजदूरोका कैसा रक्षण होता होगा, अिसका अन्दाज हम आसानीसे लगा सकते है। अिन गिरमिटिया मजदूरोका अेक कानून वनाया गया।

नेटालके जमीदारोके अेजेट हिन्दुस्तानमे मजदूर अिकट्ठा करते थे। हिन्दुस्तानके वडे शहरोमे अिन मजदूरोकी भरती करनेके दफ्तर खोले गये। अिन दफ्तरोकी तरफसे नियुक्त किये गये अेजेट घूमते ही रहते थे। मेलोमे, रेलगाडियोमे या शहरोमे भूखके मारे मजदूरी या धधा खोजनेवाले स्त्री-पुरुपोसे मुलाकात हो जाने पर अेजेट अुनसे खोद-खोद कर पूछते, अुनके मनकी वात निकलवाते और फिर लालच देते "तुम्हे रुपया कमाना हो तो नेटालमे अच्छा मौका है। वहा सोनेकी खाने है। अुनमे काम करनेको मिलेगा, मजदूरी भी सोनेके सिक्केमे ही मिलेगी। सोनेके पासे भी मिलेगे। गन्नेके खेतोमे वहाके जगली लोग काम करते है, अुन पर देखरेख रखनी

---

* मजदूरोके लिअे जो अिकरार-नामा करना पडता है, अुसे अग्रेजीमें 'अेग्रीमेट' कहते है। अिस 'अेग्रीमेट'का हिन्दी अपभ्रश 'गिरमिट' हो गया। अिस तरह 'गिरमिट' करके जानेवाले हिन्दुस्तानी मजदूर 'गिरमिटिया' कहलाये।

होती है। वहा अितना ज्यादा वेतन मिलता है कि दो-चार वरसमे तो रुपयोकी दो-चार थैलिया लेकर स्वदेश भी लौट सकते है। लौटते समय या वहा जाते समय तुम्हे अेक पाअी भी खर्च नही करनी होगी।" वगैरा लालच देकर वे अनेक युवक-युवतियोको तैयार करते थे और खुद मानो अुनकी मदद करनेवाले और रास्ता वतानेवाले कोअी हितैषी हो अिस तरह परोपकारी फरिश्ते वनकर भोले-भाले लोगोको वडे शहरोके अिस विभागके भर्ती-केन्द्रोमे ले जाते थे। वहा अुनकी आव-भगत जरा अच्छी होती थी। थोडे मजदूर अिकट्ठे हो जाते तो अुन्हे मजिस्ट्रेटके पास ले जाते थे। मजिस्ट्रेटके सामने अिकाराररनामे पर अुनके अगूठेकी निशानिया ली जाती थी। वस, मामला खतम। वहासे अुन्हे वन्दरगाहके मुख्य स्थान पर ले जाया जाता था। वहा अुस अेजेटका मुह भी नही दिखाअी देता था। वह स्थान मानो कैदखाना होता था। वहासे अिन मजदूरोकी वुरी दशा शुरू होती। वहा अुन्हे अपनी सच्ची हालतकी कुछ कल्पना होने लगती थी। परन्तु किससे कहे? कौन सुने? अिस तरह दो-चार दिन वीतते कि तुरन्त नेटाल जानेवाले जहाज पर अुन्हें सवार करा दिया जाता। जहाज पर अुन पर क्या क्या वीतती होगी, अिसकी तो कल्पना ही की जा सकती है। नेटालके डरवन वन्दरगाह पर अुतरनेके वाद अिमीग्रेशन-वोर्ड अुन मजदूरोको जमीदारोमें वाट देता था। पाच सौ में तीन सौ पुरुष और दो सौ स्त्रिया होती थी अुनमे कुछ विवाहित जोडे होते थे। वाकीके लोगोको अलग अलग मालिकोमे वाट दिया जाता था। जिसकी जैसी तकदीर। हिन्दुस्तानी स्त्रिया विपत्तिके मारे अिस लालचमे फस जाती थी, परन्तु नेटाल पहुचनेके वाद कहा जाती? अेक महीनेकी महासागरकी यात्रा करनेके वाद तो जहाजसे अुतरती थी, अव वापस कव जायें? वापस लौटकर भी कहा जाये? कहा जात-पात, कहा समाज और कहा सगे-सम्वन्धी? सवमे विछुडी हुअी, हजारो मील दूर भिन्न वातावरणमें, भिन्न सस्कारोमें और भिन्न परिस्थितियोमे आ फसी हो, तव अुनके लिअे अेक ही रास्ता रह जाता था। वह यह कि परिस्थितिके अनुकूल वनकर रहे। और वे वहने अैसा ही करती थी। अपनी नअी दुनिया और नया ससार वे वसाती थी। कोअी ब्राह्मणकी लडकी चमारके साथ, कोअी वनियेकी वेटी मीनेके साथ, कोअी कोलीकी लडकी ब्राह्मणके साथ, अिस तरह अुनका ससार वसता था।

जिस तरहके जोडोको और दूसरे अकेले पुरुषोको नेटालके जगलोमे, जहा अुनके लिअे झोपडे वनाये जाते थे ले जाया जाता था। वहाके अुनके दुखडोका

वर्णन कौन कर सकता है? वर्णन करनेकी शक्ति हो तो दुखडे भोगनेवाला ही कर सकता है। स्त्री-पुरुष सुबहसे शाम तक ग्यारह-बारह घंटे सख्त मेहनत करते थे। सख्त गर्मीमे या बरसातकी झडियोमे गोरे मुनीमोके कोडोकी मारके डरसे मनसे या बेमनसे, हो सके या न हो सके, मजबूरन अुन्हे मजदूरी करनी पडती थी। और अिसके बदलेमे अुन्हे मिलता क्या था? हर हफ्ते पाच सेर मक्कीका आटा और हर महीने दस शिलिंग वेतन। शिकायत किसी भी हालतमे नही हो सकती थी। मजदूरोमे से ही कोअी थोडा बुद्धिशाली पर साथ ही स्वार्थी और चालाक होता, तो अुसे जमादार बना देते थे। अैसे जमादारोकी मददसे सैकडो मजदूरोको काबूमे रखा जाता था। हिन्दुस्तानमे जैसे कैदियोसे ही जेल चलते है, वैसे वहा भी अिस तरहके स्वार्थी और बदमाश मजदूरोको जमादार बनाकर अुनके जरिये, और जरूरत पडने पर खुद जुल्म करके, मालिक अुनसे बहुत ज्यादा काम लेते थे। कितना ही जुल्म क्यो न हो, परन्तु जुल्म करनेवालेकी अिजाजतके बिना मजदूर बस्तीकी हद छोडकर अदालतमें भी शिकायत करने नही जा सकते थे। अिजाजतकी चिट्ठीके बगैर कोअी चला जाय तो अुसे बिना किरायेकी कोठरीमें बैठना पडता था। अैसी गुलामीकी दशामें अुन्हे अपना जीवन बिताना पडता था। अिस प्रकार लगभग तीस-बत्तीस बरस बीत गये। अिस बीच हिन्दुस्तानियोकी आबादी भी बढ गअी। गिरमिटके नियमानुसार पाच बरस सुख-दुख अुठाकर पूरे करने पडते थे। अुसके बाद वे मजदूर वापस गिरमिटमे चले जाते तब तो कोअी हर्ज नही था, लेकिन सभी तो फिरसे गिरमिटमे जाते नही थे। कितने ही स्वतंत्र किसानके रूपमे रहते थे। और बुद्धिशाली हिन्दुस्तानी किसान खुशहाल हो, यह गोरोकी आखमें खटकता था। अिसलिअे पहले तो अुन्होने यह आन्दोलन करना शुरू किया कि गिरमिटिया हिन्दुस्तानियोके पाच बरस पूरे हो जाय और वे दूसरा गिरमिट न लिख दे, तो अुन्हे तुरन्त हिन्दुस्तान वापस चला जाना चाहिये। परन्तु अिकरारनामेकी शर्तोके अनुसार अैसा नही हो सकता था, क्योकि यह भारत-सरकारके साथ हुअे हिन्दुस्तानी मजदूरो-सम्बन्धी अुनके अिकरारनामेके विरुद्ध था। अिसलिअे अुन्हे वापस भेज देनेकी अुनकी कोशिश बेकार साबित हुअी। परन्तु नेटालकी धारासभामें वहाकी सरकारने अैसा कानून पास किया कि गिरमिट पूरी करनेके बाद जो गिरमिटिया हिन्दुस्तानी अपने देश वापस न जाकर नेटालमें स्वतंत्र रहना चाहे अुन्हे हर साल पच्चीस पौड यानी तीनसौ

पचहत्तर रुपया मुड-कर देना होगा। यानी अेक कुटुम्बमे स्त्री-पुरुष दो हो तो दोनोको मिलाकर ७५० रु० हरसाल मुड-करके रूपमे सरकारको देना चाहिये। अितना भारी कर कोअी हिन्दुस्तानी नही दे सकता था। अिसलिअे हिन्दुस्तान वापस जानेके सिवा अुनके लिअे और कोअी चारा न रहता। लेकिन अैसा कानून बनानेमे अुनके लिअे भारत सरकारकी मजूरी लेना जरूरी थी। अुस वक्तके वाअिसरायने अिस भारी करकी मजूरी नही दी। अन्तमे समझौतेकी बातचीत होकर तीन पौण्ड मुण्ड-कर लगाया गया। यह कर सन् १८९४ मे लगा। अिसके बुरे परिणाम और अिससे भोगनी पडती पीडा गिरमिट-मुक्त हिन्दुस्तानी मजदूरोके लिअे असह्य थी। यह कर न दे सकनेके कारण अैसे सैकडो हिन्दुस्तानियोको जेलमे रहना पडता था। सैकडो वापस गिरमिटमे चले जाते थे। सत्तर-अस्सी बरसकी कितनी ही बढिया मजदूरी करके कर देने लायक रकम पैदा न कर सकनेके कारण बुढापेमे जेलमे सडा करती थी और कितनी ही बहने अैसा भयकर कर चुकानेके पैसे जुटानेके लिअे अपनी लाज लुटवाती थी। जब यह कर लगाया गया, तब गाधीजी डरबनमे रहते थे। अुन्होने यह कर न लगानेकी सरकारसे बहुत विनती की, परन्तु सब व्यर्थ गअी।

अिस प्रकार गिरमिटिया हिन्दुस्तानी गिरमिटसे छूटकर तीन पौण्डका कर देकर भी स्वतत्र होकर रहे। अैसे स्वतत्र हिन्दुस्तानियोकी सख्या दिनोदिन बढती गअी। अुनमें से कुछ अीसाअी भी हो गये और अुनके बच्चे मिशन स्कूलोमे मिलनेवाली शिक्षा लेने लगे।

६

दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी — २

पिछले प्रकरणमे हमने देखा कि हिन्दुस्तानी मजदूरोको दक्षिण अफ्रीकामे किस तरह ले जाया जाता था। अब हमे यह देखना है कि हिन्दुस्तानी व्यापारी और दूसरे लोग वहा कैसे गये। हिन्दुस्तानी मजदूरोकी आबादी होने पर वहा हिन्दुस्तानी व्यापारियोकी भी जरूरत जान पडी। शुरूमे तो हिन्दुस्तानी व्यापारियोको निमत्रण दिया गया। लगभग अुसी सालमे बम्बअीसे कुछ मुसलमान व्यापारी वहा गये। सूरतकी तरफके और काठियावाडके मुसलमान व्यापारी वहा जाकर बस गये और अुन्होने व्यापार करना शुरू किया।

अुनके पीछे धीरे धीरे दूसरे व्यापारी भी गये। जो व्यापारी शुरूमे गये, वे साहसी तो थे परन्तु अपढ थे। अिसलिअे अुन्हें अग्रेजी पढे-लिखे वावुओकी जरूरत पडी। अिस प्रकार अग्रेजी पढे-लिखे वावू भी वहा पहुचे। अुत्तर हिन्दुस्तानके और मद्रासकी तरफके गिरमिटिया मजदूरोको कलकतिया और मद्रासी कहा जाता और व्यापारियो तथा वावुओको वम्वैया कहा जाता था। गोरे लोग अिन सवको 'कुली' मानते। गिरमिटियोमे भी वडा हिस्सा मद्रासकी तरफका था। मद्रासी नामके अन्तमे 'स्वामी' आता, अिसलिअे गोरे सभी हिन्दुस्तानियोको 'कुली' के अर्थमें 'स्वामी' के अपमानभरे सवोधनसे पुकारते थे। यह अपमान रुपया कमानेका हेतु रखनेवाले व्यापारियोको वहुत नही खटकता था। परन्तु धीरे धीरे अुन्हे भी अपने स्वाभिमानका भान हुआ। सन् १८९३ मे गाधीजी वहा गये, तव तक वहुतसे व्यापारी वहा जम चुके थे, अपनी जायदादे भी अुन्होने खडी कर ली थी और धीरे-धीरे गोरे व्यापारियोसे व्यापारमे वे स्पर्धा भी करने लगे थे। अपने मिलनसार, अुद्योगी और मितव्ययी स्वभावके कारण हिन्दुस्तानी व्यापारी वहाके गरीव गोरे लोगोमे और वहाकी जूलू जातिमे भी गोरे व्यापारियोसे ज्यादा प्रिय वन गये। जैसा अुनका सादा किफायती जीवन, वैसा ही अुनके व्यापारमे खर्चका वोझ भी कम था। अिसलिअे हिन्दुस्तानियो और जूलू जातिके साथका व्यापार तो खास तौर पर हिन्दुस्तानी व्यापारियोके हाथमे ही रहा।

अेक और महत्त्वकी वात यहा कह देनी चाहिये। जो हिन्दुस्तानी मजदूर गिरमिटसे मुक्त हुअे, अुन्होने जमीनके छोटे छोटे टुकडे लेकर फल-फूलकी वाडिया लगा ली। नतीजा यह हुआ कि अव सारे नेटालमे फलोके वगीचे ही हिन्दुस्तानियोकी सम्पत्ति नही है, वल्कि नेटाल और ट्रान्सवालमे फलोका व्यापार भी हिन्दुस्तानियोके हाथमें है।

अिस तरह जैसे जैसे हिन्दुस्तानी लोग स्थिर वनकर सादे और अुद्योगी जीवनमे सम्पन्न होते गये, वैसे वैसे अुनके प्रति गोरोका द्वेपभाव वढता गया। शुरूमे हिन्दुस्तानियोको काले, मैले, गदे, केवल कुलीका धधा करनेवाले और लगभग जगली मानकर गोरोने अुनके साथ तिरस्कार और अपमानका व्यवहार किया। परन्तु अव तो अुन्हे यह डर लगने लगा कि ये लोग अुनकी रोटीमे हिस्सा वटायेगे। अेक वात तो माननी पडेगी कि हमारा स्वच्छताका मापदड वहुत नीचा था। गाधीजीके वहा जानेके वाद जो साधन-सपन्न हिन्दुस्तानी थे,

अुनका स्वच्छताका स्तर बदला। परन्तु यह परिवर्तन अिने-गिने साधन-संपन्न लोगोंमें ही हुआ। हमारी हमेशाकी आदतें तो बहुत बेढंगी ठहरीं। हम कपड़े साफ नहीं रखते, हमारे घरोंका आंगन या भीतरका भाग गंदा और अव्यवस्थित होता है, हमारा रसोअीघर गंदगीसे भरा होता है। पाखानेकी तो बात ही नहीं की जा सकती, वह तो नरक जैसा ही होता है। हमारी ये सब आदतें अक्षम्य हैं। हम ढोंग तो यह करते हैं कि हम धार्मिक हैं, श्रद्धालु हैं, परन्तु धर्मके मुख्य अंग स्वच्छता और पवित्रताको हमने भुला दिया है। अिसलिअे विदेशी लोग हमारी बहुत निंदा करते हैं और हम अपमानित होकर अुसे सुनते आये हैं।

हमारी दूसरी बुरी आदतें तो बहुत हैं। अुन्हें यहां लिखनेकी जरूरत नहीं। परन्तु दक्षिण अफ्रीकामें गोरी जातिकी नजरमें आअी हुअी हमारी गंदगीके बारेमें लिखनेकी जरूरत जान पड़ी, अिसलिअे लिखना पड़ा। अिसके सिवा जो भाअी गिरमिटियाके रूपमें वहां बस गअे अुनका नैतिक अधःपतन भी बहुत हो गया था। मनुष्य जब गुलाम हो जाता है, तब अुसमें कौनसा गुण रह पाता है? अेक भी नहीं। सद्‌गुण और सद्‌व्यवहारको रहनेके लिअे योग्य स्थान तो चाहिये न? स्वतंत्रता ही अेक अैसा अुचित स्थान है, जहां सब सद्‌गुणोंका समूह निवास कर सकता है। जिस हद तक सद्‌व्यवहारमें त्रुटि होती है, अुसी हद तक स्वतंत्र जीवनमें त्रुटि रहती है। हिन्दुस्तानी गिरमिटियोंमें अुनकी गुलामीकी अवस्थामें अनेक दुर्गुण घर कर बैठे थे, जिनमें व्यभिचार करना, शराब पीकर पागल हो जाना और झगड़े-फसाद करना मुख्य थे। अिसलिअे वहांकी अदालतोंमें गोरों या जूलूओंसे हिन्दुस्तानी अपराधी अधिक होते थे। लेकिन जो गिरमिटिये मजदूर न रहकर स्वतंत्र हो जाते और स्वतंत्र वातावरणमें अपनी जमीन पर स्वतंत्र किसानकी हैसियतसे काम करने लगते, अुनका सारा जीवन बदल जाता था। आजकल नेटाल या ट्रान्सवालका बड़ा हिस्सा अैसे ही स्वतंत्र हिन्दुस्तानियोंसे बसा हुआ है।

अिन हिन्दुस्तानियोंके बारेमें भी थोड़ा परिचय कर लेना चाहिये। जो गिरमिटमें गये थे, अुन्होंने तो अपने वतनमें लौटनेकी आशा छोड़ दी थी। अिसलिअे अुनकी तो जन्मभूमि ही मानो दक्षिण अफ्रीका हो गअी। जो व्यापारके लिअे गये हैं, अुनकी नजर हिन्दुस्तानकी तरफ ही रहती है। संतोषके लायक रुपया पैदा करके देशकी ओर कब लौटें यही अुनकी दृष्टि होती है। जो मुसलमान

व्यापारी जायदादे बनाकर वहा बस गये है, वे अब वहा आपसमे शादी-व्याह करने लगे है। परन्तु अैसा वे रुपयेकी बचत और दूसरी सुविधाओका लाभ अुठानेके लिअे ही करते है। जो गिरमिटमे गये वे वहा वतन बनाकर रह गये, अिसलिअे अुनकी आबादी बढी। धीरे-धीरे वे कुछ शिक्षा भी प्राप्त करने लगे। अिसलिअे वे वहीके बाशिन्दो जैसे हो गये। अुनमे से जो वहा पैदा हुअे वे 'कोलोनियल बार्न' (अुपनिवेशमें जनमे हुअे) कहलाते है। वे तो गोरे लोगोकी स्पर्धा करनेकी अुम्मीद रखते है। पुरुषोकी पोशाक और रहन-सहन तो लगभग गोरो जैसे ही हो गअी है। परन्तु अुनकी स्त्रियोने अुन्हे आगे बढनेसे रोक दिया है। स्त्रिया चाहे अीसाअी बन गअी हो या हिन्दू रही हो, अुन्होने अपनी पोशाक, रीति-रिवाज और धर्म-वृत्तिको नही छोडा है। और अिसलिअे ये कोलोनियल बार्न युवक जब घर जाते है और अपनी मा, बहन और पत्नीको देखते है तभी अुन्हे पता चलता होगा कि वे हिन्दुस्तानी नौजवान है। बैरिस्टर जोसेफ रॉयपन मिस्टर लाज़रस, मिस्टर क्रिस्टोफर, वीर सत्याग्रही थभी नायडू और पी के नायडू वगैरा सभी कालोनियन बार्नकी गिनतीमें आ जाते है। अिनमे से अधिकाश लोग सरकारी अदालतोमे, गोरे वकीलोके यहा या व्यापारियोके यहा मुशी-गिरी करते है। कुछ भाग स्वतत्र खेती और व्यापारमे लगा हुआ है।

७

दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी — ३

दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोके बारेमे कुछ विस्तारसे लिखनेको जी चाहता है। गोरे व्यापारी हिन्दुस्तानियोके विरुद्ध जो जिहाद पुकार रहे है, अुसका मुख्य कारण जीवनकी स्पर्धा है। हिन्दुस्तानियोका रहन-सहन बहुत ही सादा और किफायती होनेके कारण अुनके जीवनका बोझ भी हलका होता है। छोटे-मोटे व्यापारमे दस-पन्द्रह फी सदी नफेमे अुनका काम चल जाता है। अिससे अुलटे, गोरे व्यापारियोको किसी भी चीजकी लागत कीमत पर ३०% से कम नफा लेना पुसा नही सकता। अिस कारण हिन्दुस्तानी और जूलू स्त्री-पुरुष गोरे व्यापारियोकी दुकान पर भूले-भटके भी नही जाते। अिसके सिवा गोरोमे जो गरीब होते है वे भी हिन्दुस्तानी दुकानो पर ही खरीदारी करने जाते है, क्योकि

अुनको यह अनुभव होता है कि हिन्दुस्तानी दुकान पर यूरोपीय दुकानमे हर चीज वहुत सस्ती मिलती है। जो वात व्यापारकी है वही कारीगरीकी, मजदूरी की और छोटी-छोटी रोजकी फेरियोकी है। सुवह-सुवह सागभाजी या फल वेचने वाले गोरें गोरोके मुहल्लेमे जाते है तो स्त्रिया अुन्हे नम्रतासे सूचना देती है कि आअिदा सागभाजी या फल वेचने न आना। क्योकि अेक तो अुन्हे महगा माल लेना पडता है ओर दूसरे सुवह-सुवह विस्तरसे अुठते ही सागभाजी या फल लेने जाते समय गोरे फेरीवालेके पास पहने हुअे कपडे ठीक-ठाक करके मर्यादाके साथ जाना पडता है, जव कि हिन्दुस्तानी फेरीवालेके पास तो वे कैसी भी अव्य-वस्थित हालतमे जा सकती है, क्योकि अुन्हे तो अुन लोगोने मजदूर मान रखा है। मजदूर या घरके नौकर-चाकरोके सामने मर्यादा न रखी जाय, तो भी काम चल सकता है। अिस कारणसे गोरे फेरीवाले वेकार हो गये और अखवारोमें हमेशा अुनकी शिकायत रहने लगी। अिस प्रकार सभी दिशाओमे जीवनकी स्पर्धाके कारण गोरोमें हिन्दुस्तानियोके लिअे अीर्ष्या पैदा हो गअी। दूसरी तरफ, हमारे स्वाभिमानरहित व्यवहारके कारण हमारे प्रति तिरस्कार भी पैदा हुआ।

और जैसा पहले कहा जा चुका है, स्त्रियोके लिअे वहुत झगडे होते थे। यहासे होनेवाली मजदूरोकी भरतीमे ही स्त्रियोकी सख्या पुरुपोसे वहुत कम होती थी, अिसलिअे स्त्रियोके स्वामित्वके लिअे हर जगह झगडे-टटे होते ही रहते थे। वहाकी फौजदारी अदालते और वकीलोके दफ्तर हिन्दुस्तानी मज-दूरोसे ही भरे रहते थे। अिस कारणसे गोरोकी और जूलूओकी नजरमे हिन्दु-स्तानियोकी रीत-नीति वहुत ही नीचे दर्जेकी मानी जाने लगी। हिन्दुस्तानी गिरमिटियो या स्वतत्र मजदूरोका गृहस्थ-जीवन भी अधिकतर क्लेशमय था। फिनिक्समे अेक वुढिया वार-वार हमारे पास आया करती थी। अुसका शरीर भरा हुआ और चेहरा तेजस्वी था, वोलनेमें वह मीठी और विवेकपूर्ण थी। महज ही जाना जा सकता था कि यह स्त्री किसी अच्छे घरानेकी होगी। वातचीतमे हमें मालूम हुआ कि वह अुच्च ब्राह्मण कुलकी थी। हिन्दुस्तानमें मजदूरोकी भरती करनेवाले दलालोके हाथो पड गअी थी और मजदूरोके जहाजमें वहा जा पहुची थी। अेक वार पहुच जानेके वाद कहा जाय? अेक चमार मजदूरके साथ अुसने अुम्र गुजारी। स्वभाव, सस्कार और आचार-विचारमें निरतर असमानताके कारण, सदा क्लेश रहनेके कारण सारा जीवन कष्टमय वन

गया। अिस तरह गिरमिटमे गये हुअे अनेक स्त्री-पुरुषोका गृहस्थ-जीवन दु खमय साबित हुआ। अैसे दु खी गृहस्थोकी सन्तानके बारेमे अच्छी आशा किस तरह रखी जा सकती है ?

अिसके सिवा, बच्चोको शिक्षा और अच्छे सस्कार मिलते तो अुनके जीवन अुन्नत हो सकते थे। लेकिन अैसी सुविधा भी दक्षिण अफ्रीकामें कही नही थी। वहा हिन्दुस्तानियोकी आबादी लगभग डेढ लाख थी। फिर भी सरकारकी ओरसे अुनकी शिक्षाके लिअे कोअी व्यवस्था नही की गअी थी। अेक भी प्रारभिक या माध्यमिक शाला सरकारकी ओरसे नही खोली गअी थी। देशसे गये हुअे किसी-किसी अग्रेजी पढे-लिखेने घन्धेके लिअे शिक्षण-वर्ग खोले थे। परन्तु अुनमें तो अुन्ही लोगोके बच्चे जा सकते थे, जिनमे वर्गोकी बडी फीस देनेकी शक्ति हो। गरीबोके बच्चे तो जा ही नही सकते थे। अिन कारणोसे हिन्दुस्तानियोको वहा बसे लगभग सौ वर्षका अरसा बीत जाने पर भी वे शिक्षामें बहुत ज्यादा पिछडे हुअे है।

धर्मके मामलेमें तो हिन्दुस्तानी बहुत ही पिछडे हुअे थे। वहा जो मजदूर गये, वे यहासे अपने साथ भूत-प्रेत, माता और जादू-टोनोका ससार ले गये और सारी रात ढोल-नगाडे बजाते रहते और ओझोको घुमाते रहते थे। शराब पीनेकी भी कोअी हद नही रहती। अिस प्रकार हिन्दुस्तानी मजदूरोका जीवन तो बिलकुल अधोगतिको पहुचा हुआ कहा जा सकता है। अेसी हालतमे अीसाअी पादरियोको मौका मिला और मद्रासी मजदूरोमे अीसाअी धर्मका प्रचार हुआ। कलकत्तेकी तरफके यानी अुत्तर हिन्दुस्तानी मजदूर हिन्दू धर्म पर टिके रहे। अुनमें से शायद ही कोअी अीसाअी बना होगा। अितनेमे आर्यसमाजके कुछ अुपदेशक भी वहा जा पहुचे और अुन्होने अपने केन्द्र स्थापित कर दिये।

आर्थिक स्थितिमें जो वहा टिके रहे, वे जम गये। गुजराती हिन्दू वहा बहुत नही जमे, क्योकि अुन्हे बार-बार लडके-लडकियोकी शादी करने, बापका बारहवा करने या स्त्रीकी सीमन्त-विधि पूरी करनेके लिअे देशमे आना पडता था। अिससे केवल अुनकी कमाअीकी धारा ही नही टूट जाती थी, बल्कि अुसमें कमी भी हो जाती थी। अिसलिअे अुनमे से बहुत कम लोग वहा जायदादें बना सके। दूसरी ओर, मुसलमान व्यापारी पहले ही से गये थे और अच्छी सख्या मे थे । अिसके सिवा अुनके पीछे जाति-पाति या बाडाबन्दीका झगडा भी नही था। अिसलिअे शादी-ब्याह भी वे लोग वही करने लग गये। अुन्होने देशकी

तरफ दृष्टि कम रखी और अिसलिअे वहां बडी जायदादें बना ली। अिस प्रकार हिन्दुस्तानियोंमें मुसलमान व्यापारी वहां काफी अच्छी तरह जम गये।

परन्तु हिन्दू हो या मुसलमान सभी वहां 'कुली' माने जाते थे। अुनके लिअे वहां कोअी सार्वजनिक स्थान नहीं था। अुनके करसे बनाये गये सार्वजनिक विश्राम-स्थानोंमें, बाग-बगीचोंमें, नाटक-सिनेमामें, या सभा-सम्मेलनोंमें हिन्दुस्तानियोंके लिअे कोअी जगह न थी। समुद्रतट पर जो चौपाटी बनाअी गअी, वहां कुदरती हवाका लाभ लेने जितना अधिकार भी हिन्दुस्तानियोंको न था। गोरे सेठका पानी भरने और अींधन जुटानेवाले मजदूरके रूपमें हिन्दुस्तानी भले वहां जीवन बितायें, परन्तु स्वतंत्र नागरिकके रूपमें लाभ अुठानेवाला जीवन बितायें तो वहांके गोरोंसे सहन नहीं होता था। अिसलिअे हम अछूत, अस्पृश्य, जंगली और निर्धन लोग माने गये। अैसे लोगोंकी परछाअीं पडने पर भी अुन्हें शर्म आती। अैसे हम हिन्दुस्तानियोंके 'लोकेशन' यानी ढेडवाडे भी अलग ही होते थे। अुनकी हदके बाहर हम रह नहीं सकते थे। हमारे हरिजन भाअी-बहनोंको अस्पृश्य समझनेवाले अुच्च वर्णके ब्राह्मणोंकी दशा भी वहां हरिजनोंसे गअी-बीती है।

अिस प्रकरणमें दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके सामाजिक जीवनकी रूपरेखा हमने प्रस्तुत की। अब अुनकी मुसीबतोंकी ओर नजर डालें।

८

हिन्दुस्तानियोंकी मुसीबतें

अिस प्रकरणका नाम 'हिन्दुस्तानियोंकी मुसीबतें' अिसीलिअे रखा है कि अुसे पढकर हम देख सकेंगे कि बस्तीमें हर जगह धुतकारे जानेवाले कुत्तों या आवारा ढोरों जैसी दशा दक्षिण अफ्रीकामें हिन्दुस्तानियोंकी थी और अब भी कुछ हद तक वैसी ही है। आज भी वहांके गोरोंके दिमागमें हिन्दुस्तानियोंके प्रति 'डेम कुली' की भावना मिटी नहीं है। अिसका कारण भी है हम स्वाभिमानी प्रजा न बने। हिन्दुस्तानमें अभी तक हम परतंत्र है, गुलाम प्रजा हैं। और जब तक हम बिलकुल निर्मल नहीं बन जाते, तब तक दक्षिण अफ्रीकामें

वमनेवाला हमारा अेक अग कितना ही खुशहाल हो तो भी हमारी मलिनताके छीटे अुस पर जरूर अुडेंगे। वहाकी गोरी जनता हिन्दुस्तानकी पैंतीम करोड जनताकी गुलामीके खयालसे भी वहाके हमारे मुट्ठी भर भाअी-वहन कितने ही वहादुर क्यो न हो तो भी अुनको कुछ नही ममझेगी। नेटालमें गोरी जनताके हिन्दुस्तानियोके प्रति अभिमानपूर्ण अुद्धत व्यवहारमे और गिरमिटकी पद्धतिसे जो रगद्वेप पैदा हुआ, अुसके मिवा और कोअी रगभेदका कानून नही वनाया गया था। नेटालकी धारासभाने हिन्दुस्तानियोको वहा घुमनेमे रोकनेके लिअे रगभेदका कानून वनानेकी वहुत कोगिगें की थी। परन्तु अुम समयके प्रख्यात राजनीतिज्ञ मिस्टर चेम्वरलैनकी कोगिगमे वैसा कानून न वन पाया। परन्तु अेक दूसरा कानून सन् १८९७ में वनाया गया था। अिम कानूनके अनुसार नये आनेवालोको शिक्षाकी परीक्षा लेकर घुसने दिया जाता था। यह नही देखा जाता था कि आनेवाला किस जाति या रगका आदमी है। अिम प्रकार नेटालमें जातिभेद या रग-भेदके आधार पर कानून वनानेका सिद्धान्त अस्वीकार हुआ। परन्तु कानून द्वारा ममानता स्वीकार करनेका यह मिद्धान्त ट्रान्मवालमें नही माना गया। ट्रान्सवालमें नअी तकलीफोंके प्रथम चिह्न दिखाअी देने लगे। वहाके लोगोने काले लोगोके मामलेमें रग-भेदकी राजनीति अख्तियार की थी। अिस कुटिल राजनीतिको वोअर-युद्ध लडनेके अेक कारणके तौर पर सामने रखकर अग्रेज मरकार ट्रान्सवालके राज्यकर्ताओमे लडी। युद्धके वाद जव ट्रान्सवाल अग्रेजोके हाथमे आया, तव यह आशा रखी गअी थी कि अग्रेजोकी हिन्दुस्तानी प्रजाके दु खोका वोझ अव कुछ कम होगा। परन्तु युद्धमे पहले वडी मरकार जिम अत्याचारी कानूनके विरुद्ध जोरदार आक्षेप करती थी, वही अत्याचारी कानून वही वडी सरकार हिन्दुस्तानी लोगो पर लादनेको तैयार हो गअी। युद्ध शान्त होनेके वाद ट्रान्मवालमे वडी मरकारने 'पीम प्रिजर्वेशन आर्डिनेन्स' जारी किया और अुसके जरिये हिन्दुस्तानियोके ट्रान्मवालमें प्रवेश करने पर अकुश लगा दिया। ट्रान्मवालमें युद्धमे पहले हिन्दुस्तानियोकी क्या दशा थी और युद्धके वाद कैसी हो गअी, यह नीचेकी तुलनामे मालूम होगा, अुससे यह भी कल्पना आ जायगी कि वडी सरकारको अपनी हिन्दुस्तानी प्रजाके हितकी कितनी चिन्ता थी।

तुलना

वोअर राज्यमें	व्रिटिश राज्यमें
१ ट्रान्सवालके निवासीके रूपमे नाम लिखवानेकी कोओी भी फीस देना अनिवार्य नही था।	१ ट्रान्सवालके निवासीके रूपमें नाम लिखवानेकी ३ पाअुड फीस तय की गअी और न देने पर १० से १०० पाअुड तकका जुर्माना और चौदह दिनसे छह महीने तककी सजा तय की गअी।
२ व्यापार करनेके सरकारी परवाने लेनेमे ट्रान्सवालके किसी भी भागमे हिन्दुस्तानियोको कोओी अडचन नही होती थी। वहुतसे अुदाहरण अैसे होते थे कि सिर्फ परवानेकी फीसके रुपये जमा करा-कर व्यापार शुरू कर दिया जाता था। अिसमे कोओी कठिनाओी होती तो व्रिटिश सरकारके राजदूतकी तरफसे सरक्षण मिलता था।	२ जिन लोगोको युद्धसे पहले वोअर सरकारकी ओरसे व्यापार करनेके परवाने मिले थे वे ही पहलेकी जगहो पर व्यापार कर सकते थे। व्यापारके लिअे नया परवाना, हिन्दुस्तानियोको वसानेके लिअे जो 'लोकेशन'— विशेष मुहल्ले — खडे किये गये थे, सिर्फ वही मिलता था।
३ ट्रान्सवालके किसी भी हिस्सेमे विना किसी वाधाके रहा जा सकता था। अुसके लिअे खास अिजाजत लेनेकी जरूरत नही होती थी।	३ 'लोकेशन'के सिवा और किसी हिस्सेमे रहनेकी जिसने सरकारसे विशेष अिजाजत न ली हो वह वहा नही रह सकता था। अुसे लोकेशनमें ही रहना पडता था।
४ हिन्दुस्तानी अपने नामसे जायदाद नही खरीद सकते थे, परन्तु गोरोके नामसे खरीद सकते थे। और अैसी करोडोकी सम्पत्ति हिन्दुस्तानियोने खरीदी है।	४ अव गोरोके नामसे कोओी भी हिन्दुस्तानी जायदाद नही खरीद सकता। व्रिटिश राज्यके वाद अेक पाओीकी भी जायदाद नही खरीदी गअी।

५ लोकेशनमें ९९ वर्षके पट्टे पर जमीन मिल सकती थी।

५ आज तक ९९ वर्षके पट्टे पर मिली हुअी जमीन वापस ले लेनेका प्रस्ताव पास हुआ और आयन्दा कहा कहा लोकेशन बनाये जाय और हिन्दुस्तानियोको जमीन दी जाय या नही, अिसका कोअी निर्णय नही हुआ।

६ दूसरे प्रान्तके हिन्दुस्तानी ट्रान्सवालके किसी भी भागमे बिना रोकटोकके जा सकते थे।

६ लडाअीसे पहलेके ट्रान्सवालके सच्चे निवासीकी भी अर्जी देनेके बावजूद तीन तीन महीने तक सुनवाअी नही होती थी, तो फिर नअे आनेवालोकी तो बात ही क्या?

७ वहाके रहनेवालेकी हैसियतसे पास या परवानेके बारेमें धाधली मचानेवाला अेशियाअी विभाग नही था।

७ नया अेशियाअी विभाग खुल गया और अुसके होनेसे हिन्दुस्तानी बडी मुसीबतमे पड गये और अुनके लाखो रुपये लुट गये।

८ लडाअीसे पहले ब्रिटिश राजदूत हिन्दुस्तानियोकी रक्षा करता था और किसीके हक मारे नही जाते थे।

८ ब्रिटिश अफसरोने जिन्हे व्यापार करनेके परवाने दिये थे, अुन्हे भी सालके आखिरमें कअी तरहसे तग करके अिस बातके लिअे मजबूर किया जाता था कि व्यापार बन्द करके लोकेशनमे चले जाय, और अिसमे हिन्दुस्तानियोको लाखो रुपयेका नुकसान होता था।

अूपरकी तुलनासे पता चलेगा कि बोअर-युद्धसे पहले ट्रान्सवालमे हिन्दुस्तानियोकी जो दशा थी अुससे युद्धके बाद ब्रिटिश सरकारके हाथो अुनकी दशा कअी गुनी बिगड गअी। अिससे भी ब्रिटिश सरकारको सतोप नही हुआ। लार्ड मिलनरने सन् १८८५ के कानूनके अनुसार हरअेक हिन्दुस्तानीका नाम फिरसे दर्ज करानेका आग्रह किया। अिस सम्बन्धमे बहुत चर्चा होनेके बाद हिन्दुस्तानियोके नेताओके साथ यह समझौता हुआ कि हिन्दुस्तानी स्वेच्छासे नाम दर्ज करवाये। लार्ड मिलनरने यह विश्वास दिलाया कि

अेक वार स्वेच्छासे नाम दर्ज करानेके वाद दूसरी वार नाम लिखवानेकी जरूरत नही पडेगी और नाम दर्ज करानेवालेको स्थायी निवासी माना जा सकेगा। लेकिन लार्ड मिलनरका यह आश्वासन गलत निकला। ट्रान्सवाल सरकारने कुछ सुना नही और सन् १९०६मे "ड्राफ्ट आर्डिनेन्स" पास किया। अिस कानूनके अनुसार समूची हिन्दुस्तानी जातिको स्त्री-पुरुष और वच्चोका फिरसे नाम दर्ज कराना लाजिमी हो गया। यह नया कानन हिन्दुस्तानियोके लिअे वमके गोलेकी तरह चौकानेवाला सावित हुआ। हिन्दुस्तानी तो लार्ड मिलनरके आश्वासन पर निश्चिन्त वैठे थे। परन्तु अुन्होने देखा कि वह विश्वास धूलमे मिल गया। अितना ही नही, पडोसके दूसरे प्रान्तोकी सरकारे ट्रान्सवालकी नकल करके हिन्दुस्तानियोका फैसला करनेको तैयार हो गअी। दक्षिण अफ्रीकामे ऐसी रग-द्वेषकी राजनीति चलानेमे सभी प्रान्तोकी सरकारे सफल हो जाती, तो हिन्दुस्तानियोके लिअे दक्षिण अफ्रीकासे भाग जानेके सिवा कोअी अुपाय नही रह जाता।

ये राजनीतिज्ञोकी चाले हुअी। परन्तु सामान्यत आम रास्तोमे, रेल-गाडियोमे, ट्राममे या वगीचोमे जहा जहा गोरे-कालेका सघर्ष होता, वही हिन्दु-स्तानियोको अपमान ही सहन करना पडता। अैसे अपमान गाधीजीने दक्षिण अफ्रीकाके अपने निवासकालमें अनेक वार सहन किये है। अुनकी विगत पाठकोको गाधीजीकी 'आत्मकथा' मे मिल सकती है।

९

'गांधी भाअी'

गाधीजी सन् १८९३ में नेटाल गये। अुसके वाद दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दु-स्तानियोके सामाजिक जीवनके साथ गाधीजी गुथे हुअे है। गाधीजी वहा रोजगारके लिअे गये थे। परन्तु यहा सव कुछ हमारी अिच्छानुसार थोडे ही हो सकता है? मनुष्य अपनी प्रकृतिके वन्धनमे अैसा वधा हुआ होता है कि अुससे मुक्त होना वहुत कठिन है। अथवा मानव तो विधाताके हाथका खिलौना है। अिसलिअे हम कह सकते है कि अिस पृथ्वीतलमे असत्य और हिंसाका नाश करके सत्य और अहिंसाके दिव्य शस्त्रसे ससारका अुद्धार करनेकी तैयारीके लिअे ही विधाताने गाधीजीको दक्षिण अफ्रीका भेजा था। वे वहा २१ वर्ष रहे। अिस अवधिमें अुन्होने भारी तप किया। शरीरको विविध आसनोमें

स्थित करके चारो ओर आग जलाकर देह-दमन करनेसे ही तपकी साधना होती हो सो बात नही, जीवनके हरअेक अगका प्रतिक्षण निरीक्षण करके तथा चित्तशुद्धिके प्रयत्नमे लीन रहकर सत्यके परम ध्येयकी आराधना करते रहना और अैसा करते-करते अपने सम्पर्कमे आनेवाले अनेक पीडित मानव-बन्धुओके हृदयको स्नेहयुक्त आश्वासन देकर अिस कष्टमय ससारमें अुनके घावोको भरनेके लिअे आत्म-समर्पण करना, यह श्रेष्ठ तप और श्रेष्ठ साधना है। गाधीजीने अैसी साधना दक्षिण अफ्रीकामें आरम्भ की। दक्षिण अफ्रीकामे २१ वर्षके अुनके कार्यकालका अेक-अेक क्षण अिस तपश्चर्यामे ही व्यतीत हुआ दिखाओी देगा। अुसमे आरम्भसे लेकर अन्त तक कही भी क्षति नही आओी। किसी भी कार्यमे अपना कर्त्तापन मानकर अपने व्यक्तित्वको आगे लानेका अुनका प्रयत्न दिखाओी नही दिया। अुस शुद्ध जीवनकी तपश्चर्याका वर्णन करनेकी शक्ति मुझमे नही। और अिन प्रकरणोका यह हेतु भी नही है। परन्तु दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोकी लडाओीका कुछ भी वर्णन करते समय गाधीजीको केन्द्रमे रखना ही पडेगा। जैसे तिलोमे तेल ओतप्रोत रहता है और दूधमें जैसे घी ओतप्रोत होता है, वैसे ही दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोके जीवनमे गाधीजी ओतप्रोत रहे है। गाधीजीके बिना दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोके जीवनका वर्णन करना आत्मारहित जड शरीरका वर्णन करने जैसा होगा। अिसलिअे यह प्रकरण मुझे लिखना पडता है। कोओी २० वर्ष पहले पाच-सात हजार मील दूरके देशमे क्या क्या हुआ, अिसकी जानकारी हममे से बहुतोको नही है। अुन्हे अिस प्रकरणसे बहुत मदद मिलेगी।

गाधीजीको दक्षिण अफ्रीकामे प्रवेश करते ही अैसे अनुभव हुअे, जिनसे अुनका जीवन बदल गया — अुनके जीवनका निर्माण हुआ। अिन सारे अनुभवोका अुन्होने अपनी 'आत्मकथा' मे वर्णन किया है। हिन्दुस्तानी दक्षिण अफ्रीकामे रुपया कमाने गये थे। जो वहा गये थे अुनमे से अधिकतरको शायद अपनी मातृभाषाका भी ककहरा नही आता होगा। किसी भी तरहसे लक्ष्मी प्राप्त करनेकी अुनकी तीव्र अिच्छा थी और अिस अिच्छासे प्रेरित होकर किये गये श्रमसे अुन्होने धन-प्राप्ति भी की, परन्तु जाति-अभिमान क्या, स्वाभिमान क्या, मान-अपमान क्या और स्वाधिकार क्या, अिसका अुन्हे कुछ भी पता नही था। अैसे लोगोके समूहमें गाधीजी पहुच गये। जिस मुकदमेके सिलसिलेमे

पोरबन्दरके निवासी और डरबनकी प्रतिष्ठित पेढीके मालिक अब्दुल्ला सेठके बुलावे पर गाधीजी अेक बरसके लिअे दक्षिण अफ्रीका गये थे, अुसका निपटारा अुन्होने अदालतमे लडकर नही, परन्तु समाधानकी वृत्तिसे, दोनो पक्षोके हृदयोमे अेक-दूसरेके लिअे प्रेम पैदा करके कराया। शान्ति और प्रेमके दूतका दक्षिण अफ्रीकामे हुआ यह पहला कार्य बहुत अप्रसिद्ध और सामान्य होने पर भी दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोके जीवनरूपी महलकी पहली अीट जैसा था। यह अीट रखनेके बाद वे फौरन स्वदेश लौट आनेको तैयार हो गये। पहले ही अुपलब्ध जहाजके लिअे वे तैयारी करने लगे। अितनेमे अुन्होने अखबारोमे पढा कि नेटालके हिन्दुस्तानियोका मताधिकार वापस ले लेनेका प्रयत्न नेटाल सरकार कर रही है। यह बात अुन्हे पसन्द नही आअी। मताधिकार जैसा कीमती अधिकार कैसे छोडा जाय? परन्तु वहाके हिन्दुस्तानी सेठ तो जानते ही नही थे कि मताधिकार क्या चीज है। अुनका कोअी गोरा वकील या अन्य परिचित गोरा अेक दिन खुशामद करके अुन्हे दफ्तरमे ले जाता है और अुनके मतके लिअे हस्ताक्षर करा लेता है, अितना ही ये सेठ लोग जानते थे। गाधीजीने सब व्यापारियोको और अुनके बाबुओको अिकट्ठा किया और अुन्हे मताधिकारका अर्थ और महत्त्व समझाया। परन्तु जाता हुआ मताधिकार वापस कैसे लौटाया जाय? वह तो जायगा ही। फिर भी हिन्दुस्तानियोके प्रथम प्रयत्नके रूपमे अुस समय गाधीजीने हिन्दुस्तानियोका मताधिकार रद करनेवाले कानूनका विरोध करके ही सतोष माना और अेक अर्जी तैयार करके सैकडो हिन्दुस्तानियोके हस्ताक्षर अुस पर लिये और अर्जी सरकारके पास भिजवा दी। गाधीजीके अिस प्रथम कार्यसे डरबनके और खास तौर पर नेटालके हिन्दुस्तानियोका ध्यान अुनकी ओर गया। यह अर्जी भेजनेके लिअे अुन्होने हिन्दुस्तान लौटनेकी तैयारी छोड दी। अुनके अिस सरल स्वभाव और सेवाभावसे प्रत्येक हिन्दुस्तानीका ध्यान अुनकी ओर खिचा। जो अुनसे मिला, जो अुनके पास आया, जिसने अुनसे बातें की, जो अुन्हे अपने दुःख सुनाने आया, वही अुनका बन गया। सब गाधीके पीछे पागल हो गये। अिसलिअे, जो अुन्हें जानते थे वे अुन्हे गाधी साहब या बैरिस्टर साहबके नामसे नही, बल्कि प्यारे 'गाधी भाअी' के नामसे पहचानते और पुकारते। आजकलके अनेक विशेषणोसे अलकृत महात्माजीके सबोधनमें जो मीठी मोहिनी होगी, अुससे भी शायद अधिक मिठास अुस समयके 'गाधी भाअी' के सम्बोधनमें होगी।

१०

नेटाल अिंडियन कांग्रेस

दक्षिण अफ्रीकामे रहनेके बाद गाधीजीने वकालत शुरू की। वकील लोग पेटके लिअे वकालत करते है। गाधीजीने पेटके लिअे वकालत नही की। अुन्होने जनताकी वकालत करना शुरू किया। अदालतमे वकीलकी हैसियतसे तो वे कभी-कभी ही खडे होते थे। अुन्होने अदालतोमें वकालत करके जितने मामले निपटाये अुनसे कअी गुने ज्यादा मामले घर वैठे वेठे निपटाये है। वकीलके रूपमे अपना कर्तव्य अुन्होने ससारमें शान्ति फैलाना माना। वकीलोने क्लेश और झगडे वढाना ही अपना धन्धा माना है। और वे यही करते है। फिर भी ढोग अैसा करते है मानो शान्तिके दूत हो! गाधीजीको प्रचलित वकालतके धन्धेके प्रति वडी अरुचि थी और अैसी वकालत अुन्होने किसी दिन नही की। 'सत्यकी शोध' अुनका जीवन-सूत्र ही था। अिस सूत्रको वे वकालत पर भी लागू करते थे। अपने मुवक्किलका मामला सच्चा होता तो ही अदालतमें जाकर वे अुसकी वकालत करते थे। परन्तु अैसे मामलोमें भी अदालतमें जानेसे पहले वे घर वैठे या पचके जरिये दोनो पक्षोमे समझौता करानेकी खूव कोशिश करते। अैसा न होता तभी अदालतमे मामला लेकर खडे होते और अुसमे अुनके मुवक्किलके लाभमे ही परिणाम आता। अिससे आम तौर पर अुनके वारेमे यह माना जाता था कि जो मामला गाधीजी हाथमे लेते है वह सच्चा ही होता है। कुछ अुदाहरण अैसे भी हो गये कि मामलेके अधवीचमे या आखिरमें गाधीजीको विश्वास हो गया कि अुनके मुवक्किलने अुन्हे झूठी वाते कहकर धोखा दिया है और अुसका पक्ष गलत है, अिसलिअे अुन्होने वीचमे ही अैसे मामलोको छोड दिया।

परन्तु अैसी शुद्ध और प्रामाणिक वकालत करनेके प्रसग अुन्हे अधिक मिले अिससे पहले ही हिन्दुस्तानियोकी सेवाका क्षेत्र अुनको नजर आ गया। और वह दिन दिन विशाल होता गया। अिसलिअे अुस कामको करनेके लिअे अेक जिम्मेदार सस्था खडी करनेकी जरूरत अुन्हे जान पडी। सन् १८९४ के मअी महीनेकी २२ तारीखको अुन्होने नेटाल अिंडियन काग्रेसकी स्थापना

की। डरवनमे नेटालके मुख्य माने जानेवाले व्यापारियो और दूसरे लोगोको अुन्होने वुलाया और वाकायदा नियम आदि वनाकर अिस सस्थाकी स्थापना की। डरवनके सेठ दाअूद मोहम्मदको अुसका अध्यक्ष वनाया गया और गाधीजी अुसके मत्री वने। हर साल तीन पाअुडकी फीस रखी गअी। अिस सस्थाने पहला ही काम जो हाथमे लिया वह था स्वतत्र हिन्दुस्तानी मजदूरो पर लगनेवाले तीन पाअुडके नये करका विरोध करके अुसे रद करानेकी अर्जी देना। यह काम नेटाल काग्रेसने वहुत ही सफल ढगसे पूरा किया। अिससे काग्रेस खव लोकप्रिय हो गअी, अुसने हिन्दुस्तानी जनताकी सेवा भी वहुत की, परन्तु अुसे चलानेमे आर्थिक कठिनाअिया आने लगी। जो मामला कौम सम्वन्धी होता यानी सरकारके विरुद्ध किसी हिन्दुस्तानीका मामला होता और जिसके फैसलेसे सारे हिन्दुस्तानियोके हित पर भला या वुरा असर पडनेकी सभावना होती अैसे हर मामलेकी फीस गाधीजी कम से कम लेते और वह सीधी काग्रेसके कोषमे जाती। वहुतसे मुवक्किलोकी फीस सिर्फ काग्रेसके सदस्य वनने लायक ही होती थी। अिस तरह काग्रेसकी आर्थिक स्थितिको गाधीजी सभालते थे। अुसके वार्षिक सदस्य वनानेके लिअे तो अुन्हे लगभग सारे नेटालमे सफर करना पडा। अिस प्रकार नेटाल अिडियन काग्रेसके मुख्य सचालक गाधीजी ही थे।

सार्वजनिक सस्था चलानेमे अुसकी आर्थिक व्यवस्थाकी गाधीजी वहुत ही चिन्ता रखते थे। मुझे याद है कि सावरमती आश्रममे अपनी अनेक प्रवृत्तियो और समस्त देशके असहयोग आन्दोलनके सतत चलनेवाले काममे भी आश्रमके वही-खाते अुन्होने वहुत ही ध्यानपूर्वक देखे है और वही-खातेमे जमा-खर्च करनेके तरीकोमे भूल हो तो अुसे भी सुधरवाया है। आश्रममे जो कुछ भेट आती है अुसका अुन्हे मनचाहा अुपयोग करनेका अधिकार है। मगर नेटाल अिडियन काग्रेसके वारेमें यह नही कहा जा सकता। अेक वार अैसा हुआ कि अुनके जान-पहचानके अेक भाअी आर्थिक सकटमें फस गये। अुन्होने चारो तरफ नजर दौडाअी। गाधीजीके सिवा कोअी अैसा आदमी अुन्हे दिखाअी न दिया जो तुरन्त अुनकी मदद कर सके। गाधीजीके पास निजी रकम नही थी। अुन भाअीसे अिनकार करते तो अुसे निराशा होती और अुसके मनमे गाधीजीके वारेमे कुछका कुछ खयाल हो सकता था। परन्तु क्या हो सकता था? आखिर गाधीजीको सूझा कि काग्रेसका रुपया वैकमे अुनके नामसे जमा

है। दो-चार दिनमे वापस दे जानेकी शर्त पर कांग्रेसके रुपयेमे से कोअी तीन सौ पौंडका चैक गांधीजीने अुस भाअीको लिख दिया। यह चैक अुन्होने लिख तो जरूर दिया, परन्तु अुन्हे तुरन्त खयाल आया कि अुस आदमी पर अुपकार करनेके खातिर कांग्रेसका रुपया देनेका मुझे क्या अधिकार है? क्षणभर बाद ही कांग्रेसको पैसेकी जरूरत पडी तो क्या होगा? अुन्हे लगा कि अुन्होने कांग्रेसके रुपयेका दुरुपयोग करके महापाप किया है। तीन सौ पौंडकी रकम कोअी छोटी नही थी। अिसी विचारमें शाम हो गअी। खाना भी नही भाया। सोते वक्त नींद नही आअी। "मैने अैसा पाप क्यो किया? अपने प्रेमके खातिर अुस भाअीको कांग्रेसका रुपया देनेका मुझे क्या अधिकार था? वह रुपया तुरन्त न मिला और मिलनेसे पहले अैसी कंगाल हालतमे मेरी अचानक मृत्यु हो गअी, तो कांग्रेसका कर्ज मै किस तरह चुका सकूगा?" अिस तरहके विचार जैसे जैसे अुन्हे आते गये, वैसे वैसे अुनके हृदयमे अनन्त वेदना होती गयी। वे अीश्वरसे प्रार्थना करने लगे और हृदयमें अुन्होने दृढ संकल्प किया कि, "भविष्यमे सार्वजनिक संस्थाकी रकमका अुपयोग मैं निजी कारणसे कभी नही करूगा।" अिस प्रतिज्ञामे हृदयकी वेदना तो कम हो गअी, परन्तु वह रकम किसी भी तरह जल्दी मिलनी चाहिये यही विचार अुनके मनमें घुलता रहा। दूसरे दिन सवेरे भी अिसीका ध्यान बना रहा। नहा-धोकर वे नौ बजे दफ्तर गये। वहा जाते ही मुशीने अुसी समय आया हुआ तार अुनके हाथमे दिया। नेटाल और ट्रान्सवालके बीचकी सरहद पर स्थित अेक गांवकी अदालतमें गैरकानूनी ढंगसे सीमाके भीतर घुसनेके मामलेमे ९० हिन्दुस्तानियो पर वारंट निकाला गया था और सबको अदालतमे लाया गया था। वहा गांधीजी खुद पहली गाडीसे जा पहुचे। ९० भारतीयोके सम्बन्धमे सारी हकीकतें पूछ कर वे अच्छी तरह परिचित हो गये। बादमे अुन्होने कहा कि मैं मामला तो हाथमे लेता हू, परन्तु शुरूमे हरअेकको अपनी फीसके तीन पौंड दे देने चाहिये, अिसके सिवा हरअेकको नेटाल कांग्रेसका सदस्य बन जाना चाहिये। सबने तुरन्त अुनका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। वहीं रुपया ले लिया गया और सदस्यताकी रसीद दे दी गअी। सारा रुपया कांग्रेसके नामसे अपनी डायरीमे जमा कर लिया और बादमे अुनके मामले हाथमे लिये। अदालतमे मामले चले। सभी आदमी बाकायदा नेटालके बाशिन्दे थे। परन्तु अपढ लोगोको अपनी बात समझाना नही आता था, अपनी बातको ठीक ढंगसे अदालतमे पेश करना वे जानते नही थे और कानूनका भी अुन्हे भान नही था। अिसलिअे सत्ताधारियोको

वह गभीर अपराध जैसा मालूम हुआ। परन्तु गाधीजीने वहा जानेके वाद थोडे ही घटोमे अदालतको अुनके निर्दोप होनेका विश्वास करा दिया और सवको छुडवा दिया।

नेटाल अिडियन काग्रेसने नेटालके हिन्दुस्तानियोके सम्वन्धमे बहुत काम किया और वह नेटालके हिन्दुस्तानियोकी अधिकारपूर्ण सस्था वन गअी। परन्तु वादमे सत्याग्रहकी लडाअीमे गाधीजीको ट्रान्सवालमे ही रहना पडा। अिसलिअे अपनी अनुपस्थितिके कारण काग्रेसका मत्रिपद अुन्हे छोडना पडा। अुनकी जगह पर अेक' भाअी आये और अुन भाअीकी लापरवाहीसे सस्थामे अव्यवस्था अुत्पन्न हो गअी।

अन्तमे जव नेटालमे सत्याग्रह शुरू हुआ, तव अुस मृतप्राय काग्रेस सस्थाके जरिये काम नही हो सकता था। क्योकि अुस समय जनताका अुस सस्थामे विश्वास नही रह गया था। अिसलिअे गाधीजीने नेटाल अिडियन अेसोसिअेशन नामकी दूसरी सस्था स्थापित की और आखिरी लडाअीका सारा काम अुसके जरिये किया।

११

सत्याग्रहका आरम्भ

सन् १८९४ से १९०६ तक दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोके जीवनमें कोअी खास अुथल-पुथल नही हुअी। अुनके सामान्य दुखोकी कहानी तो रोजकी हो गअी थी। सामाजिक जीवनमे हिन्दुस्तानियोको होनेवाले कष्टोकी कथा जहा तहासे सुनाअी देती थी और गाधीजी जहरके ये घूट धीरजसे पिया करते थे। मौका पडने पर जनताकी सेवा करनेको तैयार रहते थे। जोहानिसवर्गमें प्लेगकी अुत्पत्ति हिन्दुस्तानी लोकेशनमे हुअी, यह वडी चौंकानेवाली वात थी। गोरी जाति और गोरी सरकार अिस छूतके रोगसे वहुत ही डरती थी। परन्तु गाधीजीने समय-सूचकतासे काम लेकर दो-चार चुने हुअे आदमियोको अेकत्र किया और प्राणोको खतरेमें डालकर तुरन्त अुपाय किये। अिससे प्लेग रुक गया और भविष्यके भारी खतरेसे हिन्दुस्तानी जनता और दूसरे लोग भी वच गये। फिर वोअर-युद्ध आरम्भ हो गया। जिस सरकारकी रक्षामें हम रहते है और जिसके राज्य और सत्ताका लाभ अुठाते है या

भविष्यमे अुठानेकी अिच्छा रखते है, अुस सत्ताके सकटके समय यथाशक्ति अुसकी मदद करना हमारा फर्ज है — अिस खयालसे वोअर-युद्धके मौके पर गाधीजीने घायल सिपाहियोकी सेवा करनेवाली अेक टोली बनाओी। वह युद्धके क्षेत्रमे खूब घूमी और बदूकोकी गोलियो और तोपोके गोलोके नीचे रहकर अुसने अनेक घायल सिपाहियोको अुठा-अुठा कर अुनकी सेवा-शुश्रूपा की। अिसके सिवा नेटालमे जूलू-विद्रोहके अवसर पर भी यही सेवाका काम करके अुन्होने सैकडो घायल जूलुओकी शुश्रूपा की। अिस समय गाधीजीने अपने जीवनके प्रयोग भी बहुत किये। धधेमें या युद्धके क्षेत्रमे जहा जाते वहा चाहे जैसी विकट परिस्थितिमें भी अुन्होने आत्म-निरीक्षणका कार्य सदा जारी रखा और अुसके परिणाम-स्वरूप अनेक प्रयोग किये। नेटालमें फिनिक्स आश्रम स्थापित किया। वहा अिन्टरनेशनल प्रिंटिंग प्रेस नामका छापाखाना खोलकर 'अिडियन ओपीनियन' पत्र प्रकाशित करने लगे। वहा रहनेवाले भाओी जीवनमें अमुक सिद्धान्तोका पालन करे और शरीर-श्रम करके सादा और अूचा जीवन बितायें, अिस हेतुसे कायम हुओी अिस सस्थाका दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोके राजनीतिक जीवनमे और गाधीजीके जीवनको बनानेमे बडा हाथ रहा है। अुसके बारेमें कुछेक बातोका हम आगे चलकर विचार करेंगे, अिसलिअे अभी तो अितना ही देखेंगे कि सत्याग्रहकी लडाओीका श्रीगणेश किस तरह हुआ।

लॉर्ड मिलनरके दिये हुअे आश्वासनको खत्म करके सन् १८८५ का डच राज्यके समयका पुराना कानून ताजा करके ट्रान्सवालकी धारासभाने १२ सितम्बर, १९०६ को 'अेशियाटिक अमेडमेट अेक्ट' पास किया। अुसे हिन्दुस्तानियोने खूनी कानूनका नाम दिया। अिस खूनी कानूनके पास होनेसे हिन्दुस्तानियोके दिल अुबल पडे। अुसकी कलमोका सार नीचे लिखे अनुसार है

(१) ट्रान्सवालमे रहनेका अधिकार रखनेवाले सारे हिन्दुस्तानी पुरुष, स्त्रिया और आठ बरससे अूपरके लडके और लडकिया अेशियाओी दफ्तरमे अपना नाम लिखाकर परवाने ले।

(२) ये परवाने लेने समय पुराना परवाना अधिकारीको सौप दे।

(३) नाम लिखनेकी दरखास्तमे नाम, पता, जाति, अुम्र वगैरा दिये जाये।

(४) नाम लिखनेवाला अधिकारी प्रार्थीके शरीर परकी मुख्य मुख्य निशानिया लिख ले।

(५) प्रार्थीकी सब अंगुलियों और अंगूठेकी निशानी ली जाय।

(६) निश्चित अवधिके भीतर जो हिन्दुस्तानी स्त्री या पुरुष अिस तरहकी अर्जी न दे, अुसका ट्रान्सवालमें रहनेका अधिकार रद माना जायगा।

(७) अर्जी न देना बाकायदा जुर्म माना जायगा। अुसके लिअे जेल हो सकती है, जुर्माना हो सकता है और अदालतके विवेकके अनुसार देशनिकाला भी दिया जा सकता है।

(८) बच्चोंकी अर्जी मा-बापको देनी चाहिये, और अंगुलियोंकी निशानियां लेनेके लिअे बच्चोंको अफसरोंके सामने पेश करनेकी जिम्मेदारी भी मा-बापकी मानी जायगी। सोलह सालकी अुम्र होनेके बाद बच्चे अपने परवाने पक्के करा लें।

(९) जो परवाने प्रार्थियोंको दिये जायें वे किसी भी पुलिस अफसरके सामने जब और जहां मांगे जायें तब और वहां जरूर पेश किये जायें। यह परवाना पेश न करना जुर्म माना जायगा। अुसके लिअे अदालत कैद या जुर्मानेकी सजा दे सकती है।

(१०) अिस परवानेकी मांग रास्ते चलते मुसाफिरसे भी की जा सकती है।

(११) परवानेकी जांचके लिअे अधिकारी घरमें भी प्रवेश कर सकता है।

(१२) ट्रान्सवालके बाहरसे आनेवाले हिन्दुस्तानी स्त्री-पुरुषोंको जांच करनेवाले अधिकारीके सामने अपने परवाने पेश करने ही चाहिये।

(१३) कोअी हिन्दुस्तानी अदालतमें किसी कामसे जाय या महसूलके दफ्तरमें व्यापार या साअिकल रखनेकी परवानगी लेने जाय, तो वहां भी अधिकारी परवाना मांग सकता है। यानी किसी भी सरकारी दफ्तरमें अुस दफ्तरसे सम्बन्ध रखनेवाले किसी कामसे जाय, तो अधिकारी हिन्दुस्तानीकी बात सुननेसे पहले अुससे परवाना मांग सकता है।

(१४) यह परवाना पेश न करना या अुन बारेमें जो भी हकीकत अधिकारी मांगे अुसे बतानेसे अिनकार करना भी गुनाह है और अदालत अुसके लिअे कैदकी या जुर्मानेकी सजा दे सकती है।

यह कानून पास होनेके पहले ही हिन्दुस्तानियोंमें बड़ी खलबली मच गअी। हिन्दुस्तानियोंके नेताओंने सरकारके बड़े अधिकारियोंसे अनेक मुलाकातें कीं,

तव कही स्त्रियो और बच्चोको अिस कानूनके अनुसार नाम लिखवानेसे मुक्त किया गया। अिस कानूनके पास होनेकी बात जानकर हिन्दुस्तानियोकी भावनाअें अुत्तेजित हो गअी। अिस खूनी कानूनके कारण अत्याचारपूर्ण राजनीति ग्रहण की जा सकती थी। लॉर्ड मिलनरके दिये हुअे वचन बिलकुल खतम हो जाते थे। हिन्दुस्तानियोको धीरे-धीरे ट्रान्सवालसे खदेड देना ही अिस कानूनकी मशा थी।

जिस दिन यह कानून पास हुआ, अुसी दिन जोहानिसबर्गमे अेक विराट सभा हुअी। आठ हजार हिन्दुस्तानियोमे से तीन हजार अुनमे अिकट्ठे हुअे। गाधीजीने 'अिडियन ओपीनियन' द्वारा लोगोको यह जानकारी करा दी थी कि अिस कानूनका परिणाम हिन्दुस्तानियो पर क्या होगा। कानून पास हो जाय तो क्या किया जाय? अिसका अुपाय गाधीजीने अैसा ढूढ निकाला था, जो ट्रान्सवाल सरकारके खयालमे नही आ सकता था। सरकारने तो यह मान लिया था कि सब लोग चिल्लाते रहेगे, विरोध किया करेगे और थोडे दिन बाद खामोश हो जायगे। हिन्दुस्तानी सशस्त्र विद्रोह तो कर ही नही सकते थे। अुनमे अिसकी ताकत ही कहा थी? वैसे सरकार तो यही चाहती होगी कि ये लोग हिंसात्मक विद्रोह करे। अैसा होने पर अुसे हिन्दुस्तानियोको घडीभरमे ट्रान्सवालसे बाहर निकाल देनेका कारण मिल जाता। परन्तु सरकारके मुख्य अधिकारियोको अिस बातका जरा भी खयाल नही हो सकता था कि गाधीजी हिन्दुस्तानियोको हिंसात्मक विद्रोहके बजाय अहिंसात्मक सत्याग्रहका हथियार काममे लेना सिखायेगे। अुस दिनकी सभामे लोगोमे बडा अुत्साह फैला। जिन तीन हजार हिन्दुस्तानी मर्दोने वहा निश्चय किया, अुनमे से अेक भी नामर्द नही निकला। 'खूनी कानूनका अमल होना न होना हमारे हाथमे है। जब तक यह कानून रद न हो तब तक अुसे न मानकर हम जेल जानेको तैयार रहे'—अैसा प्रस्ताव जब पेश हुआ और सभामे सबसे पूछा गया, तो अेकमतसे गगनभेदी आवाज आअी, "हमे यह प्रस्ताव मजूर है।" गाधीजीका हृदय बासो अुछलने लगा, परन्तु साथ ही नअी जिम्मेदारीके भानसे गभीर भी बन गया।

अिस खयालसे कि अब भी लोगोको लडना न पडे हिन्दुस्तानियोका अेक शिष्ट-मडल अिग्लैण्ड गया। अुसे अैसा प्रयत्न करना था जिससे खूनी कानूनको सम्राट्की स्वीकृति न मिले। गाधीजी अुसके मुखिया थे। वहा जाकर जो प्रयत्न किया गया, अुसका परिणाम यह निकला कि कानून पर सम्राट्के हस्ताक्षर न

हुअे और शिष्ट-मण्डलकी मुराद पूरी हुअी। शिष्ट-मण्डलने अेक और भी महत्त्वका कार्य किया। दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी मदद करनेवाली अेक कमेटी स्थापित की। अुसमें मद्रासके भूतपूर्व गवर्नर लार्ड अेम्पथील अध्यक्ष और सर मंचरजी भावनगरी कार्यसमितिके अध्यक्ष मुकर्रर हुअे। अिस कमेटीने ठेठ तक दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी सुन्दर सेवा की। शिष्ट-मण्डल वापस आ गया और थोड़े समयके लिअे अैसा लगा कि अब शान्ति हो गअी। परन्तु वह शान्ति थोड़े ही समयकी थी। सम्राट्ने ट्रान्सवालके जिस कानूनको मंजूरी नहीं दी, अुसे बड़ी सरकार द्वारा स्वराज्य-भोगी अुपनिवेशके भीतरी प्रबन्धमें हस्तक्षेप करनेके बराबर माना गया। अिससे ट्रान्सवालके गोरे लोगोंका रोष और भी तीव्र और दृढ़ हो गया। दूसरे ही वर्ष जब कौंसिलका नया विधान बना और पहली कौंसिल बैठी तब वही खूनी कानून अुसने दुबारा २२ मार्च, १९०७ को अेकमतसे पास कर दिया। हिन्दुस्तानियोंकी राय और भावनाका अुसने जरा भी खयाल नहीं किया। अिसकी अुसे जरूरत भी नहीं मालूम हुअी। मअी महीनेकी ७ तारीखको सम्राट्को यह खूनी कानून मंजूर करना पड़ा।

ट्रान्सवालकी सरकारके अिस कदमके कारण अब लड़ाअी करनेके सिवा हिन्दुस्तानियोंके लिअे दूसरा कोअी चारा न रह गया। फिर भी गांधीजीने सोचा कि झगड़ा न हो तो अच्छा। वे फिरसे सुलहके प्रयत्न करने लगे। अुन्होंने यह अिच्छा ही प्रकट नहीं की कि कानून रद हो जायगा तो सरकारी कार्रवाअीकी सुगमताके लिअे हिन्दुस्तानी स्वेच्छासे नाम लिखा लेंगे बल्कि यह भी बताया कि जब तक यह काम पूरा न हो जाय तब तक सरकारको अपनी मदद भी देंगे। परन्तु सत्ताके नशेमें चूर और रंगद्वेषसे अंधी बनी हुअी सरकारको यह बात पसन्द नहीं आअी। अुसे तो ट्रान्सवालसे हिन्दुस्तानियोंकी हस्ती ही मिटा देनी थी। अैसा कभी न होने देनेका हिन्दुस्तानियोंका अटल निश्चय था, अिसलिअे अन्तमें अुन्हें सत्याग्रहकी लड़ाअी शुरू करनी पड़ी।

सन् १९०७ के जुलाअी मासमें अुस कानूनके अनुसार हिन्दुस्तानी लोगोंको बाकायदा सूचना दी गअी कि प्रत्येक हिन्दुस्तानीको अपना नाम लिखवा देना चाहिये। अिस कामके लिअे सरकारी अधिकारी ट्रान्सवाल प्रान्तमें दौरा करने लगे, परन्तु अुनकी कुछ चली नहीं। अिसलिअे कानूनके अमलकी जो मियाद मुकर्रर की गअी थी वह बढ़ाअी गअी और सरकारने बड़े रोबसे जाहिर किया कि कानूनको माननेका जो विशेष अवसर हिन्दुस्तानियोंको दिया

जाता है अुसके अनुसार दी गअी मियादमे वे कानूनके अधीन नही होगे तो अुन्हे बरबाद होना पडेगा। अिस प्रकार सरकारने हाथ-पैर तो बहुत पटके, परन्तु प्रतिज्ञा लेनेवाले हिन्दुस्तानियोमे से ९५ फीसदी अुस पर अटल रहे और ८ हजार हिन्दुस्तानियोमे मे सिर्फ ४ सौने नाम लिखवाये। सरकारी हुक्मकी तामील न हो, अिसे सत्ता कैसे सहन कर सकती थी? अुसने अपना हथियार अुठाया। कुछ हिन्दुस्तानी नेताओको देश छोडकर चले जानेको कहा गया और अैसा न करने पर कैद करनेकी भी धमकी दी गअी। परन्तु नेता कोअी अिस तरह चले जानेवाले नही थे। अतमें सरकारने अुन्हें पकडा। थोडे ही दिनमे धर-पकड बढने लगी। गाधीजी तो पहले ही पकड लिये गये थे और १० जनवरी, १९०८ को अुन्हे दो महीनेकी सजा दे दी गअी थी। अिस प्रकार सैकडो आदमियोको जेलमें बन्द कर दिया गया। सरकारको आश्चर्य हुआ। अुसने जेलमे लोगोको भेजा तो था कानूनका पालन करवानेके खातिर, परन्तु काननका पालन बिलकुल नही हुआ। वह सरकारकी कानूनी पुस्तकोमें ही रह गया। अिसलिअे सरकार पीछे हटी। अिस समय सरकारकी बागडोर जनरल स्मट्सके हाथमे थी। अुन्होने सुलहकी कोशिश की। मिस्टर कार्टराअिट नामक अेक मशहूर पत्रकारके जरिये यह समझौता हुआ। ये महाशय जेलमे गाधीजीसे मिले। अतमे अैसा समझौता हुआ कि हिन्दुस्तानी लोग स्वेच्छासे नाम लिखवाये, तीन महीनेके भीतर हर हिन्दुस्तानी नाम लिखवा दे, तो बादमे खूनी कानून रद कर दिया जायगा। अिस समझौते पर दोनो पक्षोके हस्ताक्षर हुअे और जेलके दरवाजे बीचमे ही खुल गये। २० दिन भी पूरे नही हुअे थे कि ३० जनवरीको तमाम सत्याग्रही छोड दिये गये और कानन रद करनेका वचन दिया गया। दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोको सत्याग्रहके चमत्कारका यह पहला दर्शन हुआ।

१२

खूनकी पट्टीका जोड़

कानूनका पालन करनेकी और अुसके बदलेमें होनेवाले दुखको अुठानेकी प्रतिज्ञाका हिन्दुस्तानियोंने अुत्तम रूपमें पालन किया और अुनके प्रतापसे सरकारको हिन्दुस्तानियोंके साथ समझौता करना पडा। हिन्दुस्तानियोंकी शुरूसे जो माग थी वह मजूर हुअी। वह माग यह थी कि सब स्वेच्छासे अपने नाम लिखवायें और सरकार खूनी कानून रद कर दे। परन्तु अब अिस तरह स्वेच्छासे नाम लिखवानेमें कुछ हिन्दुस्तानियोंको दोष दिखाअी दिया। कुछ लोगोंकी समझमें नेताओंकी यह बात नही आयी। जबसे समझौता हुआ तबसे कौमके अेक भागमें विरोधकी आवाज सुनाअी देने लगी। फिर भी समझौतेके अनुसार नाम लिखवाना शुरू हो गया। सरकारने अेक अिमिग्रेशन कानून पास किया था। अिस अिमिग्रेशन कानूनमें सरकारने रगभेद दाखिल करके मि० चेम्बरलेनकी रगभेद-रहित राजनीति पर पानी फेर दिया। यह अिमिग्रेशन कानून और अेशियाटिक अमेण्डमेण्ट अेक्ट, जिन दो कानूनोंके अमलसे ट्रान्सवालमें हिन्दुस्तानियोंकी स्थिति बहुत खराब हो गअी थी। और अुनके अमलसे कितना ही शिक्षित हिन्दुस्तानी भी ट्रान्सवालमें पैर नही रख सकता था। परन्तु नेताओंको यह विश्वास था कि यदि लोग समझौतेकी शर्तोंका पालन करेंगे और तीन महीनेमें सभी नाम लिखवा लेंगे, तो सरकार वे कानून रद कर देगी और अिससे सरकारी राजनीतिमें रगभेद बिलकुल नही रहेगा। अिससे नाम लिखवानेका वातावरण तेजीसे पैदा हो गया। अितने ही में अेक चौंकानेवाली घटना हो गअी।

कुछ भाअी 'स्वेच्छासे' और 'जबरदस्तीसे' का भेद नही समझे। वे यह समझे कि स्वेच्छासे जहर खायें या जबरन् खायें, प्राण तो जायगे ही। परन्तु अिस सीधी-सादी समझमें कुछ विघ्न-सतोषी लोगोंने विषका सचार किया। अुन्होंने यह बात फैलाअी कि गाधीजीने सरकारकी यह बात स्वीकार करके हिन्दुस्तानियोंको धोखा दिया है। पहले तो कुरान शरीफ हाथमें लेकर नाम न लिखवानेकी प्रतिज्ञा कराना और बादमें अुस

प्रतिज्ञाको तोडकर 'स्वेच्छा' के नाम पर नाम लिखवानेको कहना अुन्हे बेहूदा लगा। अैसी गलतफ्हमीसे कुछ भोलेभाले पठान भाअी गुस्सा हो गये। कुछ द्वेपी लोगोने अिन पठानोको भडकाकर अिसमें वृद्धि कर दी। अैसे वातावरणसे जोहानिसवर्गके हिन्दुस्तानियोमें अैसी वाते होने लगी कि सभव है कुछ पठान गाधीजी पर हमला करें। यह वात गाधीजी और अुनके साथियोके कान पर भी आअी। गाधीजीके अेक जर्मन मित्र मि० कैलनवैक अुनके साथ रहते थे और जीवनके अनेक प्रयोगोमें अुनका साथ देते थे। अुन्हें यह वात मालूम हुअी। अुन्होने सोचा कि अैसा कोअी हमला न होने दिया जाय और हो तो गाधीजीको चोट न पहुचने देना अुनका फर्ज है। अिसलिअे गाधीजीको मालूम न हो, अिस ढगसे गाधीजी जहा जाते वहा वे भी अुनके साथ हो जाते। अेक दिन गाधीजी अपने दफ्तरसे वाहर जानेके हेतुसे कोट पहन रहे थे। पासकी ही खूटी पर मि० कैलनवैकका कोट टगा हुआ था। अुसकी जेवमे रिवाल्वर जैसी कोअी चीज गाधीजीको मालूम हुअी। गाधीजीने देखा तो रिवाल्वर निकला। गाधीजीने मि० कैलनवैकको वुलाकर पूछा "यह रिवाल्वर जेवमें किसलिअे रखते हो?"

श्री कैलनवैकने शर्मसे जवाव दिया "कुछ नही, अैसे ही।"

गाधीजीने हसते हुअे पूछा "रस्किन और टॉल्स्टॉयकी पुस्तकोमे कही अैसा आया है कि विना कारण भी रिवाल्वर जेवमें रखा जाय?"

अिस मजाकसे श्री कैलनवैक और ज्यादा शर्मिन्दा हुअे और वोले "मुझे पता लगा है कि कुछ गुण्डे आप पर हमला करनेवाले है।"

"और तुम अुनसे मेरी रक्षा करना चाहते हो?" गाधीजीने गभीर भावसे पूछा।

"हा, मै अिसीलिअे आपके पीछे पीछे रहता हू।"

श्री कैलनवैकका जवाव सुनकर गाधीजी हस पडे और वोले "अच्छा, तव तो मै निश्चिन्त हुआ। मालूम होता है मेरी रक्षा करनेकी परमेश्वरकी सारी जिम्मेदारी तुम्हीने ले ली है। और जव तक तुम जीवित हो तव तक मुझे अपने-आपको विलकुल सलामत मान लेना चाहिये। वाह, मेरे प्रति स्नेहके कारण तुमने परमेश्वरका अधिकार भी छीन लेनेकी खूव हिम्मत की!"

गाधीजीके ये गभीर वाक्य सुनकर श्री कैलनवैक विचारमें पड गये। अुन्हे अपनी भूल मालूम हो गअी।

गांधीजी बोल अुठे "क्या विचार कर रहे हो? ये भगवानके प्रति श्रद्धा होनेके लक्षण नही है? मेरी रक्षाकी चिन्ता तुम न करो। अिसकी चिन्ता करनेवाला तो सर्वशक्तिमान प्रभु बैठा है। यह रिवाल्वर रखकर मेरी रक्षा करनेका विचार छोड दो।"

श्री कैलनबैकने नम्र भावसे कहा "मेरी भूल हुअी। मै अब आपकी रक्षाकी चिन्ता नही करूगा।" यह कहकर अुन्होने रिवाल्वर जेबसे निकाल कर दूर रख दिया।

श्री कैलनबैकको अीश्वर-श्रद्धाकी कीमती शिक्षा मिली। अुसके बाद अुन्होने कभी अैसी चिन्ता नही की। सन् १९१४ के आखिरी समझौतेके बाद भी अैसा प्रसग आ गया था और अैसी अफवाह सुनाअी दी थी कि गांधीजी पर हमला हो सकता है। अुस समय जब अिस बारेमे अुचित सावधानी रखनेके लिअे अेक मित्रने श्री कैलनबैकको लिखा, तब श्री कैलनबैकने अुत्तर दिया था कि

"'भाअी' अपनी रक्षा करनेमे समर्थ है। अुनकी चिन्ता करनेकी मुझे या आपको जरूरत नही है।"

अिस अूपरवाली घटनाको थोडे ही दिन हुअे थे कि गांधीजी पर हमला हुआ। १० फरवरीको गांधीजी नाम लिखवानेके लिअे अेशियाअी दफ्तर जानेवाले है, यह समाचार अखबारोमे प्रकाशित हुआ था। अुस दिन सुबह नौ-दस बजेके करीब गांधीजी अपने दफ्तरसे निकले। साथमे थबी नायडू, अध्यक्ष अीसप मिया और श्री पी० के० नायडू थे। चारो ही नेता नाम लिखानेवाले थे। अेशियाअी दफ्तरकी तरफ जाते हुअे अुन पर जो क्रूर आक्रमण हुआ, अुसका और अुसके बादका कुछ वर्णन गांधीजीके अपने शब्दोमे यहा दे दू वही अच्छा होगा। अुनके अपने वर्णनमे कवित्व और करुणा दोनो भरे है।

"दफ्तर पहुचनेमे कोअी पाच मिनिटका रास्ता रहा होगा कि मीर आलम मेरे पास आया। मीर आलमने मुझे पूछा 'कहा जाते हो?' मैने जवाब दिया 'मै दस अगुलिया देकर रजिस्टर निकलवाना चाहता हू। अगर तुम भी चलोगे तो तुम्हारे अगुलिया देनेकी जरूरत नही है। तुम्हारा रजिस्टर पहले निकलवाकर मै अगुलिया देकर मेरा निकलवाअूगा।' मै अितना कह ही रहा था कि मेरी खोपडी पर पीछेमे अेक लाठीकी चोट पडी। मै तो बेहोश होकर औधा गिर पडा। बादमें जो कुछ हुआ अुसका मुझे भान नही रहा। परन्तु मीर आलमने और साथ ही अुसके साथियोने ज्यादा लाठिया मारी और लाते भी

लगाअी। अुनमें से कुछ अीसप मियाने और थवी नायडूने झेली। अिसलिअे अीसप मियाको भी थोडी चोट आअी और थवी नायडूको भी आअी। अितनेमे शोर-गुल मच गया। आते-जाते गोरे अिकट्ठे हो गये। मीर आलम और अुसके साथी भागे। परन्तु गोरोने अुन्हे पकड लिया। अिस बीच पुलिस भी आ पहुची। अुन्हे पुलिसके हवाले किया गया। पास ही अेक गोरेका आफिस था। अुसमे मुझे अुठा कर ले गये। थोडी देरमे मुझे होश आया तो मैने अपने मुह पर झुके हुअे पादरी डोकको देखा। अुन्होने मुझसे पूछा 'आपकी तबीयत कैसी है?' मैने हस कर जवाब दिया 'तबीयत तो ठीक है, परन्तु मेरे दात और पसलिया दुखती है।' मैने पूछा, 'मीर आलम कहा है?' अुन्होने कहा, 'वह तो पकडा गया है और अुसके साथ दूसरे लोग भी।' मैने कहा, 'वे छूटने चाहिये।' डोकने अुत्तर दिया, 'यह सब तो होता रहेगा। यहा आप अेक पराये आफिसमे पडे है। आपका होठ फट गया है। पुलिस आपको अस्पतालमे ले जानेको तैयार है, परन्तु आप मेरे यहा चले तो श्रीमती डोक और मै आपकी भरसक सेवा करेगे।' मैने कहा, 'मुझे अपने यहा ले चलिये। पुलिसके प्रस्तावके लिअे अुनको धन्यवाद दीजिये, परन्तु अुन लोगोसे कहिये कि आपके यहा चलना मुझे पसन्द है।' अितनेमे अेशियाअी अधिकारी भी आ पहुचे। अेक गाडीमें मुझे अिस भले पादरीके यहा ले जाया गया। डॉक्टरको बुलवाया गया। अिस बीच मैने अेशियाअी अधिकारी मि० चिमनीसे कहा 'मुझे अुम्मीद तो यह थी कि आपके दफ्तरमें आकर दस अगुलिया देकर मै पहला परवाना लूगा। पर यह अीश्वरको मजूर नही हुआ। अब मेरी विनती यह है कि आप अिसी समय कागजात ले आअिये और मेरा नाम लिख लीजिये। मुझे आशा है कि मुझसे पहले आप और किसीका नाम न लिखेगे।' अुन्होने कहा, 'अितनी क्या जल्दी है? अभी डॉक्टर आयेगा। आप आराम कीजिये। फिर सब कुछ हो जायगा। औरोको परवाने दूगा तो भी पहला नाम आपका ही रखूगा।' मैने कहा, 'अैसा नही। मेरी यह प्रतिज्ञा है कि मै जीता रहा ओर अीश्वरको मजूर हुआ तो सबसे पहले मै खुद ही परवाना निकलवाअूगा। अिसलिअे मेरा आग्रह है कि आप कागजात ले आअिये।' अिस पर वे गये। मेरा दूसरा काम यह था कि अेटर्नी-जनरल यानी सरकारी वकीलको तार दू कि मीर आलम और अुनके साथियोने मुझ पर जो हमला किया है अुसके लिअे मै अुन्हे दोषी नही मानता। कुछ भी हो, पर मै नही चाहता कि अुन पर फौजदारी मामला चले। मुझे आशा है कि मेरे खातिर

आप अुन्हे छोड देगे। अिस तारके जवावमे मीर आलम और अुनके साथियोको छोड दिया गया।

"मगर जोहानिसवर्गके गोरोने अेटर्नी-जनरलको अिस प्रकारका कडा पत्र लिखा 'अपराधियोको सजा देनेके वारेमे गाधीजीके विचार कुछ भी हो, लेकिन वे अिस देशमे नही चल सकते। अुन पर जो मार पडी है अुसके वारेमें वे चाहे कुछ न करे, परन्तु अपराधियोने यह मार घरके कोनेमे नही मारी। अपराध आम रास्ते पर हुआ है। यह सार्वजनिक अपराध है। कुछ अग्रेज भी अपराधका प्रमाण दे सकते है। अपराधियोको पकडना ही चाहिये।' अिस हलचलके कारण सरकारी वकीलने मीर आलम और अुसके साथियोको फिर पकड लिया और अुन्हे छह छह महीनेकी सजा मिली। सिर्फ मुझे गवाहके रूपमे नही बुलाया गया।

"हम बीमारके कमरेकी तरफ फिर नजर डाले। मिस्टर चिमनी कागजात लेने गये कि डॉक्टर आ पहुचे। अुन्होने मेरी जाच की। मेरा अुपरका होठ टफ गया था, अुसमे टाके लगाये। पसलियो वगैराकी जाच करके अुन पर लगानेकी दवा दी। जव तक टाके न टूटे, तव तक मुझे वोलनेकी मनाही कर दी। डॉक्टरने निदान किया कि मुझे किसी जगह वहुत सख्त चोट नही आओी है। अेक हफ्तेके भीतर मै विस्तर छोड सकूगा और मामूली काम-काजमे लग सकूगा। सिर्फ दो-अेक महीने शरीरसे वहुत परिश्रम न करनेकी सावधानी रखनी होगी। यह कहकर वे विदा हो गये। अिस तरह मेरा वोलना वन्द हुआ, परन्तु मेरे हाथ चल सकते थे। कौमके लिअे अध्यक्षके मारफत अेक गुजराती पत्र लिखकर मैने प्रकाशित करनेके लिअे भेजा। वह पत्र नीचे देता हू

"'मेरी तवीयत अच्छी है। श्री डोक और श्रीमती डोक मेरे लिअे सव कुछ कर रहे है और मै थोडे ही दिनोमे फिर सेवा करने लगूगा। जिन्होने मुझे मारा है, अुन पर मुझे जरा भी क्रोध नही है। अुन्होने नासमझीमे यह काम किया है। अुन पर कोअी मुकदमा चलानेकी जरूरत नही है। अगर अन्य लोग शान्त रहेगे तो अिस किस्सेसे भी हमे लाभ ही होगा। हिन्दुओको मनमे जरा भी रोष न रखना चाहिये। मै चाहता हू कि अिससे हिन्दू-मुसलमानोके वीच कटुता पैदा होनेके वदले मिठास पैदा हो। और खुदासे — अीश्वरसे — मै यही मागता हू।

"'मुझ पर जितनी मार पडी अुससे ज्यादा पडे तो भी मै अेक ही सलाह दूगा। वह यह कि सभीको दस अगुलिया देनी चाहिये। अिसीमे कौमका और गरीबोका हित और रक्षण है।

'"'अगर हम सच्चे सत्याग्रही होगे तो मारसे या भविष्यमें होनेवाले दगेके डरमे जरा भी भयभीत न होगे।

"'जो दस अगुलियोके वारेमे झगड रहे है अुन्हे मै अज्ञानी समझता हू।

"'मै खुदासे दुआ मागता हू कि वह कौमका भला करे, अुसे सच्चे रास्ते लगाये और हिन्दू-मुसलमानोको मेरे खूनकी पट्टीमे जोडे।'"

अिस पत्रका आश्चर्यजनक असर हुआ। लोगोमे शान्ति कायम हुआी। आपसका सन्देह दूर हुआ। और गाधीजीने हमला करनेवाले पठानो पर नालिश न की और खुद अुन्हे छुडवा दिया, अिससे अुनके हृदय पर भी चमत्कारिक प्रभाव हुआ। ये पठान वादमे गाधीजीके सहायक वन गये। सन् १९१४ में अेक वार ट्रान्सवालकी अेक सभामे गाधीजीको निमत्रण दिया गया था। वहा कुछ मुसलमानोने फसाद किया और गाधीजी पर घातक हमला करनेकी तैयारिया की। अितनेमे अुन पठानोमे से मीर आलम पठान हाथमे वडा छुरा लेकर सामने आ गया और वोला "यकीन रखना गाधी भाअीको जरा भी चोट पहुचानेवालेको मै यही ढेर कर दूगा।" अिस विकराल पठानसे दगाअी दव गये और भाग गये। अिस तरह गाधीजीके जीवनमे हिन्दुस्तानियोका वातावरण भी शुद्ध होने लगा। अच्छे हो जानेके वाद वे नेटाल गये। डरवनमें रातको अेक सभा हुअी। अुसमे भी फसादियोने अेक षड्यत्र रच रखा था। कुछ मित्रोने सभामे होनेवाली धाधलीके वारेमे गाधीजीको सावधान कर दिया था और वहा न जानेका आग्रह किया था। परन्तु गाधीजीने कह दिया कि कौम मेरी मालिक है और मै अुसका सेवक हू। कौमके भाअी मुझे हुक्म दे और मै न जाअू तो मेरे लिअे शोभाकी वात नही होगी। अिस तरह धाधलीकी चेतावनी मिलने पर भी गाधीजी निडर होकर सभामे गये। सभामें शोरगुल मचा। रातका समय था। हमला होनेकी तैयारी थी। सभास्थलकी विजलीकी वत्तिया अेकाअेक वन्द हो गअी। परन्तु गाधीजीको मालूम न हो अिस तरह 'कालोनियल वॉर्न' युवकोकी अेक टोली मिस्टर जैक-मुडले नामक अेक प्रसिद्ध वॉक्सरकी सरदारीमे अुस सभामें वैठी हुअी थी। अुसने ठीक समय पर गाधीजीकी रक्षा की।

अिस तरह समझौतेके सिलसिलेमे वहुत गलतफहमी पैंदा होनेके कारण जो अवाछनीय घटनाअें हुअी, अुनके कारण भविष्यमें अुनके प्रेरकोको पछतानेका समय आ गया। परन्तु गाधीजीकी आत्मिक साधनामे अिन प्रसगोने अद्भुत सामर्थ्यका सिचन किया।

१३

फिर लड़ाअी शुरू हुअी

गाधीजीकी तवीयत अच्छी होनेके वाद अुन्होने अपनी सारी प्रवृत्ति सरकारके साथ हुअे समझौते पर अमल करने-करानेमे केन्द्रित कर दी। तीन महीनेमे ही प्रत्येक हिन्दुस्तानीने समझौतेकी शर्तके अनुसार अपना नाम दर्ज करवा दिया। विरोधी पक्षके साथ समझौता होनेके वाद वह समझौता पवित्र हो जाता है और समझौतेके अनुसार आचरण करना हमारा फर्ज हो जाता है। समझौता करनेके वाद विरोधी पक्ष अपनी शर्तें पूरी करेगा या नही, यह शका रखकर हम अपना वचन पूरा करनेमे ढिलाअी करे, तो वह विश्वासघात और वचन-भग माना जायगा। विरोधी पक्ष अपनी सज्जनता नही दिखायेगा और वचन-भग करके हमारे साथ विश्वासघात करेगा, अिस तरहकी शका रख कर हम भी वैसा ही रवैया रखे तो वह आत्म-घातक होता है। स्थूल दृष्टिसे तो हमारे पक्षके साथ धोखा होनेसे हमारा नुकसान होता दिखाअी देता है। परन्तु सत्यकी लडाअीमे अैसा कभी नहीं होता। सत्यकी लडाअीके परिणामका आधार सत्यका आचरण करनेकी हमारी शक्ति पर होता है, विरोधी पक्षके असत्याचरण पर या अधर्म पर नही। यह हो सकता है कि हमारी कडी परीक्षा हो। परन्तु जैसे-जैसे हमारी परीक्षा होती जाती है, वैसे-वैसे हम कचनकी तरह अधिक शुद्ध वनते जाते है। ट्रान्सवालके समझौतेके वारेमें भी अैसा ही हुआ।

सन् १९०८ के जनवरी महीनेकी ३० तारीखको समझौता हुआ था और २४ जूनको सत्याग्रहकी लडाअी फिर आरम्भ हो गअी। हिन्दुस्तानियोने अपने वचनका पूरी तरह पालन किया, तो भी वहाकी सरकारने अपना वचन पूरा करनेसे अिनकार कर दिया। खूनी कानून रद करनेसे अुसने साफ अिनकार

कर दिया और जो नाम लिखवाये गये है वे स्वेच्छासे नही वल्कि बाकायदा लिखवाये गये है, अैसा घोषित किया। सरकारकी अिस घोषणासे हिन्दुस्तानी चौके। कुछ लोगोने सरकारको दुष्ट बताया, कुछने गाधीजीको भोला कहा, और कुछने तो गाधीजीके मुह पर कह दिया, "आप हमारी बात मानेगे नही, परन्तु जनरल स्मट्स तो कपटी है। अुसने आपको धोखा दिया। हम सब नाम न लिखवाते तो झख मार कर वह कानून रद करता। अुसके वचन पर भला क्या विश्वास किया जाय?" अिस तरहकी कअी बाते गाधीजीको सुनाअी गअी। गाधीजी बोले, "हमे अपने वचनका पालन करना चाहिये। अुन्होने हमे धोखा दिया तो अिससे हमारा कोअी नुकसान नही हुआ। मुझे अुन्होने धोखा दिया है, अिसलिअे मै तो अुनसे लडूगा ही और आप यह मानते हो कि मुझे दिया गया धोखा आप पर भी लागू होता है, तो आप भी मेरे साथ लडाअीमे शामिल हो जाअिये। अब हम अधिक शक्तिशाली बनकर सत्यकी लडाअी लडनेके लिअे अधिक योग्य बनेगे।"

हिन्दुस्तानियोके नेताओने सरकारको पत्र लिखे, परन्तु अुनके अुत्तर बिलकुल निराशाजनक मिले। अतमे जिस धारासभामे खूनी कानूनको थोडा-सा सुधार करके पास किया गया था, अुसमे अुस बिलके पेश होनेसे पहले हिन्दुस्तानी लोगोने अेक अर्जी भेजी। परन्तु पार्लियामेण्टने अुस अर्जीकी परवाह नही की। कमजोर और जगली मानी जानेवाली जातिकी अर्जी पर शासक जातिने कभी ध्यान दिया है? अपनी अर्जीका यह अजाम आया जानकर हिन्दुस्तानियोके नेता अिकट्ठे हुअे और चर्चा करके अुन्होने सरकारको अतिम पत्र लिखकर यह बता दिया कि अमुक अवधिसे पहले खूनी कानून रद न किया गया तो हिन्दुस्तानी स्वेच्छासे लिये हुअे रजिस्टरोको अिकट्ठा करके जला डालेगे, और अैसा करनेसे जो भी कष्ट भोगने पडेगे अुन्हे प्रसन्नचित्तसे भोग लेगे।

यह निश्चय-पत्र पढकर जनरल स्मट्स आगबबूला हो गया। अुसने अिस निश्चयपत्रको हिन्दुस्तानियोकी धमकी मानकर खूनी कानून पार्लियामेण्टमे पेश करते हुअे अिस पत्रको 'अल्टीमेटम' कह कर पार्लियामेण्टके सदस्योका ध्यान अुसकी ओर खीचा। पार्लियामेण्टके सदस्य भी क्रुद्ध हुअे और अिस कानूनको सर्वसम्मतिसे पास करानेमे जनरल स्मट्सको जरा भी कठिनाअी नही हुअी। जनरल स्मट्स और धारासभाके सदस्योको हिन्दुस्तानियोका यह निश्चय-

पत्र धमकी जैसा लगा, अिसका भी कारण था। पत्रकी दो बाते अुन्हे बहुत बुरी लगी (१) "कानून रद नही करोगे तो हिन्दुस्तानी स्वेच्छासे लिये हुअे रजिस्टर जला देगे" — यह तो अमली निश्चय हुआ। और (२) "मागी हुअी वस्तु न मिली तो हम भी अमुक कदम अुठावेगे" — यह समानताका हक जताना हुआ। अिन दो बातोमें दक्षिण अफ्रीकाकी गोरी सरकारको हिन्दुस्तानियोकी अुद्दतता मालूम हुअी। परन्तु हिन्दुस्तानियोने अिससे भी आगे अेक कदम अुठाया। अुन्होने सरकारके अुत्तरकी राह देखे बिना दिन निश्चित करके अपनी अिच्छाको अधिक निश्चयात्मक बना दिया। अिस मियादको सरकारने अल्टी-मेटम माना। अैसा अल्टीमेटम देनेका जो प्रसग गाधीजीके भारतमे आनेके बाद अुपस्थित हुआ था, वह अिस परिस्थितिसे मिलता-जुलता है और गिरमिटकी अनिष्ट पद्धतिको बन्द करनेसे सम्बन्ध रखता है। अत यहा अुसका अुल्लेख करना अप्रस्तुत नही होगा। वह अिस प्रकार है

गाधीजी हिन्दुस्तान आये अुसके बाद सन् १९१७ मे भारतकी कलकस्वरूप गिरमिटकी प्रथाको बन्द करनेका आन्दोलन अुन्होने आरम्भ किया। अिस आन्दोलनमें हिन्दुस्तानके सभी राजनीतिक दल शामिल हुअे। बम्बअीके कावसजी हॉलमे बम्बअीके सभी नेता अेक ही मच पर अिकट्ठे हुअे। लिबरल या मॉड-रेट, नेशनलिस्ट या अिंडिपेन्डेन्ट, सहकारी या समाज-सुधारक वगैरा सभी दलोके नेता पहले-पहल अेक ही कामके लिअे अेक मच पर अुपस्थित हुअे। सभाके सभापति थे सर जमशेदजी जीजीभाअी, गिरमिट प्रथाको रद करनेका प्रस्ताव रखनेवाले थे गाधीजी और अुसका अनुमोदन करनेवाले थे तिलक महाराज। प्रस्तावके सम्बन्धमे प्रारभिक बातचीत करते समय बहुतोका यह आग्रह था कि प्रस्तावमे यह माग की जाय कि देशकी प्रतिष्ठाके खातिर भी भारत-सरकार गिरमिट पद्धतिको तुरन्त बन्द कर दे। गाधीजीने देखा कि हम अपनी ताकतसे गिरमिट प्रथा तुरन्त बन्द करनेकी माग करते हो, तो अैसा प्रस्ताव सचमुच सर-कारको कठिनाअीमे डालने जैसा है। और बिना ताकतके सिर्फ शब्दाडम्बरके खातिर 'तुरन्त' शब्दका अुपयोग करना हो तो अग्रेजोकी दृष्टिमे अिस शब्दका कोअी अर्थ नही। अिसलिअे गाधीजीने यह अदाज लगा लिया कि सब नेताओमे अिस प्रश्नके बारेमे कितनी तीव्रता है और अुस प्रस्तावमे परिवर्तन कर दिया। जो प्रस्ताव अमर्यादित था अुसमे '३१ मअीसे पहले' शब्द रखकर अुसे मर्यादित कर दिया। सारे देशके मुख्य मुख्य शहरोसे यह माग करनेवाले सैकडो तार

वाअिसरॉयके पास गये कि "३१ मअीसे पहले गिरमिटकी गुलामीकी प्रथा वन्द होनी चाहिये।" गाधीजीने अिस सम्बन्धमे वाअिसरॉय-लॉर्ड चेम्सफोर्डसे मुलाकात की, तव अुन्होने '३१ मअी'की दी हुअी मियादके वारेमे आपत्ति अुठाअी। कारण, अधीन प्रजा अिस तरह मियादी माग करे, तो अुसका यही अर्थ होगा कि प्रजा सत्ताधारियोसे जो माग करती है अुसके पीछे अुस पर अमल करानेके लिअे अुसके पास काफी ताकत मौजूद है। वाअिसरॉय लॉर्ड चेम्सफोर्डको हिन्दुस्तानियोकी यह माग अप्रिय लगी। अधीन प्रजाका अैसी अुद्धत माग करना अुन्हे पसन्द नही आया। परन्तु गिरमिटके सवालके पीछे भारतीय जनताके निश्चय-वलका विश्वास हो जानेके कारण अुन्होने तुरन्त अिस प्रथाको भारत-रक्षा-कानूनके आधार पर स्थगित करनेका हुक्म दिया और भारत-मत्रीके द्वारा सदाके लिअे रद करवा दिया। गाधीजीने अिस कार्य-पद्धतिका पहला प्रयोग दक्षिण अफ्रीकामे हत्यारे कानूनको रद करवानेका निश्चयपत्र ट्रान्सवालकी सरकारको भेजकर किया था। सरकारको अुसका खटकना स्वाभाविक ही था। परन्तु अुसकी चर्चा गोरोमे अैसी हुअी जिससे हिन्दुस्तानी लोगोका वातावरण अुग्र हो गया और वे लडाअीके लिअे तैयार हो गये। जनरल स्मट्सने भरी धारासभामे यह चेतावनी दी कि "हिन्दुस्तानी लोग गैरजिम्मेदार आन्दोलनकारियोके नचाये नाचेगे तो कुचल दिये जायगे।" दूसरी तरफ हिन्दुस्तानियोने भी लडाअीके लिअे कमर कस ली।

अिस तरह हिन्दुस्तानियोका वायुमडल गरम होने लगा। अुसमे अेक और नयी शक्ति प्रकट हुअी। अिस वारकी लडाअीमे नेटालके हिन्दुस्तानी भी शरीक हो सकते थे। अिमिग्रेशन-कानूनके कारण वाहरका कोअी हिन्दुस्तानी कितना ही पढा-लिखा क्यो न हो, तो भी वह ट्रान्सवालमे प्रवेश नही कर सकता था। यह कानून भी मुख्यत हिन्दुस्तानियोके विरुद्ध होनेके कारण रगभेदसे भरा और अपमानजनक था। और हिन्दुस्तानके श्री गोखले या श्री फीरोजशाह मेहता जैसे अधिकसे अधिक शिक्षित और अग्रगण्य नेता भी ट्रान्सवालमे प्रवेश नही कर सकते थे। परन्तु गोरी चमडीका कोअी भी कगाल और निरक्षर गुण्डा वहा प्रवेश कर सकता था। अिसमे हिन्दुस्तानका और न्यायभावनाका दोनोका अपमान था। अिस कानूनका विरोध करना आवश्यक था। अिसलिअे लडाअीका क्षेत्र वढा। नेटाल प्रान्तको, जो सत्याग्रहकी लडाअीसे अलग था, अिसमे शामिल होनेका निमत्रण

मिला। अिस लडाअीसे पहले भी गाधीजीने समझौतेके प्रयत्न किये थे। सरकारने कहा, "अमुक हिन्दुस्तानियोके प्रवेशको निषिद्ध माना जाय और अिमिग्रेशन-कानूनमे रगभेद रखने दिया जाय, तो यह कानून बन्द किया जायगा।" गाधीजी अैसी बातको मजूर कैसे करते? अुन्होने साफ अिनकार कर दिया। और दूसरी लडाअी आरम्भ हुअी।

यह आरम्भ डरबनके पारसी युवक श्री सोराबजी शापुरजी अडाजणियाने किया। सोराबजी पारसी जातिके भूषण थे। (भगवानकी अिच्छासे वे कुछ वर्ष पहले गुजर गये।) अुस समय अुन्होने साहस करके यह लडाअी आरम्भ की थी। सरकारको चेतावनी देकर वे २४ जून, १९०८ को ट्रान्सवालमे दाखिल हुअे। सरकारने अुन्हे पकडा। और २० जुलाअीको वॉल्क्रास्टके मजिस्ट्रेटने अुन्हे अेक मासकी सजा दी। अिस अर्सेमें लोगोका जोश बढा। १२ जूनके दिन सरकारके वचन-भगके विरुद्ध अपना पुण्यप्रकोप प्रगट करनेके लिअे हिन्दुस्तानियोकी अेक जबरदस्त सभा हुअी और अुसमे दो हजार अैच्छिक रजिस्टर जला दिये गये। अितना ही नही, जिन्होने स्वेच्छासे लिये हुअे रजिस्टर जला डाले अुन्होने सरकारको खुली चुनौती देकर अपने नाम भी जाहिर किये। अिस प्रकार जलाये हुअे रजिस्टरोकी सूची ट्रान्सवाल अिडियन अेसोसिअेशनके दफ्तरमे रखी गअी थी और अिस सूचीको बादमे समझौतेके समय सरकारने मजूर किया था। अब सरकारके अिस कानूनकी क्या कीमत रही? कानूनके खिलाफ लडनेका यह ढग सरकारको बुरा लगा। वह चौक गअी। अुसने फिर नेताओको बुलवाया। प्रिटोरियामे दोनो तरफके नेताओकी अेक परिषद हुअी। मध्यस्थके रूपमे मि० आल्बर्ट कोर्टराअिट नियुक्त किये गये। समझौतेकी बातचीत हुअी। परन्तु अुससे कुछ काम नही बना। सरकार अिमिग्रेशन-कानूनमे और रजिस्ट्रेशनके कानूनमे कुछ सुधार करनेको राजी हुअी, परन्तु कानून रद करनेसे अुसने अिनकार कर दिया। अिसलिअे परिषदसे कुछ लाभ नही हुआ। फिर भी सरकारने अेक नया कानून बनाकर यह मानकर अूपरी सुधार किये कि सत्याग्रही अिन सुधारोसे सन्तुष्ट हो जायगे। परन्तु सत्याग्रहियोने ये परिवर्तन स्वीकार नही किये और लडाअी जमी।

श्री सोराबजीके आरम्भके बाद नेटालके नेताओका धावा हुआ। वहाके श्री दाअूद सेठ और पारसी रुस्तमजी वगैरा कुछ मुख्य व्यापारी नेटालकी हद लाघकर ट्रान्सवालमे घुसे। सरकारने अुन्हे भी योग्यतानुसार सजाअें दी। अिस

प्रकार अेक ओर लडाओी आरम्भ हुओी और दूसरी ओर रोडेशिया प्रान्तने भी हिन्दुस्तानियोको न आने देनेके लिअे अिमिग्रेशन-कानून वनाया, परन्तु वडी सरकारने अुसे मजूरी नही दी। आरम्भ हुअे सत्याग्रहका यह तात्कालिक परिणाम माना जा सकता है। नेटालकी मददसे ट्रान्सवालके हिन्दुस्तानियोका अुत्साह वढा। अुन्होने भी व्यापारके या अन्य जो कानून थे अुन्हे तोड-तोडकर सरकारको खुले तौर पर चुनौती देना शुरू किया। यह दूसरी लडाओी तो पहलीसे भी कओी गुनी अुत्साहवाली निकली। ट्रान्सवालकी जेले और हवालाते खचाखच भर गओी। कुछ हफ्तोमें तो ट्रान्सवाल जैसे छोटेसे प्रान्तमे सजाओका औसत हररोज चालीस-पैतालीस रहने लगा। विना परवानेके हिन्दुस्तानी फेरिया लगाते, विना परवानेके व्यापार करने वैठ जाते, विना अिजाजतके ट्रान्सवालके हिन्दुस्तानी नेटालमें जाकर वापस ट्रान्सवालमे घुस जाते और पकडे जाते। अिस प्रकार वहुत वडी सख्यामें लोग पकडे गये।

सरकारने भी हिन्दुस्तानियोके अिस जोशको कुचल डालनेके लिअे कमर कस ली। अुसने देखा कि हिन्दुस्तानियोके दिलोसे जेलकी सजाका डर भाग गया है, अिसलिअे अुसने ट्रान्सवालकी जेलोमें कैद हिन्दुस्तानी सत्याग्रहियो पर जुल्म करना शुरू किया। अुनसे पत्थर तुडवाने लगी और पाखाना-सफाओीका काम भी कराने लगी। परन्तु अिससे सत्याग्रही डरे नही, अिसलिअे सरकारने दूसरा रास्ता ढूढ निकाला। सैकडो मनुष्योको पुर्तगाली अुपनिवेश डेलागोआ-वे नामक वन्दरसे जहाजमे हिन्दुस्तानकी तरफ रवाना करके मद्रासमे अुतार दिया। अैसी दो टोलिया सन् १९०९ मे मद्रासमे अुतारी गओी। जिन्हे हिन्दुस्तान भेजा गया था, वे ज्यादातर मद्रासकी तरफके रहनेवाले थे। अुनमे अुत्तर हिन्दुस्तान और वम्वअीकी तरफके रहनेवाले भी थे। अिन सव लोगोको कोओी सूचना या तैयार होनेका समय दिये विना ही जहाज पर चढा दिया गया था। अुनके लिअे हिन्दुस्तानकी भूमि विलकुल अनजान थी। वे सव ट्रान्सवालमें ही पैदा हुअे थे, हिन्दुस्तानमे अुनका कोओी सगा-सम्वन्धी नही था, खडे रहनेको भी जगह नही थी। अैसी निराधार अवस्थामे अनजान आदमियोको खाने-पीने या ओढनेके किसी साधनके विना अनजान देशमें धकेल देना कोओी कम क्रूरता थी? परन्तु अिससे अेक फायदा हुआ। अिन लोगोके निर्वासनसे हिन्दुस्तानकी सारी जनता अधिक जाग्रत हो गओी। दक्षिण अफ्रीकाके अपने भाअियोकी मुसीवत-भरी हालतकी तरफ अुनकी आज तक जो लापरवाही थी वह दूर हुओी। चारो तरफसे अिसका

विरोध हुआ, अुसके प्रति प्रकोप प्रगट हुआ। मद्रासमें श्री गणेश नटेसनने सभी निर्वासित भाअियोकी हर तरहसे सेवा की। और अपने 'अिंडियन रिव्यू' मासिक द्वारा तथा दूसरे अखवारोके जरिये दक्षिण अफ्रीकी सरकारके अिस कदमकी आलोचना की। परिणामस्वरूप मद्रास, कलकत्ता, वम्वअी, दिल्ली, अलाहावाद वगैरा वडे-वडे शहरोमे नेताओने सभाअे करके दक्षिण अफ्रीकामें हिन्दुस्तानियो पर गुजरनेवाले जुल्मोके खिलाफ विरोध प्रगट करके अुन्हें अुचित सहायता देनेकी अपनी तैयारी वताअी और अुसकी तरफ भारत-सरकारका ध्यान खीचा।

अिंग्लैण्डमे गाधीजीके प्रयत्नसे लॉर्ड अेम्पथीलकी अध्यक्षतामें स्थापित कमेटीने भी वहुत मदद दी। अिसके अलावा, अुसने सरकारके साथ और अखवारोमे दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोकी सत्याग्रहकी लडाअीके सम्वन्धमें अत्यन्त महत्त्वपूर्ण चर्चा करके अिंग्लैण्डकी जनताका और सरकारका ध्यान खीचा।

ट्रान्सवालके कुछ न्यायप्रिय गोरोने भी अिसमे मदद की। मि० विलियम हॉस्केनकी अध्यक्षतामे हिन्दुस्तानियोको सहायता देनेके लिअे गोरोकी अेक कमेटी स्थापित हुअी। अुस कमेटीने 'लडन टाअिम्स' को अपना वक्तव्य भेजा। और अिसी अर्सेमे नेटाल और रोडेशियामे हिन्दुस्तानियोके विरुद्ध जो कानून वने, अुनका भी अिस कमेटीने वहुत विरोध किया। अिस प्रयत्नके परिणाम-स्वरूप सरकारको वे कानून रद करने पडे।

अिस तरह चारो ओरसे नैतिक सहानुभूति मिलने लगी, फिर भी असली जोर तो हिन्दुस्तानियोको ही वताना था। श्री जोसेफ रॉयपन वैरिस्टर, श्री थवी नायडू, श्री पी० के० नायडू, श्री क्रिस्टोफर वगैरा अनेक शिक्षित और दक्षिण अफ्रीकामे जन्मे हुअे हिन्दुस्तानियोने अिस सत्याग्रहकी लडाअीमे अच्छा भाग लिया। सव दो-दो चार-चार वार जेलयात्रा कर आये। श्री सोरावजी तो सात वार जेलकी यात्रा कर आये। श्री प्रागजी देसाअी भी पाच-छह वार हो आये। अिन सभी भाअियोका अुत्साह अनोखा था। जेलोमे अनेक दु ख अुठाने पडे, अुपवास करके जुल्मका विरोध करना पडा, फिर भी अुनके अुत्साहमे कमी नही आयी। ट्रान्सवालकी आठ हजारकी आवादीमे से अिस तरहकी लगभग दो हजार सजाये हुअी थी। गाधीजीको अिस दूसरी लडाअीमे दो वार जेलकी सजा हुअी थी। ७ सितम्वर, १९०८ को वॉल्क्रस्टमे गाधीजीको पकडा गया और अेक सप्ताह वाद अुन पर मुकदमा चलाकर वहाके मजिस्ट्रेटने दो महीनेकी सजा

दी थी। फिर १५ जनवरी, १९०९ को अुन्हे दुवारा वॉल्कस्टमे पकडा गया और २४ तारीखको मुकदमा चलाकर तीन महीनेकी सजा दी गओी थी। अिस प्रकार हिन्दुस्तानियोने कओी वार जेलमे जाकर अनेक कष्ट अुठाये। अिन कष्टोमे श्री नागापन् जैसे अुत्साही नौजवानकी जेलसे निकलनेके वाद तुरन्त ही मृत्यु हो गओी। कुछके शरीर जर्जर हो गये थे। और कुछ वर्वाद हो गये। अिनमें श्री काछलिया सेठका त्याग अनुपम था। वे ट्रान्सवाल अिडियन असोसियेशनके अध्यक्ष थे। अिसलिअे अुनके प्रति तो सरकार और गोरे लोगोका ध्यान आकर्षित होता ही। गोरे व्यापारियोने श्री काछलिया सेठ पर दवाव डाला कि वे अिस आन्दोलनमे अलग रहें। गोरे व्यापारी काछलिया सेठके साहूकार ठहरे। दक्षिण अफ्रीकाके व्यापारमे व्यापारीकी सारी पूजी लगी रहती थी और अुसके पास दुकानमें अपनी पूजीसे कओी गुनी कीमतका माल होता था। दुकानकी प्रतिष्ठा पर गोरे व्यापारी हिन्दुस्तानी व्यापारियोको अमुक मियादके भीतर पैसे चुकानेकी शर्त पर माल देते थे। सत्याग्रहकी लडाओीमे लगा हुआ तन और मन व्यापारको किस तरह सभाल सकता था? अिस पर भी मागनेवालोका जान-वूझकर तकाजा होता था। परन्तु श्री काछलिया सेठ अपनी वात पर अडिग रहे। साहूकारोकी सभा हुओी। अुसमे श्री काछलिया सेठको वुलाया गया और खूव धमकिया दी गओी "तुम्हारी अिज्जत चली जायगी, तुम्हारा व्यापार नष्ट हो जायगा, तुम्हारा माल मिट्टीके भाव नीलाम होगा और हम अपना लेना पाओी-पाओी वसूल करनेमें जरा भी देर नही करेगे। अिसलिअे तुम अपना भला चाहते हो तो अिस आन्दोलनसे अलग रहो।" अिन धमकियोका जवाव श्री काछलिया सेठने दृढतासे दिया "आपके द्वेष-भावमें मेरा व्यापार नष्ट होता हो तो भले ही हो जाय, परन्तु स्वीकार की हुओी देशसेवा करनेमे मै पीछे कदम तो हरगिज नही हटा सकता।" श्री काछलिया सेठ पहाडकी तरह अटल रहे। द्वेषी गोरे व्यापारियोने अुन पर दावे किये। श्री काछलिया सेठने पूरी अीमानदारीमे अपनी दुकानका सारा व्यापार अदालतको सौंप दिया और वर्षोका जमा हुआ अपना व्यापार नष्ट हो जाने दिया। यह सव सहन करके कठिनाअियोकी भट्टीमे से श्री काछलिया सेठ शुद्ध कचन वनकर वाहर निकले। अतमे गोरे व्यापारियोने और हिन्दुस्तानियोने अुनकी मर्दानगीकी कदर तो की ही। लडाओी खत्म होनेके वाद व्यापारीके रूपमें भी श्री काछलिया सेठकी प्रतिष्ठा अच्छी मानी गओी और वे फिर सपन्न हो गये।

अिस तरह ट्रान्सवालके मुट्ठीभर हिन्दुस्तानियोमे से कितने ही व्यापारियो, युवको और वहनोकी परीक्षा हुअी। परीक्षासे अुनकी शक्ति वढी और अन्तमें अुनकी जीत हुअी।

१४
'हिन्द स्वराज्य'

सत्याग्रहकी लडाअी अिस तरह आरम्भ हुअी और अुसने व्यवस्थित रूप लिया। सरकारने माना था कि सत्याग्रही थक जायगे, परन्तु सत्याग्रही तो कभी थकता नही। हमेशा गिरफ्तारिया होती ही रहती। अितनेमे लडाअीमें अेक नअी लहर आअी। दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोने दो शिष्ट-मडल भेजनेका निश्चय किया। अेक हिन्दुस्तानमें और दूसरा अिग्लैण्डमें। सर्वश्री पोलाक, अेम० अे० कामा, अेम० जी० नायडू और अी० अेस० कुवाडियाको हिन्दुस्तान भेजना निश्चित हुआ। सर्वश्री अेम० के० गाधी, अी० अेम० काछलिया, हाजी हवीव और वी० अे० चेट्टियारको अिग्लैण्ड भेजना निश्चित हुआ। ट्रान्सवालकी सरकारको यह अच्छा नही लगा। शिष्ट-मडलके दोनो देशोमे जानेका अर्थ होता ट्रान्सवालकी सरकार और अुसके राजकाजकी फजीहत और अुसकी निंदा। अिसे वह कैसे सहन करती? अिसलिअे सरकारने दोनो मडलोके सदस्योमे से सर्वश्री काछलिया, कुवाडिया, कामा और चेट्टियारको पकड लिया। सरकारकी अिस कार्रवाअीसे कौममें और अुत्साह वढा और शिष्ट-मडलका कार्यक्रम तो कायम ही रहा। दोनो शिष्ट-मडल विदा हुअे। अिग्लैण्डके लिअे रवाना होनेवाले शिष्ट-मडलमें गाधीजी और श्री हाजी हवीव थे। वे सन् १९०९ के सितम्वर मासमे विलायत पहुचे। वहा अुन्होने लॉर्ड क्रू से मुलाकात की। अुस समय दक्षिण अफ्रीकाका यूनियन स्थापित करनेके लिअे दक्षिण अफ्रीकाके सारे मत्री अिग्लैण्डमें मौजूद थे। वडी सरकारने अिसके साथ ही हिन्दुस्तानियोके प्रश्नका भी निपटारा करनेका आग्रह किया। परन्तु जनरल स्मट्सने किसी भी तरह अिस वातको स्वीकार नही किया। ट्रान्सवालमें रगभेद-रहित साधारण कानून वनानेसे अुन्होने साफ अिनकार कर दिया। रगभेदका कानून वनानेके वारेमे अुनका अितना अधिक दुराग्रह था कि वडी सरकारका दवाव जरा भी काम नही आ सका। अिस दृष्टिमे तो अिग्लैण्ड गया हुआ शिष्ट-मडल असफल ही कहा जायगा। परन्तु अुसके सिवा दूसरा काम वहुत हुआ। अुस समय गाधीजीने जो कठोर परिश्रम किया

अुसका वर्णन अुनके साथी श्री हाजी हबीबने अेक सभामें मार्मिक शब्दोंमें किया था। शिष्ट-मंडलके ट्रान्सवाल वापस आनेके बाद जोहानिसबर्गमें मुसलमान भाअियोंने श्री हाजी हबीबको मानपत्र देनेके लिअे अेक सभा की। अुसमें गांधीजीको भी आमंत्रण दिया गया। श्री हाजी हबीबकी सेवाकी कदर बहुतसे भाअियोंने अुनकी बड़ाअी करके की। कुछने शिष्ट-मंडलके सदस्यकी हैसियतसे अिंग्लैण्डमें अुनके द्वारा की गअी सेवाका वर्णन भी किया। गांधीजीने भी श्री हाजी हबीबकी सेवावृत्ति, अुनके सरल स्वभाव और देशके प्रति अुनके भक्तिभाव आदिका वर्णन किया। अिन सबके अुत्तरमें श्री हाजी हबीबने मजाकमें बताया कि, "मेरे मुसलमान भाअी मुझे जो अिज्जत दे रहे हैं अुनका कारण मैं अच्छी तरह समझता हूं। अिंग्लैण्डके शिष्ट-मंडलमें अुन्होंने मुझे गांधी भाअीके साथ भेजा और वहां मैंने जो सख्त काम किया अुसकी कद्र करके वे मेरा आदर करें अिसमें कोअी बुराअी नहीं है, और सचमुच मैंने बहुत काम किया है। अपने कामकी और अुसके असरसे होनेवाली थकानकी मैं क्या बात कहूं? हमारे गांधी भाअी रातको जो पत्र लिखते, अुनके लिफाफों पर डाकके टिकिट रातके अेक बजे तक चिपका कर मैं थककर चूर हो जाता था। अैसे मेरे कठोर परिश्रमके लिअे आप सब भाअी मेरा आदर करते हो, तो जरूर मैं अुसके योग्य हूं।" श्री हाजी हबीबने गांधीजीके परिश्रमका वर्णन अिन मनोरंजक शब्दोंमें किया था। परन्तु अिस शिष्ट-मंडलके कामके सिवा गांधीजीने जो काम किया अुसके प्रतापसे अुनके अपने और भारत-भूमिके भावी जीवनकी रूपरेखा निर्धारित हो गअी। अुस समय देशभक्त विनायक सावरकर, श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा और श्री हरदयाल वगैराकी क्रांतिकारी मंडली अिंग्लैण्डमें थी। अुनके साथ हिन्दुस्तानके भविष्यके बारेमें गांधीजीकी जी खोलकर चर्चा हुअी। हिंसा, अहिंसा, सत्याग्रह, विप्लव और जिस स्वराज्यके लिअे अिन सब साधनोंका विचार होता था वह स्वराज्य कैसा होना चाहिये आदि अनेक विषयों पर चर्चाअें हुअीं। गांधीजीकी चर्चा सिर्फ चर्चाके लिअे नहीं होती, बल्कि अुसके अनुसार आचरण करनेके लिअे होती है। अिन सारी चर्चाओंमें गांधीजीने जो कुछ सोचा अुसके परिणामस्वरूप अुन्होंने किल्डोनन कैसल नामक जहाजमें ही 'हिन्द स्वराज्य' नामकी पुस्तक लिखी। यह जहाज १३ नवम्बरको अिंग्लैण्डसे रवाना हुआ था। अिस पुस्तकके विषयका या अुसके गुण-दोषोंका वर्णन करना मेरी शक्तिसे बाहरका काम है। मेरी यह नम्र मान्यता है कि जिसने अिस

पुस्तकको नही पढा हो, वह गाधीजीकी प्रवृत्ति और सत्याग्रहकी लडाअीको नही समझ सकता। यह पुस्तक हिन्दुस्तानके स्वराज्य और अुसे प्राप्त करनेके आवश्यक साधन सत्याग्रह आदिकी नअी विचारसरणीका निचोड़ है। यह पुस्तक अुन्होने सन् १९०९ मे लिखी थी। आज ३४ वर्ष बीत जाने पर भी गाधीजीकी हरअेक प्रवृत्ति अुस पुस्तकमे बताये हुअे सूत्रके मूर्तरूपमें विकसित हुअी है। ३४ वर्ष पहले गाधीजीने चरखा देखा तक न होगा। सन् १९१६–१७ मे अुन्होने पहले-पहल पुराने ढगका चरखा किसी घरकी छतके कूडे-करकटमें से अुसी समय अुतारा हुआ देखा था। तब अुसके दर्शन करके अुन्हे अैसा आनन्द हुआ, मानो अुन्होने हिन्दुस्तानके तारनहारके दर्शन किये हो। अैसे चरखेको अुन्होने चोतीस वर्ष पहले देखे बिना भी भारतका तारनहार मान लिया था। यह पुस्तक सारे जगतके कल्याणके लिअे लिखी गअी गाधीजीकी पहली पुस्तक है। अिसे हम भारतकी स्वराज्य-गीता कह सकते है।

गाधीजीका 'हिन्द स्वराज्य' प्रकाशित हुआ तब अुसके विषयमे अिलैण्डमे और दक्षिण अफ्रीकामे बडी चर्चा हुअी। अुसमे बताये गये विचार अुस युगके लिअे नये थे। जो प्रथा, जो व्यवहार, जो पद्धति देशके लिअे और मानव-जातिके लिअे लाभदायक मानी जाती रही अुसका गाधीजीने खडन किया। जो धधे और अुन्हे करनेवाले लोग प्रतिष्ठित और परोपकारी माने जाते थे, गाधीजीने अुनकी निंदा की और अुन्हे अनर्थकारी बताया। जो दशा निकृष्ट और दु खद समझी जाती थी अुसे अच्छा समझा। अैसे विचारोमे बहुतसे लोग विचारमे पड गये, बहुतसे घबरा गये और बहुतोको क्रोध आया। अैसे मित्रो और अपरिचित सज्जनोने गाधीजीसे सवाल-जवाब किये। अिस स्थान पर मै अैसे अेक-दो पत्र दे दू, तो 'हिन्द स्वराज्य' मे प्रगट किये गये विचारोके बारेमे स्पष्टता हो जायगी।

"फागुन बदी ७, स० १९६६

"चि० मगनलाल,

"तुम्हारा पत्र मिला। तुम मेरे जवाबको समझ सको, अिसलिअे तुम्हारा पत्र वापस भेज रहा हू।

"तुमने जो शकाअे अुठाअी है, अुनका स्पष्टीकरण करनेकी मै कोशिश करूगा। परन्तु शायद अुससे तुम मेरे विचारोको पूरी तरह समझ नही सकोगे। अगर 'हिन्द स्वराज्य' अेक-दो बार फिर पढ लोगे, तो जो स्पष्टीकरण तुमने चाहा है वह अुसीमें से सभवत तुम्हे मिल जायगा।

"जिस हद तक हमने नअी सभ्यताको ग्रहण किया है, अिसमें शक नही कि अुसी हद तक हमें पीछे हटना पड़ेगा। यह भाग सबसे कठिन है, परन्तु अिसे करना ही पडेगा। हम गलत रास्ते लग जाय तो वापिस लौटे बिना काम नही चल सकता। आज जो भोग हम भोग रहे हैं अुनके बारेमें हमे वीतराग होना ही पडेगा। अैसा होनेसे पहले अुनके प्रति मनमें तिरस्कार पैदा होना चाहिये। जो साधन लाभदायक दिखाअी देंगे वे तो छोडे नही जायगे। जिसे अनुभव द्वारा यह समझमे आ जायगा कि अमुक वस्तुसे दीखनेवाले लाभकी अपेक्षा हानि अधिक है वही अुस वस्तुको छोडेगा। मुझे तो लगता है कि पत्र जल्दी भेजे जा सकनेसे हमें कोअी फायदा नही हुआ। जब हम रेल वगैरा साधनोको छोड देंगे, तब पत्रोकी झझटमें नही पडेंगे। जिसमें वस्तुत दोष न हो अुस वस्तुका हम अेक हद तक अुपयोग कर सकते है। हम जो सभ्यताके घेरेमें घिरे हुअे है, वे अुतने समय तक डाक वगैराका अुपयोग कर सकते है। हम ज्ञानपूर्वक अिनका अुपयोग करेंगे, लेकिन अिनके पीछे पागल नही बनेंगे। और व्यवसायोको बढानेके बजाय हम दिनोदिन अुन्हे घटायेंगे। जो अिस तरह समझेंगे वे जिन गावोमे डाक या रेल नही है वहा अुन्हे ले जानेके मोहमें नही पडेगे। जहाज वगैरा पाखण्ड अेकाअेक नही मिटेंगे और सब लोग अुनका त्याग नही करेंगे, अैसे डरमे तुम्हे और मुझे बैठे रहकर अुनका अुपयोग बढानेकी जरूरत नही। अेक आदमी भी यदि अुनका अुपयोग कम करेगा या बन्द करेगा, तो दूसरे लोग भी वैसा करना सीखेंगे। दूसरे करें या न करें, परन्तु अैसा करना अच्छा है यह माननेवाले तो वैसा करते ही रहेंगे। सत्यके प्रचारकी यही पद्धति है। दुनियामें और कोअी पद्धति मैंने देखी नही है।

"पार्लियामेण्टका मोह छूटना कठिन काम है। चमडी अुधेडना, जलाना और नाक-कान काटना जगलीपन था। परन्तु चगेजखा, तैमूरलग वगैराके जुल्मसे पार्लियामेण्टका जुल्म कही ज्यादा है। अिसलिअे हम अुसके भ्रममें पडे है। आजकलका जुल्म तो मोहजाल है, अिसलिअे यह ज्यादा नुकसान करता है। अेक आदमीके स्वतत्र अत्याचारसे तो निपटा जा सकता है। परन्तु लोगोके नामसे लोगो पर जुल्म हो तो अुससे निपटना बहुत मुश्किल है।

"राजा अेडवर्ड अकेले राज्य करते हो तो ठीक, परन्तु तुम्हारा और मेरा तो हर अग्रेज राजा है। अिस वाक्यका अर्थ तुम सोच लेना। अिसमें दुनियाके मोहकी बात नही है। हिन्दुस्तानकी साधारण बुद्धि तो यही मानती है कि

पार्लियामेण्ट अेक पाखंड है। सभ्यताके प्रवाहमें वहनेवाली असाधारण वुद्धि भी पार्लियामेण्टके मोहमें पड़ जाती है।

"डाकूके सामने दया काम नही देती, अैसा कहकर तुम आत्माके अस्तित्वसे ही अिनकार करते हो या अुसके गुणोंसे अिनकार करते हो। पतजलि भगवानने दया आदिका महत्त्व अैसा वताया है कि अुनका विचार करनेमें भी आनन्द होता है। असल वात यह है कि डरने हमारे भीतर घर कर लिया है। अिसलिअे सत्य और दया आदि गुणोका विकास नही हो सकता। अुसके वाद हम यह मानते है कि दया क्रूर मनुष्यो पर काम नही देती। जो दया करे अुस पर हम यदि दया करें, तो यह दया नही परन्तु दयाका वदला है।

"हमारी रक्षा कोअी मुफ्तमें करे तो भी हम कमजोर माने जायगे और किसीको पैसे देकर हम अपनी रक्षा कराये तो भी कमजोर ही माने जायगे। डाकुओ वगैराके डरसे अगर हमे मुक्त होनेके लिअे तीसरे आदमीकी मदद लेनी पडे तो हम स्वराज्यके योग्य नही है। अगर अुन्हे शरीर-वलसे मात करना होगा, तो वह शरीर-वल हमें खुद अपने भीतर पैदा करना पडेगा। फिर कर देनेकी जरूरत नही मालूम होगी। स्त्री अधिकारसे पतिका सरक्षण चाहती है, परन्तु वह अवला ही मानी जाती है।

"स्वराज्य अुसके लिअे है जो समझता है। तुम और मैं तो आज भी स्वराज्य भोग सकते है। अिसी तरह सवको सिखलाना होगा। किसीका दिलाया हुआ स्वराज्य तो परराज्य ही है। फिर भले ही दिलानेवाले हिन्दुस्तानी हो या अग्रेज।

"गोरक्षा-प्रचारिणी सभाको मैंने गोवध-प्रचारिणी सभा कहा, यह सच वात है। अुसका हेतु गायको कसाअीसे छुडवाना या मुसलमानो पर दवाव डालकर अुसकी रक्षा करना है।

"रुपया देकर गायको छुडवानेमें अुसकी रक्षा नही है, वह कसाअीको धोखा सिखानेका रास्ता है। मुसलमान पर दवाव डालनेमे वे गायका ज्यादा वध करेंगे, परन्तु अुन्हें रिझाअें या अुनके विरुद्ध सत्याग्रह करें तो वे गायकी रक्षा करेंगे। वह सभा तो हिन्दुओको हिन्दूपन सिखानेवाली होनी चाहिये।

"वैलको कम खुराक देकर, आर भोककर, वहुत काम लेकर और सता-सता कर मारनेसे तो तलवारके अेक झटकेसे अुसे मार डालना ज्यादा अच्छा है। रामचन्द्रजी आदिके अुदाहरण अक्षरश सही समझनेमें कअी अुलझनें पैदा हो सकती है। दस सिरवाला ओर वीस हाथवाला रावण मनुष्यके शरीरके रूपमें होना

मुझे सभव नही लगता। परन्तु अुसे महान विषयी जड पदार्थ मानकर राम-चन्द्ररूपी चैतन्यने अुसका नाश किया, अैसा माने तो यह समझमे आने लायक बात है। मद, मोह, महा–ममता–रजनी–तम–पुजको मिटानेवाले दिवाकरकी सेना जैसा रूप तुलसीदासजीने रामचन्द्रजीको दिया है। यदि हममे मद, मोह और ममता न हो, तो क्या तुम्हे अैसा जान पडता है कि किसी भी शरीरका नाश करनेको हमारे जीमे जरा भी अिच्छा हो सकती है? यदि नही कहो तो मद, मोह, ममता-रहित रामचन्द्रजी, दयानिधि रामचन्द्रजी, रावणका नाश कैसे कर सकते थे? फिर भी जब हम अुनकी विभूतिको प्राप्त कर लेंगे, लक्ष्मणजीकी तरह चौदह वर्ष तक निद्रा छोड देगे और ब्रह्मचर्यका पालन करेगे तब हम देख लेंगे कि शरीर-बलका अुपयोग कहा जरूरी है।

"मै यह कहना चाहता हू कि पद-नमनसे सब कुछ हो जाता है। ट्रान्सवालका अुदाहरण अच्छा दिया। अूपरका भाव है, अितना मुहमे कह देना काफी नही है। अुस भावको परीक्षामे अुत्तीर्ण होना चाहिये। हरिश्चन्द्रका सत्य सत्य सिद्ध हुआ अुससे पहले अुन्हे कितने सकट झेलने पडे, अिसका खयाल करो। सुधन्वाकी भक्ति सच्ची साबित हुअी अुससे पहले अुसे क्या क्या कष्ट सहन करना पडा, अिसका विचार करो। यह मान लेनेका कोअी कारण नही कि ये सब दन्त-कथायें है। नामरूप अलग अलग हो सकते है। जिसने ये कथाये रची है, अुसने अनुभव बताया है। ट्रान्सवालमें भी जो बकवास मेरे जैसे लोग कर रहे है, अुनकी परीक्षा हो रही है। और यह भी समझ लो कि जो बहुतसे लोग सत्याग्रही माने जाते थे वे दिखावटी साबित हुअे है। अब सच्चे सत्याग्रही किसे माने? दया आदि गुण रखनेवालोको। यह कही नही लिखा कि सत्याग्रहीको दुःख नही भोगना पडेगा। और दुःख क्या होता है? मन ही बधन और मोक्षका कारण है, यह गीताका वाक्य है। सुधन्वा अुबलते हुअे तेलमें पडे थे। दुःख देनेवालेने अिसे दुःख माना। सुधन्वाको तो अपनी भक्तिका प्रादुर्भाव दिखानेका सुन्दर अवसर मिला।

"सभी अेक साथ गरीब हो जाय या रुपयेवाले हो जाय, यह नही हो सकता। परन्तु सारासारका विचार करने पर अितना तो पता चलता है कि किसानो पर सारी दुनियाका आधार है। किसान गरीब ही है। वकील अगर परमार्थकी शेखी मारें, तो अुन्हें अपना गुजर शरीर-श्रमसे करके वकालत मुफ्त करनी चाहिये। वकील आलसी है, यह तुम्हे अेकाअेक पता नही चल सकता। बादमें मौज अुडायेगे, बडे बनेंगे, धन कमायेगे, अिस धुनमे वकालतका विषयी थकने पर भी अुसी तरह तन-तोड मेहनत करता है, जिस तरह विषयी मनुष्य

थकने पर भी विषयोमे लीन रहता है। अिसके पीछे हेतु यह है कि बादमे वह अैश-आराममे समय बिताना चाहता है। अिसमें कुछ अतिशयोक्ति है, अिसका मुझे भान है। परन्तु अधिकाशमे अूपरका विचार ठीक है।

"डॉक्टरोकी टोली क्या देशसेवा करेगी? पाच-सात वर्ष तक मुर्दे चीर कर, हिसा करके, व्यर्थके सूत्र रट कर वे क्या बडा पराक्रम करेगे? शारीरिक रोग मिटानेकी शक्तिसे देशका क्या लाभ होगा? अुससे पूरा पूरा शरीरका मोह बढता है। बीमारिया कैसे न हो, अिस तरहकी योजना बनाना तो हम वैद्यक शास्त्रका ज्ञान न होने पर भी जान सकते है। अिसका यह अर्थ नही कि वैद्य-डॉक्टर रहे ही नही। वे तो हमारे पीछे रहेगे ही। कहनेका हेतु यह है कि अिस धन्धेको बडा रूप देकर अुसमे बहुतसे युवक जो सैकडो रुपये और कितने ही वर्ष खोते है वह न खोना चाहिये। यह जान लेनेकी जरूरत है कि विलायती डॉक्टरोसे हमे रत्ती भर भी फायदा न तो हुआ और न होनेवाला है।

"तुम्हारी शकाओके अुत्तर तो पूरे हो चुके। हिन्दुस्तानके अुद्धारका भार व्यर्थ अपने सिर पर न लो। तुम अपना ही अुद्धार करो। यह भार ही बहुत है। सब कुछ तुम अपने पर ही लागू करो। तुम्ही हिन्दुस्तान हो, यह जाननेमे ही आत्माकी प्रौढता है। तुम्हारे अुद्धारमे ही हिन्दुस्तानका अुद्धार है। और सब तो मिथ्या है। तुम्हे यह अच्छा लगे तो अिसमे लगे रहो। औरोकी फिक्र तुम्हे या मुझे करनेकी जरूरत नही रहती। औरोकी फिक्र करनेमे हम अपनी बाते भूल जायगे तो सब कुछ खो बैठेगे। अिस पर परमार्थकी दृष्टिसे सोचना, स्वार्थकी दृष्टिसे नही। और कुछ पूछना हो तो पूछना।

मोहनदासके आशीर्वाद"

१५

कामचलाअू समझौता

दूसरा शिष्ट-मडल हिन्दुस्तान आया। अुसमे अकेले श्री पोलाक ही थे। अुन्होने हिन्दुस्तानमे आकर श्री गोखलेकी मदद ली। सर्वेन्ट्स ऑफ अिडिया सोसाअिटीने हिन्दुस्तान भरके बडे बडे शहरोमे सभाअे करनेका प्रबन्ध किया। श्री पोलाकने अपनी सादगी, सरलता, हिन्दुस्तानियोके प्रश्नके सम्बन्धमे अपनी पूरी जानकारी और हिन्दुस्तानियोके प्रति अपनी सहानुभूति आदिके कारण हिन्दुस्तानमे दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोके दुखोके बारेमे भारी जागृति

पैदा की। जेलमे मृत्यु पाये हुअे हिन्दुस्तानी युवकोके वारेमें और निर्वासित किये गये हिन्दुस्तानियोमें से भाअी नारायण स्वामीके डेलागोआ-वेमें हुअे करुण अवसानके विषयमे सच्चे हाल जानकर हिन्दुस्तानकी जनताकी भावना अुत्तेजित हुअी। चारो कोनोसे ट्रान्सवाल सरकारकी हिन्दुस्तानियोको निर्वासित करनेकी नीतिका घोर विरोध हुआ। अिस समय श्री रतन तातानें गांधीजीको २५००० रुपये सहायतार्थ भेजकर आर्थिक सहायता भी आरम्भ की और हिन्दुस्तानके राजा-महाराजाओने भी अुसमे भाग लिया। अुस वक्त लगभग १० हजार पौंडकी मदद हिन्दुस्तानसे गअी थी। अिस प्रकार लगभग अेक वर्षके सतत आन्दोलनसे वडी सरकारका ध्यान भी ट्रान्सवालके हिन्दुस्तानियोकी तकलीफोकी ओर आकर्षित हुआ। अुसने किसी भी तरह हिन्दुस्तानियोको ट्रान्सवालसे निर्वासित करना वन्द करवाया और जिन्हे निर्वासित किया गया था अुन्हे वापस जानेकी आज्ञा दिलवाअी। जब श्री पोलाक हिन्दुस्तानसे दक्षिण अफ्रीका लौटे, तब सारे निर्वासित सत्याग्रहियोको साथ लेकर वे २८ सितम्वरको डरवनके वन्दरगाह पर अुतरे। लॉर्ड अेम्पथीलने भी लॉर्डसभामे ट्रान्सवाल सरकारकी अिस अत्याचारी नीतिके विरुद्ध वडा आन्दोलन मचाया। अिन सव परिस्थितियोंके कारण जनरल स्मट्स और अुनके साथी कुछ पीछे हटे। परन्तु अुनके दिल नही वदले। दिलमे तो अुनके यही था कि ट्रान्सवालमे अेक भी हिन्दुस्तानीको न रहने दिया जाय। परन्तु वे क्या करते? हिन्दुस्तानी लोग भी अपना वचाव करनेकी काफी शक्ति रखते थे। अिसी अर्सेमे दक्षिण अफ्रीकाका यूनियन स्थापित हुआ। १ जून, १९१० को दक्षिण अफ्रीकाका यूनियन घोषित हुआ और चारो प्रान्त अेक सत्ताके अधीन हो गये। अिस अवसरका लाभ अुठानेका वडी सरकारने प्रयत्न किया और यूनियनमे वसनेवाले हिन्दुस्तानियोकी लडाअी अुचित होनेके कारण यूनियनके मंत्रियो पर यह दवाव डाला कि वे अुसका निपटारा कर दे। अिसमे अुसने नीचे लिखे मुद्दे पेश किये

(१) सन् १९०७ का हत्यारा कानून रद कर दिया जाय।

(२) कानूनमे जातिभेदका निकाल दिया जाय।

(३) हिन्दुस्तानी कौमकी जरूरतोंके अनुसार हर साल शिक्षित हिन्दुस्तानियोंको प्रवेश करने दिया जाय।

(४) यूनियनके दूसरे प्रान्तोमें भी भविष्यमें हिन्दुस्तानियोंके अधिकारोंकी रक्षा की जाय।

यूनियनके मन्त्रियोको मजबूर होकर अिन प्रस्तावोके साथ सहमत होना पडा। आखिर सन् १९११ मे अिमिग्रेशन-बिल यूनियन गजटमें प्रकाशित हुआ। फिर भी अुससे कुछ लाभ नही हुआ। जिसकी नीयत अच्छी न हुअी हो अुसके सामने अनेक सिफारिशें करनेसे भी कोअी बडा लाभ नही होता। वह ओमानदारीसे कोअी काम नही करेगा। यूनियन सरकारने भी अैसा ही किया। अिमिग्रेशन-बिलसे कोअी काम नही बना। अुससे हिन्दुस्तानियोके मनको सन्तोष नही हुआ। नये बिलमें ट्रान्सवालके सिवा और प्रान्तोके हिन्दुस्तानियोके अधिकारोकी रक्षा जरा भी नही होती थी। हत्यारा कानून रद कर दिया गया, परन्तु रगभेद नही मिटाया गया। अितना ही नही, यूनियन स्थापित होनेके बाद रगभेद बढ गया। सभी प्रान्तोके गोरे लोगोमे जो रगद्वेष बटा हुआ था, वह यूनियनमें अिकट्ठा हो गया और तीव्ररूपमे प्रकट हुआ। यह प्रकाशित बिल पार्लियामेण्टमें पेश हुआ, अुससे पहले हिन्दुस्तानी नेताओने अुसका सख्त विरोध किया। सरकारके साथ अिस सम्बन्धमे अुन्होने पत्र-व्यवहार किया।

बडी सरकारके प्रस्तावोको अिस नये बिलमे जरा भी स्वीकार नही किया गया। नेताओने माग की कि नये बिलमे सिर्फ ट्रान्सवालके हिन्दुस्तानियोको राहत देनेका कानून बनाया जाय और दूसरे प्रान्तोको वैसा ही रहने दिया जाय। परन्तु सरकारने अिसे मजूर नही किया। अिसलिअे सभी प्रान्तोके हिन्दुस्तानियोकी ओरसे शोर मचा। अिसके परिणामस्वरूप वह बिल यूनियन पार्लियामेण्टमे पास नही हुआ। परन्तु सरकारने कामचलाअू समझौतेका अिन्तजाम किया। समझौता यह था कि सन् १९१२ की पार्लियामेण्टकी बैठकमे नया बिल पास न हो जाय तब तक सरकार किसी भी आपत्तिजनक कानूनका अमल बन्द रखे और हिन्दुस्तानी जनता सत्याग्रहकी लडाअी बन्द रखे। सन् १९१२ की पार्लियामेण्टमे बिल पेश किया गया, परन्तु अुसकी दशा पहले वर्ष जैसी ही हुअी। अिसलिअे वह बिल अेक वर्षके लिअे फिर स्थगित कर दिया गया और कामचलाअ समझौतेकी अवधि भी बढा दी गअी।

गांधीजीकी साधना

दूसरा भाग

१

दक्षिण अफ्रीकामें देशभक्त गोखलेजी

गांधीजी देशभक्त गोपाल कृष्ण गोखलेजीसे दक्षिण अफ्रीकामें आकर वहां अपने देशभाअियोकी अच्छी-बुरी हालत देख लेनेकी विनती बहुत समयसे बार-बार किया करते थे। अितनेमे कामचलाअू सुलहके कारण दक्षिण अफ्रीकामे कुछ शान्ति हुअी। हिन्दुस्तानमे भी दिल्ली दरबारके कारण सद्-भावनावाला वातावरण पैदा हो गया था। अैसे मौके पर श्री गोखलेके दक्षिण अफ्रीका जानेसे सद्भावना कुछ बढ सकती थी और हिन्दुस्तानियोके प्रश्नका निपटारा अच्छी तरह हो सकता था। हिन्दुस्तानके कोअी नेता आज तक अुपनिवेशोमे नही गये थे। बम्बअीके बेताजके बादशाह सर फीरोजशाह बडी धारासभाको हिला रहे थे। श्री गोखले हिन्दुस्तान और बडी सरकारके बीच मीठी जंजीर बनकर अैसी कोशिश करते थे कि सब जगह शान्ति रहे। अुप-निवेशोके गोरोको हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तानके लोगोकी कल्पना नही थी, यदि थी तो अितनी ही कि हिन्दुस्तानकी जनता बिलकुल अपढ है, अनेक कुरीतियोसे दूषित हो गअी है, निकम्मी और संस्कारहीन है। अैसे लोगोका स्थान अुपनिवेशोमे हो तो गोरे लोगोके नौकर-चाकरके रूपमें ही हो सकता है, लकडी और पानी ढोनेवाले मजदूरोके रूपमे ही हो सकता है। अुपनिवेशोमे स्वतंत्र रहकर, स्वतंत्र व्यापार करके या स्वतंत्र गृहस्थके रूपमे जीवन-निर्वाह करनेवाले और गोरे समाजके साथ समानताका दावा करनेवाले प्रतिस्पर्धियोके रूपमे तो अुन्हें स्थान हरगिज नही मिल सकता। अुपनिवेशवासी गोरोका हिन्दुस्तानियोके बारेमें अैसा खयाल था। अिस खयालकी जड तो हिन्दुस्तानियोकी गुलामी ही थी। पराधीन जातिके बारेमे राज्य करनेवाली जाति और सोच ही क्या सकती है? और अुन्हीकी नकल दूसरे देशोके लोग भी करते थे। अन्य किसी अुपनिवेशकी अपेक्षा ब्रिटिश अुपनिवेशोमे हिन्दुस्तानियोके बारेमे अैसा हलका खयाल अधिक मात्रामे था। और दक्षिण अफ्रीकामे तो गोरे लोगोको हिन्दुस्तानियोका पहला परिचय गिरमिटिया मजदूरोके रूपमे ही हुआ था। अिसलिअे 'प्रथमग्रासे मक्षिकापात' वाली बात हुआ। मानो समूचा हिन्दुस्तान गिरमिटिया मजदूरो जैसे अपढ और संस्कारविहीन लोगोमे ही भरा हुआ हो। वे हिन्दुस्तानी व्यापारीको 'कुली व्यापारी', हिन्दुस्तानी बैरिस्टरको 'कुली बैरिस्टर' और

हिन्दुस्तानी डॉक्टरको 'कुली डॉक्टर' कहकर तिरस्कारकी दृष्टिसे देखते थे। गाधी जैसा अेक व्यक्ति अुनकी दृष्टिमे आया। परन्तु अुसकी कीमत तो जो गहरी दृष्टिसे देखता अुमीको मालूम हो सकती थी। और अुनकी सरलता और जीवनकी सादगीमे तो गोरे लोग प्रभावित होनेवाले थे ही नही। जव श्री गोखले वहा गये तव अुनका गौरव, गभीरता, सस्कारिता, राजनीतिमे विलक्षण निपुणता, और साम्राज्यमे अुनकी अच्छी प्रतिष्ठा देखकर वहाके गोरोकी आखे खुली। क्या हिन्दुस्तानी भी अैसे राजनीतिज्ञ और व्यवहारकुशल हो सकते हे, अैसे प्रश्नोने अुनके दिलोको बेचैन कर दिया। अिसके सिवा गोखलेजी दक्षिण अफ्रीकामे गये तव वहाके हिन्दुस्तानी लोगोने अुनका सत्कार भी अैसे वादशाही और शानदार ढगसे किया कि गोरे चकित रह गये। वहुतोने गाधीजीसे पूछा कि "गोखलेजी विलकुल सादे हैं, आपको भी सादगी पसन्द है, तो फिर गोखलेजीके स्वागतमे हजारो रुपये किसलिअे फूक दिये?" अुत्तरमे गाधीजीने वताया, "गोखलेजीका हमे वादशाही सम्मान करना ही चाहिये। वे यहा सीधे-सादे गोखलेजीके रूपमे नही आये हे, वल्कि ३३ करोड जनताके प्रतिनिधिकी हैसियतसे आये है। हम अपने नेताओका अुचित आदर न करे तो जो हमारा अपमान करते है वे अुनकी ओर सम्मानकी दृष्टिसे कैसे देखेगे? अैसे मौके पर खर्चकी तरफ देखना सादगी नही, वल्कि अविवेक और अपने हृदयकी दरिद्रताका प्रदर्शन करना है। अिसलिअे जो सम्मान दक्षिण अफ्रीकामे वादशाहको भी नही मिल सकता, वह भव्य स्वागत श्री गोखलेका करना हिन्दुस्तानियोका परम कर्तव्य है।" ओर हुआ भी अैसा ही। श्री गोखले दक्षिण अफ्रीकामे जहा जहा गये, वहा वहा लोगोके अुत्साहका पार न रहा। अज्ञानी गोरे हिन्दुस्तानियोके नेताको देखकर पीछे हट जाते, पढे-लिखोको अुनकी वुद्धि और विद्वत्ता देखकर आश्चर्य होता, अुच्च कोटिके गोरोने अुनकी कार्यदक्षता, शान्त राजनीतिज्ञता और आचार-विचारकी श्रेष्ठताको देखकर अुनके सामने सिर झुकाया, गिरमिटिया हिन्दुस्तानियोने माना कि हमारा कोअी राजा आया है और दूसरे हिन्दुस्तानियोने माना कि हिन्दुस्तानकी लाज रखनेवाला कोअी भव्य देवदूत आया है। और काम भी अैसा ही हुआ।

सन् १९१२ मे श्री गोखले लन्दनसे सीधे दक्षिण अफ्रीका गये। दक्षिण अफ्रीकाका वातावरण रगद्वेषसे कितना भरा होगा, अिसका अनुभव अुन्हे लन्दनमे

मिल गया था। वे जिस जहाजमे रवाना होनेवाले थे, अुसके अेजेंटको
न्होने पहले दर्जेकी जगह सुरक्षित रखनेकी सूचना भेजी। अिस सूचनाके मिलते
अेजेंट विचारमे पड गया। पहले दर्जेके विभागमे तो सब गोरे ही होते थे।
क केबिनकी दो जगहोमें से अेक गोरेको और दूसरी हिन्दुस्तानीको कभी
जा सकती है? दूसरे जहाजमें कुछ भी हो, परन्तु यह तो अिंग्लैण्डसे दक्षिण
फ्रीका जानेवाला जहाज था। अिसलिअे अेजेंटने खबर भेजी कि जगह नही
। तलाश करने पर मालूम हुआ कि जगह तो है। श्री गोखलेने जान लिया
क अेजेंटके अिनकार करनेका क्या कारण है। अितनेमे यह बात अुस समयके
ारत-मंत्री लॉर्ड क्रूको मालूम हुअी। अुन्होने तुरन्त कोशिश करके श्री गोखलेके
लअे पहले वर्गकी जगह प्राप्त की। दक्षिण अफ्रीकाके सफरमे रेलमे या दूसरी
गह अैसा कटु अनुभव श्री गोखलेको न हो, अिसके लिअे यूनियन सरकारने
ाफी सावधानी रखी। अुनकी यात्राके लिअे रेलके खास सेलूनकी व्यवस्था
ी और यह अिन्तजाम किया कि अुनके साथ यूनियन सरकारका अेक बडा
फसर रहे, ताकि दक्षिण अफ्रीकाके प्रवासमे गोखलेजीके साथ रंगद्वेषका आदी
ना हुआ कोअी अफसर या नागरिक भूलसे भी अवांछनीय व्यवहार न
र बैठे।

श्री गोखले केपकालोनीके केपटाअुन बन्दरगाह पर अुतरे। वहा गांधीजी
ौर दूसरे सैकडो हिन्दुस्तानियोने अुनका स्वागत किया। श्री गोखले और
ांधीजीने परस्पर आलिंगन किया। अेक हिन्दुस्तानका योद्धा, दूसरा दक्षिण
फ्रीकाका योद्धा — मानो दोनो सहोदर हो — छोटे और बडे भाअी हो और
ेक-दूसरेके हृदयमे जरा भी भिन्नता न हो। अेक-दूसरेके दासानुदास हो। श्री
ोखलेने गांधीजीसे कहा "देखो गांधी, तुम बहुत दिनसे आनेको कहते थे।
अिसलिअे तुम्हारे बुलानेसे मै आ गया हू। अब मै यहासे विदा होअू तब तक
रा जो अुपयोग करना हो तुम कर लो। मै कुछ जानता नही। मै अपने-
ापको और अपनी प्रवृत्तिको तुम्हारे सुपुर्द करता हू। तुम जानो और
ुम्हारा काम जाने। बादमे मुझे दोष न देना कि गोखलेने दक्षिण
अफ्रीकामे आकर कुछ नही किया।"

यह कहकर गोखलेजीने शुरूसे ही गांधीजी पर प्रेमका जादू डाल दिया।
ांधीजी भी अुनके वशमे हो गये। अुस समयसे गांधीजीने अपनेको श्री गोखलेकी
न्दुरुस्ती और प्रवृत्तिके लिअे जिम्मेदार मान लिया और खुद ही अुनके

व्यक्तिगत मंत्री बन गये। किस समय क्या करना चाहिये, वहाकी परिस्थिति कैसी है आदि सारी जानकारी वे गोखलेजीको देते, मुलाकातोकी व्यवस्था करते, कार्यक्रम तैयार करते, सभाओकी व्यवस्था करते, हिन्दुस्तानी और यूरोपीय नेताओका परिचय कराते थे, और गोखलेजीका सब निजी काम भी वे ही करते थे। अुनके कपडे धोना, अुनका बिस्तर बिछाना, अुनका पाखाना साफ करना, दातुन और स्नान आदिकी व्यवस्था करना खानेका प्रबन्ध करना — सब काम गाधीजी ही करते थे। अुन्होने तो मान लिया कि गोखलेजीकी सेवा करनेका अलभ्य अवसर प्राप्त हुआ है, और अिसका लाभ अुन्होने अच्छी तरह अुठाया। केपटाअुनका स्वागत, सार्वजनिक सभा, वहाकी मुलाकाते और वहाकी जानकारी जुटानेका काम पूरा होनेके बाद श्री गोखले किंबरलीके लिअे रवाना हुअे। वहाके हिन्दुस्तानियोके साथ वे दो दिन रहे। वहाकी हीरेकी खाने अुन्होने देखी। गोखलेजीने खानोके मालिकोसे मुलाकात की और वहासे जोहानिसबर्गके लिअे रवाना हुअे। जोहानिसबर्ग ट्रान्सवालका मुख्य केन्द्र ठहरा। वहा वे लगभग १५ दिन रहनेवाले थे। जोहानिसबर्गका अुत्साह अपूर्व था। किंबरलीसे खास तौर पर सजाअी हुअी स्पेशल गाडीमे वे जोहानिसबर्ग गये। स्टेशन और शहर सुन्दर ढगसे सजाया गया था। शानदार जगी जूलूस निकला। अुसकी भी व्यवस्था सुन्दर थी। जोहानिसबर्गमे गोखलेजीको लगभग अेक पखवाडे आराम लेना पडा। अिसमे से हफ्ताभर तो वे बिछौनेमें ही रहे। सिरदर्द, थोडे बुखार और कमजोरीके कारण गाधीजीने अुन्हे जरा भी तकलीफ नही दी। जोहानिसबर्गके पास माअुन्ट व्यू नामक स्थान पर श्री कैलनबैकके बगले पर अुन्हे पूर्ण शान्तिमे रखा। अिस मौके पर गाधीजीने अपने अनुभवके अुपचार श्री गोखले पर खुद ही आजमाये। पेट पर और सिर पर मिट्टीकी पट्टिया रखी। 'स्टीम बाथ' और 'क्यूने बाथ', आहारमे परिवर्तन आदिके अुपचारसे श्री गोखलेकी तबीयत अच्छी हो गअी। अिन पन्द्रह दिनोके मीठे स्मरण याद करके आज भी गाधीजी आनन्द-विभोर हो जाते है। श्री गोखले कितने आनन्दी और मीठे थे और साथ ही जरूरत पडने पर कितने कडे हो सकते थे, अिसका अनुभव अुनकी सेवामे रहनेवालोको अच्छी तरह हो गया।

अेक दिन अेक सन्यासी श्री गोखलेसे मिलने आये और अुनके साथ बातचीत करके जोहानिसबर्गके हिन्दुओकी अलग सभामे दस मिनिट अुपस्थित

रहनेका वचन अुनसे ले गये। दूसरे दिन गाधीजीको खवर लगी कि जोहानिस-वर्गके हिन्दू गोखलेजीको अलग मानपत्र दे रहे है। अैसी वात सुनकर गाधीजी तो चौक गय। व्यवस्था यह थी कि श्री गोखलेको दिये जानेवाले सभी मान-पत्र अेक मुख्य समारोहमें दिये जाय। अैसा होने से ही मुख्य समारोहकी शोभा रहती और खीचतान न होती। परन्तु हिन्दुओके समारोहमें दस मिनट हो आनेके आश्वासनका अर्थ अुस सन्यासीने यह लगाया कि गोखलेजीने हिन्दुओका अलग मानपत्र लेना स्वीकार कर लिया है। अैसा होनेसे सारी वाजी विगड जाती। श्री गोखलेका सम्मान करनेमें कौमें अेक-दूसरेसे अलग हो जाती। यह वात मालूम होते ही गाधीजीने गोखलेजीसे पूछा "आपने स्वामीजीको क्या अैसा आश्वासन दिया है कि आप हिन्दुओकी तरफसे अलग मानपत्र लेंगे?"

गोखलेजीने जवाव दिया "नही, नही, मुझसे अुन्होने वहुत आग्रह किया अिसलिअे मैंने हिन्दुओकी सभामें दस मिनिटके लिअे हो आनेको कहा है।"

यह सुनकर गाधीजीने अुन्हें सारी हकीकत समझाअी। जो स्वामीजी गोखलेजीसे आश्वासन ले गये थे, अुनका असली परिचय दिया। स्वामीजीका पूरा परिचय पानेके वाद गोखलेजी वोल अुठे "गाधी, तुमने मुझे पहले ही अिस आदमीके वारेमें सावधान क्यो न किया?"

"परन्तु आपने ही अपनी शर्तसे अुलटा वरताव किया, तव क्या हो? अनजान आदमीको अिस तरहका आश्वासन देनेसे पहले आपको मुझसे पूछना तो चाहिये था?" गाधीजीने हसकर अुत्तर दिया।

"और मेरे मत्रीकी हैसियतसे तुम्हारा यह फर्ज नही था कि अमुक आदमीके साथ कोअी भी परिचय करनेसे पहले मुझे चेता देते?" गोखलेजीने भौंअे चढाकर पूछा।

"दूसरे आदमीकी अिस तरह विना कारण निन्दा करनेका काम मनुष्यके नाते मेरा नही है।"

"वहुत अच्छा। मैं जानता हू तुम वडे होशियार हो। अव तुम्हें लगता हो कि मेरी भूल हुअी है तो तुम अुसे सुधार लो।'

और सचमुच अिस जरासी वातका वतगड वन गया। परन्तु गाधीजीने तुरन्त ही सारी वाजी सुधार ली। हिन्दुओको सन्तोष हुआ और सारी हिन्दुस्तानी कौमका समारोह भी वढिया रहा।

अिस तरह दोनोंमें रोज विनोद-वार्ता होती रहती थी।

२

दासानुदास गोखलेजी

जोहानिसबर्गमे गोखलेजी पन्द्रह दिन रहे, अुसमे अुन्होने अधिक आनन्द अुठाया या गाधीजीने, अिसका निर्णय करना मेरे लिअे कठिन है। यह तो दोनोके हृदय ही जानें। और दोनोके हृदय तो अपने-अपने आनन्दको ही दूसरेसे अधिक आह्लादजनक मानते। गोखलेजी कुछ पढते-पढते पुकारते "अरे, वह मेरा धोबी कहा गया?"

गाधीजी पासके खडमे से जल्दी जल्दी आकर पूछते "क्यो, क्या बात है साहब?"

"क्या क्या है? तुम्हे भान नही रहता। देखो, मेरा कमीज कितना गदा हो गया है?"

"जी, अभी धो लाता हू।" यह कहकर गाधीजी खुशी-खुशी अुनका कमीज ले जाते और खुद धोकर ले आते।

थोडी देर होती कि गोखलेजी अपने बिस्तरकी चादर बिखेर देते और चिल्लाते "अरे, मेरा बिस्तर बिछानेवाला कहा गया? चादर अच्छी तरह क्यो नही बिछाअी?"

गाधीजी आते और 'जी साहब' कहकर चादर अच्छी तरह बिछा जाते।

अिस तरह गोखलेजी दिनमे कितनी ही बार गाधीजीको 'मेरा नौकर', 'मेरा धोबी', 'मेरा नाअी', 'मेरा पाखाना साफ करनेवाला' वगैरा सबोधनोसे बुलाते और गाधीजी प्रसन्न मनसे आकर हाजिर हो जाते। गोखलेजीका सभी निजी काम दूसरा कोअी न करे, वे स्वय करे, अैसी गाधीजीकी तीव्र अिच्छा और आग्रह रहता था। गोखलेजी यह जानते थे, अिसलिअे कुछ मजाक और कुछ आनन्द और गहरे स्नेहभावसे गद्गद होकर अिस तरह कहा करते थे।

यहा अेकाध स्नेह-स्मरणका मै वर्णन कर दू तो अच्छा होगा। अेक दिन फिनिक्स आश्रममे रातके समय हम बातोमे लगे हुअे थे। श्री गोखले जोहा-निसबर्गमे थे तब मै नेटालमे था, अिसलिअे गोखलेजी और गाधीजीके स्नेह-सम्बन्धकी कुछ बाते मैने गाधीजीसे ही पूछी। जवाबमे गाधीजीने अुमडते हृदयसे नीचे लिखा रसप्रद और स्नेहभीना प्रसग कह सुनाया। अुसे मै

अुन्हीके शब्दोमें अुद्धृत करता हू। अिस प्रसगके विषयकी तो रक्षा हुअी है, परन्तु वर्णनमे कुछ फर्क हो गया हो तो मै क्षमा मागता हू।

गाधीजी कहने लगे

"गोखलेजीने दक्षिण अफ्रीकामें पैर रखा, तभीसे अुन्होने अपने-आपको मेरे हवाले कर दिया था। जैसे छोटा बच्चा अपनी सारी चिन्ता अपनी माको सौंप देता है, वैसे ही वे अपनी कोअी चिन्ता नही रखते थे। अुनकी देखरेख मै करता, अुनका कार्यक्रम मै तैयार करता और किस मौके पर क्या बोलना यह भी कभी-कभी मै ही बताता। अिसलिअे वे अकसर प्रेमसे 'मेरा धोबी', 'मेरा नाअी', 'मेरा सेवक', 'मेरा रसोअिया', 'मेरा रक्षक', और 'मेरा भगी' वगैरा अुपनामोसे मुझे पुकारते। जरा-जरासी बातमे भी मेरी मजूरी लेते। मै खूब काममें होता तो भी मुझे बुलाकर पूछते 'मुझे अेक नारगी खानी है, खा लू क्या?' मै कहता 'अिसमे मुझसे क्या पूछते है? अिच्छा हो तो खा लीजिये।' तब गभीर भावसे जवाब देते, 'अरे, मै तो अपनेको तुम्हारे हवाले कर चुका हू।'

"अेक दिन प्रिटोरियामे अुनकी तबीयत अच्छी न होनेके कारण फलाहारके सिवा और कुछ खानेकी मैने अुन्हे मनाही कर दी। फलाहारमें भी गिनतीके फल देता। अुन्हे भूख लगती तो वे मुझे बुलाते। गुस्सेका दिखावा करके मुझे धमकाते, 'मुझे पता नही था कि तुम अितने कृतघ्न होगे। याद है, कलकत्ता-काग्रेसके वक्त मैने तुम्हारी कितनी चिन्ता रखी थी। अेक महीने तक तुम्हें मिष्टान्न ही खिलाये थे। अुसके बदलेमें तुम यहा मुझे अेक-दो केले भी मिन्नत करनेके बावजूद ज्यादा नही देते और मुझे भूखो मारते हो! अितने पर भी तुम सेवावृत्तिका और साधुताका ढोग करते हो।'

"मैं कहता 'मै कब अिनकार करता हू? जितने चाहे अुतने खाअिये।'

"तब वे कहते 'नही, तुम्हें देना हो तो दो, मुझे लेनेकी कोअी परवाह नही।'

"अन्तमे हार कर मै दे देता।

"अुन दिनो जोहानिसबर्गमे भोजनका अेक समारोह था। अुसमे बहुतसे प्रसिद्ध पुरुष आनेवाले थे। अुस भोजमे गोखलेजीका अैतिहासिक भाषण होनेवाला था। खानेमे कअी तरहकी मीठी खानगिया तैयार की गअी थी। सब चीजें निरामिष थी। अिसलिअे भोजके दिन सवेरे गोखलेजीने मुझसे पूछा. 'क्यो गाधी, आज मुझे सब कुछ खानेकी छूट है न?'

'किसलिअे ?'

'आज तो भोज है न ?'

'तो क्या हुआ ?'

'अरे क्या बात करते हो ? मेरे सम्मानमें भोज हो, भोजमें तरह तरहकी स्वादिष्ठ वानगियां हों, अुम्दा मिठाअियां हों और मैं न खाअूं ? आज तो तुम्हें मंजूरी देनी ही पडेगी।'

'मैं तो अिजाजत नहीं दूंगा। आपको खाना हो तो खाअिये।'

'बहुत अच्छा, जाओ। मैं देखता हूं कि तुम कैसे अिजाजत नहीं देते।'

"शामके पांच बजे। मोटर आकर खडी हुअी। मैं अुनके पास गया। वे शान्तिसे पढते रहे। मैंने कहा, 'मोटर आ गअी है, आप तैयार होअिये।'

'कहां जाना है ?'

'भोजका समय हो गया ?'

'मुझे कहीं नहीं जाना। तुम सब जाओ।'

"मैं समझ गया, फिर भी बोला 'आपके बिना हम लोग जाकर क्या करेंगे ?'

'बहुतसी बारातें वरराजाके बिना जाती होंगी, वैसे ही तुम भी चले जाओ!'

"मैं चुप रहा। फिर बोला 'देर हो जायगी।'

'भले ही देर हो जाय। मेरा तो निश्चय है कि वहां जाकर सब कुछ खानेकी अिजाजत जब तक तुम मुझे नहीं दोगे, तब तक मैं यहांसे अुठनेवाला नहीं हूं।'

"पांच तो वहीं बज गये। परन्तु अुनके कान पर तो जूं तक न रेंगी। अंतमें हारकर मैंने कहा 'अब अुठिये, कपडे पहनिये। आपकी मर्जीमें आये सो खाअिये।'

'तुम्हारी मंजूरी है ?' खुश होकर अुन्होंने मुझसे पूछा।

'हां, हां, मेरी मंजूरी है, अुठिये।'

"मेरी मंजूरीकी बात सुनकर अुठते-अुठते बोले 'बस, अब मैं अुठूंगा। तुम सत्याग्रही ठहरे। अिसलिअे सामनेवालेके सत्याग्रहसे ही तुम हारते हो। 'देखा मेरा सत्याग्रह ? कबूल करो कि तुम हार गये।'

'हां, हां, मैं हारा। आपसे तो मैं सदा ही हारा हुआ हूं।'"

अितना कहकर गाधीजी शान्त हो गये। गहरे विचारमे डूब गये और किसी न किसी स्नेह-स्मरणको याद करके बोल अुठे "वे तो दासानुदास है।"

अिस तरह यह निर्णय करना कठिन है कि गोखलेजीको गाधीजीके पीछे पागल माना जाय या गाधीजीको गोखलेजीके पीछे पागल माना जाय। यह कहना अधिक सत्य है कि गोखलेजी गाधीजीके पीछे और गाधीजी गोखलेजीके पीछे पागल थे। गोखलेजी गाधीजीके स्नेहकी तीव्रताको अनुभव करते थे, अिसलिअे अुन्होने दक्षिण अफ्रीकाके अपने निवासके दिनोमे अनेक बार गाधीजीसे कहा था "तुम बडे जालिम हो। दूसरेके हृदय पर प्रेमका अैसा जादू डालते हो कि वह बेचारा तुम्हारी अिच्छानुसार करने और तुम्हे खुश रखनेको मजबूर हो जाता है। मेरा शरीर कितना ही अस्वस्थ हो, मै कितने ही जरूरी काममे व्यस्त होअू, फिर भी तुम्हारा काम आते ही अुसे करनेके लिअे मै पागल हो जाता हू और तुम्हारे ही काममे डूबा रहता हू।"

अिस प्रकार दोनो महापुरुषोकी विनोद-वार्तासे दोनोके हृदयकी अपूर्व सुन्दरताके दर्शन होते थे।

वहाके भोजके समय दिया हुआ गोखलेजीका भाषण अेक प्रवीण राज-नीतिज्ञको शोभा देनेवाला था। अुनके भाषणकी छटा, अग्रेजी भाषा पर अुनका अधिकार, श्रोताओके दिल पर गहरा असर करनेवाली अुनकी बहस करनेकी सरल शैली, हृदयका सन्तुलन और दोनो पक्षोको देखकर अपना निर्णय करनेका विवेक — अिन सबका सगम देखकर गोरोको आश्चर्य हुआ। दक्षिण अफ्रीकाके अनेक गोरे नेता अुनसे मिले। अखबारोके प्रतिनिधि भी अुनसे मिले। अुन्होने सबके सामने अपनी न्याययुक्त माग रखकर सबको जीत लिया। गोखलेजीने अपनी राय अुन्हे साफ तौर पर बता दी थी "अपने देशमे आप कैसे आदमियोको प्रवेश करने दे, यह आपकी मर्जीकी बात है। अिसके लिअे आप किसी भी देशके लिअे या किसी भी कौमके लिअे अपमानजनक न हो, अैसे किसी भी कानूनकी मददसे अपने देशमे अवाछनीय मनुष्योके प्रवेश करने पर पाबन्दी लगाये तो वह अुचित ही है। मै भी अपने देशमें अैसा ही करना चाहूगा। परन्तु जो लोग यहा आ गये है, जिन्होने अपना वतन ही अिस देशको बना लिया है या लम्बे अर्से तक रहकर जिन्होने यहा अपनी जायदादे बना ली है और जो शरीर-श्रम करके अपना गुजारा करते है, अुनके प्रति अपना व्यवहार आप शरीफोको शोभा दे अैसा रखिये। अुसमे आप भेदभाव न कीजिये। गुण-दोषका प्रतिबन्ध लगाकर आप

किसीको भी यहा आनेसे रोकिये, परन्तु रगभेदका प्रतिवन्ध लगाकर आप किसीको आनेसे न रोकिये। अैसे लोगोको आप अपने देशके नागरिक मानिये, अुन्हे अपने साथ रखकर अुनसे प्रेमभरा वरताव कीजिये। आप अितना करें तो मुझे और कुछ नही चाहिये।"

अैसी वास्तविक और नैतिक दलीलोसे कैसा भी विरोधी अुनकी वात मान लेता था। प्रिटोरियामे यूनियन सरकारके मत्रियोसे भी गोखलेजी मिले और सभी प्रान्तोके वारेमे अुनसे खूब चर्चा की। नेटालके स्वतत्र हिन्दुस्तानी मजदूरो पर जो तीन पौडका कर लगा हुआ था, अुसे हटा देनेके लिअे भी वहुत कहा। मत्रियोने अुन्हे विश्वास दिलाया कि अगली पार्लियामेण्टमे वह कर हटा दिया जायगा। ट्रान्सवालमे कोअी तीन सप्ताह रहकर वे नेटाल गये।

नेटालमे भी अैसी ही धूमधाम रही। स्वागतके जुलूस, मानपत्रोके समारोह और मुलाकातो वगैराके कार्यक्रमसे सारे दक्षिण अफ्रीकाका वातावरण सुन्दर हो गया। नेटालमे तो गोरे जमीदारोके मडलने भी गोखलेजीको निमत्रण दिया। कुछ जमीदारोने आमत्रण भेजकर अपने स्थान पर अुनका स्वागत किया। हिन्दुस्तानी गिरमिटिया मजदूरोके झुण्डके झुण्ड अुनके दर्शन करने आये। गिरमिटिया मजदूरोकी हर वैरकमे यही भावना मालूम होती थी कि 'देशसे गोखले राजा आये है।' गोखलेजी नेटालमे थे, अुसी वीच फिनिक्स भी हो आये। अिस प्रकार दक्षिण अफ्रीकाकी यात्रा पूरी करके वे डरवनके वन्दगाहसे विदा हुअे। गाधीजी अुनके साथ गये और जजीवार तक अुन्हें लौटा आये। अिस साधुचरित नेताका आगमन दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोके जीवनमें अद्वितीय माना जायगा। अुसके मीठे सस्मरण आज भी ताजे वने हुअे है।

३

श्री हरमन कैलनबैक

अिस प्रकरणमे मै गाधीजीके अेक जर्मन मित्रका परिचय देना चाहता हू। अुन्होने गाधीजीके जीवनमे, दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोके जीवनमें और सत्याग्रहकी लडाअीमे गहरी दिलचस्पी वताअी है और सुन्दर भाग लिया है। अितिहासकी दृष्टिसे तो श्री कैलनवैकका परिचय श्री पोलाक, श्री वेस्ट या कुमारी श्लेशिनसे ज्यादा महत्त्वका नही है। फिर भी ये प्रकरण

लिखनेमें मेरा अेक हेतु गांधीजीके जीवनके कुछ सुन्दर प्रसंगोंका वर्णन करना भी है, और अुसी हेतुसे यह प्रकरण मैं लिखना चाहता हूं। गांधीजीके साथियोंके जीवनकी या अुनके साथके निजी परिचयकी कथा लिखनेका काम तो अुत्तम रूपमें वे स्वयं ही कर सकते हैं और कुछ हद तक अुन्होंने 'आत्मकथा' में और 'दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास' में अैसा किया भी है। परन्तु मैं देखता हूं कि अुसमें अुन्होंने कअी मर्यादाअें रखी हैं। बहुतसी बातें अुन्होंने जान-बूझकर नहीं दी हैं। वे बातें जितनी भी मुझे मालूम हैं, अुन्हें अपनी दरिद्र भाषामें भी वर्णन कर देना मुझे अुचित मालूम होता है। और अैतिहासिक दृष्टिसे तो नहीं, परन्तु गांधीजीके जीवनके और अुनके आदर्शोंके अुपासकोंकी दृष्टिसे भी अैसे वर्णन आवश्यक हैं। अिन प्रकरणोंमें अिस तरहके बहुतसे वर्णन अिसी दृष्टिसे दिये गये हैं। मैं मानता हूं कि पाठक-मित्रोंको वे जरूर पसंद आयेंगे।

श्री हरमन कैलनबैक अेक जर्मन सज्जन थे। अुन्होंने भरी-जवानीमें जर्मन सेनामें सिपाहीका काम किया था। और जीवनका अेक भाग व्यतीत करनेके लिअे वे दक्षिण अफ्रीका गये थे। स्थपति (शिल्पकार)के नाते वे बड़े कुशल थे। आमदनी बहुत अच्छी थी। अकेले राम थे। न अूधोका लेना न माधोका देना। अिसलिअे अैश-आराम और ठाटबाटकी तो बात ही क्या कहना? शादी नहीं की थी, अिसलिअे जिन्दगी भी गैर-जिम्मेदार थी। जीवनकी नअी नअी लहरोंके अनुभवके जिज्ञासु ठहरे। अिसलिअे अनेक पाश्चात्य व्यक्तियोंकी तरह वे भी जिस विषयकी ओर ध्यान देते अुसीमें डूब जाते थे। श्री कैलनबैक अपने धंधेके साथ साथ जीवनके दूसरे पहलुओंकी ओर भी ध्यान देते थे। अन्तरात्माको कुछ संतोष मिले, अैसी चीजोंकी भी शोध करते थे। अुनके साथ अन्याय न करता होअूं तो शायद यह भी हो सकता है कि केवल जीवनमें विविधता लानेके स्थूल हेतुसे ही वे अिस तरहके काम करते हों। कुछ भी हो, किन्तु अपने कामधंधे और वैभवसे अुन्हें जो आनन्द मिलता था, अुससे अुन्हें संतोष नहीं था। यह सन्तोष वे ढूंढा करते थे। जोहानिसबर्गमें थियासॉफिकल सोसा-अिटीकी शाखा थी। वहां वे अपनी धार्मिक वृत्तिको पोषण देने जाया करते थे और क्षुधाकी शान्तिके लिअे निरामिष भोजनगृहमें जाते थे। अिन दो संस्थाओंमें गांधीजीसे अुनकी भेंट हुअी।

श्री कैलनबैक स्वभावके सरल और बड़े भोले थे। साथ ही जिज्ञासु वृत्तिके थे। ट्रान्सवालमें प्रचलित रंगभेदकी वृत्ति भी अुनमें काफी मात्रामें

थी। हिन्दुस्तानियोको देखनेमें भी अुन्हे घृणा आती थी। परन्तु जिसे वे जीवनकी विविधता मानते थे, अुसमे गाधीजी जैसे अेक हिन्दुस्तानीको प्रवीण और रगा हुआ देखकर गाधीजीकी ओर अुनका ध्यान गया। पहले तो अुनके मनमे अेक प्रश्न अुठा कि क्या हिन्दुस्तानियोके जैसी सस्कारहीन जातिमे जीवनको विविधतायुक्त और समृद्ध बनानेके प्रयोग करनेवाले गाधी जैसे प्रवीण मनुष्य भी हो सकते है? पर बादमें वे गाधीजीसे सम्बन्ध कायम करनेकी कोशिश करने लगे। दोनो मिलकर चर्चाअे करते थे। अेक दिन अुन्होने गाधीजीको अपने यहा भोजनका निमत्रण दिया। गाधीजीने कृतज्ञतापूर्वक अिस निमत्रण को अिस शर्त पर स्वीकार किया कि अुनके साथ श्री काछलिया और अेक-दो अन्य साथियोको भी निमत्रण दिया जाय, और कैलनबैक रजामन्द हो तो गाधीजी खुद अुन्हे अपने साथ ले जाय। कैलनबैकके हृदयमे अुस समय अन्य हिन्दुस्तानियोको अपने यहा आमत्रण देनेकी अुमग तो नही थी। परन्तु गाधीजीके प्रति अुनके हृदयमे आदर पैदा हो गया था। अुस आदरके कारण अुन्होने यह शर्त स्वीकार की और दूसरे दो-तीन साथियोको भी कैलनबैकने निमत्रण दिया। अिस प्रकार गाधीजीने श्री कैलनबैकके हृदयमें काली चमडीके प्रति बैठी हुअी घिनको मिटानेका पहला कदम अुठाया और श्री कैलनबैकको अुसी दिन मालूम हो गया कि हिन्दुस्तानियोमे भी बहुतसे लोग अैसे है जिन्हे बुद्धिशाली और सस्कारी माना जा सकता है। अिस भ्रमके दूर होने पर तो श्री कैलनबैक गाधीजीके दफ्तरमें जाने लगे। दोनोके बीच धर्म और आहारके विषयमे अनेक चर्चाअे होने लगी। और साथ ही टॉल्स्टॉय तथा रस्किनकी पुस्तके खरीद कर वे पढने लगे। अिस नये स्वाध्यायसे गाधीजीके आदर्शोके प्रति अुन्हें अधिक आकर्षण हुआ। गाधीजीने अपने कुटुम्बको नेटाल भेज दिया था। कैलनबैकने गाधीजीको अपने साथ ही रहनेका आमत्रण दिया। प्रेमभावसे दिये गये आमत्रणको अुन्होने स्वीकार कर लिया। अिस समय तो गाधीजी और कैलनबैकमे दोस्तीका सम्बन्ध पक्का हो चुका था। जोहानिसबर्गसे दो तीन मील दूर 'माअुन्ट व्यू' नामकी सुन्दर जगह है, वहा जोहानिसबर्गमे व्यवसाय करनेवाले बहुतसे धनवान गोरोके बगले थे। वही कैलनबैकका भी बगला था। वहा दोनो मित्रोने साथ रहनेका निश्चय किया। गाधीजी वहा रहने चले गये। परन्तु कैलनबैकका मौज-शौक अुन्हें खटका। मकान घरका होने पर भी वे केवल अपनी सुख-सुविधाओ पर

हर महीने लगभग १२०० रुपये खर्च कर डालते थे। साधारणत सौ सवा सौ रुपये काफी थे। अितनी ज्यादा फिजूलखर्ची गांधीजीको खटकी।

गांधीजी वहा रहने गये, अुसके दूसरे ही दिन शामको कैलनबैकने कहा "सैरका समय हो गया। चलो, घूमने चलें।"

"जोहानिसबर्गमें रहनेवाले लोग तो यहा घूमने आते है, तब हम क्या वापस जोहानिसबर्गकी तरफ जाय? हवा तो यहाकी अच्छी है। और घूमना श्रमके लिअे ही हो तो चलो खुरपी पकडो। बगीचेमे ही काम करेगे तो शारीरिक श्रम भी हो जायगा, साथ ही बगीचेका काम भी हो जायगा।" यह कहकर गांधीजीने कैलनबैकको बगीचेके काममे लगाया, खुद भी काममे लगे और दोनो काम करते करते अनेक विषयो पर बाते करने लगे। अिस प्रकार सवेरे और शाम दोनो आदमी बगीचेमें नियमित रूपसे काममे लग जाते। थोडे दिनमें श्री कैलनबैकको मालूम हो गया कि बगीचेके लिअे जो दो माली रखे गये है अुन पर खर्च करना अब फिजूल है। अिसलिअे अुन्हें अलग कर दिया।

अेक दिन गांधीजी स्नान करनेसे पहले अपना कमीज धो रहे थे। कैलनबैकको यह मालूम हुआ तो वे बोल अुठे "अरे भाअी, आप क्यो धो रहे है? यह धोबी है न?" गांधीजीने जवाब दिया "कलसे मैंने अपने कपडे आप ही धोना शुरू कर दिया है। मुझे अितनी फुरसत मिलती है और मुझमे अितनी ताकत भी है। अिसलिअे अपने कपडे तो मै खुद ही धोअूगा।"

अब श्री कैलनबैक क्या करते? गांधीजी अपने कपडे खुद धोयें और कैलनबैक धोबीसे धुलवायें, यह कैसे हो सकता था? अुसी समयसे अुन्होने भी अपने कपडे खुद धोना शुरू कर दिया। नतीजा यह हुआ कि धोबी भाअी भी निठल्ले हो गये। और अुन्हें भी विदा मिल गयी।

यहा अेक प्रसंग लिखने लायक है। गांधीजी दक्षिण अफ्रीकामें सत्याग्रहकी लडाअीमें दूसरी बार जिस दिन जेलसे छूटनेवाले थे, अुस दिन श्री कैलनबैक अेक नअी मोटर खरीद कर गांधीजीको जेलके दरवाजे पर लेने गये। गांधीजी जेलसे बाहर आये। सबसे मिले। श्री कैलनबैकने मोटरमें बैठनेकी प्रार्थना की। गांधीजीने पूछा "किसकी मोटर है?" श्री कैलनबैकने बताया "मेरी है। अभी खरीदकर लाया हू।"

"किसलिअे खरीद लाये?" गांधीजीने पूछा।

"आपको ले जानेके लिअे। मेरे जीमें आया कि आपको नअी मोटरमें ले जाअू।" श्री कैलनबैकने सकोचसे जवाब दिया। "अच्छा तो कैलनबैक, यह

मोटर तुम अभी नीलाम-घर पहुचा आओ। मै अिसमें नही वैठूगा। मेरे लिअे तुम्हे यह मोह क्यो? तुम पहुचा कर वापस आओ, तब तक मैं यही खडा रहूगा।"

श्री कैलनवैक तुरन्त मोटरको नीलाम-घर पर छोड आये। वे लौटे तव तक गाधीजी अपनेको लेने आये हुअे दूसरे मित्रोके साथ वही खडे रहे और वादमें सव पैदल चलकर अपने-अपने घर गये।

श्री कैलनवैकने कुछ मास गाधीजीके साथ विताये। अिस अर्सेमे आहारके परिवर्तन पर वातचीत चली। दोनो अलोना और अुवला हुआ खाना खाते थे। 'परन्तु हमारा आहार भी अप्राकृतिक है। सूर्यके तापसे पका हुआ भोजन ही कुदरती माना जा सकता है। पकी हुअी खुराकको फिर आग पर हम या तो अपनी स्वादेन्द्रियको पोषण देनेके लिअे पकाते हैं या अपनी गलत आदतके कारण पकाते है।' अिस चर्चा परमे दोनोने फलाहार करनेका निश्चय किया। जरूरत हो तो सिर्फ गेहूकी रोटी फलोके साथ खाना तय किया। परन्तु यह विचार करने पर रसोअिया भी अनावश्यक मालूम हुआ। फिर तो रसोअियेके लिअे अपना ही खाना वनानेका काम रह जाता था। अिसलिअे अुसे भी विदा कर दिया गया। अिस तरह करते करते थोडे अर्सेमे गाधीजीने कैलनवैकको सव झझटोसे मुक्त कर दिया। और हर महीने १२०० रुपया खर्च करनेवाले कैलनवैकका खर्च घटकर १०० से १२० रुपये मासिक पर आ गया।

दिनोदिन श्री कैलनवैकमे विलक्षण परिवर्तन होता गया और हिन्दुस्तानियोके प्रति अुनकी ममता अितनी वढ गअी कि वे हिन्दुस्तानीमय वन गये। पश्चिमी ढगके रहन-सहनमे अुन्हे अस्वाभाविकता लगने लगी, जरूरतसे ज्यादा टीम-टाम मालूम हुअी और छिछलापन जान पडा। हिन्दुस्तानी रहन-सहन अुन्हे कुदरतके अधिक अनुकूल और अधिक समीप प्रतीत हुआ। सन् १९१३-१४ मे फिनिक्स आश्रममे हिन्दुस्तानी वेशमे फिरते हुअे किसी गौराग साधुका खयाल करता हू, तो मेरी आखोके सामने छोटीसी धोती पहिने नगे वदन वगीचेमे सावधानीसे फल-फूलोकी देखभाल करते हुअे श्री कैलनवैक आकर खडे हो जाते है। मै पूछता "मिस्टर कैलनवैक, आप अिन पौधोकी काट-छाट करते है, तब अितनी वारीकी और सावधानी क्यो रखते है?" जवावमे वे गभीर वनकर कहते "मिस्टर रावजीभाअी, आप जानते हैं? कोअी डॉक्टर छोटे बच्चेको नश्तर लगाते समय जितनी सावधानी रखता है, अुतनी ही सावधानी फल-

फूलके वृक्षोकी काट-छाट करते वक्त रखनी चाहिये। यह 'प्रूनिग'—काट-छाट अिन पेडोके वास्तविक विकासके लिअे ही की जाती है। हमारी तरह वनस्पतिमे भी जीव होता है। अुसे लापरवाहीसे काट डाले और कटे हुअे स्थान पर जरूरी लेप वगैरा न लगाये, तो अुस पेडको दु ख हो और अुसका दु ख वढ जाय। मै तो अिस वनस्पतिमे यह सुख-दु खकी भावना देखता हू।" मै अिस दयामय हृदयको समझता और मन ही मन अुसे प्रणाम करता था। काम करते हुअे कअी वार जव कोअी अुनसे टकरा जाता और पश्चिमी पद्धतिके अनुसार जरा विवेकपूर्वक वोल अुठता 'Very Sorry—वडा अफसोस है', तो कैलनवैक तुरन्त वोल अुठते 'Please don't speak a lie, you do not seem to be sorry—मेहरवानी करके झूठ न वोलिये, आपको अफसोस हो रहा है अैसा दीखता नही है।' अिस प्रकार अुन्हे वाहरी—अूपरी शिष्टाचार पसद नही था।

फिनिक्स आश्रमकी सोलह जनोकी मडलीकी व्यवस्था करनेके लिअे अुन्होने वॉलक्रस्टमे दो-तीन दिन पहले ही डेरा डाला था। अुन्होने किसी गोरे सज्जनके मकानका अेक कमरा थोडे दिनके लिअे किराये पर ले लिया था। वादमे जव गोरे लोगोको मालूम हुआ कि श्री कैलनवैक हिन्दुस्तानी सत्याग्रहियोकी मदद करनेवाले है और अिसीलिअे यहा आये है तो अुन्होने कमरा खाली करनेको कहा। श्री कैलनवैक खुशीमे अपना विस्तर लेकर वहा चले आये जहा हिन्दुस्तानी मोहल्लेमें हमने अपना पडाव डाला था। मैने अुनसे पूछा "मिस्टर कैलनवैक, आपको यहा रहना अटपटा तो नहीं लगेगा?" अुन्होने हसते-हसते जवाव दिया "मेरे जीवनमे अेक समय अेसा था जव मै रगकी घृणासे भरा हुआ था। लेकिन आज तो कोअी गन्दा हिन्दुस्तानी वच्चा रोता हो तो अुसे प्रेमसे अुठाकर अुसके नाकका रीट साफ करके अुसे खेलाते-खेलाते छातीसे लगा लेनेका मन हो जाता है।" अैसे सरल-हृदय श्री कैलनवैकके जीवनका लाभ हम भारतमे न अुठा सके। अुनके हृदयमे अुमग तो वहुत थी कि 'भाअी' गाधीजीके साथ हिन्दुस्तान जाअूगा और अुस प्राचीन पुण्यभूमिमे रहकर नअी नअी साधनाये करूगा। परन्तु भगवानकी अैसी अिच्छा नही थी। वे गाधीजीके साथ हिन्दुस्तान आनेके लिअे रवाना हुअे थे, दोनो अिग्लैण्ड होकर यहा आनेवाले थे। परन्तु अुनके अिग्लैण्ड पहुचते ही ब्रिटेन यूरोपकी लडाअीमे कूद पडा। श्री कैलनवैकको जर्मन होनेके कारण अेक निश्चित समयके लिअे वही रहना पडा। सरकारने अुन्हें गाधीजीके

साथ हिन्दुस्तान आनेकी अिजाजत नही दी। लडाओी खतम होनेके वाद वे सीधे जोहानिसवर्ग लौट गये और अपना शिल्पकारका धधा करने लगे। अव भी श्री कैलनवैक जोहानिसवर्गमे रहते है और हमारी स्वतत्रताकी लडाओीमे वडी दिलचस्पी लेते है।

४

‘फिनिक्स आश्रम’

अिन प्रकरणोमें मैने टॉल्स्टॉय फार्मके वारेमे कुछ नही लिखा। गाधीजीने ‘दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास’ मे टॉल्स्टॉय फार्मके विपयमे काफी लिखा है। और अुसके सम्वन्धमे मेरी अपनी जानकारी नहीके वरावर है। अिसलिअे गाधीजीने अपनी सुन्दर भापामे अुस अितिहासमे टॉल्स्टॉय फार्मका जो वर्णन किया है, अुसका पिष्टपेपण करना व्यर्थ है। फिनिक्समे तो मै रहा हू और अपने जीवनके दो धन्य वर्प वहा विता चुका हू। अुस समयके गाधीजीके सहवाससे मेरे जीवन पर जो असर हुआ, मै मानता हू कि अुसीकी सुगन्धसे अब भी मै थोडा-वहुत काम चला रहा हू। अिसलिअे अिन प्रकरणोमे फिनिक्सको भूल जाअू तो मै कृतघ्न माना जाअूगा। तो जो कुछ मुझे याद है अुसे अपनी शक्तिके अनुसार पाठकोके सामने रख देनेकी मै कोशिश करूगा।

डरवनसे अुत्तर दिशामे समुद्रके किनारे-किनारे जानेवाली रेलवे लाअिन पर चौदह मील दूर फिनिक्स नामका स्टेशन है। वहा आवादी तो वहुत नही है। परन्तु आसपास गन्ने और वॉटल नामक (ववूलकी अेक जातिके) पेडोकी खेती होनेके कारण अुसके मालिकोके वगले और मजदूरोके घर यहा-वहा खडे है। अिस फिनिक्स स्टेशनसे पूर्वकी तरफ ढाअी मील दूर गाधीजीने जमीनके दो टुकडे खरीद रखे थे। अेक बीस अेकडका और दूसरा अस्सी अेकडका। यह जमीन अुन्होने सन् १९०४ में खरीदी थी। जोहानिसबर्गमे वकालत करते करते अुन्होने जीवनके अनेक प्रयोग आरम्भ किये थे। अुनके प्रत्येक प्रयोगका केन्द्र-बिन्दु आत्मशुद्धि था। आत्मशुद्धिके प्रयत्नमे से जो कुछ अच्छा लगता अुसे वे जिज्ञासुकी वृत्तिसे पकड लेते और अमलमे लाते थे। दक्षिण अफ्रीकामे गये तो थे वे रुपया कमाने, पोरवन्दरके कवा गाधीकी व्यावहारिक प्रतिष्ठाको कायम रखने

और हो सके तो अुसे नवाअी करनेके लिअे। परन्तु वहा जानेके वाद अेक ही वर्पमे अुनका यह निश्चय हो गया कि रुपया पैदा करनेके वजाय देशसेवा हो सके तो अुसके लिअे वहा ज्यादा रहा जाय। अिसी वृत्तिमे वे १८९४ से १९०४ तक वकालत और देशसेवा दोनो साथ-साथ करते रहे। अिस अर्सेमें भी धन-प्राप्तिकी वृत्तिमे सेवाधर्मकी वृत्तिका पलडा ही भारी था। अिस वृत्तिमें भी जो कुछ धनप्राप्ति हो जाती वह सेवाके लिअे ही खर्च होती थी। अिस तरह दस साल वीत गअे। फिर भी जीवनका आदर्श स्थिर नही हुआ। जीवन-नौकाको किस दिशामें ले जाया जाय और कहा अुसका लगर डाला जाय, अिसका कुछ निश्चय नही हुआ।

परन्तु जो जिसे ढूढता है वह अुसे मिल जाता है। गीताजीमें भगवानका अुपदेश है कि 'जिस रूपमें तू मुझे भजेगा, अुसी रूपमें मै तुझे मिल जाअूगा।' भगवान औसा मसीह कहते है 'तू दरवाजा खटखटा, और वह खुल जायगा।' सच्चे हृदयकी प्रार्थना किस भक्तकी भगवानने नही सुनी? अेक दिन गाधीजी १९०४ में जोहानिसवर्गसे डरवन जा रहे थे। स्टेशन पर श्री पोलाकने अुनके हाथमे अेक पुस्तक रखी। अिस पुस्तकका नाम था 'अन्टु दिस लास्ट'। गाडीमें जैसे-जैसे अुस पुस्तकको गाधीजी पढते गये, वैसे-वैसे अुन्हें अनोखा आनन्द आता गया। अुन्हे अैसा लगा कि मै जो चीज चाहता था वह मुझे मिल गअी। अुन्होने माना कि यह छोटीसी पुस्तक औश्वरने ही भेजी है। डरवन पहुचते-पहुचते अुन्होने वह पुस्तक पूरी पढ डाली और साथ ही साथ हृदयमें निश्चय भी कर लिया। कैसा निश्चय?— "वकालतका धधा वन्द किया जाय। शरीर-श्रम करके श्रमजीवी वनना धार्मिक और नैतिक जीवनका मुख्य साधन है। वकालत या डॉक्टरी पर जीनेका किसीको अधिकार नही है। तव किसी भी धधेसे धनका परिग्रह करनेका अधिकार तो हो ही कैसे सकता है? अपने पसीनेकी रोटी पर ही हमारा अधिकार है। वही रोटी नीतिसे पैदा की हुअी मानी जा सकती है। अैसा श्रमजीवी जीवन ही जीने योग्य है। वही भविष्यमे शान्ति देता है।"

अिस पुस्तकके विचार अुनके दिमागमे ताजे थे। अितनेमे श्री मदन-जीतने, जो दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोकी भलाअीके लिअे 'अिंडियन ओपीनियन' नामक साप्ताहिक अखवार निकाल रहे थे और जिनके अखवारमें गाधीजीके लेखो और आर्थिक सहायताका वडा भाग रहता था, देश जानेका

विचार किया। दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोके प्रश्नके लिअे अेक अखबारकी जरूरत तो थी ही। अिसलिअे गाधीजीने अुस अखबारको अपने हाथमे लेनेका विचार किया। जोहानिसबर्ग जैसी दूर जगहमे रहकर डरबनमें प्रकाशित होनेवाले अखबारको चलाना अुन्हे कठिन मालूम हुआ। सारी परिस्थितिका विचार करके गाधीजीने रस्किनकी पुस्तकमे पढे हुअे विचारोको अमलमे लानेका निश्चय किया। अुनके भतीजे श्री छगनलाल गाधी 'अिडियन ओपीनियन' पत्रमें श्री मदनजीतके साथ काम करते थे। अुन्हे गाधीजीने अपना निश्चय बताया। श्री छगनलालने अुनकी योजनामे शामिल होनेकी अिच्छा प्रगट की। श्री आल्बर्ट वेस्टने भी गाधीजीकी अिच्छाका स्वागत किया। शहरसे दूर स्टेशनके नजदीक कोअी जमीन खरीद कर वहा 'अिडियन ओपीनियन' का प्रेस ले जाया जाय, अैसे कार्यकर्ता जुटाये जाय जो अुपरोक्त विचारधाराके अनुसार जीवन बिताना पसद करते हो, हिन्दुस्तानी कौमकी सेवाके लिअे अखबार चलाया जाय, अुसमें काम करनेवाले दिनके अमुक समय तक अपने मकानके आसपासकी जमीनमे खुद मेहनत करके खेतीबाडी करें और अुससे अपनी और अपने कुटुम्बकी जरूरतें पूरी करनेका प्रयत्न करें, अनिवार्य हो तो अेक निश्चित रकम प्रेससे ले ले, जीवनमें परिग्रह करनेका विचार न करे, सरल जीवन और अुच्च विचार रखनेका प्रयत्न करे और कौमकी सेवा करे — ये विचार श्री वेस्टको पसन्द आये और वे गाधीजीके निश्चयमे शरीक होनेको तैयार हो गये।

भाअी मगनलाल गाधी अुस समय धन्धेके लिअे स्टेनगारमे रहते थे। अुन्हें बुलाकर गाधीजीने अपना निश्चय बताया और अुसमे शामिल होनेको कहा। अुन्होने भी हा कह दिया। अिस तरह काम करनेवालोका समूह बनाकर खरीदी हुअी जमीनमे अुनके लिअे मकान तैयार किये गये। अेक कुटुम्बके रहने लायक मकान और अुसीके साथ तीन अेकड जमीन — अिस प्रकार दस परिवारोके लिअे दस मकान बनवाये गये। अिस जमीनमे पानीका अेक छोटासा झरना था। अुस झरनेके पास ही प्रेसके लिअे ७५ × ५० फुट लम्बा-चौडा कामचलाअू मकान बनाया गया। डरबनसे प्रेस और अखबारका दफ्तर यहा लाया गया। प्रेसका पुराना नाम अिटरनेशनल प्रिटिग प्रेस था। अुसे वैसा ही रहने दिया। श्री छगनलाल और श्री वेस्ट अुसके मुख्य व्यवस्थापक थे। अनुभवी और शक्तिशाली तथा जीवनके अुच्च हेतुसे प्रेरित होकर हिन्दुस्तानी जातिकी सेवाके काममें अपना जीवन अर्पण करनेवाले

गोरे मित्र श्री आल्बर्ट वेस्टके बारेमें गाधीजीने अपने हाथसे जो लिखा है अुससे ज्यादा मै क्या लिख सकता हू? प्रामाणिकता, अुद्योगशीलता और सेवाभाव — ये गुण मैने अुनमे विशेष तौर पर देखे। वे वर्षो तक वहा रहे, परन्तु हिन्दुस्तानी काम करनेवालोके साथ अुन्होने कभी भेदभाव नही किया। मै जब वहा था तब वे कुटुम्बवाले थे। परन्तु जब अखबारका काम सभाल लेनेको गाधीजीने अुन्हे जोहानिसवर्गसे डरबन भेजा तब वे अकेले थे। अुनकी शादी नही हुअी थी। वे जोहानिसवर्गमे छापाखानेका धधा करते थे। गाधीजीके काममे मदद देनेके शुद्ध हेतुसे कुछ ही घटोके भीतर अपने सारे धधेकी व्यवस्था हिस्सेदारको सौपकर वे डरबन चले गये और वहा अुन्होने 'अिडियन ओपीनियन' का काम सभाल लिया। अुसके बाद लगभग बारह बरस तक वे प्रेस और अखबारके व्यवस्थापकके रूपमे रहे। अुस समय हर कार्यकर्ताके खर्चकी रकम तीन पौड निश्चित की गअी थी। वही अुन्होने भी स्वीकार की। दक्षिण अफ्रीकामे अुनके जैसे होशियार आदमीके लिअे यह वेतन बहुत ही कम था। परन्तु वे वेतनके लिअे तो रहे नही थे। फिनिक्सके आदर्शमे शरीक हुअे तब अुन्हे वेतनके रूपमे हर महीने तीन पौंड मिलते थे और शरीर-श्रम करके जमीनसे जितना पैदा हो सकता हो अुतना कर लेनेका हक था। जब श्री वेस्टने विवाह किया और अपनी पत्नी, बहन और बूढी सासको वे गाधीजीकी सलाहसे फिनिक्समे लाये, तब अपनी कमसे कम जरूरतोके अनुसार वे आठ पौंड लेने लगे। अेक मामूली हिन्दुस्तानी क्लार्कका पाच पौंड मासिक खर्च आता था। अैसे खर्चीले प्रदेशमे चार मनुष्योके गुजरके लिअे आठ पौड बहुत ही कम थे। परन्तु श्री वेस्टको यह त्याग और सादगी पसन्द थी। गाधीजीके जीवनके आदर्शोमे वे रम गये थे। और जब तक अुनके अिन आदर्शोंकी रक्षा हुअी तब तक वे वहा बने रहे।

श्री मगनलाल गाधीके नामसे तो गुजरात परिचित ही है। वे और अुनके बडे भाअी श्री छगनलाल गाधी भी वहा स्थायी हो गये। भाअी गोविन्दस्वामी नामके अेक मद्रासी सज्जन भी पहलेसे ही अिस काममे शरीक थे। वे भी आश्रमके सदस्य बन गये। और दूसरे दो परिवार वैतनिकके रूपमें रहते थे। फिनिक्समें काम करनेवालोकी व्यवस्था अिस प्रकारकी थी।

सन् १९१२ में साधुचरित देशभक्त गोखलेजीके दक्षिण अफ्रीका जानेके बाद और सरकारके साथ हुअे कामचलाअू समझौतेके बाद गाधीजीने टॉल्स्टॉय

फार्मकी सारी व्यवस्था समेट ली और पाठशालाके विद्यार्थियोके साथ फिनिक्स चले गये। तबसे फिनिक्समे आश्रम-जीवन आरम्भ हुआ।

जबसे गाधीजीने स्थायी रूपमें वही रहना तय किया, तबसे फिनिक्सके आदर्शोके अनुसार जीवनका कडाअीसे पालन होने लगा। वहाके निवासकालके कुछ प्रसगोका वर्णन आगे आयेगा। परन्तु गाधीजीने खुद अिस सस्थाके बारेमे क्या आशा रखी थी, अुसकी स्थापनाके पीछे अुनका क्या हेतु था और व्यक्ति और समाज दोनोके जीवनमे अुसका क्या स्थान होना चाहिये, अिसकी कुछ कल्पना नीचेकी हकीकतसे हो सकेगी।

फिनिक्समे रहनेवालोको कुछ व्रतोका पालन करना पडता था

(१) ब्रह्मचर्यका पालन करना। (२) सूक्ष्म सत्यव्रतका पालन करना। (३) काम मुख्यतया शरीर-श्रमका यानी खेतीका करना। (४) अक्षर-ज्ञान बढानेका हेतु हो तो अुसे भूल जाना, सहज ही और जरूरत पडने पर बढ जाय तो भले ही बढे। (५) मनमे यह निश्चय करना कि अक्षर-ज्ञानके बजाय चरित्रको दृढ बनाना हमारा कर्तव्य है। (६) जाति या कुटुम्बके अन्यायका निडर होकर विरोध करनेकी तैयारी रखना। और (७) शुद्ध दरिद्रता धारण करना।

अूपरके नियम व्यक्तियोके लिअे थे। अुनके अलावा समाजके लिअे अुनका आदर्श अिस प्रकारका था

(१) सत्य परम साध्य वस्तु है। वह परमात्मा — ओश्वर है।

(२) अहिसा अिस साध्यको प्राप्त करनेका साधन है।

(३) सत्य और अहिंसाके आधार पर अिस समाजकी रचना हो, तो ही अिसमे स्थिरता, दृढता और स्वतत्रता आ सकती है।

अैसे विचार प्रकट करनेवाले गाधीजीके कुछ पत्र, जिनमे फिनिक्स सस्थाके बारेमे अुन्होने निर्देश किया है, मै नीचे दू, तो मुझे लगता है कि यह समझा जा सकेगा कि गाधीजीने फिनिक्सके बारेमे क्या क्या आशाअे रखी थी।

"विपत्तिके लिअे धैर्यके सिवा और कोअी अिलाज नही है। साधन तो जो ट्रान्सवालमें है वही देशमे होने चाहिये, अिस बारेमे मेरे मनमे कोअी शका नही। परन्तु का पत्र बता रहा है कि हम तैयार तो फिनिक्स जैसे स्थानमे ही हो सकेगे। श्मशानमे सोते हुअे भी निडर रहना मनुष्यका कर्तव्य है। परन्तु

सभव है कि श्मशानमें सोना शुरू करनेवाला आदमी सोते ही डरके मारे मर जाय। अुसी तरह तुम्हारा और मेरा हिन्दुस्तान अभी तो श्मशानरूप है। अुसमे विस्तर विछा कर मीरावाअीका प्रभुभक्तिका भजन 'वोल मा वोल मा' गा सकें, अिसकी तैयारी यहा करनी चाहिये — करनी पडेगी। किसी भी प्रकारसे और किसी भी समय आनेवाली मौतका स्वागत करने योग्य वल मुझमें आयेगा, अैसा आभास हुआ करता है। मैं चाहता हू कि सभीमे अैसा वल आये।"

* * *

"तुम जरा विचार करोगे तो देख सकोगे कि यह सवाल पैदा ही नही होता कि कौन किसे निकाले। जव फिनिक्सकी हालत पूरी तरह कमजोर हो जायेगी, तव निकालने और रखनेकी जरूरत ही नही रहेगी। परन्तु जिस पर सच्चा रग चढा होगा वेही यहा रहेगा। अुस समय तो यह सवाल अुठेगा कि कौन यहा रहेगा। आज हम वेतन नही देते, परन्तु भोजन दिया जाता है। सवाल यही है कि अुसमें भी कमी करके, कष्ट अुठाकर और सूखी रोटी खाकर कौन रहेगा? फिनिक्स आश्रम भी फिनिक्समें ही रहेगा सो वात कहा है? जहा फिनिक्सका अुद्देश्य है, वही फिनिक्स है। हम सारी तैयारी हिन्दुस्तानके लिअे करते है। तुम मेरी आत्माको जितनी समर्थ मानते हो अुतनी ही समर्थ तुम्हारी आत्मा भी है। हमारी आत्माओमे कोअी भेद नही है। परन्तु तुममें जितनी अनात्मता, दीर्घकालीन भीरुता, सशय, अनिश्चय आदि हो, अुन्हे निकाल डालो तो हम दोनो अेकसे ही है। फर्क अितना ही रह जाता है कि महाप्रयाससे मैंने जितने आश्रम खोले हैं, अुतने और अुनसे अधिक तुम भी खोल सकोगे, यदि तुम दृढतासे साहस करो।"

* * *

"मैं वहुत चाहता हू कि मुझे वकालत फिरसे न करनी पडे। यही मेरी वडी अिच्छा है। मैं भी चाहता हू कि मेरे जीते-जी फिनिक्समें हम पूरी गरीवीसे रहने लगे। वह दिन दिखानेकी मैं अीश्वरसे प्रार्थना करता हू। परन्तु लक्षण तो सव अुलटे ही देखता हू। कलके लिअे अेक पाअी भी नही है, कैसे काम चलेगा? — अैसे अवसरका अलभ्य लाभ हमे नही मिलेगा अैसा लगता है। अिस लाभको मैं अलभ्य मानता हू, क्योकि दुनियाके मुख्य भागोकी यही स्थिति है, वुद्ध आदिकी यही स्थिति थी, और भविष्यमें भी रहेगी। अैसा निश्चित रूपसे लगता है कि अिसके विना आत्मारामको पहचाना नही जा सकता। ने हमें

ज्ञान सिखाया है, परन्तु वह शुष्क ज्ञान मालूम होता है। सच्चा ज्ञान नरसिंह महेता और सुदामाजीने सिखाया है, अैसा निश्चित लगता है। अिंद्रियोंका भोग भोग कर कहना कि मैं कुछ नही करता, अिंद्रिया अपना काम करती है, मैं तो कृष्ण हू—आदि वाक्य विलकुल मिथ्यावादियोंके-से है। जिसने पूर्ण अिंद्रिय-दमन किया है और जिसकी अिंद्रिया शरीर-यात्राके लिअे ही सारे व्यापार करती है, वही यह वाक्य कह सकता है। अिस दृष्टिसे हममें से अेक भी आदमी यह वाक्य बोलनेका अधिकारी नही है। और जब तक सच्ची गरीवी नही आ जाती, तब तक यह चीज हमें मिलेगी नही। यह माननेके लिअे कोअी कारण नही कि राजा आदि पुण्यके प्रतापसे राजा बनते है। अितना ही कहा जा सकता है कि वे कर्मके प्रतापसे बनते है। परन्तु यह कहना कि वह पुण्य-कर्म ही है, आत्माके गुणोंकी परीक्षा करने पर विलकुल गलत मालूम होता है। ये विचार तुम सबको सही लगें और यदि तुम यह चाहते हो कि जिस प्रौढ पदवीका मैं चित्र खीच रहा हू अुसे हम सब भोगें, तो सभव है अैसा समय अीश्वर कभी दिखा भी दे।"

*　　　*　　　*

"अभी रातके साढे नौ बजे है। केपटाअुनसे अभी पाच दिनकी मंजिल बाकी है। मैं दाहिने हाथसे लिखते-लिखते थक गया हू, अिसलिअे तुम्हें बायें हाथसे पत्र लिख रहा हू। शायद मैं सीधा जेल भेज दिया जाअू। अिसलिअे यह पत्र लिख रहा हू।

"मैं यह मान लेता हू कि मेरे जेल जानेसे तुम तो खुश ही होगे, क्योंकि तुम समझदार हो। सत्याग्रहका रहस्य यह है कि हम जेलमे जाकर खुश हों और खुश रहें।

"फिनिक्सके बारेमे तुमने सवाल पूछा सो अच्छा किया। पहले यह विचार करना पडेगा कि हम आत्माको कैसे खोज सकते है और देशसेवा कैसे कर सकते है। अुसके बाद यह समझाया जा सकता है कि फिनिक्स क्या चीज है। आत्माको खोजनेके लिअे पहले तो नीतिको दृढ बनाना चाहिये। नीतिका अर्थ है अभय, सत्य, ब्रह्मचर्य आदि गुण सम्पादन करना। अैसा करनेसे देशसेवा अपने-आप हो सकती है। अैसा करनेमें फिनिक्स बहुत सहायक है। मेरा विचार यह है कि शहरोमें जहा मनुष्य बहुत तगीमे रहते है और जहा अनेक प्रलोभन होते है, वहा नीतिको सिद्ध करना बहुत कठिन है। अिसलिअे ज्ञानी पुरुषोंने

फिनिक्स जैमा अेकान्त स्थान वताया है। अनुभव सच्ची पाठशाला है। जो अनुभव तुम्हे फिनिक्समे मिला, वह और जगह न मिलता। आत्माको खोजनेका विचार भी वही हो सका। "

* * *

"तुम्हारा स्नेह भूला नही जाता। वा पर तुमने विजय पाअी, अिसे मै वहुत वडा काम मानता हू। वा ने अपना स्वभाव वहुत वदल लिया है, अैसा मै यहा अनुभव करता हू।

"तुमने जो जो व्रत लिये है, अुनमे दृढ रहना। भूतकी तरह अुनके पीछे पडे रहना। फिर तो तुम म को जीत लोगे, जगतको जीत लोगे और अपने पर स्वराज्य प्राप्त करके हिन्द पर भी स्वराज्य प्राप्त कर लोगे। अिस प्रकार हमारा धर्म अैसा है जो सब जीतोकी अेकमात्र कुजी है। अिस प्रौढ धर्मकी सरलता और विपमताका पार नही है।

"जिस सादगीसे हम रहते थे, अुसे और वढाना। मै जव तक वहा था, तव तक तुम स्वतत्र थे। अव यह समझना कि कैदमे हो। स्वादेन्द्रियको अपना मुह न फैलाने देना। यह वस्तु ली जा सकती है और यह भी ली जा सकती है, अैसा सोचनेके वजाय यह झझट कम हुअी और अुसे भी कम कर देगे, अैसा प्रयत्न करके स्वादेन्द्रिय पर विजय प्राप्त करना।

"तुम्हारे रहन-सहनके सव समाचार मुझे देते रहना। तुम तथा भाअी प्रा सहोदर भाअी हो, यह समझ कर रहना। खेतीमें मन लगाना, सारे फिनिक्समे सुगन्ध फैलाकर फिनिक्सको धर्मक्षेत्र वना देना। जहा तक हो सके मौन धारण करना।

"तामिलको न छोडना। मुत्तू वगैराके साथ बोलनेकी आदत डाल लेना।"

* * *

"तुम्हारा पत्र मिला। स्तभ अेकाअेक वन्द हो गये, यह वात मुझे भी चौकाती है। ये स्तभ यदि वे हो, जिन पर अमूल्य लेख लिखे गये थे, तो वुरा हुआ। तुमने तो ठीक ही किया है। तुमने शकाका निवारण करवा कर स्तम्भ वन्द कर दिये यह ठीक ही किया। मुझे वह स्थान वताना। तव ज्यादा समझमे आयेगा। मै यह मानता हू कि अिमलीमे (शरीरमें) शिथिलता नही आती। भोजन ज्यादा खा लिया गया होगा।

"फिक्शनका अर्थ है कल्पित कहानी। रामायण और महाभारतमें अितिहास थोडा और कल्पना अधिक है, यह निःसन्देह बात है। वे दोनो धर्मग्रथ है। करोडो लोग तो अुन्हे अितिहाससे भी अधिक मानते है, और यह अुचित है। भरतके जैसे ही रामके भाअी भरत न हुअे हो, परन्तु वैसे भरत हिन्दुस्तानमें तो हुअे है। तभी तो तुलसीदासजी अुनकी कल्पना कर सके। जिनके गुण रामायणमें चित्रित है अुनकी वन्दना सारा भारतवर्ष करता है।

"सत्याग्रह करनेके कारण की हुअी सारी मेहनत अगर व्यर्थ जाय और अुससे फिनिक्स अुजड जाय, तो हम कुछ भी चिन्ता न करे। शान्त स्थितिमें हम खेती करे। अशान्तिमे भीख मागे, मजदूरी करे या भूखो मरे। अिस निरपवाद कानूनमें हमारा दृढ विश्वास होना चाहिये कि किया हुआ कर्म व्यर्थ नही जाता। फिरसे खेती करनेका मौका आये तो खेती करे, न आये तो निश्चित रहे। खेती साध्य नही, परन्तु साधन है। स्थूल रूपमे लोकसेवा हमारा साध्य है, सूक्ष्म रूपमें मोक्ष हमारा साध्य है। दोनोको साधनेका अेक साधन खेती है। साध्यकी प्राप्तिमे वह बाधक बन जाय तब हम अुसे छोड दे।

"क जो छूट ले रहे है, वह अनिष्ट है। फिर भी अैसे लोगोके लिअे हमे तितिक्षा रखना चाहिये — अैसा मानकर कि किसी समय तो भी वे रसादिका त्याग कर देंगे। हमारा सग अुनके लिअे तो सत्सग ही है। अुनके लिअे हम जितनी आसानी पैदा कर सके अुतनी कर दे। क को लागू होनेवाला नियम हम सब पर लागू न करे। अिसलिअे अैसे मामलोमे अेक ही नियम न रखे। क भी सीमा छोड दे, तो हमारे कामके नही रह जायगे।

"फिनिक्स सस्था कहनेका कारण पूज्य श्री गोखले है। अन्य लोग और वे स्वय तुरत समझ सके, अिसलिअे अुन्होने हमारी सस्थाका 'फिनिक्स' नाम रखा। फिनिक्सके कअी अुद्देश्य तो यहीकी सस्थाके है, और वे फिनिक्सके अुद्देश्योको समझते थे, अिसलिअे अुन्होने अुसका फिनिक्स नाम रखा। हमें हमेशा तो वह नाम रखना नही है। कही न कही स्थायी बन जायगे तब दूसरा नाम ढूढ लेगे। रगूनमे काफी अनुभव हुअे हे।

बापूके आशीर्वाद"

गाधीजी दक्षिण अफ्रीकासे लन्दन गये और फिनिक्सकी शाला तथा श्री मगनलाल गाधी वगैरा लोग देशमें आ गये। वे सब शुरूमे गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टागोरके शान्तिनिकेतनमे रहे थे। श्री मगनलालको शान्तिनिकेतनका और

हिन्दुस्तानकी दूसरी सस्थाओका जो अनुभव हुआ था, अुस परसे अुन्होने शान्तिनिकेतनमें रहनेवाले फिनिक्सवासियोके जीवनके बारेमें गाधीजीको लिखकर पूछा था। अुसके जवाबमे गाधीजीने लन्दनसे अेक पत्र लिखा था। दूसरी सस्थाओके अनुभवके बाद फिनिक्स सस्थाके सम्बन्धमे बनाओ हुओ अपनी अतिम राय अुन्होने अिस पत्रमे बताओ है। वह पत्र मै यहा अुद्धृत करता हू

"तुम सबके पत्र मिल गये। अपनी लाचार हालतमे मै सबको पत्र नही लिख रहा हू। अिसलिअे अिसे सबके लिअे समझकर सब लोग मुझे पत्र लिखते ही रहें।

"तुम छाछ लेनेकी छूट मेरे आनेके बाद मुझसे मागनेवाले हो, परन्तु मै यहीसे दे देता हू। वहाकी हालत देख कर जो भी छूट लेना मुनासिब मालूम हो ले लेना और पूछनेकी राह न देखना। सब बातोमे सयम रखनेकी बातको याद रखकर काम करो तो काफी है।

"तुम्हारा यह निश्चय ठीक है कि खेती सच्ची प्रार्थना और सच्चा परोपकार है। खेती करते, खाते, खेलते, घूमते तथा नहाते समय या और किसी समय भी हरिका नाम लेना केवल अुचित ही नही है, हमारा फर्ज भी है। जो राममय होना चाहे और होनेका प्रयत्न करे, अुसे किसी खास समयकी जरूरत नही। फिर भी युवकोके लिअे नियमकी जरूरत है। अिसलिअे जो समय खेतीका न हो, अुसे खास तौर पर प्रार्थनाके लिअे नियत किया जाय। अिसलिअे तडके ही जब अधेरा हो तब, शास्त्रोके कथनानुसार अरुणोदयसे पहले, सध्यादि किये जाय। हमने जो रातका समय प्रार्थनाके लिअे रखा है वह ठीक है।

"खेती करनेमें जो अुत्साह तुमने रखा है अुसे बढाना। फलोके पेड लगाना। तुममें से बडे लोग प्रत्येक शिक्षककी कुछ न कुछ सेवा अपने पर ले लें तो अच्छा हो।

"जितना हो सके अुतना सामान हाथसे बनाना। जो न बन सके अुसके बिना काम चला लेनेकी आदत डाल लेना। हम खेतीसे और शरीर-श्रमसे अपना गुजर करना सीख जाय, तो समझना कि हमने सब कुछ कमा लिया और सब कुछ सीख लिया। मुझे भी यही सीखना है। मै तो शायद सीखे बिना ही देह छोड दूगा। भगवान करे तुम्हारे लिअे अैसा न हो।

"वहा गुरुदेवको अडचन होती हो और काफी जगह न हो, तो तबूमें रहनेकी या दूसरी सुविधाकी माग करना।

"मै अिस नतीजे पर तो पहुचा ही हू कि दुनियामे आज अैसी कोअी सस्था नही है, जो फिनिक्सके आशयो या रहन-सहनसे अूची पहुचती हो। हो तो अुसे सभ्य वर्ग नही जानता। यह अच्छा है कि तुम सब पर यही छाप पडी है। मेरी तन्दुरुस्ती ठिकाने नही आअी थी कि अितनेमे कलमे वाको जोरका रक्तस्राव शुरू हो गया। पता नही अीश्वरकी क्या अिच्छा है। फिर भी तुम सब निश्चिन्त रहना।

"मेरी खुराकमें वनस्पतिके क्षार काफी नही है, अिसलिअे डॉक्टर अेलिन्सनने कन्दमूल और भाजी खानेकी सिफारिश की है। अिसलिअे अिस भयकर स्थितिमें भी मै प्रयोग कर रहा हू। मेरा भोजन अिस प्रकार है सुबह वहामे लिये हुअे सूखे केले और फलीके दो-तीन चम्मच मिलाकर अुसका काढा। अुसमे टमाटर भी डालता हू और अेक चम्मच तेल। दोपहरको अेक छोटी गाजर और आधा छोटा शलजम कच्चा और गेहू तथा केलेके आटेके बने आठ बिस्किट अुबालकर खाता हू। कभी कभी गाजर और शलजमके बजाय कच्ची पत्ता गोभीके दो पत्ते पीस कर लेता हू। शामको दो चम्मच चावल अुबालकर अुसके साथ अूपर बताये अनुसार कच्चा साग और भिगोये हुअे अजीर तथा केले और गेहूके आटेकी रोटीका छोटासा टुकडा। अभी तो अिस प्रकार चल रहा है। अुद्देश्य यह है कि पका हुआ भोजन छोडकर कच्चे पर रहू और गेहू छोडकर अुसके बजाय 'नट' पर वापस आ जाअू। सुबह दो सेव लेता हू। कच्चा शाक खाते हुअे अब लगभग अेक मास हो गया। अिसमे कोअी नुकसान होता नही दीखता। तुम कहते थे कि कच्चा शाक खाया जा सकता है, परन्तु यह बात मेरे गले नही अुतरती थी। यहा बहुत लोग कच्चा शाक खाते दीखते है। अिसमे बहुतसे विचारोका समावेश होता है, परन्तु अुन्हे अभी नही लिख सकता। फिर लिखूगा। दूध-घी भी मैंने यहा अन्तिम बार लिया है। डॉक्टरोके बहुत पीछे पडने पर नही लूगा तो तबीयत बिगड जायगी अैसा महसूस होनेके कारण लिया है। अब मै तो अिस जन्ममे ये वस्तुअे कभी नही खाअूगा। अन्य व्रत वहा लूगा। अिस बीच प्रसगवश यहा कोअी व्रत ले लिया जाय तो कह नही सकता।"

५

पुत्रवत्सल गांधीजी

गाधीजीने अपना जीवनपथ निश्चित करना आरम्भ कर दिया था। अिस समाजमे हम जिन विचारो और व्यवहारको प्रगतिशील मानते है, वे गाधीजीको प्रगति-विरोधी मालूम हुअे। और दिनोदिन अुनकी यह मान्यता मजबूत होती गअी। अुन्हे अैसा जान पडा कि यह ससार जिस दिशामें आगे बढ रहा है, अुस दिशामे वह अधोगतिके गहरे गर्तमें गिरनेके लिअे ही दौड रहा है। पाश्चात्य सस्कृति आत्मा-विहीन और अधार्मिक होनेके कारण वह अुन्हे ससारके विनाशकी जड प्रतीत हुअी। आजकलकी शिक्षा, मानवताको भी चकित कर देनेवाले विश्वविद्यालयोके दाभिक प्रदर्शन, बौद्धिक शिक्षणकी कार्य-पद्धति और बुद्धिबल तथा शिक्षाके नाम पर होनेवाला राष्ट्रीयताका और मानवीय भावनाओका ह्रास देखकर अुस शिक्षा और अुसकी भव्य दिखाअी देनेवाली सस्थाओके प्रति अुनका मोह नष्ट हो गया। सच्ची शिक्षा कैसी होनी चाहिये, अिसकी योजना वे अपने हृदयमे बनाने लगे। और अपने पुत्रोको वैसी ही शिक्षा देनेका अुन्होने निर्णय किया। हिन्द स्वराज्य या आत्म-स्वराज्य — मोक्ष प्राप्त करनेके लिअे क्या क्या करना चाहिये, कैसी रहन-सहन होनी चाहिये, कैसा अध्ययन होना चाहिये, कैसी शिक्षा होनी चाहिये, कैसा व्यवहार होना चाहिये, अुसके योग्य जीवन बनानेके लिअे क्या किया जाना चाहिये — अैसे विचारोके मथन द्वारा गाधीजीने अपना जीवन-परिवर्तन किस ढगसे किया, यह अुन्होने अपनी 'आत्मकथा'मे विस्तारसे वर्णन किया है। अिसी अुद्देश्यसे अुन्होने फिनिक्स सस्थाकी स्थापना की और सारे कुटुम्बको अपने विचारोसे रगना शुरु किया। अिस बातसे अुनके बडे पुत्र हरिलाल गाधीको असतोष हुआ। अुन्हें अैसा लगा कि गाधीजी साधुताकी ओर प्रयाण कर रहे है। परिवारकी स्थिति सतोषजनक नही है, मुझे और दूसरे छोटे भाअियोको शिक्षा देनेके लिअे गाधीजीने अभी तक कोअी साधन अिकट्ठे नही किये है। जिस पर ये नअे विचार और अुन पर अमल करनेके लिअे कठोर आचरण! यह सब किसलिअे? शान-शौकत, वैभव, मान-प्रतिष्ठा और धनप्राप्तिके बजाय केवल देशसेवा और साधुताके मार्ग पर विचरनेवाले गाधीजीके प्रति श्री हरिलालके हृदयमें

असंतोषकी आग धधकने लगी। शरीर-श्रम करना, धंधा करना, अुद्योग करना, बीमारोंकी देखभाल करना, संयम और यम-नियमका पालन करके, व्रत लेकर संसारकी सेवाके लिअे तैयार होना और मोक्षके लिअे पाथेय बांधना ये बातें श्री हरिलालको पसन्द नहीं आअी। आधुनिक शिक्षाकी संस्थाओंमें पारंगत होकर, परीक्षाअें पास करके और अुपाधियां लेकर जीवनको आगे बढानेकी जो महत्त्वाकांक्षा अुनके हृदयमें जाग अुठी थी, वह किसी तरह शान्त नहीं होती थी। बा के मनमें भी अैसे ही विचार आया करते थे। 'अिन्होंने क्या सोचा है? क्या लडकोंको अपढ रखना है? सबको लंगोटी पहनानी है? गरीब और भिखारी रखना है?' ये अुद्‌गार बा बार-बार प्रगट किया करती थी। मौका आने पर गांधीजी अुन्हें समझाते थे, परन्तु अुनका हृदय किसी तरह मानता नहीं था। हरिलाल तो अकसर यह कह देते थे "आपने जैसे बैरिस्टर बनकर देशसेवा करनेकी शक्ति प्राप्त की, वैसे हम भी शक्ति प्राप्त कर लेंगे और धन कमा लेंगे, अुसके बाद साधुताका और देशसेवाका विचार करेंगे।" अिन विचारोंने श्री हरिलालके दिलमें घर कर लिया। अुन्हें अैसा लगा कि जब तक मैं बापूजीके साथ रहूंगा, तब तक अुनके फंदेसे छूट नहीं सकूंगा। अिसलिअे अुन्होंने अुनके पाससे भागनेका विचार किया।

अेक दिन फिनिक्समें गांधीजीको मालूम हुआ कि हरिलाल जोहानिसबर्गसे चले गये हैं और पहले ही जहाजसे देशके लिअे रवाना होनेवाले हैं। अिस सम्बन्धमें अुनका पत्र भी मिला था। गांधीजीके लिअे यह समाचार असह्य था। अुन्हें यह अच्छा न लगा कि हरिलाल अुनसे छिपकर चले जायं। पुत्रवत्सल गांधीजीको हरिलालके अिस बरतावसे बडी चोट लगी। वे परेशान और विह्वल होकर कहने लगे "हरिलाल चला गया? मुझसे असंतुष्ट होकर चला गया? तुझे यह क्या सूझा? हरिलाल, तूने यह क्या किया? मुझसे मिला तक नहीं? मैं तुझे अितना अधिक बुरा और निर्दय लगा? हरिलाल, तू कैसे चला गया?" अिस प्रकार विह्वलताके कारण गांधीजी दो दिन तक खूब बेचैन रहे, अुन्होंने अपार व्यथा अनुभव की। हरिलालके देशके लिअे रवाना होनेसे पहले डेलागोआ दो तार भेज कर अुन्हें वापस बुलवाया। और जब तक हरिलाल वापस न आये तब तक पुत्रवत्सल गांधीजी विह्वल बने रहे। अितना होते हुअे भी गांधीजी अपने विचारोंमें दृढ थे। अपने विचारोंमें अुन्होंने जरा भी क्षति न आने दी। हरिलालको समझानेकी कोशिश की। अुनके साथ खूब चर्चा की।

परन्तु अन्तमें हरिलाल न समझे और अुन्होने भारत आकर अहमदावादमे पढाअी शुरु करनेका अपना फैसला कायम रखा। गाधीजीने अपना विरोध छोड दिया। अुनके सतोषके खातिर अुन्हें देश जाने दिया और पढाअीके खर्चकी व्यवस्था कर दी। परन्तु तीन साल तक लगातार जब जब हरिलालके फेल होनेकी खबर आती तभी वे बोल अुठते "अैसा ही हो सकता है, और कुछ हो ही नही सकता। अुसे मोह हो गया है। असफलताके बिना अुसका मोह टूटेगा नही। अच्छा हुआ!"

परन्तु गाधीजीके जीवन-प्रवाहका विरोध करके हरिलालने जो विद्रोह किया, अुसका असर दूसरे भाअियो पर भी पडा। भाअी मणिलाल अिस विषयमें विचार करने लग गये थे। बा को भी हरिलालका वियोग खटकता था। वे मणिलालको टोकती रहती कि कुछ अध्ययन करो, कुछ पढो। परन्तु क्या पढते? वे गाधीजीसे बाते करते और गाधीजी अुन्हे शिक्षाका—सच्ची शिक्षाका पाठ समझाते। शिक्षाके वे पाठ कैसे थे यह हम अगले प्रकरणमे देखेगे।

६

गांधीजी और शिक्षा

गाधीजी स्वय तो जीवन-साधनामे लगे ही हुअे थे, परन्तु अुन्हे अपने बच्चोको भी अुससे लगाना था। अिस प्रयत्नमे भाअी हरिलालने अुनके खिलाफ विद्रोह किया, यह हम पिछले प्रकरणमे पढ चुके है। अिस बातसे हमारे मनमे नया विचार पैदा होता है। शिक्षाके बारेमे गाधीजीके क्या विचार होगे? भाअी हरिलालने नअी शिक्षा लेनेकी अिच्छा प्रगट की, गाधीजीके पुत्रके रूपमे दक्षिण अफ्रीकाकी परिस्थितिसे निकल कर अुन्होने शिक्षाके लिअे भारत आनेका निश्चय किया और अिसके लिअे गाधीजीसे छिपकर निकल पडे—अिन सब बातोसे मालूम होता है कि गाधीजी जो शिक्षा पाकर बैरिस्टर बने, वैसी ही शिक्षा पाकर जीवनको आगे बढानेकी भाअी हरिलालकी जो महत्त्वाकाक्षाअें थी, वे गाधीजीको पसन्द नही थी।

यह घटना तो मेरे फिनिक्स जानेसे पहले हुअी थी, अिसलिअे भाअी हरिलालसे मेरा परिचय नही हुआ था। परन्तु फिनिक्स जानेके बाद मैंने भाअी मणिलाल, रामदास और देवदासकी दिनचर्या देखी तो मुझे भी दु ख हुआ था।

मुझे भी अैसा लगा था कि अिन लडकोको किसी अुत्तम विद्यालयमें या महाविद्यालयमे पढानेके बजाय गाधीजीने यहा क्यो पढानेको रखा है? भाअी मणिलालके हाथमे पुस्तक तो पाठशालाका जो दो-तीन घटेका समय रहता अुसी वक्त दिखाअी देती थी। वैसे सारे दिन तो वे और और धधोमे ही लगे रहते थे। सवेरे फावडा-कुदाली लेकर बगीचेमे काम करते, साग-भाजीके नये बीज डालते, बीजोके लिअे नअी क्यारिया बनाते या फलके पेडोकी नयी कलम करते। दो घटेके अिस कामके बाद पाखानेकी बाल्टिया साफ करते, पाखानेको व्यवस्थित ढगसे क्यारीमे मिला देते। और दोपहरका समय बढअीके काममे बिताते। अलमारी बनाते और मेज बनाते। फिर दोपहर बाद प्रेसमे कम्पोज करने जाते और प्रूफ सुधारते। अिस तरह सारे दिन अुन्हे कअी बातो पर ध्यान देना पडता। अिसके सिवा कोअी बीमार होता तो अुसकी देखभालका भी कुछ न कुछ काम अुनके सुपुर्द होता। यह सब मै देखता तो मेरे मनमें प्रश्न अुठता कि ये लडके आगे कैसे बढेगे?

परन्तु गाधीजीने तो शिक्षाकी अेक नयी ही पद्धति खडी कर ली थी। अुन्होने अेक छोटीसी पाठशाला बना ली थी। अुसमे सत्याग्रही कार्यकर्ताओके बच्चे, प्रेसके कार्यकर्ताओके बच्चे और अुनके अपने तथा अुन पर श्रद्धा रखनेवाले कुछ स्नेहियोके बच्चे पढते थे। अिस प्रकार पच्चीस-तीस बच्चे गाधीजीकी सरक्षकतामे कुटुम्बीजनोके रूपमे वहा रहते और गाधीजीकी पद्धतिसे पढाअी करते थे। यह पद्धति कैसी थी? अुसकी कुछ कल्पना अुन्होने 'हिन्द स्वराज्य' में दी है। यदि मनुष्यके शरीरको अिस तरहकी तालीम मिली हो कि वह अुसके काबूमें रह सके, सौपा हुआ काम प्रसन्नता और आसानीसे करे, यदि अुसकी बुद्धि शुद्ध हो, शान्त हो और न्यायदर्शी हो, अुसका मन कुदरतके कानूनोसे भरा हो और अिन्द्रिया वशमे हो, अुसकी अन्तर्वृत्ति विशुद्ध हो, वह नीच कामोको धिक्कारता हो और दूसरोके लिअे आत्मौपम्य भाव रखता हो, प्रकृतिके नियमोके अनुसार चलता हो और प्रकृति अुसका अिसलिअे अच्छा अुपयोग करती हो कि वह स्वय प्रकृतिका अच्छा अुपयोग करता है, तो अैसा मनुष्य शिक्षित — सच्ची तालीम पाया हुआ माना जायगा। हम जिसे शिक्षा कहते है, जिसके लिअे हम बडी बडी शालाअे और विश्वविद्यालय स्थापित करते है, अुनमे जो विषय पढाये जाते हैं अुनसे मनुष्यको अूपर बताअी हुअी शिक्षा नही मिलती। केवल भूगोल-विद्या, खगोल-विद्या, भूस्तर-विद्या या बीज-गणित पढानेसे मन सयमी, प्रामाणिक,

न्यायप्रिय और सत्यनिष्ठ नही वनता। शरीरको भी अुससे अैसी तालीम नही मिलती कि वह अुसके वशमे रह सके। वह अपना काम यदि प्रसन्नचित्त और सरलतासे नही कर सकता, तो फिर अिन विद्याओके सीखनेका क्या लाभ ? अिसलिअे केवल अिन सवकी पढाअीको गाधीजी पूरी और सच्ची शिक्षा नही मानते। शिक्षित व्यक्तिके वारेमे अुनका खयाल अैसा है अेक किसान अीमानदारीसे खेती करके रोटी पैदा करता है और अपना तथा अपने परिवारके लोगोका निर्वाह करता है, अुसे आम तौर पर ससारकी नीति-रीतिका ज्ञान है, वह पुत्रके रूपमे अपना कर्तव्य समझता है और अुसीके अनुसार अपने माता-पिताके साथ व्यवहार करता है, पिताकी हैसियतसे भी वह अपने कर्तव्यका अच्छी तरह पालन करता है और अपनी पत्नीके प्रति भी वफादार स्नेहीको शोभा देनेवाला पवित्र व्यवहार करता है, अुसे अिस वातका भी काफी ज्ञान है कि अपने सगे-सम्वन्धियोके साथ या जिस समाजमे वह रहता है अुस समाजके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये, वह नीति-नियमोको समझता है और अुन्हे पालता है, वह अपने पैदा करनेवाले प्रभुके प्रति पूज्यभावसे श्रद्धा रखकर तथा अुसके वच्चोको अपने जैसा मानकर सवके साथ नम्रभावसे व्यवहार करता है, यह सब होते हुअे भी यदि अुसे अक्षर-ज्ञान न हो और वह अपने दस्तखत भी न कर सकता हो, तो अितने परसे ही अुसे अशिक्षित मानना अुचित नही है।

गाधीजी अैसा मानते है कि आजकल प्राथमिक शालाओमें जो शिक्षा दी जाती है वह तो निरा अक्षर-ज्ञान है। वह अेक साधन मानी जा सकती है, साध्य नही। मनुष्य अपनी वृत्तिके अनुसार अुसका अुपयोग करते है। और अिस ससारमें सदुपयोगकी अपेक्षा अुसका दुरुपयोग ही अधिक हुआ है। अिसके सिवा शालाओमे जो विषय पढाये जाते है, वे तो विश्वविद्यालयोके प्रमाणपत्र लेनेके लिअे है। अुनका अुपयोग अुनके जरिये पेट भरनेके लिअे ही होता है। यह शिक्षा जीवन-निर्वाहका अेक साधन वन गयी है और अुसका अुपयोग भी परहितकी अपेक्षा दूसरेके हितको हानि पहुचाकर अपना स्वार्थ साधनेमें ही अधिक होता है, यह हम देख रहे है। शिक्षाके वारेमे अपनी अिस विचारसरणीके कारण गाधीजीने अपनी गृहशालामे अुसीके अनुसार कार्यक्रम रखा था।

परन्तु भाअी हरिलालकी तरह ही भाअी मणिलाल और रामदासको भी अिस शिक्षासे सतोष नही था। अिसलिअे गाधीजी प्रसग आने पर अुन्हें

सच्ची शिक्षाके वारेमे समझाया करते थे। दूर होते तव पत्र द्वारा सच्ची शिक्षाके पाठ अुन्हे समझाते थे। अैसे कुछ पत्र अुन्होने भाअी मणिलाल और रामदासको लिखे है। अुन्हे पढकर गाधीजीका यह प्रयत्न समझमे आ जायगा।

"चि० मणिलाल,

"तुम्हे क्या करना है, अिस सवालसे तुम घवरा गये। तुम्हारी तरफ़से मै जवाव दू तो यह कहूगा कि तुम्हे अपना फर्ज अदा करना है। अिस समय तुम्हारा काम माता-पिताकी सेवा करना, जितनी शिक्षा मिले अुतनी शिक्षा लेना और खेती करना है। आगेकी चिन्ता तुम न करो। वह चिन्ता तुम्हारे माता-पिताको है। जव वे मर जायगे तव वह चिन्ता तुम करना। अितना निश्चय होना चाहिये कि तुम्हे वैरिस्टरी या डॉक्टरीका पेशा नही करना है। हम गरीव है और गरीव ही रहना चाहते है। पैसेकी जरूरत केवल भरण-पोषणके लिअे रहती है। फिनिक्सको अूचा अुठाना हमारा काम है, क्योकि अुसके जरिये हम अपनी आत्माकी खोज कर सकते है और देशसेवा कर सकते है। अितना विश्वासके साथ मान लेना कि तुम्हारी चिन्ता मै हमेशा करता हू। मनुष्यका सच्चा काम यही है कि वह अपना चरित्र निर्माण करे। कमानेके लिअे खास तौर पर कुछ सीखना नही पडता। जो आदमी मनुष्य-जातिका रास्ता कभी नही छोडता, वह कभी भूखो नही मरता, और भूखो मरनेका समय आ जाय तो डरना नही चाहिये। तुम निश्चिन्त रह कर जो पढाअी वहा हो सकती हो करते रहो। यह लिखते हुअे तुमसे मिलने और तुम्हें छातीसे लगानेका मन हो रहा है। परन्तु अैसा नही कर सकता, अिसलिअे आखे भर आअी है। तुम निश्चय समझो कि वापू तुम्हारे साथ निर्दयता नही करेगे। मै जो कुछ कर रहा हू तुम्हारे भलेके लिअे ही कर रहा हू। यह विश्वास रखना कि तुम औरोकी जो सेवा करते हो वह कभी व्यर्थ नही जायगी।

वापूके आशीर्वाद"

अिसी तरह शिक्षा या अभ्यासके वारेमे भाअी रामदासको भी गाधीजीने नीचेका पत्र लिखा था

"चि० रामदास,

"परोपकार करना, दूसरोकी सेवा करना और वैसा करते हुअे जरा भी वडप्पन न मानना, यही सच्ची शिक्षा है। जैसे जैसे तुम अुम्रमें वडे होगे,

वैसे वैसे यह वात अधिक अनुभव करोगे। वीमारोकी सेवा करने जैसा अुत्तम मार्ग और क्या हो सकता है। अुसमे धर्मका वहुत वडी हद तक समावेश हो जाता है।

"जब तक तुम दृढ नीतिकी रक्षा करोगे और अपना फर्ज पूरा करते रहोगे, तब तक मै तुम्हारे अक्षर-ज्ञानके वारेमे निश्चिन्त हू। यदि मेरा कार्य, जिसे शास्त्रोमे यम-नियम कहा गया है, होता रहे तो काफी है। तुम शौकके खातिर या अधिक योग्य वननेके लिअे अक्षर-ज्ञान वढाओ, तो अुसमे मै तुम्हारा सहायक होअूगा। और तुम अैसा न करो तो मै तुम्हे अुलाहना नही दूगा। फिर भी मनमें जो निश्चय कर लो अुस पर डटे रहनेकी कोशिश करना। तुम प्रेसमे क्या क्या करते हो, अुसका हाल लिखना। यह भी लिखना कि तुम कब अुठते हो और खेतमे क्या काम करते हो।

वापूके आशीर्वाद"

श्री मणिलालभाअीको लिखे दो-अेक पत्र और देखिये

"चि० मणिलाल,

"तुम मि० वेस्ट आदिकी सेवा कर रहे हो, यह तुम्हारा सवसे अच्छा अभ्यास है। जो मनुष्य अपना कर्तव्य पूरा करता है, वह सदा ही अभ्यास करता है। तुम लिखते हो कि अभ्यास छोड देना पडा है। पर अैसी वात नही है। तुम सेवा करते हुअे अभ्यास ही कर रहे हो। हा, अक्षर-ज्ञानको छोड देना पडा, यह कहना ठीक है। सेवाके लिअे अक्षर-ज्ञानको छोड देनेमे कोअी बुराअी नही है। अक्षर-ज्ञान तो वादमे भी प्राप्त किया जा सकता है। परन्तु यह नही कहा जा सकता कि सेवा करनेका अवसर वादमे आयेगा। यह भी दिलमे लिख रखना कि तुम्हारा मन साफ है, अिसलिअे सेवा करते हुअे तुम वीमार नही पडोगे, और अितने पर भी वीमार पडे तो मै निश्चिन्त रहूगा। अिस तरह तालीम लेकर ही तुम और मै सब सम्पूर्ण वनेगे। अच्छा जीवन व्यतीत करना सीखना सच्चा अभ्यास है। अन्य सव मिथ्याभ्यास है।

वापूके आशीर्वाद"

"चि० मणिलाल,

"तुमसे कोअी पूछे कि तुम कौनसे वर्गमें हो, तो क्या तुम अुसका जवाब नही दे सकते? अब यह जवाब देना कि 'मै वापूके वर्गमें हू।' तुम्हें पढनेका

विचार क्यो आया करता है ? कमानेके लिअे आता हो तब तो वह ठीक नही है, क्योकि भोजन तो अीश्वर सबको देता है। तुम मजदूरी करके भी पेट भर सकते हो। और हमे तो फिनिक्समे या अैसे ही दूसरे काममे मरना है। तब कमानेकी बात ही कहा अुठती है ? तुम्हे देशके खातिर पढना हो तो वैसा तुम आज भी कर रहे हो। यदि आत्माको पहचाननेके लिअे पढना हो तो अच्छा बनना सीखना चाहिये। तुम अच्छे हो अैसा सभी कहते है। अब बाकी रही ज्यादा काम करनेके लिअे तुम्हारे पढनेकी बात, सो अुसके लिअे जल्दबाजीकी जरूरत नही। जितनी पढाअी फिनिक्समे हो सकती हो अुतनी करो। बादमें देखा जायगा। अगर तुम्हे भरोसा हो कि मै तुम्हारी चिन्ता रखता हू, तो तुम अपनी चिंता छोड दो।"

*　　　*　　　*

"समझौता होनेकी आशा अब थोडी ही है। अिसलिअे यह पत्र मगलवारको लिख डालता हू, क्योकि अब तक जितना काम रहा अुससे आगे ज्यादा काम रहनेकी सभावना है। यहा ज्यो ज्यो मै देखता हू, त्यो त्यो मुझे लगता है कि यह माननेके लिअे कोअी कारण नही कि यहा शिक्षा ज्यादा अच्छे ढगसे प्राप्त की जा सकती है। मै यह भी देखता हू कि कुछ शिक्षा यहा दोष-युक्त है। फिर भी मनमे यह अिच्छा बनी रहती है कि तुम सब थोडे समय यहा रह जाओ। हम अपना कर्तव्य ठीक ढगसे करते रहेगे, तो अुसीसे जो होना होगा वह हो जायगा। तुम वहा दृढतापूर्वक पढो, तो वह यहा आनेकी तैयारी जैसा ही है।"

*　　　*　　　*

सन् १९०८ मे जब गाधीजी ट्रान्सवालकी जेलमे थे, तब पढाअीकी चिन्ता करनेवाले भाअी मणिलालको अुन्होने नीचेका पत्र लिखा था

"चि० मणिलाल,

" अब जेलमे मैने काफी पढ लिया है। मै अिमरसन, रस्किन और मेजिनीकी रचनायें पढ रहा हू। अुपनिषद् भी पढता रहा हू। शिक्षाका अर्थ अक्षर-ज्ञान नही, परन्तु चरित्रका विकास — धर्मभावनाका भान — है। मेरी यह राय सब तरहके पठनसे मजबूत बन रही है। अपनी भाषामें हम अुसे शिक्षा शब्दसे पहचानते है। यदि शिक्षाका अुद्देश्य अैसा ही हो — और मेरी धारणाके

अनुसार केवल यही सच्चा अुद्देश्य है —तो मै कहूगा कि तुम अुत्तम प्रकारकी शिक्षा पा रहे हो।

"बा की सेवा करके अुसके अुग्र स्वभावको सह लो। चि० हरिलालकी अनुपस्थितिमे चि० चचीको बुरा न मालूम हो अिस प्रकार अटकलसे अुसकी जरूरते जान कर अुसकी चिंता रखना और रामदास तथा देवदासकी सभाल रखना। अिस सबसे अधिक अच्छी शिक्षा और क्या हो सकती है? यह काम तुम पूरा कर सकोगे तो तुमको आधीसे ज्यादा शिक्षा मिल चुकी, यह मान लेनेमे मुझे क्या बाधा हो सकती है?'

"अुपनिषदो पर नथुरामजीकी प्रस्तावनाके अेक वाक्यका मेरे मन पर बडा गहरा असर पडा है। वे कहते है कि पहली ब्रह्मचर्य-अवस्था अतिम सन्यस्त-अवस्था जैसी ही है। यह बिलकुल सच है। निर्दोष अवस्था यानी सिर्फ बारह वर्षकी अुम्र तक ही आनन्द भोगा जा सकता है। बच्चा बडी अुम्रका हुआ कि अुसे तुरन्त जिम्मेदारी समझना सीख लेना चाहिये। अिस अुम्रके बाद प्रत्येक मनुष्यको आचार-विचारमे सत्य और अहिंसा-सम्बन्धी सयमका पालन करना चाहिये। यह काम अैसी पढाअीकी पद्धतिसे नही होना चाहिये कि जिससे हम अुकता जाय, परन्तु स्वाभाविक आनदके रूपमे होना चाहिये।

"राजकोटके बहुतसे लडके मुझे याद आते है। तुम्हारी आजकी अुम्रमे मै छोटा था तब मुझे पिताजीकी सेवा-शुश्रूषामे सच्चा आनन्द आता था। बारहवे सालके बादसे मैने जरा भी आनन्द नही देखा। यदि तुम सच्चे सद्गुणोका अनुकरण करो और तुम्हारा जीवन सद्गुणमय बन जाय, तो कहूगा कि तुमने शिक्षाका मेरा आदर्श पूरा कर दिया। अिन गुणोसे सुसज्जित होकर तुम दुनियाके किसी भी कोनेमें अपना निर्वाह कर सकोगे और आत्मज्ञान—अीश्वर-ज्ञान प्राप्त करनेके मार्ग पर लग जाओगे।

"अिसका यह अर्थ नही कि तुम्हे अक्षर-ज्ञान प्राप्त नही करना चाहिये। परन्तु वह चीज अैसी है कि अुसे प्राप्त करनेके लिअे तुम्हे व्याकुल न होना चाहिये। अिसके लिअे तुम्हारे पास काफी अवकाश है, और दूसरोकी सेवामें अुपयोगी साबित हो, अिसी हेतुसे तुम्हें शिक्षा ग्रहण करनी है।

"यह न भूलना कि भविष्यमें हमारे नसीबमें गरीबी है। जैसे जैसे मै जगतके बारेमें अधिक विचार करता हू, वैसे वैसे यह ज्यादा समझमें आता है कि

अमीर होनेसे गरीब रहनेमे ज्यादा आश्वासन है। धनवान बननेकी अपेक्षा गरीब रहनेमे गरीबीके फल ज्यादा सुन्दर और ज्यादा मीठे होते है।

बापूके आशीर्वाद"

गांधीजीने 'हिन्द स्वराज्य' नामक अपनी पुस्तकमे चारित्र्यको दृढ करना, सदाचारी बनना, मन और अिन्द्रियोको सयममे रखना सीखना, अपना व्यवहार अैसा नि स्वार्थ रखना कि अुससे दूसरेका अहित न हो, बल्कि अुसका परिणाम दूसरेका कल्याण ही हो — अैसा चरित्रशील बननेमे ही शिक्षाकी सार्थकता बताअी है। अैसी शिक्षा किस तरह दी जाय, अिस विचार पर वे अपनी शालामे ही अमल करने लगे। और अपने लडकोको वे अिसी रास्ते पर ले गये, यह हमने अूपरके पत्र-व्यवहारसे देख लिया है। अिन विचारो पर अपने जीवनमे अमल करते हुअे अुन्हे कठिनाअिया भी आअी, परन्तु वे अपने अमलमे दृढ रहे यही अुनकी जीवन-साधनाकी महत्ता है।

अेक पत्रमे अुन्होने लिखा था

"ब्राह्मणोका आदर करनेमे हमे अपनी अन्तर्दशा पवित्र रखनी चाहिये, अुनके प्रति कटाक्ष नही करना चाहिये। जैसे खानदानी आदमीको देखकर हमे दया आती है और अुसके प्रति आदर भी पैदा होता है, वैसे वेश्याके लडकेके लिअे स्वाभाविक तौर पर हमारे दिलमे आदर नही होता। परन्तु मेरे कहनेका तात्पर्य यह नही है कि ब्राह्मणोके दुराचारका समर्थन किया जाय। कोअी ब्राह्मण व्यर्थकी भीख मागने निकले और तुम अभ्यास छोडकर अुसे अेक मुट्ठी आटा दो, तो तुम अपने अभ्यासको नुकसान पहुचाओगे। अिसमे मै यह नही मानूगा कि तुमने ब्राह्मणका आदर किया है, यह तो तुम्हारी भीरुता और अविचार होगा।

"मै शालाकी शिक्षाके विरुद्ध नही हू, परन्तु छापके विरुद्ध हू। आजकलकी शालाओमे अेक दोष तो यह है कि शिक्षक नीतिवान नही होते, और दूसरा दोष यह है कि बच्चे अुनसे अलग रहते है। तीसरा दोष यह है कि कितने ही विषयोमे समय बेकार चला जाता है, और चौथा दोष यह है कि शालाअे अकसर हमारी बेडियोकी निशानी होती है।

"तुम दूध-दही न छोडो तो अच्छा है। परन्तु अुन्हे प्रधानता न दो।

"मैं अच्छी शालाके विरुद्ध नहीं हूं। परन्तु यह मानता हूं कि ज्यादा लडकोंवाली शाला अच्छी नहीं हो सकती। और शाला वही है जहां विद्यार्थी चौबीस घंटे रहते हैं। वहां दो प्रकारकी शिक्षा मिलती है।

"यह मान लेनेका कोअी कारण नहीं कि हमारे शास्त्र सब विचारपूर्वक और ज्ञानपूर्वक ही लिखे गये हैं। यह भी अेक शास्त्र है। यदि यह अर्थ करें कि जिसमें शुद्ध ज्ञान है वही शास्त्र है, तो अैसा कहा जा सकता है कि सब शास्त्र ज्ञानपूर्वक लिखे गये हैं। अिस विचारके अनुसार जिसमें नरमेध आदिकी बातें आती हैं, अुसे अज्ञान मानना चाहिये। संभव है यह बात शुद्ध शास्त्रोंमें बादमें दाखिल हो गअी हो। आत्मार्थीको यह खोज करनेकी जरूरत नहीं। वह अितिहास जाननेवालेके कामकी चीज है। हमें तो प्रत्येक लेख या वचनसे तत्त्व ग्रहण करना है। सब शास्त्रोंको शास्त्र मान कर अुनके अनर्थको अर्थ कहकर अुसे सही सिद्ध करनेकी झंझटमें हम क्यों पडें? हिन्दुस्तानमें और दूसरे देशोंमें भी ज्ञान और अज्ञानकी जोडी सदा साथ साथ रहती है। अिसलिअे काली माताके भोग वगैराका जो अन्याय हमारे धर्मके नाम पर होता हम देखते हैं, अुसे मिटानेके प्रयत्नमें हम नहीं पड सकते। हमारा पहला सूत्र यह है कि हम आत्माको पहचानें। यह पाठ पढ और जान लेनेके बाद सब कुछ अपने-आप हल हो जायगा और समझमें आ जायगा।

"अिसमें कोअी शंका नहीं कि विभीषण निःस्वार्थ बुद्धिसे प्रभु रामचन्द्रजीसे मिले होंगे। सगे भाअीका भी दोष प्रभुसे कौन छिपावे! और भाअीकी बुराअी दूर करनेके लिअे भगवानसे सहायता भी मांगी जा सकती है।

"तुमने भागवतका श्लोक अुद्धृत किया है। अुसके शब्दार्थका पालन नहीं हो सकता। कृष्णकी लीला कृष्ण ही जानते हैं। वे कामनावाले बन कर काम करें, तो भी हम स्थूल प्राणी अैसा नहीं कर सकते। अुनकी प्रभुता अुन्हें जो छूट देती है, वह छूट हम नहीं ले सकते। वैसे कृष्णके बारेमें भागवतके लेखकने अपने ज्ञानकी मर्यादाके अनुसार लिखा है। वास्तविक कृष्णको कोअी नहीं जानता।"

७

प्रथम दर्शन

मै सन् १९०९ से — अपनी विद्यार्थी अवस्थासे ही — 'अिडियन ओपीनियन' पढता था। अुस सालके अन्तमे अुस पत्रके अकोमे 'हिन्द स्वराज्य' पहले-पहल छपा था। अुसे पढकर मुझे अत्यन्त आनन्द हुआ। सन् १९१० में नेटाल जानेके बाद गाधीजीके दर्शन करनेकी मनमे तीव्र लालसा पैदा हुअी। गोखलेजी नेटाल पधारे तब सभाओ और समारोहोंमें मैंने गाधीजीको दूरसे देखा था। अिससे प्रत्यक्ष दर्शनका सतोष तो हो ही नही सकता था। श्री गोखलेको हिन्दुस्तानकी ओर विदा करनेके बाद गाधीजी ट्रान्सवाल होकर नेटाल लौटे। पता चलते ही मैं डरबन गया। श्री रुस्तमजी सेठके यहा मुझे अुनके दर्शन हुअे। मैंने अुनके चरणोमे प्रणाम किया। मुझे अैसा लगा जैसे मेरी अुनसे पुरानी जान-पहचान हो, अिस मधुर मिलनसे हृदयको बडी तृप्ति हुअी। शामको अुन्होने मुझसे पूछा, "क्यो फिनिक्स चलना है न?" मैंने हा कहा। शामको हम डरबनसे फिनिक्स गये। वहा मै पहले अपने अेक स्नेहीसे मिलने गया था, परन्तु अुस समय गाधीजी वहा रहने नही गये थे। रातको व्यालू करके मैं प्रार्थनामे शामिल हुआ। काफी आनन्द आया। वहाके लोगोसे अपरिचित होनेके कारण रातको किसीसे कोअी बात न कर सका, अिसलिअे मै सो गया। दूसरे दिन सवेरे सब अुठे। शालाके विद्यार्थी और विद्यार्थिनिया, शिक्षक और शिक्षिकाअें, गाधीजी और बा वगैरा अुठकर दातुन-पानीसे निपटनेके बाद नाश्ता करने बैठे। क्यूनेकी पद्धतिसे बनाअी हुअी डबल रोटी, नारगीकी छालका मुरब्बा और भुने हुअे गेहूकी बनाअी कॉफीका नाश्ता किया। नाश्तेके बाद सात बजे सब खेतीके काममे लगे। गाधीजीने दो फावडे तैयार किये। अेक अुन्होने लिया और दूसरा मुझे दिया। हमने बगीचेमे फलोके पेडोकी क्यारिया गोडनेका काम शुरू किया। जहा तक मुझे याद है कोअी खास काम करनेकी गरजसे मैने जीवनमे पहले-पहल ही फावडा पकडा था। फिर भी आजकल गाधीयुगमे किसान कहलानेमे गौरव माना जाता है, अिसलिअे मुझसे पूछा जाय तो मै भी यही कहूगा कि मै किसान हू। घासको गोडते गोडते हम दोनो

बातोंमें लग गये। सेवाभाव, देशसेवामें अुस भावनाकी जरूरत, देशसेवामें ब्रह्मचर्यका स्थान, ब्रह्मचर्यका पालन करनेकी अिच्छावाले भाअी या बहनको होनेवाली कठिनाअी वगैराके बारेमें हमने बातें की। ब्रह्मचर्य पालनका प्रयत्न करनेवाले कुछ व्यक्तियोंकी बातें अुन्होंने मुझे सुनाअी। ब्रह्मचर्य-पालनमें पुरुषको अुसकी पत्नीकी ओरसे और पत्नीको अुसके पतिकी ओरसे आपत्ति हो तो क्या किया जाय, कैसा बरताव रखे, अिसकी भी चर्चा हुअी। दुराचारीकी पत्नी अपने पतिके साथ कैसा व्यवहार करे और दुराचारिणीका पति अपनी पत्नीके प्रति कैसा व्यवहार रखे, अिसकी भी चर्चा हुअी। अिस तरह बातोंमें कितना काम हो गया यह मालूम ही न हुआ और यह भी पता नहीं चला कि कितना समय निकल गया। ठीक ढाअी घंटे पूरे होनेके बाद हमने काम छोड़ा। बातोंमें कअी प्रश्नोंका हल मिल जानेसे मुझे अपार आनन्द हुआ। यह आनन्द तो हृदयको हुआ, परन्तु शरीर ढाअी घंटेकी सख्त मेहनतसे थक गया था। नहा-धोकर मैंने खाना खाया और भाअी श्री मगनलाल गांधीके यहां जाकर बैठा। थका-मांदा था। बातों बातोंमें वहीं सो गया। सारा शरीर दुखने लगा। चलनेमें भी शरीर और पैर दुखते थे। दो दिनके आरामके बाद स्टेशन तक चलने लायक स्वस्थ हुआ। वहांसे स्टेशन जानेकी अिजाजत बापूजीसे मांगी और अुन्हें प्रणाम किया। अुन्होंने आशीर्वाद दिया और हुक्म दिया "शान्तिसे व्यापार करना, परन्तु व्यापारमें अीमानदारी रखना। प्रामाणिक व्यापार करनेमें तुम्हें श्रीकृष्णकी सेवाका ही आनन्द मिलेगा। प्रह्लाद राक्षसोंमें रहकर भी निर्दोष रहे और रामको न भूले। वैसे ही तुम व्यापारमें रह कर भी सत्यको न भूलना। अितना करने पर भी वहां रहना असह्य हो जाय, तो खुशीसे यहां आ जाना।"

अुत्साहसे भरा हुआ मैं स्टेनगार गया। बापूजीकी आज्ञाको केन्द्रबिन्दु समझकर चलने लगा। कितने ही महीने बीत गये। अब अधिक व्यापार करना अच्छा नहीं लगा। दिलका दर्द असह्य हो अुठा। थोड़े महीने बाद स्टेनगारको छोड़ और हिस्सेदारको सारी जिम्मेदारी सौंपकर मैं चल पड़ा और फिनिक्समें जाकर मैंने गांधीजीका आसरा लिया।

८

गांधीजीका मार्गदर्शन

गाधीजीके दर्शन तो हुअे, परन्तु अुससे मनको सतोप न हुआ। दो दिन फिनिक्समें रहनेसे मेरी प्यास न बुझी। फिनिक्समे जाकर रहनेकी आतुरता वढी। परन्तु किया क्या जाय? अनेक झझटे थी। सारी वाहरी झझटोसे अतरकी झझट ज्यादा वडी थी। हृदयकी निर्वलताके कारण प्रलोभन पीछा न छोडते थे। यह अच्छा या वह अच्छा, अिसका निर्णय नही हो पाता था। और निर्णय न हो तव तक गाधीजीसे कहा भी कैसे जाय? मै जिस व्यापारमे लगा हुआ था, अुसकी जिम्मेदारी मेरी थी। अुसमे मेरा हिस्सा था। मेरे चाचाजी सारा व्यापार मुझे सौपकर भारत गये थे। अैसी हालतमे मै व्यापार भी नही छोड सकता था। और व्यापारसे मुक्त होकर अिस तरह सार्वजनिक सस्थामे शामिल होने और धन कमानेका अुज्ज्वल भविष्य नष्ट करनेका मेरे माता-पिता ओर पत्नी विरोध करते थे। वे सव यहा भारतमे बैठे वैठे अपना विरोध प्रगट किया करते थे। मैंने शुरूसे ही अपना विचार अुन्हे वता दिया था कि मेरी वृत्तिके अनुसार व्यापार करनेसे कुल मिलाकर लाभ होगा, अैसी मेरी श्रद्धा है। परन्तु वह श्रद्धा अुनमे नही थी। अुन्हे अैसा लगा कि काम-धधा छोडकर मै त्यागी वन जाअूगा। व्यापार करना हो तो यह दलील नही की जा सकती कि मुझे स्वच्छ व्यापार ही करना है, गदा व्यापार नही करना है। ग्राहकको धोखा न दिया जाय, परन्तु अुसे खुश करके, अुसे दिखाकर, हमे जो माल अुसे देना हो अुसके देनेमे पाप कहा है? — अैसी अुनकी दलील थी। अिस वारेमे मतभेद वढता गया। मेरे मनकी तीव्रता वढती गअी। अिस वारेमे जैसे मैंने अुनके साथ पत्र-व्यवहार किया, वैसे ही गाधीजीके साथ भी किया। अिस प्रकरणमे फिनिक्स सस्था, अुच्च और प्रामाणिक जीवन तथा देशसेवाके वारेमे पूज्य गाधीजीकी क्या विचारधारा थी और मेरे हृदयके मथन-कालमे अुन्होने मुझे किस तरह रास्ता वताया, यही मै वताना चाहता हू। अिसी ढगसे मै अनेक विपयो पर अुनके विचार पेश कर सकूगा।

मै नेटाल प्रान्तके स्टेनगार गावमे रहता था और वही मेरा व्यापार चलता था। अुसे छोड कर फिनिक्समे रहने और अुनके विचारोके अनुसार

जीवन-परिवर्तन करके देशसेवाकी तालीम पानेका अपना विचार मैंने अुन्हे वताया। अुसके जवावमें अुन्होने मुझे सन् १९११ मे नीचेका पत्र लिखा

"भाअीश्री रावजीभाअी,

"तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे पत्र परसे मै समझता हू कि तुम्हारी अिच्छा फिनिक्समे काम करनेकी है। यह विचार वहुत अच्छा है। मै तुम्हे प्रोत्साहन दूगा। परन्तु यहाका जीवन तुममे हजम हो सकेगा, अिस वारेमे मुझे शका है। यहा रहकर (१) ब्रह्मचर्य पालना होगा। (२) सूक्ष्म सत्यव्रत पालना होगा। (३) काम मुख्यतया शरीरका यानी कुदाली-फावडेका करना होगा। (४) अक्षर-ज्ञान वढानेका अुद्देश्य हो तो अुसे भूल जाना होगा। सहजमें और जरूरत पडने पर वह वढ जाय तो हर्ज नही। (५) दिलमें निश्चय करना होगा कि अक्षर-ज्ञानके वजाय चारित्र्यको दृढ करना हमारा कर्तव्य है। (६) जाति या कुटुम्वका निर्भय होकर विरोध करनेकी तैयारी रखनी होगी। और (७) शुद्ध गरीवीका जीवन अपनाना होगा।

"यह सव तुमसे हो सके या करनेकी तुम्हारी अिच्छा हो, तो ही फिनिक्स आनेका विचार करना। यह समझ लेना कि यहाकी जिन्दगी दिनोदिन ज्यादा कठिन होगी और अुसका कठिन होना सुखकी वात है।

"यदि तुम्हारा विचार मार्च महीनेमे आनेका हो जाय, तो अूपरके विचारोका विकास करना। पत्र लिखते रहना।

मोहनदासके यथायोग्य"

मेरे पिताजीका गाधीजीके साथ परिचय था। अुन्होने जव पत्र द्वारा मेरे विचार जाने, तो गाधीजीको अिस सम्वन्धमें पत्र लिखा। मुझे अैसा लगा कि वह पत्र पानेके वाद गाधीजीने मेरे सम्वन्धमे अपने विचार वदल लिये है। अपनी यह राय जव मैंने अेक पत्रमे वताअी तो गाधीजीने मुझे नीचे लिखा पत्र भेजा

"भाअीश्री रावजीभाअी,

"तुम्हारा पत्र मिला। मैंने अपने विचार वदले नही है, लेकिन तुम्हारे पिताजी तुम्हे फिनिक्स आनेको मना करे, तो मेरा धर्म है कि मै तुम्हे अिनकार कर दू। और तुम्हारा भी यही धर्म है (परन्तु तुम्हारे पिताजी तुमसे स्पष्ट

अधर्म करायें, तो अुससे मुक्त होनेके लिअे मैं तुम्हें फिनिक्समें ले सकता हूं।)
मुझे लगता है कि जब हम नीति-सम्बन्धी कठिनाअीमें पड जायं अुस समय कोअी खास कदम अुठानेसे माता-पिता मना करें, तो हम चुप हो जानेके लिये बंधे हुअे हैं। परन्तु वे कोअी पाप करवाना चाहें तो हम न करें। अिसमें प्रह्लादजीके अुदाहरणके सिवा दूसरा कोअी अुदाहरण नहीं बताया जा सकता। और पिताके हुक्मसे हम हर तरहका शारीरिक दुःख अुठा सकते हैं, परन्तु आत्माका दुःख नहीं अुठा सकते।

"तुम व्यापारमें रह सकते हो और नीतिकी रक्षा भी कर सकते हो। अुसीमें तुम्हारा शिक्षण है। तुम जिस तरहकी जिन्दगी बितानेकी अिच्छा रखते हो, अुसकी वह तैयारी होगी। और तुम अपने व्यापारमें अटल प्रामाणिकता रख सकोगे, तो अपने व्यापारमें अुपकार भी कर सकोगे। जो भी ग्राहक आये, अुससे अेक ही और वह भी अमुक नफा (साधारण) देनेवाले दाम ही लिये जायं। जो चीज हमारे लिअ त्याज्य है, अुसे न बेचा जाय। ग्राहकोंके साथ नम्रतासे बात की जाय। माल बेचनेके लिअे अुनकी खुशामद न की जाय। नौकर हो तो अुन्हें भाअी समझकर अुनके साथ बरताव किया जाय। ये सब बातें आसानीसे की जा सकती हैं। तुम्हें अैसा नहीं लगना चाहिये कि व्यापार करना लालचमें पडना है, क्योंकि तुम्हें व्यापार केवल अनीतिके लिअे ही पसन्द नहीं है। तुम तो सिर्फ पिताजीकी आज्ञाके अधीन होनेके कारण ही व्यापार करोगे। अिसलिअे अुसमें प्रामाणिकता रखना आसान मालूम होना चाहिये। तुम कहते हो कि रुपयेका तुम्हें लोभ नहीं है। जिस स्थितिके प्रति हम वीतराग हों अुस स्थितिमें रहनेसे हम दुःख पाते हैं, परन्तु भ्रष्ट तो हरगिज नहीं होते। प्रह्लादजी राक्षसोंके बीचमें विष्णुके भक्त रहे। मुझे अैसा नहीं लगता कि यह अुनके लिअे कोअी मुश्किल बात थी। क्योंकि वे राक्षसी प्रवृत्तिके बारेमें पूरी तरह वीतराग थे।

"मनुष्य सूली पर बैठा होने पर भी अपने व्रतकी रक्षा कर सकता है। अुस समय भी जिस व्रतकी रक्षा हो सके वही सच्चा व्रत है। यदि नीति हमारे लिअे स्वाभाविक बन जाय, हमारी हड्डियोंमें पैठ जाय, तो अुसकी रक्षा जरूर होती है, और अुस हद तक अुसका विकास करना हम सबका कर्तव्य है। मैं चाहता हूं कि तुम्हारी शुभ अिच्छाअें सफल हों।

मोहनदासके यथायोग्य"

गाधीजीके अुपरोक्त पत्रोके मार्गदर्शनसे मै अपने सिर पर आअी हुअी जिम्मेदारीको तटस्थ हृदयसे पूरा करनेमे लग गया। और जब मेरे हिस्सेदार चाचा देशमे वापस आ गये, तो अुन्हे सारा व्यापार सौपकर मे मुक्त हो गया और फिनिक्स जाकर वहाका बन गया।

वहा रहनेके बाद और सत्याग्रहकी आखिरी लडाअी खत्म होनेके बाद अेक और प्रसग पर मेरा हृदय विह्वल हो गया। मुझे अपनी पूज्य माताजीका वात्सल्यपूर्ण पत्र मिला। अुसे पढकर मै बेचैन हो गया। प्रेममूर्ति माताके दर्शनके लिअे मै छटपटाने लगा। गाधीजी अुस समय केपटाअुनमे थे। मैने अुन्हे अपनी माताजीके पत्र और अुसमे पैदा होनेवाली अपनी विह्वल दशाका वर्णन करनेवाला अेक पत्र लिख भेजा। अुसके जवाबमे अुन्होने नीचेका पत्र लिखकर मुझे सान्त्वना दी

"भाअीश्री रावजीभाअी,

"तुम्हारा पत्र आज अितनी देरसे मिला कि आजकी डाकसे मै तुम्हे पत्र नही लिख सकता और तार भी नही भेज सकता। तार तो अब सोमवारको ही करूगा।

"जहा माताके प्रेमकी बात है, जहा पुत्रकी वत्सलताका सवाल है, वहा तीसरे आदमीका सलाह देना धर्म-सकट है। फिर भी मुझे सलाह देनी ही पडेगी। तुम्हारे पिताजीके पत्र परसे तुम जिस निर्णय पर पहुचे थे, अुस निर्णयके समय तुम्हारी माताजीके अुद्गारोकी हम कल्पना कर सके थे। अुनका पत्र आनेसे नअी बात पैदा नही होती। परन्तु नअी भावना अुत्पन्न हो गअी है और प्रेमभावने स्वाभाविक रूपमे तुम्हारे हृदय पर अधिकार कर लिया है। अब यदि तुम निर्मोही बनकर फैसला कर सको, तो तुम्हारा प्रेम निर्मल और दिव्य स्वरूप ले सकता है। तुम अपना प्रेम सारे जगतको दे सकते हो। अिसलिअे चाहो तो वैसा करनेका प्रयत्न कर सकते हो। यही मातृभक्तिका अुद्देश्य है। अन्य कोअी भक्ति स्थूल, लौकिक और केवल देहके प्रति है। अिसमे मुक्त होनेके पद तुम बहुत बार गाते हो। 'आ ससार असार विचारी'[1] भजन गाकर अुसकी अन्तर्ध्वनिका विचार करना। 'जीवने श्वास तणी सगाअी'[2]

---

१ जिस ससारको असार मानकर।

२ जीवके साथ श्वासकी सगाअी है।

की क्या ध्वनि है ? फिनिक्सके रहन-सहनमे और दूसरे रहन-सहनमे यह फर्क है कि हम जिस वस्तुके बारेमे पढते है अुसे आचरण द्वारा अपनेमे दृढ करनेकी कोशिश करते है। तुम्हारे हिन्दुस्तान जानेका असर क्षणिक होगा। पन्द्रह या पाच दिनके बाद तो रोना ही है। अुसके बाद तो वियोग ही है।

"अिसके सिवा, हम अैसी जिन्दगी बिताना चाहते है कि हमारे पास अेक पाअी भी न रहे। विचार करो कि अैसा गरीब आदमी अैसे समय क्या करेगा।

"अपने माता-पिताके दर्शन करनेकी भावना तुममे सदा ही रहना अुत्तम है। अभी अिस भावनाको दबाकर अपना जीवन विशेष वीतरागी बनाना तुम्हारा कर्तव्य है। तुम अपना चरित्र बनानेके लिअे ही देशनिकाला भुगत रहे हो। तुम्हारी यह स्थिति वनवासकी स्थिति है। अिसीमे तुम अपने माता-पिताकी शोभा बढाओगे। तुम स्वच्छन्द आचरण नही कर सकते। परन्तु दिनोदिन आत्मोन्नति करो, दिनोदिन सयमी बनो, अिसलिअे अभी तुम देश जानेके फर्जसे मुक्त हो।

"ये विचार करनेमे मैने प्रेसकी स्थितिका जरा भी खयाल नही किया है। तुम्हारी आत्मोन्नति किसमे है, यही सोचकर मैने सलाह दी है।

"फिर भी अगर लौकिक मातृभक्ति तुम्हे देशकी ओर ही खीचती हो और तुम यहा शान्तचित्त होकर न रह सको, तो तुम शौकसे जा सकते हो। मेरा लिखना सलाहके रूपमे है, अैसा समझ कर तुम स्वतत्र निर्णय करना और अुसीके अनुसार चलना।

मोहनदासके यथायोग्य"

९

गांधीजीकी वात्सल्यपूर्ण शुश्रूषा

हिन्दुस्तानके हालके मुक्तिके रण-सग्राममे सत्याग्रह आश्रमने जो काम किया है, वही काम दक्षिण अफ्रीकाकी लडाअीमे फिनिक्स आश्रमने किया था। वहाका जीवन भविष्यकी लडाअीके योग्य बननेकी तैयारीके रूपमे मालूम होता था। सच पूछा जाय तो फिनिक्समे अैसी ही तालीम मिलती थी, जिससे हम समस्त जीवनके लिअे योग्य बन जाय। अिसलिअे वहाके रहन-सहनके बारेमें

थोडासा लिखना अुपयोगी होगा। सतत साधनाके प्रतापसे गाधीजी आजके गाधीजी बने है। अुन्होने अपने पहले जीवन-प्रयोग फिनिक्स आश्रममे किये थे। अपने भोजन-सम्बन्धी विचार, दवा-दारू सम्बन्धी विचार, बीमारोकी सेवा-शुश्रूषाकी पद्धति आदिके प्रयोग अुन्होने ज्यादातर फिनिक्समे किये थे। वे प्रयोग मैने देखे है तथा कुछ हद तक मै अुनमे गाधीजीका साथी बना हू। अत यहा अुनका और फिनिक्सके जीवनका थोडा-बहुत वर्णन कर दू, तो मै अपनी मर्यादासे बाहर गया नही माना जाअूगा।

मेरे फिनिक्समे भरती होते ही मुझे कितनी ही बातोका अनुभव होने लगा। मुझे छुटपनसे ही गठियाका रोग था। देशमे और नेटाल जानेके बाद वहा मैने बहुतेरी दवाअे की थी। वैद्य और डॉक्टर अिलाज कर करके थक गये थे। परन्तु गठिया कम नही होता था और समय समय पर दर्शन देता ही रहता था। सन् १९१२ के आखिरी भागमे मै फिनिक्समे रहने गया। अुस समय गाधीजी वहा स्थायी तौर पर रहते थे। वहा जानेके बाद मै भी वहाके वातावरणमे मिल गया। मैने खुराकमे परिवर्तन किये। पहले तो जो भी खानेकी लालसा होती अुसे पूरा करनेके लिअे मन तैयार रहता था। स्वादेन्द्रियकी सभी चाट मै पूरी करता था। मिर्च-मसाले और मिठाअियोमे कोअी कसर नही रहती थी। तब सयमकी तो बात ही कहासे होती? अिसलिअे अूपरी दवाओके जोरसे मेरा दर्द भी अूपरसे तो मिट जाता था, परन्तु शरीरमे वह घर करके बैठ गया था। फिनिक्समे जानेके बाद मेरा मनचाहा भोजन बन्द हो गया। शरीर और अुसमे रहनेवाली आत्माकी पुष्टिके लिअे क्या चाहिये, अिसीका विचार करना पडता था। मिर्च, मसाले, शकर, गुड, दूध, दही वगैरा खाना मैने बन्द किया, और सयमकी दृष्टिसे खाना शुरू कर दिया। धीरे धीरे मैने अन्नाहार भी बन्द कर दिया और सिर्फ फलाहार करने लगा। नतीजा यह हुआ कि तरह तरहके स्वादिष्ठ आहार और दवाओके बोझके नीचे जो बीमारी दबी हुअी थी अुसे स्वाभाविक मार्ग मिल गया। फलाहार शुरू किये अेक महीना भी पूरा नही हुआ होगा कि शरीरके सारे जोडोमे गठिया नजर आया। सारे जोड अकड गये। अुठने, बैठने या चलने-फिरनेमें बहुत पीडा होने लगी। शौच जाना भी मुश्किल हो गया। चार दिनमे मै तग आ गया। गाधीजी तो यह सब जानते ही थे। लगभग सारे दिन हम साथ ही रहते थे। किसे क्या खानेको दिया जाय और किस बीमारको क्या सेवा की जाय,

यह सब अुन्हीके सिर पर था। आत्माके वैद्यकी तरह शरीरके वैद्य भी वे ही बन गये थे। मेरी बीमारीको देखकर गांधीजीने मुझे अपने हाथमें ले लिया। मेरा भोजन तो फलोंका ही जारी रखा। सिर्फ नीबू, खट्टी नारंगी जैसे थोडी भी खटाअीवाले फल बन्द करा दिये। कच्चे या पके टमाटर जहां तक हो अधिक देना शुरू किया। शरीरके लिअे कुछ न कुछ चिकनी चीज तो होनी ही चाहिये। घीसे शरीरमें चर्बी बढ सकती थी, तेलसे मेदेकी कुछ गरमीके कारण कब्जकी संभावना रहती थी, अिसलिअे ऑलिवके फलका तेल (जिसे हम जैतूनका तेल कहते हैं) शुरू किया। फिनिक्समें यही तेल काममें लिया जाता था। ऑलिव ऑअिल रेचक होने पर भी पौष्टिक होता है। किसी चीजमें मात्रासे अधिक लेने पर कुछ अरण्डीके तेलके जैसी गंध आती है, परन्तु ठीक मात्रामें लिया जाय तो बहुत स्वादिष्ठ लगता है। अिस प्रकार खुराकमें थोडे परिवर्तन किये। खुराकके परिवर्तनके साथ अन्य अुपचार भी शुरू किये।

सुबह बिस्तरमें रहता तब मुझे यह शंका होती कि आज तो मुझसे बिलकुल नहीं अुठा जायगा। अितनेमें गांधीजी आते। अुनके आनेका जरासा अिशारा पाते ही मैं तुरन्त किसी तरह अुठ बैठता और खडा होनेकी कोशिश करता। अुनके पैरों पडता। वे मेरे सिर पर हाथ रखते। अुस हाथमें कितना वात्सल्य होता था! कितना माधुर्य रहता था! अुजाला हो जाता तो वे मेरी जीभ देखते और मुझे व दूसरोंको दातुन देकर चले जाते। दातुन-कुल्लेसे निपट कर मैं अेक अलग कमरेमें जाता। नियमित समय पर गांधीजी वहां आते। लगभग दो-तीन सेर साबुनका पानी बनाते, अितना साबुन मिलाते कि पानी सफेद हो जाय। अुसमें करीब दो रुपये भर साफ अरण्डीका तेल डालते और पिचकारी द्वारा गुदाकी तरफसे मेरे पेटमें वह पानी पहुंचाते। जब पेटमें सहन होने जितना पानी पहुंच जाता, तो हाथोंमें थोडा अरण्डीका तेल लगाकर गांधीजी मेरा पेट अिस ढंगसे मलते कि पेटके भीतरका पानी अन्दरके भागमें फैल जाय और अंतडियोंसे चिपटा हुआ मल छूट जाय। पेटमें गया हुआ पानी अिस प्रकार दो-तीन मिनट तक और सहन हो सके तो ज्यादा देर तक पेटमें घूमता हुआ रखनेके बाद शौच जाना होता था। पानीके साथ पेटका मल निकल जानेके बाद पानीसे भरे टबमें छाती और जांघोंके बीचका भाग पानीमें रखकर मैं बैठ जाता और पेटको हाथसे मला करता। लगभग आध घण्टे अिस तरह

पेट मलनेके बाद ठडे पानीसे नहा डालता। अिस प्रकार हर दूसरे दिन गाधीजी मुझे पिचकारी देते और बीचके दिन बाष्पस्नान (स्टीमबाथ) कराते। बाष्पस्नानका तरीका यह है। स्टोव पर भगोनेमे पानी रखा जाय। वह खूब अुबलने लगे तो अुसे कुरसीके नीचे रख दिया जाय। कुरसी पर गुदडी या कम्बलकी तह करके अुस पर नगा बैठा जाय। फिर सावधानीसे चारो तरफ दो तीन कम्बल अिस ढगसे लपेट लिये जाय कि स्टोव और शरीरको जरा भी हवा न लगे। यह क्रिया बन्द कमरेमे ही होनी चाहिये। कम्बल लपेटकर तुरन्त स्टोवकी गरमी कम कर दी जाय। स्टोवको अितना ही जलता रखा जाय कि अुसके अूपरका पानी जरूरी भाप देता रहे और ठडा न पड जाय। शरीरका सिरका भाग खुला रहने दिया जाय। पाच मिनटमे ही भाप शरीरके सारे भागमे घूम जायगी। जो भाग गठियाके असरसे जकडे हुअे हो वहा भाप अधिक लगे, अिस ढगसे शरीरको पलटते रहना चाहिये। शरीरके रोम रोमसे पसीना बहने लगता है। जब खुले कपाल पर पसीनेके मोती निकल आये और थोडी थोडी घबराहट होने लगे, तब पासवाला आदमी होशियारीसे कुरसीके नीचेका स्टोव बिलकुल बन्द कर दे। फिर धीरेसे सब कम्बल हटा लिये जाय। शरीर खुला हो जानेके बाद साफ तौलियेसे शरीरका पसीना पोछ डाला जाय। अुस समय अिस बातकी विशेष सावधानी रखी जाय कि शरीरको हवा न लगे। शरीर पोछकर साफ पानीसे नहा लिया जाय। अूपर बताअी पद्धतिसे हर तीसरे दिन स्टीमबाथ भी मुझे गाधीजी देते थे। पिचकारीसे मेरा पेट साफ हो गया। टमाटर तो गठियाके शत्रु ठहरे। वे बहुत ही निर्दोष होते है। जहा तक हो सका मैने अुनका अधिक अुपयोग किया। मै दूसरी जो खुराक लेता वह भी अैसी होती, जिससे शरीरमे हानिकारक तत्त्व बढने बन्द हो जाय। और, स्टीमबाथसे पसीनेके जरिये अिकट्ठा हुआ खराब खून कम होकर जकडे हुअे जोड ढीले होने लगे। अिस तरह तीन महीनेमे मेरे शरीरकी रक्तशुद्धि हो गअी। धीरे धीरे भोजनमे भी परिवर्तन किया। मुख्यत गेहूकी रोटी, जैतूनका तेल और पके टमाटरोका भोजन रखा। दिनोदिन मेरी बीमारीमें बहुत सुधार होता गया। गठिया शरीरमे घूमता रहता था। आज पैरोके घुटनोमे दर्द होता तो कल हाथोकी कोहनीमे होता और परसो कमर या हाथोकी अगुलिया अकड जाती। परन्तु अुनका दर्द कम होने लगा। अिस प्रकार रोजकी बीमारी और अुसका अिलाज जारी रहते हुअे भी मुझे याद नही कि मै कभी

विस्तर पर पटा रहा। बिस्तर पर पडा न रहना और भरसक श्रम करते रहना भी गठियाका अेक आवश्यक अुपचार था। मेरी दिनचर्या अिस प्रकार थी

फिनिक्समे सुबहकी प्रार्थनाका नियम नही था, अिसलिअे वीमारीके दिनोमे मै छह वजे ही अुठता था।

६–० से ७–० दातुन-कुल्ला और शौचादि क्रिया।

७–० से ८–० शालामे विद्यार्थियोके साथ।

८–० से ९–० वीमारीका अिलाज करना। हर तीसरे दिन पिचकारी या स्टीमबाथ लेना।

९–० से १०–० रसोअीमे। वहा गाधीजीके साथ काम करना। खडे खडे वक्रूने ब्रेड–रोटीका आटा गूधकर रोटी तैयार करना।

१०–० से १२–० भोजन और आराम।

१२–० से २–० प्रेसमे कम्पोजीटरका काम करना।

२–० से ४–० वगीचेमे शरीरसे हो सके अुतना खोदने और फल वीननेका काम करना।

४–० से ५–० भोजनालयमे फुटकर काम।

५–० से ६–० भोजन करना।

६–० से ७–० आराम और घूमना-फिरना।

७–० से ७–३० प्रार्थना।

७–३० से ८–३० गाधीजीके साथ शामको वातचीत और अनेक विपयो पर चर्चा। खास तौर पर दिनभर जो कुछ नअी घटनाअे होती अुन पर चर्चा। कभी कभी प्रार्थनाके वाद श्री तुलसीकृत रामायण और गीताका पाठ।

९–० से ६–० नीद।

फिनिक्स आश्रमका यह साधारण कार्यक्रम था। शालाके विद्यार्थियोको दिनभरमे तीन घटे शालामे, दो घटे खेतीमे और दो घटे प्रेसमे लगानेके सिवा दूसरा फुटकर काम होता था। अिसके सिवा वे रातको भी कम-ज्यादा पढते थे। अिस प्रकार लगभग सारे दिन वातावरण पढाअी और मेहनतके कारण शुद्ध विचारो और अुनसे अुत्पन्न होनेवाले शुद्ध आचरणसे पूर्ण होता था। अिसलिअे पढाअीकी कमी मालूम नही होती थी। और वगीचेमे गाधीजीके साथ काम करते हुअे भी अलग अलग विपयो पर चर्चा तो होती ही थी। भोजनालयमें

काम करते समय भी महत्त्वपूर्ण घटनाओंकी, किसी महापुरुषकी या किसी अुत्तम ग्रंथकी चर्चा हुआ करती थी।

अिस तरह श्रमके साथ ज्ञान भी मिलता रहता था। मेरी तन्दुरुस्ती जब काफी अच्छी हो गअी तब तो मैं सबेरे तीन या चार बजे ही अुठ जाता था। छह घंटेसे ज्यादा सोना अपराध माना जाता था।

अिस प्रकार लगातार तीन महीने तक मेरा अिलाज चला। गांधीजीका मुश्किलसे ही किसी दिन बाहर जाना होता था। मुझे खानेकी कोअी चीज देते तो दूसरे दिन देखते कि शरीर पर अुसका क्या असर होता है। अुसीके अनुसार दूसरे दिन खानेमें फेर-बदल करते थे। सात्विक भोजन और पिचकारीके अिलाजमें मेरा पेट अितना साफ रहता कि विजातीय पदार्थके अन्दर जाते ही अुसका असर मालूम होता था। अिस तरह अत्यंत वात्सल्य, स्नेह और लगनसे लगातार तीन महीने तक मेरा अिलाज हुआ। अिन सब बातोंकी याद आने पर मैं शर्मिंदा हो जाता हूं। शुरूमें जब मैं जल्दी ही अुठने-बैठनेमें समर्थ नहीं था, तब पिचकारी लगानेके बाद गांधीजी मेरा पाखाना देखते, यह जांचते कि खाना हजम हुआ है या नहीं और साथ ही मुझे अुसके बारेमें सूचनाअें देकर परिचित करते। फिर पाखानेका बरतन वे खुद साफ कर डालते। अिस प्रकार जिस मातृभावसे मेरे बचपनमें मेरी स्नेहशील माताने बिना किसी घिनके मेरी देखभाल की, अुसी मातृभावका — वात्सल्यका — लाभ मुझे अिन तीन महीनोंमें गांधीजीकी ओरसे मिला। बीस बीस सालका अर्सा गुजर जाने पर भी अभी तक वह मीठा दृश्य मेरे हृदयमें ताजा ही है। मेरे शरीरमें घर करके बैठा हुआ गठिया तो भाग ही गया, और अुसके बाद आज तक किसी दिन भी मेरे शरीरमें वह मालूम नहीं हुआ। परन्तु सौभाग्यसे अुस गठियाकी जगह अेक दूसरी चीजने ले ली। मुझे बीमारोंकी सेवा-शुश्रूषा करना अच्छा आ गया। मेरे दिलमें रोगीकी सेवा करनेका प्रेम पैदा हो गया। मेरी बीमारी मिटनेके बाद गांधीजीको किसी दिन बाहर जाना पड़ता, तो विद्यार्थियों या दूसरे बीमारोंकी सेवा करनेका काम मेरा हो जाता। वे मुझे ही यह काम सौंपते थे। गांधीजीकी बीमारीके मौके पर या अुपवासके अवसर पर अुनकी सेवाका लाभ मुझे मिलता था। मुझे मालूम हुआ है कि यहां देशमें आनेके बाद गांधीजीकी या और किसीकी बीमारीमें मेरी सेवासे सबको संतोष हुआ है।

मोतीझिरे जैसे भयकर ज्वरके कितने ही रोगियोको भी गाधीजीने अूपर लिखे सादे अुपचारोसे बचाया है, और अेक भी मामलेमे अुन्हें असफलता नही मिली। मिस्टर गेब्रियल आअिज़ेक नामके अेक अग्रेज सज्जन सत्याग्रहकी लडाअीमें हिन्दुस्तानियोके सहायक थे। लडाअीके बाद वे भाअी मोतीझिरेमे फस गये। अुस समय वे फिनिक्समे ही रहते थे। गाधीजीने अुनकी सेवा-शुश्रूषा की। चौदह दिन तक सिर्फ खट्टे नीबूका रस अुबले हुअे पानीमे मिलाकर देते रहे। और कुछ नही। बीमारी भयकर साबित न हुअी। ज्वर अुतरनेमे देर लगी। वे खतरेसे निकल गये और धीरे धीरे भयमुक्त हो गये। अितनेमें गाधीजीको समझौतेके लिअे केपटाअुन जाना पडा। मिस्टर आअिजेकको वे मेरे हवाले कर गये। अुन भाअीको अैसा भोजन देना था जिससे कब्ज न हो और पाचन होता रहे। नियमित रूपसे वे शौच जाय अिसका ध्यान रखना और कब्ज मालूम हो तो मिट्टीकी पट्टी या पिचकारीका अुपचार करना — वगैरा देख-भाल मुझे करनी थी। वे भाअी अेक दिन डरबन गये। जानेसे पहले मैंने अुन्हें चेतावनी दी कि कही किसी होटलमे न चले जाना। अुन्होने मेरी सूचना पर अमल नही किया, अितना ही नही बल्कि वहासे 'मेरी बिस्किट' का अेक डिब्बा भी वे लेते आये। अुसे छिपा कर अुन्होने अपने पास रख लिया और जब जीमें आया तभी खाने लगे। मुझे तो अिसका पता ही नही था।

अेक दिन अुन्हे कब्ज मालूम हुआ। थोडासा बुखार भी आया। मैंने फौरन पिचकारी वगैराका अिलाज किया। पिचकारी लगानेके बाद अुनका पाखाना देखने पर अुसमे मीठे नीबूके रेशे और गेहूके आटेका बिना पचा हुआ भाग मालूम हुआ। मुझे शका हुअी। अुनसे पूछा, परन्तु अुन्होने कोअी बात बताअी नही। अुन्हे नियमित रूपसे जो खुराक दी जाती, अुसके सिवा बगीचेमे से नारगी और मीठे नीबू अच्छे और बडे देखकर वे तोड लाते और अुनके साथ बिस्किट भी खाया करते। मै अचानक अुनके कमरेमे चला गया और सभ्यताके साथ कहा, "मुझे शक है कि आप कुछ फालतू चीजें खाते है। अिसलिअे मै आपकी तलाशी लेने आया हू। गाधीजीने आपकी जिम्मेदारी मुझे सौपी है। अिसलिअे आपको बुरा लगे तो भी और जरा असभ्य बन कर भी मुझे अपना फर्ज अदा करना पडेगा। मेरी असभ्यताके लिअे मुझे क्षमा करें।"

यह कहकर मैंने अुनके बिस्तर और सामानकी तलाशी लेना शुरू किया। अुसमे से बिस्किटका डिब्बा और चार नारगिया निकली। डिब्बा आधा खाली

हो गया था। मेरे वुजुर्गके वरावर मिस्टर आअिज़ेक शर्मिदा हो गये। मैंने कहा, "भोजनके मामलेमे यहा कठोर अपरिग्रह रखा जाता है। किमीके पास अिस तरह खुराक जमा नही रह मकती। अुस पर आप तो वीमार है।"

अुन्होंने वहुत ही नम्रताके साथ कहा, "मुझे वडा अफसोस है। मै सयम न रख मका। अिसलिअे मै चुपके चुपके खाने लगा। परन्तु आप अिस वारेमें गाधीजीको न लिखिये। अुन्हे वुरा लगेगा। अितना वचन मै आपमे मागता हू।"

मैंने कहा, "हर रोज वापूजी पत्रमे आपकी तन्दुरुस्तीके वारेमे पूछते है। अुसके जवावमे यदि अिस वारेमे न लिखू तो मै वेवफा कहलाअू। आपने जो यह आश्वासन दिया है कि अपनी भूल आप सुधार लेगे, अुसके वारेमे भी मै अुन्हे लिख दूगा। मोतीझिरेमे वचकर निकलनेवाले वीमारको लवे अर्से तक सभालकर रखना चाहिये।"

मिस्टर आअिज़ेक खुद फिनिक्सके सयममें न रह सके। जल्दवाजी करके वे जोहानिसवर्ग चले गये। वहा जानेके वाद स्वादेन्द्रियको तृप्त करनेकी प्रवृत्तिमे फस गये। रोगने पलटा खाया। फिनिक्ससे गये अुन्हे मुश्किलमे अेक महीना हुआ होगा कि यह वुरा समाचार मिला मिस्टर गेब्रियल आअिज़ेक मर गये।

गांधीजीको दवाकी अपेक्षा शुश्रूषा पर अधिक श्रद्धा है। अिसलिअे अपने पास रहनेवालोंकी वीमारीके मौके पर वे स्वय ही अुनकी सेवामे लग जाते और जोखिम अुठा कर चाहे जैसे भयकर रोगमें भी कुदरती अिलाज और भोजनके परिवर्तनसे वीमारकी सेवा-शुश्रूषा करते। अिसमें अभी तक अुन्हे सफलता मिली है। अैसी सेवा-शुश्रूषाके अवसर पर अुन्होंने सन् १९१४ के सितम्वर महीनेमें जो पत्र लिखा था, अुससे हम अिस विषयमे जान सकेंगे:

"चि० मगनलाल,

"तुम्हें मै अिन दिनोंमें पत्र नही लिख सका।

"आज तवीयत अच्छी है अिसलिअे लिखने वैठा हू। अभी विस्तरमे ही हू और अैसा मालूम पडता है कि दस दिन तो और विस्तरमे रहना ही पडेगा। अिस वार वेदनाकी हद हो गअी। मेरी रायमें मैंने डॉक्टर मित्रोंकी सलाह मानी अिसीलिअे अैसा हुआ। सवका आग्रह था अिसलिअे जिन वस्तुओंके वारेमें मुझे अतिम आपत्ति नही थी अुन्हें लेना मैंने मजूर किया। दाल, भात, साग चार

दिन खाये। चारो दिन वेदना बढी और जिस बातके लिअे खानेको कहा गया था वह भी नही मिटी। पाचवें दिन नमक खाया। अुस दिन तो वेदना असह्य हो गअी। छठे दिन मैंने डॉक्टरोको छोडा और अपने ही अिलाजो पर आ गया। अिसमे वेदना बिलकुल शान्त हो गअी और बवासीर भी जाती रही। परन्तु बीचमे मेरी ही मूर्खताके कारण फिर दर्द अुठा। नमक खानेके दिन जीवनमे पहली बार बलगममे खून आया। वह अब भी आ रहा है। अिसलिअे मेरी पहचानके अेक शाकाहारी गोरे डॉक्टरको मि० कैलनबैक ले आये। अुन्होने कहा, नमक खानेकी जरूरत नही है। परन्तु कन्दमूलकी जरूरत अुन्होने बताअी और यह बताया कि अुपवाससे शरीर बिलकुल कमजोर हो गया है, अिसलिअे अभी जल्दी ही तेल, नट वगैरा न लिये जाय। अिसलिअे अभी मै बार्लीका पानी, आठ औंस हरा मेवा और आठ औंस शलजम, गाजर, आलू और गोभी वगैरा मिलाकर अुसके अुबले हुअे रस पर रहता हू। शरीर क्षीण हो गया है। मुझे अिसमे भी पूरा विश्वास नही है। परन्तु अपनी कुजी पूरी तरह मेरे हाथ नही लगी है। अिसलिअे यह प्रयोग आजमा रहा हू। दर्द बन्द है। बलगममें खून जारी है। खानेमे अभी तो स्वाद बिलकुल नही रहा। अिसलिअे स्वादेन्द्रियको वशमें रखनेंका यह बडा अच्छा मौका मिला है। डॉक्टरने नीबू भी बन्द कर दिये है। अिसलिअे तेलके बिना शलजम, गाजर और गोभीका अुबला हुआ पानी पीनेमे स्वाद जरा भी नही रह जाता। फिर भी मै आनन्दपूर्वक पी जाता हू। पहले तो बार्लीका पानी खराब लगा। लेकिन अब वह भी सहन करने जैसा मालूम होता है। तुम्हें तफसीलमें लिख रहा हू। परन्तु घबरानेका कोअी कारण नही। अैसी आशा है कि मेरी तबीयत ठीक हो जायगी। और अभी तक दिल यही कहता रहता है कि फलाहारसे ही वह ठीक होगी। देखना है कि अनुभवसे क्या होता है। मित्र दूध लेनेका आग्रह करते रहते है। अिसके लिअे मैने साफ अिनकार कर दिया है। मैंने कह दिया है कि दूध न लेनेकी मेरी प्रतिज्ञा है, अिसलिअे दूध तो मौत आती हो तो भी मै हरगिज न लूगा।

"बाकी शक्ति गजबकी है। अुसका मेरे अुपचारो पर विश्वास जमता जा रहा है।

"यहा मुझे अिडिया आफिसके विरुद्ध सत्याग्रह करना पडा है। अिसकी विगत दूसरे पत्रमे लिखूगा।

"फिनिक्सके अुद्देश्योका पालन सारे असह्य सकट सहकर भी करना । सबकी तबीयत कैसी रहती है, वहा जानेके बाद वातावरणका असर बच्चोकी आत्मा पर कैसा हुआ है, आदि समाचार विस्तारपूर्वक लिखना ।

बापूके आशीर्वाद"

१०

गांधीजीके भोजनके प्रयोग

फिनिक्समे भोजनके प्रयोग बहुत हुअे थे । ये प्रयोग गाधीजीने खास तौर पर सयम और ब्रह्मचर्यके खयालमे आरम्भ किये थे। ब्रह्मचर्यका कुछ आधार भोजन पर है । ब्रह्मचर्यका व्रत पालनेवालेको स्वादेन्द्रियका सयम पालना ही चाहिये । जिसने अिन्द्रिया जीत ली, अुसने जगत जीत लिया, यह बिलकुल सत्य है । और अुतना ही सत्य यह है कि जिसने जीभको जीत लिया, अुसने अिन्द्रियोको जीत लिया । बहुतसे होशियार डॉक्टरोने और भोजनमें सुधार करनेवाले विचारकोने भी शारीरिक स्वास्थ्यकी दृष्टिसे और आर्थिक दृष्टिसे भोजनके प्रयोगोका विचार किया है । परन्तु गाधीजीने धार्मिक दृष्टिसे, सयमकी दृष्टिसे भोजन पर विचार किया । गाधीजीने डॉक्टर म्र और डॉक्टर जुस्टकी पुस्तकोसे भोजनके गुण-दोष अूपरकी स्थूल दृष्टिसे जाने। बादमे गाधीजी अुसमें आगे बढे और अुन्होने खोज निकाला कि शारीरिक और आर्थिक दृष्टिसे भोजनके गुण-दोष देखना और जानना स्थूल दृष्टि है। सयम और ब्रह्मचर्यकी दृष्टिसे भोजनके गुण-दोष देखना ही सच्ची दृष्टि है। कुछ पाश्चात्य डॉक्टरोने खोज की है कि प्रत्येक कन्द या फलमें कुदरती नमक जरूर होता है । अन्नमे यदि तुलनामें कम होगा तो पत्ताभाजीमें ज्यादा होगा। अिसलिअे दोनो चीजे अपनी अपनी मात्रामे नमकके बिना ली जाय तो भी तन्दुरुस्तीके लिअे काफी है। अुनमें ज्यादा सलोनापन लानेके लिअे बनावटी नमक डालना तन्दुरस्तीके लिये जरूरी नही है, बल्कि कुछ हानिकारक ही है । गाधीजीने अिस दृष्टिका विकास किया और सोचा कि नमकीनपनसे स्वादेन्द्रिय पुष्ट होकर आत्माका सयमरूपी किनारा

टूट जाता है और अुससे ब्रह्मचर्य-पालन कठिन हो जाता है। क्योंकि जैसा आहार वैसी डकार। हृदयकी वृत्तियो पर भी सात्विक या तामसी भोजनका अच्छा-बुरा असर होता ही है। यह विचारश्रेणी गाधीजीने हमारे सामने रखी है। अिसी पर अुन्होने भोजनके सारे प्रयोग किये। यहा तक कि कुछ प्रयोग तो अुनके लिअे धर्म-सकल्प ही बन गये। अिन प्रयोगोमे सामान्य प्रयोग अुन्होने भोजनका था। यह प्रयोग अुन्होने कस्तूरबाकी बीमारीके समय शुरू किया था। सन् १९०८ मे कस्तूरबा बीमार पडी। डॉक्टरने यह सलाह दी कि कस्तूरबा नमक और दाल छोड दे तो अुनकी तन्दुरुस्ती सुधर जाय। गाधीजीने डॉक्टरकी सूचना कस्तूरबाको बताअी। नमक और दालके बिना कैसे काम चले? फिर भी दाल तो छोडी जा सकती है, परन्तु नमक हरगिज नही छोडा जा सकता। दलीलोमे कस्तूरबाके मुहसे निकल गया, "दाल और नमक छोडनेको तो तुमसे कोअी कहे तो तुम्ही न छोडो।" गाधीजीके लिअे यह वाक्य काफी था। अुन्होने तुरत यह बात पकड ली और बोले "तुम छोडो या न छोडो, परन्तु मै तो आजसे अेक बरसके लिअे नमक और दाल छोडता हू।"

गाधीजीके भोजनके प्रयोगोका शुभारभ यहीसे हुआ। जोहानिसबर्गमें रहकर अिन प्रयोगोको अमलमे लानेका अुन्होने प्रयत्न किया। फिनिक्समे ये प्रयोग स्थायी हो गये। वे अुनके जीवनका अेक अग बन गये। फिनिक्समे भोजन बिलकुल सादा हो गया। भोजनालय तो अेक ही था। सबके लिअे नही, परतु विद्यार्थियो और शिक्षकोके लिअे। जो पहलेके रहनेवाले थे वे अपने-अपने कुटुम्बके साथ अलग अलग भोजनालयोमे खाते-पीते थे। अिस भोजनालयमें सबेरे गेहूकी कॉफी दी जाती थी। पूरे गेहूको खूब भूनकर पीस लिया जाता और फिर अुसे कॉफीके रूपमे काममे लिया जाता। अिस कॉफीके अुबले हुअे पानीमे शक्कर और दूध डालकर पीनेसे लगभग कॉफी जैसा ही स्वाद आता है।

सामान्य कॉफीका नशा अिसमे जरा भी नही होता। अिस कॉफीके साथ 'क्यूने' रोटी, खजूर, मुरब्बा या कोअी फल होता तो वह दिया जाता था। दोपहरको रोटी, चपाती, चावल, दाल और साग दिया जाता था। दाल-सागमे गरम मसालेका अुपयोग नही होता था। मिर्चें भी नही होती थी। सिर्फ नमक डाला जाता था। घीके बजाय जैतूनका तेल काममे लिया जाता था। फिर, कुछ लोग व्रतधारी होते, अलौना खानेके व्रतवाले

होते, शक्कर न खानेवाले होते। अिन सबके लिअे भी अुचित व्यवस्था थी। जेलकी तरह अेक ही बडे कटोरेमें सब कुछ खाना होता था। लकडीके चम्मचका अुपयोग भी होता था।

अिस भोजनमें भी कभी कभी परिवर्तन होता था। गांधीजीको दूधका अुपयोग करना पसन्द नही था। और अुसमें भी डिब्बेके जमाये हुअे दूधसे अुन्हे विशेष अरुचि थी। फिर भी जितना चाहिये अुतना दूध न मिलनेके कारण डिब्बेका दूध अिस्तेमाल करना पडता था। अेक दिन अुन्होंने मुझसे कहा "हमें दूध बन्द करना है। मुझे दूधका अुपयोग दिलमें खटकता है। मुझे लगता है कि बादामके मगजका दूध निकालकर अुसका अुपयोग हो सकता है।" मैंने कहा "मैं अैसा करके जरूर देखूगा।" मैंने बादामका मगज खरलमें पानीके साथ घोटकर अुसका दूध निकाला। अुस दूधका अिस्तेमाल किया। परन्तु पीनेवालोको जरा भी फर्क न लगा। गांधीजी खुश हुअे। परन्तु अुन्हे अेक विचार सूझा और वे बोले "रावजीभाअी, अिस तरह बादामके मगजका दूध बनाकर कॉफीमें डालना हमें पुसायेगा नही। बहुत ही खर्चीला हो जायगा। मूगफलीके दानोके दूधका प्रयोग करके देखो।" दूसरे ही दिन पावभर मूगफलीके दाने पीसकर और खरलमे पानीके साथ घोटकर अुनका दूध निकाला। वह दूध कॉफीमें अिस्तेमाल किया। किसीको भी पता न चला। कॉफी पीनेवालोको खास कोअी फर्क मालम नही हुआ। तबसे फिनिक्स आश्रमसे दूधको छुट्टी मिल गयी।

गांधीजी यह जानते थे कि स्वाद किसी चीजमें नही, हमारी वृत्तिमें है। अत अिस बारेमे वे काफी सावधान थे। सादे अन्न और मिष्टान्नका पूरा रसास्वाद फलाहारमें है। स्वादेन्द्रियके चोचले फलाहारमे भी किये जा सकते हैं। अिसलिअे गांधीजीने फलाहार पर भी अकुश लगाना शुरू कर दिया। अिस प्रकार भोजनके प्रयोग करनेमे अुन्हे और अुनके साथ रहनेवालोको सयम और तदुरुस्ती दोनोका लाभ हुआ है, अिसमे जरा भी शक नही। हम बाहरी कठिनाअियोसे जूझना सीखते है, परन्तु अिससे भी ज्यादा जरूरत अपने मनसे जूझनेकी है। भोजनके प्रयोगोंमें, और खास तौर पर यदि वे सयमके हेतुसे किये गये हो तो, हमे अपने ही मनसे लडनेके बहुत मौके मिलते है। अुनमे हम सावधान हो तो अिन झगडोसे हमारा मनोबल बढता है, हम प्रतिज्ञा और व्रतका माहात्म्य समझने लगते हैं और अुनसे लाभ अुठा सकते है।

स्वास्थ्य, मनके विकारो और स्वादेन्द्रियके सयम-असयमका खुराकके साथ क्या सम्वन्ध हे, यह गाधीजीके नीचेके पत्रसे समझमे आ जायगा·

"चि० मगनलाल,

"हमारे जैसो पर अनुचित भोजनका असर तुरत हो जाता है, असका कारण तुमने अच्छी तरह वताया हे। वुद्धदेवने भिक्षामे मिला हुआ मास खाया कि तुरन्त अुनका देह गिरा।

"दूधके वारेमे यह मान लेनेका कोअी कारण नही कि किसीने विचार ही नही किया होगा। मै मानता हू कि दूधके बिना काम चला लेनेवाले वहुत लोग दुनियामे होगे। परन्तु मै कह चुका हू कि किसी महापुरुषने हिन्दुस्तानमे जो मास छुडवाया, वह अितना वडा महत्त्वका परिवर्तन था कि दूधके वारेमे विचार करने या लिखनेवाला कोअी देखनेमे नही आया। परन्तु यह हमारे अज्ञानके कारण है। हमने सव कुछ पढा नही है। सवको देखा नही है। अेक ही मापदड अुत्तम है। भूतकालमे दूध छोडनेका विचार हुआ हो या न हुआ हो, परन्तु वह बुद्धिको ठीक लगता है या नही? और दूधके छोडनेमे किसीने पाप वताया या माना नही है। "

"पवित्र माने जानेवाले तीर्थोमे तेलको त्याज्य समझकर घीको पवित्र मानते है। असका कारण मैने जो अनुमान लगाया है वही मालूम होता है। हिन्दुस्तान जव मासाहारी ही था और किसीने वहुतोको निरामिषाहारी वना दिया, तव घीको अति पवित्र बना दिया गया। असलिअे हम अपने भोजनमें वेहद घी अिस्तेमाल करने है। जितना अधिक घी अुतना ही भोजन स्वादिष्ट माना जाता है। असमे ज्यादा अधेर और क्या होगा? फिर भी यही माना जाता हे। अैसा होनेसे पवित्र स्थानोमे भी घीको अूचा दर्जा दे दिया गया। परिवर्तन करनेवालोने सोच लिया कि लोग घी खूब खायेगे तो अुन्हे मासकी वहुत जरूरत नही रहेगी। अिसी तरहके हेतुसे लदनके वेजिटेरियन भी अडेका अिस्तेमाल करते है। वे जो पकवान बनाते है अुनमे से कुछमें ही अडा नही होता होगा। अडेको अुन्होने लगभग पवित्र स्थान दे दिया है।

"स्वादको जीतनेके वारेमे तुमने जो श्लोक लिखा था, वह तो मैने देखा था। फिर भी मेरी आलोचना लागू होती है। अेक श्लोकसे कोअी अमर नही होता। अिस विषय पर अुन्होने जोर नही दिया। दिया ही

होता तो हवेलीमें हर वहानेसे मिष्टान्न न वनता। ब्राह्मण-भोजन भी न होता। और आजकल ऋषि तथा साधु भी स्वादेन्द्रियको नही जीतते, वल्कि अुनके अवीन हुअे पाये जाते है। यह वात वहुत लवी-चौडी है। दोप निकालनेके लिअे यह सव कहे तो हम पापी वनते है। परन्तु जहा अपना और परायेका अुपकार ही मुख्य वात है वहा कैसे भी वडे मान्य पुरुष क्यो न हो, अुनमें हम जो अपूर्णता देखें अुस पर विचार करना हमारा फर्ज है।

"यह तो मुझे मालूम नही कि दशमीका व्रत क्यो नही रखा जाता और अेकादशीका क्यो रखा जाता है। परन्तु पखवाडेमें कमसे कम अेक दिन साधारण भोजन छोडनेसे शरीर और मन शुद्ध होते है।

वापूके आशीर्वाद"

सत्याग्रहकी आखिरी लडाअी समाप्त होनेके वाद समझौतेके कामसे गावीजी केपटाअुन गये थे। वहासे सन् १९१४ के अप्रैल मासमें अुन्होने मुझे अेक पत्र लिखा था। अुसे पढनेसे यह मालूम हो जायगा कि गावीजी स्वादेन्द्रियके सयमके वारेमें कितना आग्रह रखते है

"भाअीश्री रावजीभाअी,

"तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे अुपवासके वारेमें मैंने सुना था। अुपवास तुमने सकारण किया हो तव तो मुझे कुछ नही कहना है। तुम्हे वहा अेकान्त तो मिल ही नही सकता। मे वाह्य प्रवृत्ति विशेप रहनी चाहिये। अिसीमें शान्ति है। वहा सेवाधर्म ही प्रवान है।

"जे की तन्दुरुस्ती गिर जानेसे मै घवरा गया हू। तुरत सुधर जाय तो अच्छा।

"म के लिअे जी व्याकुल होता है। पता नही चलता स्थिति क्यो नही सुधरती। मै भी यही ठीक समझता हू कि वह मेरे पास आ जाय। तुम अैसा अितजाम करते रहना। देशमे मै देख लूगा। अैसा लगा करता है कि मानसिक रोगके कारण यह होता है। जेलमें तवीयत ठीक रहती थी अिसका कारण ढूढता रहता हू। परन्तु अूपरकी वात ही सूझती है। वहा मन जवरदस्ती अेक स्थितिमें रहता था। अुसका असर शरीर पर भी हुआ। यहा तककी कैसा भी भोजन करने पर भी जेलमे तन्दुरुस्ती ठीक रही। अव जेलसे वाहर क्या वैसा मनोराज्य नही प्राप्त किया जा सकता?

हो, हिन्दुस्तान आना ही म के लिअे ठीक मालूम होता है। परन्तु वह भी अिस बारेमे सोचे।

"अेक अुदाहरण मैं अपना दे देता हू। बाने अदरककी अिच्छा की। अदरक न खानेका मेरा व्रत नही था, अिसलिअे मैंने बाके साथ ही अुसका गुण देखनेके लिअे खाना शुरु कर दिया। बाकी जीभ स्वादप्रिय है। बाने अदरककी जडे ढूढ ली। मुझे तो अुन पर राग अुपत्न्न हो गया। वह यहा तक कि चार-पाच चनेके बराबर कोमल गाठे मै भी चबा जाता। अेक दिन बाने श्रीमती गुलकी टोकरीमें से बहुतसी जडें ढूढकर कमरेमें रख दी। मै देखकर घबरा गया। रात बीती। सवेरे अुठते ही भडक अुठा· 'मैं अदरक कैसे खा सकता हू? जिसकी अेक गाठसे अनेक जडे पैदा होती हो, अुसमे तो अनेक जीव होने चाहिये! और कोमल जडें खाना तो कोमल बच्चेको मार डालनेके बराबर हुआ!' मुझे अपने पर बडा तिरस्कार पैदा हुआ। मैंने निश्चय किया कि अिस शरीरमे तो अदरक नही खाअूगा। मजेकी बात अब आती है। बाने देखा कि मैं अदरक नही खाता। अुसने कारण पूछा। मैंने समझाया। वह भी समझ गअी। अति कोमल जडे ले गअी। बाकीमे से खानेका मुझसे आग्रह किया। मैंने अिनकार किया। व्रत तो जारी ही है। परन्तु जीभ और आख कुत्ते जैसी है। आख देखती है तो अदरक खानेकी अिच्छा होती है। जीभ तडपती रहती है। परन्तु जूठनके लिअे तडपता हुआ कुत्ता जैसे मालिकको देखकर जूठन खानेकी हिम्मत नही कर सकता, वैसे ही आत्मारामजी देखते है अिसलिअे जीभ अुस अदरकको छू नही सकती। अदरक तो सारे दिन मेरी नजरके सामने ही रहता है, क्योंकि जहा मेरे कागजात पडे है वही वह पडा रहता है। आजकल मेरी यह हालत है कि शक्कर और नमक छोडना जितना मुश्किल नही हुआ, अुतना अदरक परसे वृत्तिको हटाना मुश्किल हो रहा है। अब तुम अपनेको क्या दोष दोगे? मनको जो शराब पिये हुअे बन्दरकी अुपमा दी गअी है सो गलत नही है। मुझमे ज्ञान सीखनेकी बडी आशाअे रखो तो भी क्या? हम सब अेक ही टूटी हुअी नावमे बैठे है। अुसमे अनुभवरूपी ज्ञान मुझे ज्यादा होनेके कारण मै बताअू वहा तुम पैर रखो तो भले ही रखो। हम सब अधेरेमे है और अेक ही वस्तुकी खोज कर रहे है। मेरे पैर शायद जरा ज्यादा जोर और विश्वासके साथ पडते होगे। अिसलिअे मेरे प्रति विशेष आदर-वृत्ति रखना भी तुम्हारी अुन्नतिको रोकने जैसा है। जब मै सब कामनाओको

जीत लूगा, तव तुम्हे या औरोको नि सकोच भावसे ज्ञान दूगा। अभी तो हम सव अेक साथ जोर लगाकर मोक्ष देनेवाले नारायणको ढूढे और अुस खोजमे भूल करते हुअे, लडखडाते हुअे और मार खाते हुअे भी हिम्मत और धीरजके साथ आगे वढे।

मोहनदासके यथायोग्य"

* * *

"मेरे साथ तुम सव दौडो, यह वाछनीय है। परन्तु मै अैसी आशा नही रखता। यह माग मैने कभी नही की कि मै जो कुछ करता हू वह सव तुम भी करो। परन्तु जिसे करनेका भार अुठा लो अुसे तो पूरा करना ही चाहिये।

. वलात्कारकी तो वात ही नही है। परन्तु तुम अपने-आप समझ-वूझकर . का व्यसन छोड कर मुझे धोखा दो तो अिसमें दोष तुम्हारा ही होगा।

अिसी तरह हमें मान लेना चाहिये कि वच्चे अेक खास हद तक पहुच गये है। वे फिनिक्समें कुछ चीजोका त्याग करते है, तो वहा अुन चीजोको त्याज्य समझते है। फिनिक्ससे वाहर जाकर वही चीज कैसे की जा सकती है? अलोना खाना किसीके लिअे फर्ज नहीं है। तेज मसाले, व्यसन, मिष्टान्न, वहुत स्वादिष्ट भोजन या कॉफी वगैरा वस्तुअे सवके लिअे त्याज्य है। विपय-भोग, चोरी, असत्य और देरसे अुठना सवके लिअे त्याज्य है। ये नियम जिनको कडे लगें वे यहा कैसे रह सकते है? हरअेक सस्थाके कुछ खास नियम होते है। अुन नियमोको वाहर और भीतर सव जगह पालना ही चाहिये। जो न पाले अुसका सस्थामे रहना वेकार है।

"तुम जो कहना चाहते हो वह तो यह है। मेरी शर्मके मारे वच्चे और दूसरे लोग कअी वाते करते है, स्वतत्र रूपमे नही करते और अिसलिअे वे मुझे धोखा देते है। यह मेरा दोप हो सकता है, परन्तु अिससे मै अेक ही तरहसे मुक्त हो सकता हू। अर्थात् मुझे किसीके साथ न रहना चाहिये। अभी तो मुझे यह अपना कर्तव्य नही लगता। रा शर्मके कारण मेरी मागके विना अलोना खानेका ढोग करके मुझे धोखा दे तो अिसमे मै दोषी कैसे वन जाता हू? तुम अलोना नही खाते हो, अिससे मै तुम्हे कम चाहता हू और ज विलकुल फलाहारी है अिसलिअे अुसे ज्यादा चाहता हू, अैसी कोअी वात नही है। अलोने-सलोनेमें कोअी पाप-पुण्य नही है। अुसके पीछे जो रहस्य है अुसमे पाप-पुण्य है। अिमामसाहव कभी अलोना

नही खाते, लेकिन अिसलिअे वे मुझे अप्रिय नही है। मिस श्लेशिन सब बातोमे मुझसे अुलटा व्यवहार करती है, फिर भी अुसके चरित्रको कुछ हद तक तुम सबसे मै अधिक अूचा मानता हू। सब परिवर्तनोमे यथाशक्ति सयम रखना और अुसमे वृद्धि करना हमारा अुद्देश्य है। अुस रात मैने यह कहा था कि जिसे यह बात स्वीकार न हो वह मुझे छोड दे। और वह यथार्थ ही मालूम होता है। नॉर्टनके काम पर मै मोहित नही हुआ और बगाली वकीलोका मै तिरस्कार नही करता। सत्याग्रही अुन दोनोके प्रसगसे बाहर है और अुसका कर्तव्य दूसरा ही है। तुम्हारे सवालोमे यह सवाल भी है कि सत्याग्रही ठीक राह पर है या नही। यह तुम अभी तक न समझे हो तो मै यही कहूगा कि यह वस्तु अनुभवगम्य है। दूसरा अिसे नही समझा सकता। अिसे समझनेके लिअे हम स्वादेन्द्रिय वगैराको जीतनेकी कोशिश करते है। सयमका अर्थ अलोना खाना न समझो। तुम दो दिनकी सूखी रोटी और नमककी अेक डली खाकर जीवन बिताओ, तो वह मेरे कअी तरहके मेवोके स्वाद लेनेसे बहुत अूचा हो सकता है। कार्यकी शुद्धताका निर्णय अिस बातसे होगा कि तुम किस अुद्देश्यसे सूखी रोटी खाते हो और मै किस अुद्देश्यसे मेवे वगैरा खाता हू।

"पवित्रता दूसरोके आक्षेपोसे लज्जित नही होती, परन्तु विशेष बल प्राप्त करती है।

"तुमसे कोअी भी अनुचित बात हुअी हो तो मेरे सामने सब कबूल कर लेना। अैसा किये बिना तुम्हारे अुपवास या सैकडो प्रायश्चित्त भी सफल नही होगे। मै वहा आनेके लिअे तडप रहा हू, परन्तु मेरा कर्तव्य छोडा नही जा सकता।

"सूर्य पश्चिममें अुगे तो भी यह नही हो सकता कि मै अपनी की हुअी प्रतिज्ञा वापस ले लू।

"जिन्हे मैने अत्यत निष्पाप माना है, वे अैसे पापी हो तो अिस शरीरको पोषण देकर अेक क्षणके लिअे भी मै रखना नही चाहता।

"मनुष्य अपने प्रणकी रक्षा आसानीसे नही कर सकता।

"तुम दोनोको अिस पत्रसे रोष आयेगा। परन्तु जो बात मेरे मनमे है वह न लिखू, तो मुझमे जो कुछ सत्य है अुसे कलक लगेगा और मै तुम्हारा बुरा करनेवाला बनूगा। तुम्हे दुःख पहुचाना अिस समय मेरा धर्म हो गया है।"

११

प्रतिज्ञाकी महिमा

फिनिक्स आश्रममे अैसी तालीम दी जाती थी, जिससे जीवनके सभी अगोका विकास हो। विद्यार्थियोकी शिक्षाके बारेमें तो गाधीजीने 'दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास' मे जो कुछ लिखा है, वह शिक्षाके जिज्ञासु अुसमे पढ लेंगे। मै यहा कुछ और ही बात बताना चाहता हू। आश्रममे सयम, नीति और सदाचारका अैसा शुद्ध वातावरण था कि साधारण वायुमडलमे निर्दोष समझी जानेवाली हमारी आदतें वहा सदोष समझी जाती। वहाका जीवन अितना अूचे दर्जेका था कि सामान्य व्यवहार भी दोषपात्र माना जाता। अुदाहरणके लिअे, विद्यार्थी या और कोअी नियमित रूपमे दो-तीन बार खाना खाये और फिर भी बगीचेमें काम करते हुअे कोअी अच्छा फल दिखाअी देने पर अुसे तोडकर खानेकी अिच्छा करे, तो अिसे आम तौर पर हम अपराध नही मानते। फिनिक्सके अुच्च कोटिके वातावरणकी दृष्टिसे अुसे अपराध माना जाता था। भले ही अुसकी सजा नही दी जाती थी, परन्तु वहाकी नैतिक दृष्टिसे अैसा अपराध करनेवालेको खुद ही सकोच होता था और वह निश्चय करता था कि मै फिर कभी अैसा नही करूगा। अिसके अलावा अेक महीने अलोना खानेका दिलसे निश्चय कर लेनेके बाद किसी असाधारण प्रसग पर भी सलोना भोजन करना हृदयकी दुर्बलता और गभीर अपराध माना जाता था। विद्यार्थियोने रातको निश्चय किया हो कि कल रविवार है अिसलिअे समुद्र-तट या अिनाण्डाके जल-प्रपातके रमणीय स्थान पर गोठ करेगे, तो बादमें भले ही भारी वर्षा हुअी हो और दिनमें भी वर्षाके पूरे आसार नजर आते हो, या अन्य कोअी कठिनाअी पैदा हो गअी हो, फिर भी अिस प्रकारकी कठिनाअीके कारण किये हुअे निश्चयको अमलमें न लाना सबके लिअे कमजोरी माना जाता था। आश्रममें झाड़ू लगानेवाला नौकर या मैलेकी बालटी साफ करनेवाला भगी नही रखा जाता था। खेती करनेवाला या पढानेवाला, प्रेसका कम्पोजीटर या पत्रका सपादक, या रसोडेमें खाना बनानेवाला अेक ही आदमी होता था। सब

अपने लिअे निश्चित किया हुआ काम करते थे। अुसमे भी पाखाना साफ करनेका काम दूसरे सब कामोसे अूचा माना जाता था। स्टेशन आश्रमसे ढाअी मील दूर था। खाने-पीनेका सामान और प्रेस-सबधी मामान स्टेशन पर आता तब अुसे आश्रममे लाना पडता था, परन्तु अुसे लानेके लिअे कोअी जानवरकी सवारी नही रखी गअी थी। अेक छोटीसी गाडीमे रखकर विद्यार्थी और शिक्षक ही अुसे खीच लाते थे। अेक बार अेक विद्यार्थीके पिताजी बीमार हुअे। अुसके शिक्षक अुन्हे देखने डरबन गये। अुन बुजुर्गकी रहनेकी जगह गदी थी, हवा और रोशनीवाली नही थी, वातावरण हानिकारक था। बीमारीमे भी आदतोके अनुसार अवाछनीय खान-पान आदि व्यवहार होता था। यह सब देख कर अुन शिक्षकको लगा कि अैमी हालतमे बीमारी जरूर बढ जायगी और बादमे कावूमे नही रह सकेगी। अुन्होने अुन बुजुर्गको फिनिक्समे जाकर रहनेकी सूचना दी। अुन्होने मजूर कर लिया। यह तय करके कि अमुक दिन अमुक गाडीसे फिनिक्स स्टेशन पर अुतरना, वे शिक्षक फिनिक्स चले गये। ये बुजुर्ग बीमारीकी हालतमे ढाअी मील पैदल तो चल ही नही सकते थे, आश्रममे बैलगाडी या और कोअी साधन भी नही था। स्टेशन पर भी अैसा कोअी साधन किरायेसे नही मिल सकता था। शिक्षकने भार अुठानेकी छोटी गाडी तैयार की। विद्यार्थी अपने अेक साथीके पिताजीको अुस गाडीमे खीचकर लानेको तैयार हो गये। वे शिक्षक विद्यार्थियोको लेकर स्टेशन गये और बीमार बुजुर्गको गाडीमे बिठाकर आश्रम तक खीच लाये। अिस सेवाभावको, अपने साथीके प्रति अैसी ममताको आज हमारी शालाओमे देखनेके लिअे हम बहुत अुत्सुक है। वे बुजुर्ग फलोके नियमित और अल्प आहार तथा पिचकारी और मिट्टीकी पट्टीके अुपचारकी वजहसे छह महीनेसे शरीरमे घुसे हुअे क्षय जैसे भयकर शत्रुसे बच गये। अुन्हे पूरी तरह आराम हो गया। वे शारीरिक श्रम करने लगे और डेढ महीनेकी सेवा-शुश्रूषाके बाद दो-चार मील चलनेके लिअे समर्थ हो गये। अैसी कितनी ही सेवा करने और देखनेका विद्यार्थियोको मौका मिलता था। यह कोअी मामूली तालीम नही कही जा मकती। अैसे सेवाभावी और शुद्ध वातावरणमें, जैमे अुजले कपडे पर स्याहीका दाग बहुत जल्दी दिखाअी देता है, वैमे ही मामूली दोप भी गभीर माना जाता था।

अेक दिन अेक विद्यार्थी जोहानिसबर्गसे आये हुअे अपने बुजुर्गसे मिलने डरबन गया था। बुजुर्गको बच्चेके प्रति ममता होनेके कारण अैसा लगा कि

आश्रममें मिठाअियां या तेज चटपटी पकौडियां वगैरा अैसे कहां मिलती होंगी। अिसलिअे अुन्होंने विद्यार्थीको खाना खिलानेके बाद पकौडियां खरीदकर ला दीं। लडकेने पकौडियां थोडी तो खा लीं। परन्तु खाते खाते अुसे अपने साथियोंकी याद आअी। अुसने तुरत पकौडियोंकी पुडिया बांध ली और अपने साथ फिनिक्स ले गया। रातको छोटे बडे जो भी विद्यार्थी वहां थे अुन सबको अुसने पकौडियां दीं। अचानक अेक शिक्षिका वहां पहुंच गअी। विद्यार्थियोंने कोअी संकोच नहीं किया। अुन्होंने अुन बहनके आगे भी पकौडियां रख दीं। बहनने वे खा लीं। परन्तु कोअी न जाने तो अच्छा, अिस खयालसे अुन्होंने सूचना दी कि कोअी अिसका जिक्र न करे। परन्तु वहां अैसी बात क्या छिपी रह सकती थी? दूसरे दिन औरोंको मालूम हुअी और तीसरे दिन शामकी प्रार्थना करनेके बाद यह बात गांधीजीके पास पहुंची। कौन लाया, किस किसने खायीं, वगैरा बातें पूछी गअीं। पहले तो अिसे बहुत महत्त्व नहीं दिया गया। सिर्फ यही जाननेकी कोशिश की गअी कि साधारण नियमके बाहर किस किस विद्यार्थीने आचरण किया। परन्तु बादमें अैसा मालूम हुआ कि अेक शिक्षिका बहन भी अुसमें शामिल थीं। गांधीजीको पहले तो यह बात सच्ची न लगी। परन्तु जब अेक दो विद्यार्थियोंने विश्वासके साथ कहा तो गांधीजीको शंका हुअी। गांधीजीको अुन बहन पर बडा विश्वास था, फिर भी अुन्होंने अुनसे पूछा। अुन्होंने बडी चालाकी और भावनापूर्ण वाणीमें अुस बातके सच होनेसे अिनकार किया। अुनके अिनकारसे यह तुच्छ प्रश्न और भी गंभीर बन गया। विद्यार्थी झूठे या बहन झूठी? दोनोंमें से कोअी भी पक्ष अिस तरह जान-बूझकर झूठ बोले यह असह्य था। विद्यार्थी और भी दृढताके साथ अपनी बात कहने लगे। दूसरी तरफ अुन बहनने भी अधिक जोरके साथ अिनकार करना शुरू किया। कोअी अपराध हो जाना आकस्मिक घटना हो सकती है, परन्तु किये हुअे दोषको छिपाने और अुसके लिअे झूठ बोलकर अुससे अिनकार करनेसे किया हुआ अपराध कअी गुना गंभीर बन जाता है। अिस मामलेमें अैसा ही हुआ। और प्रत्येक क्षण वह और भी गंभीर बनता गया। अंतमें गांधीजीने देवदासको बुलाया और पासमें खडा रखकर पूछा 'देवा, तू अिस बारेमें क्या जानता है? बहनने पकौडियां खाअी थीं?' देवदास क्या जवाब देते? गांधीजीके दिलमें अुन बहनके लिअे अितना विश्वास था कि अुनके बारेमें कोअी भी दोषारोपण करना विद्यार्थियोंके लिअे धर्म-संकट था। अिस प्रश्नसे देवदास

रोने लगे। हिचकियां भरने लगे। गांधीजीने कहा 'देवा, तू अितना ज्यादा रो क्यों रहा है? जो सच हो सो कह दे।' देवदासने हिचकियां भरते भरते कहा 'मैं आपसे सच बात कह दूंगा। परन्तु आप मुझे झूठा मानेंगे। अिसलिअे मुझे रोना आता है।' गांधीजी बोल अुठे 'अब तो मुझे विश्वास है कि तू सच ही कहेगा। जो सच हो वही कह दे।' देवदासने दृढ़ताके साथ बताया 'बहनको पकौडियां खाते मैंने देखा है।'

बस अब क्या हो सकता था? गांधीजी तो क्षणभरके लिअे विचार-सागरमें डूब गये। अिस हद तक विद्यार्थी झूठ बोलते हों तो यह भयंकर बात है। और यदि वह बहन झूठ बोलती हो तब तो अिससे भी बड़ी भयंकर बात है। सारे खंडमें खामोशी छा गअी और अुदासी फैल गअी। सब अिस विचारमें पड़ गये कि घड़ीभर बाद क्या होगा। अितनेमें गांधीजीने निश्चयात्मक शब्दोंमें कहा 'मेरे सामने सच बात तो आनी ही चाहिये। अिसलिअे जब तक दोनों पक्षोंकी तरफसे यह निर्णय नहीं कर दिया जाय कि विद्यार्थी सच्चे हैं या बहन सच्ची है, तब तक मैं अनशन-व्रत लूंगा।' यह फैसला सुनकर हम अैसे अवाक हो गये मानो हम पर बिजली गिर गअी हो। अिसका क्या परिणाम होगा, अिस पर भले-बुरे तर्क-वितर्क होने लगे। श्री कैलनबैक तो भारी चिन्तामें पड़ गये। रातके साढ़े नौ बज गये। गांधीजीने मुझसे पूछा 'तुम्हारा क्या खयाल है?' मैंने कहा 'वह बहन अैसा नहीं कर सकती, और यदि भूलसे अपराध हो गया हो तो अिस हद तक नहीं छिपा सकती। मेरा यह अनुभव है कि देवदास कअी बार झूठ बोला है। लेकिन आज अुसके कहनेका मुझ पर दूसरा असर हुआ और मैं भी अब शंकाशील बन गया हूं। फिर भी मैं पक्की जांच करूंगा।' फिर सब सो गये। मैंने और मगनलाल गांधीने रातके बारह बजे निर्दोष विद्यार्थियोंको अेक अेक करके गहरी नींदसे अुठा कर पूछना शुरू किया। अुन सबकी तरफसे अेक ही तरहकी जानकारी मिली। और हमें भी विश्वास हो गया कि विद्यार्थियोंका कहना सच है।

परन्तु जब तक वह बहन खुद गांधीजीके सामने स्वीकार न करे, तब तक क्या हो सकता था? अन्तमें भगवानने अुन बहनको सच बात कहनेकी हिम्मत दी। दूसरे दिन दस बजे अुन बहनने गांधीजीके पास जाकर और अुन्हें प्रणाम करके अपना दोष स्वीकार कर लिया।

यह प्रसग पढकर वहुतोको आश्चर्य होगा। वे सोचेंगे कि अैसे छोटे छोटे मामलोंमे गाधीजीका अुपवास करना अजीव वात है। परन्तु यह छोटासा दिखाअी देनेवाला प्रसग कितना गभीर था, यह तो फिनिक्सके वातावरणमे रहनेवाला ही समझ सकता है।

अिस प्रसगके वाद दूसरे दिन गाधीजी जोहानिसवर्ग चले गये थे। वहासे अिस सम्वन्धमे अुन्होने मुझे यह पत्र लिखा था

"भाअीश्री रावजीभाअी,

"तुम पर किसी पूर्वजन्मका ॠणानुवन्ध होगा। तुमसे अितना प्रेम पानेका मुझे क्या अधिकार हो सकता है? फिर भी कल जव मै भारी सकटमे पड गया, तव तुमने जो प्रीति दिखाअी अुसका मै वर्णन नही कर सकता। अिसलिअे मै चाहता हू कि तुम दोनोंकी आत्मा अधिक तेजस्वी वने, और तुम अैसी कामना करना कि अुस प्रीतिको अनुभव करनेसे अपनी आत्माकी शक्तिके वारेमे मेरा विश्वास अधिक दृढ हो। सीधे त्रैराशिकके अनुसार यह जवाव मिलता है कि अेक छोटीसी प्रतिज्ञा यानी तपश्चर्याके आदरसे जव अितना हो सकता है, तो की हुअी तपश्चर्या कितना कर सकती है अिसका कोअी हिसाव ही नही हो सकता। और वात भी अैसी ही है। मैंने प्रतिज्ञा न ली होती तो शुद्ध प्रेमका अनुभव न होता और जिस शीघ्रतासे सत्य प्रकट हो गया और छोटे वच्चे निर्दोष सावित हुअे वैसा भी न हो पाता।

"चि० को मैंने जिस अूचे दर्जेकी समझा था वहासे अुसे अुतरना पडा है। फिर भी मै यह जरूर मानता हू कि वह पुण्यात्मा है और अुसमे सद्‌गुण भी वहुत है। अुनका विकास करना हमारा फर्ज है। अुसका पाप और काम तो वहुत भारी था। अुसकी अुसे याद न आये अैसा व्यवहार हमे अुसके साथ करना है। अुसे घरके कामकाजमे प्रवीण होनेका प्रोत्साहन देना। यह देखते रहना कि कोअी वच्चे अुसका अपमान न करे। रातकी कथा जारी रखना। वच्चोको पाच वजे अुठानेका भार रा पर समझूगा।

म की तवीयतके समाचार नियमित रूपसे मिलने चाहिये।

मोहनदासके यथायोग्य"

१२

गांधीजीके अुपवास

गावीजीने दक्षिण अफ्रीकामे सत्याग्रहकी जो लडाअी आरम्भ की थी, अुसमे अुनकी दृष्टि राजनीतिककी अपेक्षा धार्मिक अधिक थी। सम्पूर्ण सत्याग्रह मम्पूर्ण आत्मशुद्धिके विना नही हो सकता। और सपूर्ण सत्याग्रहके साथ ही अुसकी सम्पूर्ण विजयकी कल्पना जुडी हुअी है। अिस प्रकार कोअी भी लडाअी मत्याग्रहके जरिये लडनेमें आत्मशुद्धिकी जरूरत पहली है। अत मत्याग्रह मूल रूपमे ही धर्मवृत्ति है, अुपवास और प्रार्थना आत्मशुद्धिके मुख्य सावन है। अैमे अुपवास दो कारणोमें हो सकते है मयमके कारण और प्रायश्चित्तके कारण। दैनिक जीवनमे हम अधिकसे अधिक शुद्ध किस तरह हो, अिमके अुपायके रूपमे मन और हृदयके निरकुश जोशको दवानेके लिअे जो अुपवास होते है वे सयमके हेतुसे किये गये अुपवास कहलाते है। और मन तथा हृदयके आत्महितसे विरुद्ध जानेवाले कार्योमें या प्रलोभनोमे पडनेके कारण जो दोप हो जाते है, अुनके प्रायश्चित्तके खातिर होनेवाले अुपवास प्रायश्चित्तके हेतुसे किये गये अुपवास कहलाते है। हम देख चुके है कि गावीजीने भोजनके सारे प्रयोग सयमके हेतुसे शुरु किये थे। वादमे वे अुससे आगे वढे। अुन्होने अेकाशन और निराहार अुपवास भी शुरू किये। अिस तरहके निराहार अुपवास अुन्होने सयमकी दृष्टिसे अेक साथ नही किये। अैसे अेक साथ किये जानेवाले अुपवास सयमकी दृष्टिसे अुचित है या नही, अिमका विचार अुन्होने तो किया ही होगा। परन्तु अिस वारेमें मेरा खयाल यह है कि जीवन सतत दूसरोकी सेवामे ही लगा रहता हो तो सेवाका काम ही सयम है। सयमके खातिर अुपवास करके सेवामें लगे हुअे जीवनमे जरा भी विक्षेप डालना अुन्हे अुचित नही लगा होगा। अिस-लिअे अमुक समयके लिअे नियमित अेकाशन और अेकादशीके अुनके अुपवास सयमकी दृष्टिसे किये गये माने जायगे। अैसे अुपवास गावीजीने अेक साथ किये हो, यह मेरी जानकारीमे नही है।

प्रायश्चित्तके खातिर अेक और अेक साथ अनेक अुपवास गाधीजीने कअी वार किये है। अैसे प्रायश्चित्तके रूपमें अुन्होने आज तक जितने अुपवास किये है, अुनके चार हिस्से किये जा सकते है

(१) अपने आत्म-स्खलनके कारण प्रायश्चित्तके रूपमे।

(२) अपने जीवनके असरमें रहनेवाले आप्तजनोंका आत्म-स्खलन असह्य हो अुठने पर।

(३) जिस समाजको अपना कार्यक्षेत्र बनाया है और जो समाज अपने जीवनके असरमें माना जाता है, अुस समाजके गंभीर आत्म-स्खलनके कारण।

(४) जिस समाजको अपना कार्यक्षेत्र बनाया है और जो समाज अपने जीवनके असरमें माना जाता है, अुस समाजके प्रति किसी व्यक्ति या किसी समाजकी तरफसे होनेवाले असह्य अन्याय और अत्याचारके कारण।

अूपरके चार भागोंमें से पहले दो भागके अुपवास गांधीजीने दक्षिण अफ्रीकामें किये थे। प्रथम अवसर सात दिनके अुपवासका था। दूसरा अवसर चौदह दिनके अुपवासका था। आश्रममें रहनेवाले अेक भाअी और अेक बहनके गंभीर पतनसे गांधीजीको भारी दुःख हुआ था। अिस कारणसे दोषी आप्तजनोंके लिअे अुनका हृदय अुबल पडा। परन्तु गांधीजीने अिस अुबालको दबा दिया। अपने पास रहनेवाले आप्तजनोंके हृदयकी मलिनताके लिअे मैं ही जिम्मेदार हूं, अिसमें कहीं न कहीं गहराअीमें मेरी आत्माकी अशुद्धता ही होनी चाहिये, नहीं तो शुद्ध स्फटिक मणिमें मैल कभी छुपा नहीं रह सकता। अगर मैल छिपा रहा तो स्फटिक मणिके स्वयं शुद्ध न होनेके कारण ही छिपा रहा। अिस दृष्टिसे सात दिनके अुपवासका निश्चय करके गांधीजीने दोषी भाअी-बहनोंके प्रति अपना रोष शान्त किया और अुन पर दया बरसाअी। अिस सात दिनके अुपवासमें श्री कैलनबैक भी शामिल थे। वे गांधीजीके जीवनके अेक महत्त्वपूर्ण अंग बन गये थे। अिसलिअे अुनके अतिशय आग्रहके कारण गांधीजीने अुन्हें अुपवासमें शामिल होनेकी अनुमति दी। ये सात दिनके अुपवास रोजके कार्यक्रममें जरा भी बाधा पडे बिना पूरे हो गये।

ये सात दिनके अुपवास होनेके लगभग छह महीने बाद दूसरे चौदह अुपवास करनेका अवसर अुपस्थित हुआ। यह प्रसंग मेरी दृष्टिसे तो बहुत ही छोटे कारणसे अुपस्थित हुआ जान पडा। अेक व्यक्तिके, जिसके लिअे गांधीजीने बडी जोखिम अुठाअी थी, चरित्रके बारेमें गांधीजीको बडा विश्वास था। परन्तु अुस व्यक्तिका भीतरी जीवन बहुत ही मलिन मालूम हुआ। अतः गांधीजीने अुसके लिअे प्रायश्चित्त किया और यह आशा रखी कि कमजोरीके कारण अुसमें जो मलिनता आ गयी होगी वह अिससे नष्ट हो

जायगी। परन्तु अन्तमें गाधीजीको विश्वास हो गया कि अुस व्यक्तिकी मलिनता नष्ट नही हुअी है, वह अुन्हें चालाकीमें धोखा देता है। अिसलिअे गाधीजीको निराशा हुअी। जिसके बारेमें अुन्होने बहुत बडी आशा रखी थी, अुसकी अैसी अधोगतिका कारण अुन्होने अपनेको माना। अुन्होने फिनिक्समे चौदह अुपवास करनेका निश्चय किया अुससे पहले कितने ही समयसे अुनके दिल पर बडे आघात लगते रहे थे। हमारी नजरमें बहुत छोटा अपराध अुनके लिअे बडे दुखका कारण बन जाता था और हृदयकी क्षति या हृदयकी मलिनताको वे जरा भी बरदाश्त नही कर सकते थे। वे दिन ही अैसे थे। परन्तु वे दिन जितने दुखद थे, अुतने ही स्वानुभवके, आत्म-निरीक्षणके और ज्ञानवृद्धिके भी थे। सवत् १९७० के चैत्र वदी १३ के रोज अुन्होने अपने हृदयकी पीडा अिस प्रकार व्यक्त की थी

"आज तक मेरा कोअी भी दिन अिस तरहकी मानसिक वेदनामें नही गुजरा होगा। मेरा बोलना, मेरा हसना, मेरा चलना, मेरा खाना और मेरा काम करना सब आजकल यत्रकी तरह ही होता है। मै कुछ भी लिख नही सकता। अैसा मालूम होता है जैसे मेरा हृदय सूख गया हो। आजकलकी मेरी पीडाका कोअी पार नही है। कअी बार तो जेबसे छुरी निकालकर अपने पेटमें भोक लेनेका मेरा विचार हुआ। कभी मैंने सामनेकी दीवारसे सिर फोड लेनेका विचार किया और कभी कभी अिस ससारसे भाग जानेका विचार किया। परन्तु बादमें विचार हुआ, 'अरे भले मानस! मूर्ख जीव! अिस तरह तू क्यो पागल हो रहा है? अैसी मानसिक वेदनाके समय भी तूने सतुलन कायम नही रखा, तो तुझे थोडा भी जो ज्ञान मिला है वह किस कामका?' अिस तरहके विचारोमें आजकल मै अपने दिन बिता रहा हू। मेरे जो हितेच्छु है अुन्हे यह हकीकत मुझे अब कह देनी है। 'देखो भाअी, जे   ने घोर पाप किये है।'

"यह सब जाना तब मुझे विचार आया कि अपात्र पर विश्वास रखकर मैंने जो पाप किया अुसका प्रायश्चित्त मुझे करना ही चाहिये। १५ दिनके अुपवास करनेकी प्रतिज्ञा लेते हुअे मै हिचकिचाया। बाका खयाल आया। मै १५ दिन न खाअुगा तो बा जरूर मर जायगी। अिस डरसे ही फिलहाल मैंने वह विचार छोड दिया। परन्तु बादमें निश्चय किया कि जे ...को फी ..जाना ही चाहिये। वहा जाकर रहना ही अुसका मुख्य

धर्म है। यहा रहनेमें अुसका कल्याण नही है। पता नही मुझमे क्या बात है। मुझमें अैसी निर्दयता है——दूसरोके कहे अनुसार——कि दूसरा आदमी मेरा मन रखनेके लिअे मजबूर होकर काम करता है और जो काम नही हो सकता अुमे भी करनेकी कोशिश करता है। और जब अैसा करनेकी अुसकी शक्ति नही होती तो अन्तमे कृत्रिमता धारण करके मुझे धोखा देता है। गोखलेजीने भी मुझे बहुत बार कहा था "तुममे अितनी कठोरता है कि दूसरे आदमीको तुम कपा देते हो और वह आदमी डरके मारे या तुम्हारी अिच्छा पूरी करनेकी कोशिशमे मजबूरीसे काम करता रहता है और अन्तमे अशक्त, मनुष्य कृत्रिमता धारण कर लेता है। तुम मनुष्यो पर असह्य भार डाल देते हो। मैं खुद भी तुम्हारा काम शक्ति न होने पर भी मजबूरन् करता हू।"

अेक दिन सुबहके साढे दस बजे सब खाना खाने बैठे। मै और गाधीजी सबको परोस रहे थे। परोम कर मै भोजनालयमे गया। पीछे पीछे गाधीजी आये और बोले "अुमने आज भयकर झूठ बोला और मुझे अुससे कहना पडा कि अब दुबारा अिम तरह जान-बूझ कर झूठ बोलोगे तो मै चौदह दिनका अुपवाम करूगा।" अिस बातको चौबीस घटे होने आये। फिर खाने और परोमनेका अवसर आया और गाधीजी बोल अुठे " ने गजब किया। आज भी अुसने जान-बूझकर झूठका प्रयोग किया। अब मुझे चौदह दिनका अुपवास करना ही पडेगा।"

मुझ पर तो जैसे वज्र गिर गया। मै स्तब्ध हो गया। गाधीजीने तुरन्त मुझे सचेत कर दिया। हमारे दोके सिवा रसोअीघरमे और कोअी नही था। बा तो बीमार थी, अिमलिअे बिस्तर पर थी। गाधीजीने मुझसे कहा "तुम खा लो। फिर मगनलाल और छगनलालको बुलाओ।" मैने कहा "अभी ही बुला लाता हू। मुझे खाना नही है।" गाधीजीने मुझे तुरन्त वापस बुला लिया और बोले "मेरी आज्ञा है, तुम खा लो। तुममे से किमीको अिम बारेमें विचार नही करना चाहिये। किसीको मेरे साथ अुपवाम करके अपना नित्यकार्य बिगाडना या अुसमे त्रुटि नही करनी चाहिये। सबको यह सावधानी रखनी है कि हमारे कार्यक्रममे जरा भी खलल न पडे। अिसलिअे तुम खाने बैठो।" गाधीजीने मुझे जबरन् खाने बैठा दिया, यो कहिये कि मुझ पर जुल्म किया। मैने तर्क किया "परन्तु आप अिम

तरह हर किसी बात पर अुपवास करें, अिसका क्या अर्थ है? चौदह दिनके अुपवास किसलिअे? हमारे पापोंके लिअे आप क्यों अुपवास करें? आपके हृदयकी छाया अितनी ठंडी है कि अुसकी शीतलतामें भयंकर जहरीला नाग भी पल सकता है। अुसके पापके कारण आप भूखों मरें, यह कहांका न्याय है?" गांधीजी मेरे हृदयकी पीडाको समझ कर हंसे और गंभीर भावसे बोले :

"हर कोअी झूठ बोले या मुझे धोखा दे, तो मुझे चोट नहीं लगती है। अुसके लिअे मैं अपनेको दोषी नहीं मानता। चौदह दिनका अुपवास करनेका मैंने जो निश्चय किया है, वह किसीके पापका प्रायश्चित्त करनेके खातिर नहीं किया है, बल्कि कल मैंने जो यह प्रतिज्ञा की थी कि 'अब दुबारा अिस तरह तुम जान-बूझकर झूठ बोलोगे तो मैं चौदह दिनका अुपवास करूंगा,' अुस प्रतिज्ञाके पालनके खातिर मुझे अुपवास करना पड़ेगा। परन्तु जिन्हें मैं अपना मानता हूं, जिनमें मैंने बड़ी आशाअें रखी हों, जिन पर मुझे बड़ा विश्वास हो और जिनके लिअे मैंने कअी तरहके खतरे अुठा कर अपनी आत्माको अुंडेला हो, वही व्यक्ति असत्य काममें लेकर मुझे हमेशा धोखा देते रहें, तो अिसमें मेरा ही पाप है, यह मुझे दीपककी तरह स्पष्ट मालूम होता है। मुझमें पाप न हो तो अैसे पापीका पाप मैं क्यों न देख सका? पत्थर और हीरेका फर्क जौहरीको करते आना ही चाहिये। अपने जिन आदमियोंको मैं अपना मानता हूं, अपने हृदयका प्रतिबिम्ब समझता हूं, अुनमें यदि असत्य हो तो मुझमें असत्य होना ही चाहिये। यह मेरा जीवन है। अिसके खातिर मैं जीता हूं। तुम्हें तो मुझे हिम्मत बंधानी है। तुम्हें होशियार रहकर मैं अशक्त हो जाअूं तब मेरी सेवा करना और अिस तरहसे काम करते रहना है कि हमारे नित्यकार्यमें कोअी कमी न आये। मेरे पीछे अुपवास करके, मेरी मुश्किलें बढ़ाकर, मेरे अुपवासमें मुझे चिन्तातुर बनाना तुम्हारा कर्तव्य नहीं है।"

मैं चुप रहा। जैसे तैसे कुछ खाया और बादमें मगनलाल, छगनलाल और मिस्टर वेस्ट वगैराको बुला लाया। गांधीजीने अुन्हें अपना निश्चय बताया। अूपरके जैसी चर्चा भी अुनके साथ हुअी। परन्तु सब जानते थे कि गांधीजीके निश्चयका अर्थ होता है भीष्म-प्रतिज्ञा।

अुन्होंने चौदह दिनके अुपवास शुरू किये। नीमके पत्तों या रससे शरीरकी गरमी शान्त हो कर मनुष्यकी वृत्तियां दबती हैं, अैसे किसी खयालसे

गाधीजीने अुपवास करनेसे पहले यह सकल्प किया कि नीमकी कोमल पत्तिया अमुक मात्रामे दिनमें दो वार खाअूगा। अिस प्रकार चार दिन हुअे कि अुनके पेटमें दर्द अुठा और असह्य वेदना होने लगी। पत्तिया खाना तो अुन्होने वन्द कर दिया, परन्तु दर्द नही मिटा। पाच ही दिनमे गाधीजी चौदह दिनके अुपवासके अन्तमे जितने अशक्त दीखने चाहिये अुतने अशक्त हो गये। अिन चौदह दिनोमें मै हमेशा अुनके पास ही रहा और मुझे अुनकी सेवा करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ।

परन्तु हम सवको यह सूचना कर दी गअी थी कि अिस अुपवासके वारेमें हम किसीसे वात न करें और यह वात फिनिक्ससे वाहर न जाय। और यह भी समझ लिया गया था कि फिनिक्समे कोअी मिलने आये तो हम अुससे भी खुद होकर यह वात न कहे। अुपवासकी वात वाहर चली जाय तो दक्षिण अफ्रीका फिनिक्समे ही अुमड आये और हाहाकार मच जाय। दक्षिण अफ्रीकामे, जहा खूव खा-पी कर मौज करनेका आदर्श रखनेवाले लोग रहते हो, चौदह दिनके अुपवासकी वात सुनकर स्नेहियोका फिनिक्सकी तरफ कूच शुरू हो जाना स्वाभाविक था। अिस प्रकारकी चुप्पीके कारण शान्तिसे गाधीजीके अुपवास पूरे हुअे। अतिम अुपवासके दिन तो अुनसे विस्तरसे अुठा भी नही जाता था, अितनी कमजोरी आ गअी थी। अिस मौके पर मि० कैलनवैक जोहानिसवर्गमें थे। अुन्हें चार दिन वाद खवर मिली। वे तो अिस चौदह दिनके अुपवासकी वात जानकर व्याकुल हो अुठे। तुरन्त अुन्होने गाधीजीको तार दिया और वहासे फिनिक्स आनेको निकल पडे। तारके दूसरे दिन श्री कैलनवैक शामकी गाडीसे कोअी चार वजे अुतरनेवाले थे। दो ढाअी वजे गाधीजी विस्तरमे पडे पडे वोले "जिसे मेरे साथ स्टेशन चलना हो वह तैयार हो जाय। प्रेस या शालाके कामवाला कोअी न आये।" यह कहकर वे विस्तरसे अुठे। हाथमे लाठी ली, चप्पल पहने और चलने लगे। मै भी साथ साथ गया। स्टेशन पहुचे और गाडी आ गअी। श्री कैलनवैक गाडीसे अुतरे। गाधीजीको स्टेशन पर देखकर वे तो चकित हो गये। वे गाधीजीसे मिले और वोले "मैने माना था कि आप अभी विछौने पर ही पडे होगे।" गाधीजी हसते हसते वोले "हा, था तो विस्तर पर ही। परन्तु यह मुझसे सहन नही हुआ कि तुम मुझे विस्तर पर पडा समझकर वहासे यहा भागे आ गये। मेरे लिअे अितनी अधिक चिता क्यो? अितना ज्यादा मोह

कैसा ? मै तीन मील चलकर तुम्हारे सामने आया हू, सो यह बतानेको कि मै बिछौनेमे पडा नही रहा।"

श्री कैलनबैक बहुत खुश हुअे और सब लोग बाते करते करते आश्रमकी तरफ चलने लगे।

परन्तु जो सदा ही आत्म-निरीक्षण करते हो और जिनके हृदयमे सतत मथन चलता रहता हो, अुनका प्रत्येक क्षण अमूल्य होता है। अिस प्रकार गाधीजीके लिअे कौनसा प्रसग क्रान्तिकारक सिद्ध होगा, यह नही कहा जा सकता था। कोअी भी छिछली प्रवृत्ति या बाहरी ढोग देखकर अुन्हे बेहद दु ख होता था। अूपरके प्रसगके बाद अैसा कुछ देख-जानकर शामकी प्रार्थनाके बाद सबको सबोधित करके अुन्होने नीचे लिखे अुद्‌गार प्रकट किये

" तुम गीताजीके श्लोक कठस्थ कर लोगे, तो अिससे मै प्रसन्न नही होअूगा। तुम अितिहास पढो या न पढो, गणित करो या न करो, सस्कृत पढो या न पढो, अिसकी मुझे कोअी चिन्ता नही। परन्तु यह जरूरी है कि तुम सयम-वृत्ति धारण करो। यही मुझे चाहिये। मै मनुष्यका गुलाम बनना चाहूगा, परन्तु अपने मनका गुलाम नही बनना चाहता। मनका गुलाम बनने जैसा कोअी अधम पाप नही है। अिसलिअे तुम समझकर मनको नियममे रखना सीखो। अैसी स्थितिमे ही तुम मेरे पास रह सकोगे, नही तो मुझे किसीकी जरूरत नही। मै तुममे से किसीको भी सिखानेका अभिमान नही रखता। मेरे पास अेक शिष्य है, जिसे सिखाना बडेसे बडा काम है। अुसे शिक्षा देकर ही मै तुम्हारा, हिन्दुस्तानका या मानव-जातिका भला कर सकूगा। और वह मै खुद ही हू, जिसे मै अपना मन कहता हू। अिस प्रकार जो अपनेको अपना शिष्य बनायेगे, वे ही यहा रहनेके लायक है। जो यहाके जीवनको पचा न सके, अुनका यहा न रहना ही बेहतर है। वे यहासे अलग हो जाये तो ठीक ही करेगे। लेकिन समझे बिना (हेतुपूर्वक न करके यत्रकी तरह) काम करना पाप है। मै अैसा नही चाहता।"

स्नेही, त्यागी या ज्ञानी?

सब कोअी यह कहते है कि गाधीजीमे कुछ विशेपता है। जो अुनके दर्शन करने जाता है, अुस पर वे जादू डाल देते है। जो अुनके साथ झगडा करने जाता है, अुसे वे जीत लेते है। जो अुनके प्रति स्नेह रखते है, अुनके स्नेहमें वे ओतप्रोत हो जाते हैं। अुनमे स्नेहकी अितनी जबरदस्त शुद्धता और तीव्रता है कि अुनके सपर्कमें आनेवाला अपने-आपको अुनमे समा देना चाहता है। सिर्फ अुन लोगोके हृदयकी कमजोरी ही अिसमें बाधक होती है। गाधीजीके स्नेहमे मोह नही होता। आम तौर पर हम मोहको स्नेह और प्रेमके नामसे पुकारते है। हमारे स्नेहमे देहके प्रति आकर्पण होता है। यम, नियम और सयमसे आत्म-निरीक्षण करके जिसने आत्म-साधना की हो, वह मोह यानी देहके आकर्पणवाले स्नेह और शुद्ध स्नेहका भेद जान सकता है और अुसे परख सकता है। स्नेह तो हमेशा शुद्ध ही होता है। परन्तु हमारे स्नेहका स्तर अितना मलिन हो गया है कि हम स्नेह और शुद्ध स्नेह जैसे भेद करते है। स्नेह हमेशा श्रेय होता है, प्रेय नही होता। अुसमें आत्माका चिरस्थायी श्रेय होता है। अुसमे क्षणिक शारीरिक लालसा और मनकी अुत्तेजित भावनाओके लिअे कोअी स्थान नही होता। गाधीजीका स्नेह आत्माका श्रेय करनेवाला है। अनेक भक्तोने ओश्वरसे अैसा शुद्ध स्नेह मागा है, अिस ससार या त्रिलोककी धन-सपत्तिका या अधिकारका अनादर करके प्रभुके प्रति या आप्तजनोके प्रति शुद्ध स्नेह चाहा है। गाधीजीके नीचे दिये गये पत्र हमें अैसे ही शुद्ध, पवित्र स्नेहकी झाकी कराते है। सच्चा स्नेही सच्चा त्यागी है, सच्चा ज्ञानी है।

सन् १९०८ मे सत्याग्रहकी लडाअीमें गाधीजीको दूसरी बार जेलकी सजा हुअी। अुस समय पूज्य कस्तूरबा फिनिक्समे खूब बीमार थी। मिस्टर वेस्टने कस्तूरबाकी भयकर बीमारीके बारेमे गाधीजीको तार दिया। अिस पर गाधीजीने पूज्य कस्तूरबाको नीचे लिखा पत्र भेजा। गाधीजीकी अुम्र अुस समय चालीस बरसकी रही होगी।

"तुम्हारी तबीयतका तार मि० वेस्टने आज भेजा है। मेरा हृदय विदीर्ण हो रहा है, मै रो रहा हू। परन्तु अैसी स्थिति नही है कि तुम्हारी सेवा करने आ सकू। सत्याग्रहकी लडाअीमे मैने सब कुछ अर्पण कर दिया है। मै वहा आ ही नही सकता। जुर्माना देकर ही आ सकता हू। और जुर्माना तो दिया ही नही जा सकता। तुम जरा हिम्मत रखो और ठीक ढगसे खाओ-पियो तो ठीक हो जाओगी। फिर भी यदि मेरे भाग्यमे यही लिखा होगा कि तुम चली जाओ, तो मै अितना ही लिखता हू कि तुम वियोगमें भी मेरे जीते-जी ही चली जाओ तो बुरा नही होगा। तुम पर मेरा प्रेम अितना अधिक है कि तुम मरने पर भी मेरे लिअे जिन्दी ही रहोगी। तुम्हारी आत्मा तो अमर है। मै तुम्हे विश्वासके साथ कहता हू कि यदि तुम्हे जाना ही पडा, तो तुम्हारे बाद मै दूसरी स्त्री नही करूगा। मैने तुम्हे कभी यह कहा भी है। तुम अीश्वर पर आस्था रखकर प्राण छोडना। तुम मरोगी तो वह भी सत्याग्रहको शोभा देनेवाला ही होगा। मेरी लडाअी सिर्फ राज-नीतिक नही है। यह लडाअी धार्मिक है। अिसलिअे अत्यन्त शुद्ध है। अिसमे मरे तो क्या और जिये तो क्या? आशा है तुम भी यही समझकर जरा भी दुखी न होगी। अैसा वचन मै तुमसे चाहता हू।"

अूपरका पत्र लिखनेके लगभग पाच सालके लम्बे अर्सेके बाद गाधीजी अेक दिन सुबह फिनिक्समे खेतीका काम कर रहे थे। अुस समय डाक आअी। डाकमे अेक तार था। वह तार अुन्होने डाक पढते समय पढा और अपने पास अिस तरह रख दिया जैसे थोडा भी महत्त्वका समाचार न हो। आश्रमका सारे दिनका कार्यक्रम पूरा हो गया। अुनके साथ काम करनेवालोको पता भी नही चला कि आज अुनके दिलमे गभीर अुथल-पुथल मची हुअी है। रातको प्रार्थनाके बाद सारे दिनकी महत्त्वपूर्ण घटनाओके बारेमे या महत्त्वके समाचारोके विषयमे बाते हो रही थी। अुस समय गाधीजी बहुत ही गभीर हो गये और अत्यन्त दु खपूर्वक अुन्होने हमारे सामने नीचेके अुद्‌गार प्रगट किये

"मुझ पर बडीसे बडी विपत्ति आ पडी है। मै समझता हू कि अन्त समय तक मेरा विचार करते हुअे मेरे भाअी कल मर गये। मुझसे मिलनेकी अुनकी अिच्छा कितनी अुत्कट थी! मै भी अिसीलिअे अपना काम जल्दी खतम कर रहा था कि जैसे तैसे जल्दी हिन्दुस्तान चला जाअू, अुनके चरणोमें

प्रणाम करू और अुनकी सेवा-शुश्रूषा करू। परन्तु होना कुछ ओर ही था। अब तो मुझे विधवाओके कुटुम्बमे ही जाना पडेगा और वह कुटुम्ब भी मेरे ही आसरे होगा। तुम हिन्दुस्तानकी कौटुम्बिक व्यवस्थाको न समझनेके कारण अिस प्रसगको समझ नही सकते। किसी भी प्रकार हिन्दुस्तान जानेकी मेरी अिच्छा अब दिनोदिन प्रबल होती जा रही है। और अब भी निश्चित कौन कह सकता है? मेरी यह अिच्छा पूरी होगी या नही, अिस बारेमे मुझे अब भी शका है। फिर भी मुझे अिस यात्राके लिअे तैयारी करनी चाहिये और परिणामके लिअे शान्तिसे सर्व-शक्तिमान प्रभु पर विश्वास रखना चाहिये।"

अिस घटनाके बाद गाधीजी केपटाअुन गये। अुस समय यूनियन पार्लियामेन्टमे अिण्डियन रिलीफ बिल पेश हुआ था। अुस समय भी गाधीजीके हृदयमे अपने भाअीकी मृत्युसे जो विचार पैदा होते थे, वे अुन्होने जोहानिसबर्गमे अेक साथीको पत्रमे बताये थे। वे ये है

"अैसे आघातोसे मनुष्यमे मृत्युके बारेमे ज्यादा निर्भयता आती जाती है। अिस घटनासे मेरे दिलमे अितनी खलबली किसलिअे मचनी चाहिये? अैसे शोकमे स्वार्थकी छाया है। यदि मै मृत्युके लिअे तैयार होअू और मृत्युको स्वागत-योग्य प्रसग समझू, तो मेरे भाअीका मर जाना कोअी आपत्ति नही है। मृत्युसे हमे डर लगता है, अिसलिअे हम औरोकी मृत्यु पर रोते है। शरीर नाशवान है और आत्मा अमर है, यह जानते हुअे भी मै शरीर और आत्माके अलग होने पर शोक कैसे कर सकता हू? परन्तु अिस सुन्दर और आश्वासनपूर्ण सिद्धान्तमे सच्चा विश्वास हो, तो ही यह स्थिति प्राप्त होती है। जिसे अिसमे श्रद्धा हो, अुसे शरीरका लालन-पालन नही करना चाहिये, बल्कि अुसका नियता बनना चाहिये। अुसे अपनी शारीरिक आवश्यकताअे अैसी रखनी चाहिये कि जिससे देह देही पर अधिकार न करके अुसके अधीन रहे। औरोकी मृत्युके लिअे शोक न करना लगभग शाश्वत शोककी स्थिति स्वीकार कर लेना है। कारण, शरीर और आत्माका सम्बन्ध स्वय ही शोकप्रद है। अिन विचारोका आजकल मुझ पर प्रभुत्व है। अिस समय अैसा दूसरा पत्र मुझसे लिखा नही जायगा। यह तो अपने-आप लिखा गया है। अिसलिअे मि० पोलाकको पहुचा देना और म को भी पढनेको देना। और अुसके बाद मि० वेस्ट और दूसरोके पढनेके लिअे छ के पास भी भिजवा देना।"

अिसी समय मुझ पर मानसिक आपत्ति आ पडी। मै अपने माता-पिताके वात्सल्यपूर्ण पत्रोमे दीन हो गया। मैंने अपनी दशाका वर्णन करनेवाला अेक पत्र गाधीजीको केपटाअुन लिखा। अुसके जवाबमे अुन्होने जो पत्र मुझे लिखा अुस परसे गाधीजीकी यह विचारधारा हमें मालूम हो सकेगी कि त्यागी ही सच्चा स्नेही है, और सच्चा स्नेह हमे स्वार्पणके मार्ग पर ले जाता हे। वह पत्र यहा देता हू

"रामचद्रजी वनवास जाने लगे तव दशरथ राजाने अुनसे कहा कि कैकेयीको दिये हुअे वचनकी कोअी परवाह नही, वचन-भग होने पर भी तुम वनमे न जाओ। लौकिक और स्थूल पुत्रप्रेमसे पैदा होनेवाली अिस अिच्छाका अनादर करके रामचद्रजी वनमे गये और सच्ची पितृभक्ति करके अुन्होने राजा दशरथका और अपना भी नाम अमर कर दिया। हरिश्चन्द्रने अपनी स्त्रीको वेचकर और रोहितके गले पर तलवार रखने तकको तैयार होकर स्त्रीभक्ति और पुत्रप्रेम प्रकट किया। प्रह्लादने पिताकी आज्ञाका अुल्लघन करके पितृभक्ति की और अुनका अुद्धार किया। मीराबाअीने राणा कुभाको छोडकर राणा कुभाको ही अपना भक्त वना लिया। दयानदने अपने माता-पिताके पाससे भागकर, की हुअी सगाओको छोडकर, अपने पीछे भेजे हुअे आदमियोके हाथसे भी छूटकर मातृभक्ति और पितृभक्ति की। वुद्धदेव अपनी जवान स्त्रीको सोती हुअी छोडकर चल दिये।

"अैसे बहुतसे अुदाहरण हमे मिलते हैं। अुनका चिन्तन करके तुम पर जो सकट आ पडा है अुसमे अन्तर्विचार करके सच्ची नीतिके अनुसार जो अुचित मालूम हो वही करना। श्रवणके लिअे सूक्ष्म और स्थूल भक्ति अेक ही प्रवाहकी थी, अिसलिअे हम अुसका अुदाहरण लेकर प्राय यह नही देख पाते कि सही वस्तु क्या है। सत्य मार्ग पर चलनेवालेको सकटके समय हमेशा सत्यमार्ग सूझ जाता हे। वैराग्यके पद वगैरा हम जो पढते हैं, वे अगर धर्म-सकटके समय अुपयोगी सिद्ध न हो, तो यही माना जायगा कि हमने अुन्हे सिर्फ तोतेकी तरह रट लिया है। अुन पर विचार हमने विलकुल नही किया। गीताजी पढकर भी यदि वह अतसमय हमारी मदद न करे, तो गीताजीका पढना न पढना वरावर है। अिसीलिअे मै हमेशा कहता रहा हू थोडा पढो। परन्तु जो पढो अुस पर विचार करो और अुसका रहस्य समझकर अुसके अनुसार आचरण करनेको तैयार रहो।

"स्नेहियोके प्रति वीतराग स्थिति अुत्पन्न हो जाय, तभी हृदय सचमुच दयावान वनता हे और स्नेहियोकी सेवा करता है। वाके प्रति मै जिस हद तक वीतराग वना हू, अुसी हद तक अुमकी सेवा अधिक कर सकता हू। वुद्धने अपने माता-पिताको छोडकर अुनका भी अुद्धार कर दिया। गोपीचन्दने वैराग्य लेकर अपनी माता पर अत्यन्त शुद्ध प्रेम वलाया। अिसी तरह तुम भी अपने चरित्रका निर्माण करके, अत्यत निर्मल नीतिको दृढ वनाकर अपने माता-पिताकी सेवा करोगे। जव तुम्हारी आत्मा विशुद्ध होगी, तव अुसकी परछाअी तुम्हारे सव स्नेहियो पर पडे विना रह ही नही सकती।"

अूपरके प्रसगोके अनुसार गाधीजीने जो पत्र लिखे, अुनके अलावा अुनके वहुतसे पत्रोमे ज्ञान और वैराग्यकी तरफ अुनका झुकाव दिखाअी देता हे। नीचेके पत्र अुत्तम कोटिके है।

"आत्माके सिवा सव कुछ क्षणभगुर है। यह विचार ही हर घडी करना काफी नही है, वल्कि अुसमे मत्रव रखनेवाले कार्यमे सदा लगे रहना चाहिये। ज्यो ज्यो मै विचार करता हू त्यो त्यो सत्य और व्रह्मचर्यकी महिमाका विचार मनमें रमता जाता हे। व्रह्मचर्यका और अन्य सारी नीतिका समावेश सत्यमे हो जाता है। फिर भी मुझे यह लगा ही करता है कि व्रह्मचर्यका अितना महत्त्व हे कि वह सत्यके साथ वैठ सकता हे। मेरा यह दृट विश्वास है कि अिन दोनोके द्वारा कोअी भी कठिनाअी दूर हो सकती है। सच्ची कठिनाअिया मनोविकारोकी ही होती है। वाहरी सम्वन्धो पर सुखका जरा भी आधार न रखें, तो यह विचार करनेके वजाय कि लोग क्या कहते है हम यही विचार करेंगे कि हमें क्या करना चाहिये।"

* * *

"अीश्वर परमात्मा हे। आत्मा अुसका मोक्ष है। अिस जन्ममें भी मोक्ष हो सकता हे। अितनी वात पक्की हो जानेके वाद हमे अिस विपयमे सशोधन करते ही रहना होगा। जो होता है वह होता है अिसीलिअे ठीक है, या हमारे वडोने किया अिसीलिअे अमुक काम ठीक है, अैसा मान लेनेके लिअे रत्तीभर भी कारण नही है। यह आत्माके विरुद्ध वात है। वहुतसी प्राचीन वाते अच्छी है। परन्तु जैसे आगके साथ धुआ रहता है, वैसे ही पुरानी अुत्तमताके साथ कुछ कनिष्ठता भी लगी रहती है। अुसे अलग करके सार निकाल लेनेमे ही हमारा ज्ञान है।"

* * *

"चि० मगनलाल,

"अपनी स्त्रीके साथके विपय-भोगमे सयम रखना महाकठिन काम है। अुससे अधिक कठिन काम थोडे ही होगे। तुम्हारा झुकाव अुस तरफ है, अिसलिअे तुम जरूर सफलता प्राप्त करोगे। कोशिश तो करते ही रहना और अैसी परिस्थितिया पैदा करना कि अुसमे सफलता मिले। अिस तरह सहज ही पार लग जाओगे। मेरे विचार अिस तरहके बननेके बाद प्रयत्न करते रहने पर भी रा और दे प्राप्त हुअे है। मेरी प्रारम्भिक असफलता परसे तुम्हे अपने भीतर साहस पैदा करना चाहिये। पुरुपको कवियोने सिहकी अुपमा दी है। चिन्तन करनेसे हम सबको अिद्रिय-वनके राजा बननेका सामर्थ्य प्राप्त होगा।

बापूके आशीर्वाद"

गाधीजी सन् १९१४ के अप्रैलमे जब केपटाअुन गये थे तब पूज्य कस्तूरबा भी अुनके साथ थी। वहा वे बीमार पड गयी। बाकी बीमारीके समय गाधीजी अुनके पास हो तो वे ही अुनकी शुश्रूषा करते थे। अुस मौके पर गाधीजीने अपने पुत्र मणिलालको नीचेका पत्र लिखा था

"तुम अपने अक्षर सुधारना। बाकी तबीयत अिस समय तो बहुत बिगड गअी है। वह और मैं दोनो यही मानते है कि डॉक्टरी दवाका असर अुस पर बहुत बुरा हुआ है। अुसीने यह अिच्छा बताअी थी कि डॉक्टरी अिलाज किया जाय। दो या तीन खुराक दवा लेनेके बाद बीमारीने अुग्र रूप ले लिया। अब बा कुछ खा नही सकती। कल थोडे अगूर लिये थे, लेकिन वे भी अनुकूल आते जान नही पडते। अन्तमे मृत्यु भी आ जाय तो भी हमने तो मृत्युमे न डरनेका निश्चय कर लिया है। अिसलिअे चिन्ताकी कोअी बात नही है। शरीर किसी दिन तो गिरने ही वाला है। वह गिरनेका जो दिन तय हो चुका है अुसी दिन गिरता है। अुसीके अनुसार हमे अिलाज सूझते है। अिसके सिवा आत्मा तो अमर है। यद्यपि सम्बन्ध हम शरीरका ही रखते मालूम होते है, फिर भी सच्चा सम्बन्ध तो आत्माका ही होना चाहिये। यह निश्चित है कि शरीरमे से जीवके निकल जानेके बाद हम घडीभर भी अुसकी सभाल नही करते। अैसा समझकर बाके शरीरके बारेमे अुचित अुपाय करनेके बाद मै तो निश्चित रहता हू, और चाहता हू कि तुम सब भी निश्चित रहो। अब शरीरकी अैसी स्थितिको

समझ लेनेके वाद हमें सावुता और अुदासीनता अपनानी चाहिये। साधुताका अर्थ स्थल वैराग्य या जगतमे भटकना नही हे, यहा अुसका अर्थ शुद्ध चरित्रसे सम्बन्ध रखता है। अुदासीनताका अर्थ अप्रसन्नता नही, परन्तु विषयोसे अरुचि और मसारके विषयमे अमोह है। वाकी वीमारीमे तुम सव यह वात सीखो तो वह वाके प्रति तुम्हारा मच्चा भक्तिभाव माना जायगा।

वापूके आशीर्वाद"

फिनिक्समे हमसे थोडी दूर नेपाल नामका अेक किसान रहता था। वह शुरूमे गिरमिटमे आया था। अुसकी पत्नी भी गिरमिटमे आअी थी। दोनोकी मुलाकात तो डरवनके वन्दरगाह पर अुतरनेके वाद ही हुअी थी। अिमिग्रेशन-अफसरने अुन दोनोका विवाह कराया था। वह स्त्री अपने पतिके साथ रहती तो जरूर थी, परन्तु नेपाल अुससे नीची जातिका था। अिसलिअे वह अुसके प्रति वार-वार तिरस्कार दिखाती और कठोरताका वरताव करती थी। अेक दिन शामको अुसकी झोपडीमे अेकाअेक आग लग गअी। नेपाल अितना वीमार था कि अुठ भी नही सकता था। हम आगकी लपटे देखकर वहा दौड गये। परन्तु वहा पहुचनेसे पहले झोपडी जलकर खाक हो गअी थी। वेचारा नेपाल अपनी खाटमे पडा पडा ही जल मरा। अुसकी पत्नी दूर वैठी रोती रही। गाधीजी अुस समय केपटाअुनमे थे। अिस घटनाका करुण वर्णन मैंने गाधीजीको अेक पत्रमे लिखा था। अुसके जवावमे अुन्होने नीचे लिखा पत्र भेजा था

"भाअीश्री रावजीभाअी,

"तुम्हारा पत्र मिला। नेपाल तो छूट ही गया। अुसकी पत्नी अनुभवसे कठोर हृदयकी मालूम हुअी है। मौतसे हमे अपना कर्तव्य सोचना है और शरीरके विषयमे लगभग तिरस्कार पैदा करना हे। परन्तु मृत्युसे डरनेकी जरूरत नही। मालूम होता है मनुष्य जलकर मरता है, तव भी वहुत दुख नहीं अुठाता। ज्यादा दुख होने पर मूर्छित हो जाता है। शरीरसे अधिक चिपटनेवाला अधिक दुख पाता है। आत्मतत्त्वको जाननेवाला मनुष्य मृत्युसे नही घवराता। नेपालकी तरह हजारो मनुष्य, हजारो जीव आजकल हर क्षण जल मरते है। ब्रह्माडमे नेपाल चीटीसे भी सूक्ष्म जन्तु हे। हम स्वय जानेअनजाने आग सुलगानेमे, रातको लालटेनका अुपयोग करनेमें, नेपालसे मात्रामे

वडे कितने ही जीवोको जला डालते होगे। ब्रह्माके समान किसी महाजीवकी कल्पना करो। अुसके खयालमे तो हम चीटीसे भी छोटे होगे। अुसकी आखकी परिधि ही अितनी वडी होगी कि हम अुसे पिस्सूके वरावर मालूम होगे। अुसने नेपालको जला दिया हो तो क्या पता? और अुसने यह भी माना होगा कि अुसके महाजीवके सुखके खातिर नेपाल जैसे जन्तुओको जीते-जी जला डालना चाहिये। हमारे खयालसे तो नेपाल हमारे जैसा ही जन्तु है, अिसलिअे हमारा भी यही हाल होगा अिस डरसे हमे अुस पर दया आती है। परन्तु जो दलील हम चीटी, खटमल, पिस्सू और दूसरे असख्य जन्तुओके वारेमे, जिन्हे हम अपनी चमडेकी आखोसे नही देख सकते, वुद्धिमत्तापूर्वक देते है, वही दलील अधिक वुद्धिमान ब्रह्मा हमारे लिअे काममे लेता होगा। यह वात यदि समझमे आ जाय, तो नेपाल आदिके किस्सोसे हम अितनी वातें सीख सकते है

"१ स्वय अपने अूपर दया करके हम सव जीवोको समान माने, अुन पर दया करे तथा अपने किसी भी सुखके लिअे जीवहानि करते हुअे चौके।

"२ देहके वारेमे मोह न रख कर मृत्युसे जरा भी न डरे।

"३ यह समझकर कि शरीर वडा धोखेवाज है, अिसी क्षण मोक्षकी सामग्री तैयार करे।

"ये तीनो सूत्र कह देना आसान है, परन्तु अुन पर विचार करना कठिन है, और विचार करनेके वाद अुसके अनुसार आचरण करना तो खाडेकी धार पर चलनेके समान है।

"अिस समय प्रात काल है। विचारका प्रवाह अिसी दिशामे वह रहा है। क्योकि वा फिर पीडा भोग रही है और अुसे मृत्युके डरसे मुक्त करनेका मै प्रयत्न कर रहा हू।

मोहनदासके यथायोग्य"

१४
अिच्छाबलका प्रभाव

अिम तरह गाधीजीने अपनी आत्मशुद्धि करनेकी कोशिश की। जैसे जैमे वे शुद्ध होते गये वैमे वैसे अधिकाधिक प्रवृत्तिमय बनते गये। कुदरत भगवानकी सपूर्ण कृति है। अुसकी शरणमे जानेवाला मनुष्य अुसे अपनी मानता है। वह कुदरतके किसी भी रूपको देख कर आनन्दित होता है। जल-प्रलय करनेके लिअे अुमडनेवाले बादलो, अुनकी भयकर गडगडाहट और बिजलीकी हृदय-विदारक कडकडाहटमे अुमे डरकी कोअी बात नही लगती। अुसे वह रमणीय लगती है। पृथ्वीको बहाकर दूर फेंक देनेवाली महासागरकी प्रचड लहरो पर प्रभुको छोटेमे बालकके रूपमे नृत्य करते देखकर योगी पुरुष अुनके दर्शनसे अत्यन्त आनन्दित होता है। भयानक जहरीला माप या विकराल वनराज अुसके सामने आकर खडा हो जाय, तो अुसे भी वह अपने जैसा कुदरतका बालक समझकर अुससे भयभीत नही होता, परन्तु अुसे आप्तजन मानकर स्नेहसे अुमका स्वागत करता है। हम अैसे व्यवहारको चमत्कार कहते है। सच पूछा जाय तो ससारमे चमत्कार जैसी कोअी चीज ही नही है। कोअी मनुष्य यह कहे कि मै चमत्कार दिखा सकता हू, तो यही मानना चाहिये कि वह कोअी ढोगी या धूर्त है। जो कुदरतके स्वरूपमे मिलकर अेक नहीं हो सकते, जो कुदरतका साक्षात्कार नही कर मकते, अुन्हे अपनी शक्तिसे अधिक जो विशेषता मालूम होती है अुसे वे चमत्कार कहते है। सोलहवी-सत्रहवी सदीमे देखनेवालेको बिजली या हवाअी जहाज चमत्कार लगा होता। अब हम जानते है कि वह चमत्कार नही है, परन्तु प्रकृतिका व्यावहारिक अुपयोग है। जब मानव अपनी स्थूलताका आत्यतिक सूक्ष्मतामे लोप कर डालता है, तब वह भयकर या रमणीय दिखाअी देनेवाले कुदरतके किमी अवयवका रूप ले लेता है। अुमकी दृष्टिमें काल या अकाल, जीवन या मृत्यु, भयकरता या रमणीयता सब अपनी मतानके समान प्रिय है। प्रकृतिमय बन जानेवाले सत पुरुषके लिअे प्रकृतिका द्रोह करनेकी बात नही रहती और प्रकृतिको अुसका द्रोह करनेकी बात नही रहती। फिर तो अुमके व्यवहारकी जिम्मेदारी कुदरत पर होती है और अुमके वचन और आचरणको सिद्ध करनेका कर्तव्य कुदरतके सिर पर होता है।

गाधीजी ज्यो ज्यो आत्मशुद्धिमे आगे बढते गये, त्यो त्यो अुनके हृदयकी निर्भयता और विशालता बढती गअी। अिसे कुछ लोग चमत्कार भी कहेंगे। जो भी कहना हो कहे। अैसी अेकाध घटना यहा बताकर अुस समयके गाधीजीके जीवनसे सम्बन्ध रखनेवाले अिस प्रकरणको मै पूरा करूगा।

अिस शातिके समयमे, यानी सन् १९१२–१३ मे, रगूनसे भाअी कोतवाल वहा आये। अुनका पूरा नाम पुरुषोत्तम केशव कोतवाल था। गाधीजीके मित्र डॉक्टर प्राणजीवनदास मेहताने अुन्हे दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका सच्चा हाल जानने और गाधीजीके जीवनके बारेमे थोडा निजी अनुभव प्राप्त करनेकी गरजसे भेजा था। भाअी कोतवाल फिनिक्स आश्रममे दाखिल हुअे, तभीसे अुनकी दृढता और निडरताकी छाप सब पर और गाधीजी पर भी अच्छी पडी। भाअी कोतवाल वहा दो तीन महीने रहे, परन्तु अुन्होने अपनी हिन्दुस्तानी पोशाक नही छोडी। वे विद्याके अुपासक और युनिवर्सिटीके ग्रेज्युअेट होकर भी खूब सादे, सरल और मिलनसार थे। फिनिक्सके निवास-कालमे अुन्होने गाधीजीको भी अपनी ओर आकर्षित किया था।

दो तीन मास रहनेके बाद वे हिन्दुस्तान लौटनेकी तैयारी करने लगे। जिस दिन डरबनसे जहाजमे बैठना था अुससे दो रोज पहले वे फिनिक्ससे चले गये। जाते जाते अुन्होने गाधीजीसे कहा कि सोमवारको जहाज रवाना होगा, अिसलिअे रविवारको दोहपरके ढाअी बजेकी गाडीसे वापस आअूगा और सोमवारको सुबहकी गाडीसे डरबन जाकर जहाज पकड लूगा। रविवारके दिन सुबह डरबनके हिन्दू-मडलने भाअी कोतवालके सम्मानमे समारोह किया और मडलकी तरफसे अेक सोनेकी घडी अुनको भेट की। समारोह पूरा होने पर वे भोजन करके स्टेशनके लिअे रवाना हुअे। अुस समय बरसात शुरू हो गअी। मूसलधार पानी बरसने लगा। गाडी फिनिक्स स्टेशन पर आअी। भाअी कोतवाल गाडीसे अुतरे। तीन घटे तक खूब पानी गिरा। और वहाकी पहाडी जमीनमे पडा हुआ पानी जोरसे बहने लगा। फिनिक्स स्टेशन पर अुतरकर आश्रमकी तरफ अुन्होने नजर डाली तो पानी ही पानी दिखलाअी दिया। स्टेशन-मास्टरने कहा कि बरसात हलकी पड जाय और पानी बह जाय तब तक रुक जाअिये। अुन्होने यह भी कहा कि बरसात न रुकी तो मै यहा ठहरनेका आपका अिन्तजाम कर दूगा। भाअी कोतवालने स्टेशन-मास्टरका आभार माना और सोचा कि अिस तरह कैसे रुक सकता हू? लगभग तीन बज गये। बरसात बन्द न हो और अिस तरह शाम हो जाय, तो

आश्रममे कैसे जाअूगा, कुछ भी खतरा अुठा कर आश्रम तो जाना ही चाहिये, यह सोचकर अुन्होने धोतीका कच्छ वनाया। मिरसे अूची लाठीके सिरे पर अपनी पोटली वाधी और आश्रमकी ओर चल दिये। म्टेशनसे अेक दो फर्लांग पर अेक छोटामा झरना था। पथरीली जमीन थी, अिसलिअे पडते ही पानी जोरसे वहने लगता और नालेमें खूव पूर आ जाता। नालेके वाहर भी सपाट जमीन पर घुटनो तक पानी वहता था। परन्तु नालेमे पानी कितना गहरा होगा, अिसका अन्दाज न होने पर भी वे चलते ही रहे। नालेमे अुतरते ही अचानक अुनका पैर गहराअीमे फिमल गया। चारों कोने चित्त हो गये। हाथमें से लकडी छूट गअी। पोटली भी अलग जा गिरी। नालेका वहाव अितना तेज था कि भाअी कोतवाल मभलकर तैरनेकी कोशिश करे अिससे पहले ही प्रवाहमें वहने लगे। वहते वहते कटीले पेडकी डालिया मारे शरीरको लगी और खरोचें पडकर शरीरसे खून वहने लगा। दोनो जाघो पर गहरे घाव हो गये। वे वहकर अेक दो फर्लांग दूर गये होगे कि अेक कटीले वृक्षमें, जो गिर गया था, फस गये। पेडकी डाली पकडकर वे अुमके अूपर चढ गये। अच्छी तरह होश आने पर देखा तो मालूम हुआ कि जिम पेड पर वे चढे है वह नालेके अिस पारका हे। फिनिक्स आश्रममे जानेके लिअे प्रचड वेगसे वहनेवाले अुस नालेको तो अुन्हे पार करना ही पडेगा। अव क्या करते? खतरा तो था ही। परन्तु अुनका यह दृढ सकल्प था कि अभी आश्रममे जाकर वापूजीसे मिलू और कल देश जानेमे पहले आजकी रात वापूजीके साथ विताअू। यह पेड हाथमें न आया होता तो आधे घटेमे भाअी कोतवाल हिंद महासागरकी लहरोमें रमते होते। परन्तु राम जिसका रक्षक हे, अुसे कौन मार सकता है? अुन्होने अपना लवा कुर्ता और गरम वडी अुतारकर पेडकी अेक डाली पर रख दी। पैरोकी चप्पलें भी वही रख दी। लम्वी धोतीको फाडकर कच्छ वनाया और रामका नाम लेकर वहते हुअे नालेमे कूद पडे। मीधे तो तैर ही नही सकते थे। टेढे टेढे तैरते हुअे पचास फुट चौडे नालेको पार करनेके लिअे अुन्हें दो फर्लांग तैरना पडा। आखिर दूमरे किनारे पर पहुच कर घुटने और कमर तकके पानीको चीरते हुअे आश्रममें पहुचे।

अुम ममय विद्यार्थी और दूसरे साथी भारी वरसातके कारण मकानमें ही वैठे मूगफलिया छील रहे थे। गाधीजी पामके ही खडमें फुटकर

काम कर रहे थे। पाच बजेका अन्दाज होगा। बरसातके बावजूद अधिकसे अधिक चार बजे तक भाओी कोतवालको आ जाना चाहिये था। अिसलिअे अुनकी बाट देख रहे थे। मैंने जल्दीमे पूछा "बापूजी, भाओी कोतवाल अभी तक नही आये। क्या कारण होगा? अधिकसे अधिक चार बजे तक तो अुन्हे आ ही जाना चाहिये था। अिसके बजाय पाच बज गये। क्या बरसातके कारण अुन्होने आनेका विचार छोड दिया होगा?" गाधीजी यह सुनकर हमारे पास आये। "कितनी ही वर्षा हो, भाओी कोतवाल आये बिना नही रह सकते। मरनेका खतरा अुठाकर भी वे आयेंगे।" गाधीजी यह वाक्य कहकर वही खडे रहे। अेक-दो मिनट ही हुअे होगे कि भाओी कोतवाल दरवाजेमे घुसे। शरीर पर हाथभरकी लगोट, सारे बदन पर खरोचें, जाघोके दोनो घावो पर जमा हुआ खून और ठडसे कापते शरीरसे पास आकर भाओी कोतवालने गाधीजीके चरणोमे प्रणाम किया। गाधीजी अुन्हे अैसे वेशमें देखकर खिलखिला पडे। भाओी कोतवालकी पीठ पर अेक धप जमाकर अुन्होने पूछा "ये क्या हाल है तुम्हारे?"

भाओी कोतवाल बोले "मै तो मरता मरता आया हू। मेरी तीव्र अिच्छा थी कि कोओी भी खतरा अुठाकर आज आपके दर्शन करने ही चाहिये। और मरते मरते भी प्रभुने मेरी यह अिच्छा पूरी कर दी!"

१५

गांधीजीके सहोदर अिमामसाहब

दक्षिण अफ्रीकाकी भारतीय प्रजाके अितिहासमे स्वर्गीय अिमामसाहब अब्दुल कादर बावाजीर अेक विरले ही व्यक्ति थे। अिमामसाहब शुद्ध अरब वशकी सतान थे। अुनके वशके मूल पुरुष पैगम्बर साहबके गाढ सान्निध्यमें रहनेवाले अुनके प्रियसे प्रिय शिष्योमें से अेक थे। पैगम्बर साहबने जब अजान देनेकी नयी पद्धति अख्तियार की, तब अुन्होने यह काम अिन मूल पुरुषको सौपा। अिस पुरुषको पैगम्बर साहबने अैसे पवित्र कार्यका आरम्भ करनेकी जिम्मेदारी सौंपी, वह पुरुष कितना धार्मिक और पैगम्बर साहबका कितना विश्वासपात्र होगा, यह समझा जा सकता है। मदीनेकी जुम्मा मसजिद पर चढकर अजान देनेवालेकी आवाज भी कितनी बुलन्द होनी चाहिये? और पवित्र अजान

देनेमे अकेली वुलन्द आवाजसे ही काम नही चल सकता था। अुसमे अजानके प्रत्येक शब्दके अुच्चारणकी शुद्धता, भक्तिभाव और हृदयकी गहराअीसे निकलनेवाला नाद होना चाहिये। खुदाके प्रति तीव्र अनुराग और अिस ससारके प्रति तीव्र विराग अुस नादमें प्रगट होना चाहिये। यह आसानीसे समझमे आ सकता है कि अैसे विरले पुरुषको ही पैगम्बर साहव अितना पवित्र और जरूरी काम सौप सकते थे। स्वर्गीय अिमामसाहव अैसे विरले पुरुपके वशज थे। अुन म्‌ल पुरुपका अुत्तराधिकार अुनके पुत्रोको मिला। स्व० अिमामसाहवके पिताको भी वम्वअीकी जुम्मा मसजिदके अिमामका प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त था। हमारे अिमामसाहव कुछ मित्रोके साथ दक्षिण अफ्रीका जा पहुचे। वे वडे धर्मवृत्तिवाले और अुदार थे। जोहानिसवर्गमे रहे तो वहा भी मसजिदमे नमाजके समय अिमामका काम वे ही करते थे। परन्तु मसजिदके अिमामके कामके वदलेमे वे कुछ लेते न थे। अपना निर्वाह वे किरायेकी घोडागाडिया रखकर करते थे। अिस धन्धेसे अुन्हे हर महीने तीस पौडकी आमदनी होती थी। अुन्होने अेक मलायी स्त्रीसे शादी की थी। अुन्हे यूरोपियन ढगसे रहनेकी आदत थी और स्वभावके वे अुदार थे, अिसलिअे अुनका खर्च भी वहुत ज्यादा था।

अुनके जोहानिसवर्गके निवास-कालमें गाधीजीसे अुनका परिचय हुआ। कभी कभी कुछ मुवक्किलोके साथ भी वे गाधीजीके पास जाते थे। अुनकी वुद्धि वहुत तीव्र थी, अिसलिअे दूसरेकी वात वे तुरत समझ जाते थे। साथ ही अपनी वात भी दूसरेको अच्छी तरहसे समझा सकते थे। अिसलिअे कुछ मुवक्किल वकीलोके सामने अपनी वात प्रभावशाली ढगसे रखनेके लिअे अुन्हे अपने साथ ले जाया करते थे। अिन प्रसगोसे गाधीजीके साथ अुनका परिचय वढा। गाधीजीके गाढ परिचयमे आनेसे वे भी दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोकी राजनीतिक प्रवृत्तिमें दिलचस्पी लेने लगे। जव हिन्दुस्तानियोने ट्रान्सवाल सरकारके अन्यायी कानूनके खिलाफ सत्याग्रह शुरू किया, तव वे भी अुसमे शामिल हुअे। अुनका मौजी जीवन देखकर वहुतोने अुन्हे लडाअीमे शरीक होनेसे रोकनेकी कोशिश की। परन्तु वे तो निश्चय करके सत्याग्रहकी लडाअीमें कूद पडे और सरकारके मेहमान वन गये।

फिर तो अमृतका स्वाद जो चखा सो चखा! अिमामसाहवने अपना सारा जीवन ही वदल डाला। सत्याग्रहकी आखिरी लडाअीके वाद वे कुटुम्बके

साथ फिनिक्स सस्थामे आकर वस गये। अुन्होने आश्रम-जीवनकी कडी तालीमको अपना लिया। अपनी पत्नी और दो लडकियोके साथ वे फिनिक्सका सादा जीवन विताने लगे। लगभग डेढ सालके लम्वे अर्से तक मै अुनके गाढ सम्पर्कमे रहा। अहिसा, सत्य, सच्चे धर्म पर ससारमे आचरण और सयम तथा व्रत-सम्बन्धी रसिक चर्चाओमे वे वहुत दिलचस्पी लेते थे। हर रोज प्रार्थनाके समय वे जरूर हाजिर रहते। "वैष्णवजन तो तेने कहीअे जे पीड पराअी जाणे रे!" यह भक्त-शिरोमणि नरसिंह मेहताका भजन 'वैष्णव-जन' के स्थान पर 'मुस्लिम-जन' रखकर वे वहुत ही श्रद्धापूर्वक गाते थे। अिसी तरह कअी वार पवित्र कुरानशरीफमें से पैगम्वर साहवके पवित्र वचन हमे सुनाते थे। रोज तडके ही अुनकी अजानकी वुलन्द आवाजके अिन्तजारमे हम विछौनेमे पडे रहते और अिमामसाहवकी नियमित अजान ही हमसे विछौना छुडवाती थी। अुनके जीवनमे हृदयकी सच्चाअी, आनन्दी स्वभाव, स्वधर्मके प्रति अटल श्रद्धा होते हुअे भी दूसरे धर्मोके प्रति सम-भाव और तीव्र देशभक्ति — अिन सबका समन्वय था। वे वार वार अिस सूत्रको दोहराते थे कि सच्चा हिन्दू सच्चा मुसलमान है और सच्चा मुसलमान सच्चा हिन्दू है। और जब हिन्दू-मुसलमानोके कौमी झगडोकी वात वे सुनते तव अुन्हे वडा दुःख होता था। फिनिक्स आश्रममे अन्य सव निवासियोकी तरह वे भी हर काममे विना सकोच लगे रहते थे। गाधीजीके प्रति अपने प्रेममे वे किसीसे भी कम नही थे। अिस मौके पर मुझे अेक सुदर प्रसग याद आता है।

सन् १९१४ के अगस्त महीनेके दिन थे। गाधीजी हिन्दुस्तान आनेको तैयार हुअे, परन्तु श्री गोखले अुस समय अिग्लैडमे थे। अुनकी यह अिच्छा थी कि गाधीजी देश जायें अुससे पहले अिग्लैडमे अुनसे मिलते जाये। जिस दिन फिनिक्ससे अुनको विदा दी गअी वह दिन अलौकिक था। प्रियजनोसे विछुडनेके अिस प्रसगका वर्णन नही किया जा सकता। घरके मुख्य खडमे हम सव अिकट्ठे हुअे। प्रेमाश्रुओके साथ सवने प्रार्थना की। प्रार्थनाके वाद सवने अेक अेक करके गाधीजीके चरणोमे प्रणाम किया। अुन्होने किसीको मीठी चपत लगाअी, किसीको मधुर घूसा जमाया, किसीकी पीठ प्रेमसे थपथपायी और प्रत्येकको कुछ न कुछ कहकर स्नेहरसमे भिगो दिया। श्री अिमामसाहवकी वारी आअी। गाधीजीने अिमाममाहवको वाहु-

पागमे जकड लिया और छातीमे लगाकर खूब दवाया। अुनके मामने देखकर आखमे आख मिला कर गद्‌गद भावमे गावीजी वोले "मेरी माने दोको जन्म दिया। अेक मैं और अेक तुम। हम दोनो सहोदर भाअी हैं।"

अिमामसाहवकी आखोमें मे टपटप हर्षाश्रु वरसने लगे। मचमुच गावीजीकी माताने दोको जन्म दिया अेक हिन्दू, दूमरा मुमलमान, दोनो सहोदर भाअी है। अिम विरले प्रमग पर हम सवकी आखोमे प्रेमाश्रुओकी धारा वहने लगी। फिरसे कब और कहा वापूजीके दर्शन होगे, अिमी विचारमें हम अलग हुअे और अपने प्रिय वापूको हमने विदा किया।

अिम प्रमगके वाद गावीजीकी गैरमौजूदगीमें भी अिमामसाहव वही रहे और प्रेमका मौंपा हुआ काम करते रहे। सावरमती आश्रम तैयार हो जानेके वाद गावीजीने अुन्हे यहा बुलवा लिया। हिन्दुस्तानमें आनेके वाद वे अन्त तक मावरमती आश्रममें ही रहे। पिछली नमक-सत्याग्रहकी लडाअीमें धरामनाके अैतिहासिक प्रमग पर अुन्होने वडी हिम्मत और निडरता दिखाअी थी। श्री अब्वासमाहवके पकडे जानेके वाद धरासना कैम्पका चार्ज श्री अिमाममाहवने सभाला था। स्वयसेवक नमकके आगर पर धावा वोलें अिमसे पहले अुन्होने मवके साथ प्रार्थना करके जो पवित्र और भक्तिभावपूर्ण वातावरण पैदा किया था, अुममे स्वयसेवकोके अुत्माहमें अनोखी वृद्धि हुअी थी। जो लोग अुम समय वहा मौजूद थे वे आज भी अुस चित्रका स्मरण करके स्वर्गीय अिमाममाहवकी देशभक्ति, हिम्मत, निडरता और मत्याग्रहमें पूर्ण श्रद्धाकी मुक्तकठमे प्रशमा करते हैं।

१६

गांधीजी और धर्मकथाअें

धर्मके मम्बन्धमें गावीजीके विचार सव कोअी जानते है। अुनकी दृष्टिमे मव धर्म समान हैं। अिमका अर्थ यह नही है कि अुन्हें हिन्दू धर्म छोडकर दूमरा धर्म स्वीकार कर लेना पमन्द है। अैमा करनेमें प्रत्येक धर्मके प्रति समानताकी भावना कहा रही? अुनका कहना यह है कि सच्चा हिन्दू मच्चा मुमलमान या सच्चा अीमाअी है। अिसी तरह सच्चा मुमलमान या अीसाअी सच्चा हिन्दू है। धर्मोमें सत्यका जो सर्व-सामान्य तत्त्व है, वह

सवके लिअे कल्याणकारी है, अुसमे कोअी भेद नही होता। भेद तो धर्मकी चारदीवारियोसे पैदा हुआ है। सव धर्म जनकल्याणके लिअे है। सव धर्मोके सतपुरुप वदनीय है और अुन्होने तत्त्वत अेकसा ही अुपदेश दिया है। सव धर्मोकी पौराणिक कथाओका सच्चा अर्थ अगर समझ लिया जाय तो वे सव वोधप्रद है। गाधीजीने हिन्दू धर्मकी पौराणिक कथाओ और साथ ही दूसरे धर्मोकी कथाओको अपने जीवनमे किस तरह अुतारा है, यह नीचेके पत्र पढनेसे मालूम होगा। हिन्दू धर्ममे जीवनके व्रत पालनेकी कितनी महिमा गाअी गअी है, यह भी अिन पत्रोसे जान पडेगा।

अुन्होने अपने वडे भाअीको कुटुम्वके विचार और व्यवहारके व्वारेमे यह पत्र लिखा था

"गो चला गया तो भले गया। सम्वन्धके कारण स्वाभाविक रूपमे यह लिखते हुअे भी मुझे रोना आ रहा है। परन्तु मेरे मनके विचार, जिनका मै वहुत समयसे सेवन करता रहा हू, अव वहुत प्रवल हो गये है। मै देख रहा हू कि हम सव वडी जजालमे फस गये है। यह हालत जैसी परिवारकी है वैसी ही मै देशकी भी देखता हू। वहुतसे विचारोमे से अभी जो मेरे मनमे मुख्य है अुन्हीको यहा रखता हू। झूठी शरम या झूठे मोहसे हम वच्चोको जल्दी व्याह देनेका विचार करते है। अिस झझटमे सैकडो रुपये गवाते है और फिर विधवाओके मुह देखा करते है। शादी करे ही नही यह तो मै कैसे कहू? परन्तु कोअी हद तो वार्धे? वच्चोकी शादी करके हम अुन्हे दुखी करते है। वे सतान पैदा करके मुसीवतमे पड जाते है। हमारे नियत-धर्मके अनुसार स्त्रीसग तो सन्तानकी अुत्पत्तिके लिअे ही होता है। अन्य हेतुसे किया गया स्त्रीसग केवल विपय-वासना है। अैसा हम कुछ भी करते नही दीखते। अगर यह वात सही हो तो हम वच्चोका विवाह करके अुन्हे अपनी तरह विपयी वनाते है। अिस प्रकार विपय-वृक्ष वढता ही रहता है। मै तो अिसे धर्म नही कहता। जो मेरे जीमे आ रहा है वही छोटा भाअी होने पर भी आपके जरिये मै सारे कुटुम्वके सामने रख रहा हू। मेरी कुटुम्व-सेवा तो यही है। अिसमे अपराध होता हो तो क्षमा करे। चौदह वर्षके अध्ययन और सात वर्षके व्यवहारके वाद ये विचार समय देखकर आपके सामने मै रख रहा हू।"

नीचेके पत्र यह वताते है कि गाधीजी धर्मकथाओका हमारे जीवनके साथ किस तरह मेल वैठाते है

"प्लेगके बारेमें तुमने मुझे अच्छे सवाल पूछे है। राजकोटमें चूहे मरते ही मैंने सबको घर या गाव बदल देनेकी सलाह दी। मेरे ये विचार अुस समय (स० १९५८) के थे। अब मालूम होता है कि अुनमे भूल थी। मेरे ये विचार अब बहुत बदल गये है। हेतु सदा अेक ही था — सत्यकी खोज। अब मै देखता हू कि अिस तरह घर बदलना आत्माके गुणोका अज्ञान प्रकट करना है। अिसका अर्थ यह नही कि किसी भी समय और कुछ भी हो जाय तो भी घर न बदला जाय। घर जल रहा हो तो खाली करेंगे ही। घरमे साप, बिच्छू अितने निकलें कि अुसमें रहना तत्काल मौतको बुलाना हो, तो वैसी हालतमें भी घर बदला जाना चाहिये। हा, मेरा कहना यह नही है कि अैसा करनेमे भी दोष नही है। जिसने आत्माको पूरी तरह पहचान लिया है, अनुभव कर लिया है, अुसके लिअे तो छप्पर आकाशका ही हो सकता है। वह जगलमें रहनेवाले साप-बिच्छुओको मित्रके समान मानता है। अिस स्थितिको न भोगनेवाले हम लोग सरदी-गरमीमे डर कर घरोमें रहते है, अिसीलिअे वहा डर पैदा होने पर घर छोड भी देते है। फिर भी मनमें यह आशा रखें कि हमे जल्दी ही आत्माके दर्शन होंगे। कमसे कम मुझे तो अैसा ही मालूम होता है। प्लेगके समय मो चले गये और अपने पटेलको घर सभालनेको रख गये। अैसा करना अनुचित है। अगर मकान जल रहा होता तब तो पटेल भी चला जाता। अिस अुदाहरण परसे तुम भेद समझ सकते हो।

"प्लेग वगैराके भयको मै मामूली भय मानता हू। मुसलमान घर नही छोडते, परन्तु अीश्वर पर भरोसा रखकर पडे रहते है। अगर अुसके साथ ही वे जरूरी अुपाय भी करें तो और अच्छा हो। जब तक हम भागदौड करते है, तब तक प्लेगके जानेकी कम ही सभावना रहती है। जिस जिस गावमें प्लेग हो वहीसे हम अुसका कारण न ढूढकर भाग निकलें, तो यह हमारी दीनता है। अिस जवाबसे मुझे ही सन्तोष नही होता तब तुम्हें तो होगा ही कैसे? तुम और मै कभी मिल जाय और अनायास प्रश्न पूछे जाय, तभी तुम जान सकते हो कि मेरे मनमें क्या बसा हुआ है। मै अपनी बात पूरी तरह नही समझा सकता, अिसके दो कारण है। अभी मै अैसे कामोमें लगा हुआ हू कि मुझे सोचकर लिखनेकी फुरसत नही है। और दूसरा कारण यह है कि मेरे कहने और करनेमें फर्क है। अगर मै चाहता हू

अुतनी अेकता मेरे कहने और करनेमे हो, तो अैसे शब्द हाथ लग जाय जिनसे तुम्हे तुरन्त अपनी वात मैं समझा सकू। प्लेगके डरसे जव वडे-बूढे तुम्हें घर या गाव छोडनेको कहे, तव तुम्हारा छोडना ही ठीक है। जहा नीति-युक्त जीवनको धक्का न पहुचे वहा वडोकी आज्ञा पर चलना हमारा धर्म है। अुसीमे हमारा कल्याण है। तुम मौतके डरसे नही, परन्तु माता-पिताको खुश करनेके लिअे प्लेगवाला घर छोडो, तो यह काम बिलकुल निर्दोष है। यह समय कुछ जगहोमे और कुछ लोगोके लिअे अैसा मुश्किल हो गया है कि वडोकी आज्ञा पालनेके वारेमें विचार करना पडता है। मुझे तो अैसा लगता है कि माता-पिताका प्रेम अितना गूढ है कि वहुत सवल कारणोके विना अुनका जी नही दुखाया जा सकता। परन्तु दूसरे वडोके वारेमे मन अितना स्वीकार नही करता। जहा हमें नीतिके सवालोमे कुछ भी सशय हो, वहा भी कम दरजेके वुजुर्गोकी आज्ञाका अुल्लघन हो सकता है — अुल्लघन करना ही फर्ज हो सकता है। परन्तु जहा नीतिको हानि पहु-चनेकी जरा भी शका हो, वहा माता-पिताकी आज्ञाका अुल्लघन हो सकता है — अुल्लघन करना ही फर्ज है। अगर मेरे पिता मुझे चोरी करनेको कहे तो मुझे नही करनी चाहिये। मेरा विचार ब्रह्मचर्य पालनेका हो और अुसमें माता-पिता दूसरी ही आज्ञा दे, तो मुझे अुनकी आज्ञाका विनयपूर्वक अुल्लघन करना चाहिये। म . और रा की सगाअी जव तक वे होशियार न हो जाय तव तक हरगिज न की जाय, अिसे मैं धर्म समझता हू। माता-पिता जीते होते और अुनका विचार अिससे अुलटा होता, तो भी मैं विनयपूर्वक अुनका विरोध करता और मैं यह भी मानता हू कि वे मेरी वात मान लेते।

"अितना काफी है। और शकाअें हो तो पूछना चाहिये। यह जान कर कि तुम्हारी सद्वृत्ति अैसी है कि तुम मेरी वातका अनर्थ नही करोगे, मैंने तुम्हे यह सव लिखा है। पाखडी मनुष्य हो तो या तो अिस तरह लिखनेके कारण मुझे अुद्धत मानेगा या मेरे वचन पर अन्धविश्वास रखकर, अुसका गलत अर्थ निकाल कर झूठे कारणोसे वडोकी आज्ञाका अुल्लघन करेगा, और प्लेगके वारेमे जो कुछ लिखा गया है अुसका यह अर्थ लगायेगा कि अुचित अिलाजमें शराव, मास वगैरा खाये जा सकते हैं।"

स्वामी शकरानन्दजी नामके अेक सन्यासी वैदिक धर्मके प्रचारककी हैसियतसे सन् १९१०–११ में नेटालमे रहते थे। वे अपनेको वैदिक धर्मके

धर्म-धुरंधर कहते थे। आर्यसमाजी मंडलोंमें वे काफी प्रसिद्ध थे। अुनकी नेटालकी प्रवृत्ति वहांके मीठे वातावरणमें बेसुरी आवाज मालूम होती थी। गांधीजीकी समभावकी दृष्टि अुन्हें पसन्द नहीं थी। अैसे कुछ कारणोंसे अुन्होंने गांधीजीको अेक पत्र लिखा था। अुसके अुत्तरमें गांधीजीने यह पत्र लिखा था

"आपका पत्र मिला। पहले आपका डेपो रोडमें दिया हुआ 'कर्जन वायली' सम्बन्धी भाषण मैंने पढ़ा। शिक्षा-सम्बन्धी पत्र भी पढ़ा। ये तीनों लेख पढ़कर मुझे अफसोस हुआ। मुझे लिखा हुआ पत्र अिस्लाम धर्मके विषयमें आपके विचार बताता है। और दूसरे दो लेख अुस धर्मके माननेवालोंके प्रति आपका रुख बताते हैं। अिस्लाम धर्म सम्बन्धी आपके विचारोंके बारेमें मैं कुछ नहीं कहता। परन्तु मैं यह जानता हूं कि अिस्लाम धर्म पर आपका कटाक्ष हिन्दू धर्मके रहस्यके विरुद्ध है। कटाक्ष भले करें। पर अुसे करनेमें आपने नीतिविरुद्ध अैसा व्यवहार किया कि वह और भी दुःखद हो गया है। अंग्रेजोंको हिन्दू धर्मके रक्षक मानकर तो आपने बहुत ही दीनता दिखाओ है। अगर मैं अपने धर्मकी रक्षा करनेके लायक नहीं हूं, तो परधर्मी अुसकी क्या रक्षा करेंगे? शिक्षा-सम्बन्धी आपके विचारोंको मैं केवल हिन्दू-मुसलमानोंमें विरोध पैदा करनेवाले मानता हूं। अगर हिन्दू-मुसलमानोंके बीच अितना ज्यादा अन्तर रखनेकी जरूरत हो, तब तो हिन्दुस्तानको पराधीन ही रहना चाहिये। अिसमें विदेशियोंको दोष भी कैसे दिया जाय? और अितना अन्तर रखनेसे तो हिन्दू धर्मका लोप ही हो सकता है। सौभाग्यसे हिन्दू धर्मकी स्थिति अचल है। हजारों वर्षोंसे जिसकी रक्षा होती रही है, अुसका नाश हमारे धर्मगुरुओंके हाथों भी नहीं हो सकता, यह मेरी अटल श्रद्धा है। आपको मैं क्या लिखूं? आपके ज्ञानके लिअे मुझे आदर है। परन्तु आपके व्यवहार पर दुःख होता है।"

गांधीजीके अेक भतीजे बम्बअीमें रहते थे। अुन्हें लिखा हुआ पत्र पढ़ कर हमें यह मालूम हो जाता है कि गांधीजी कैसी समझसे हिन्दू धर्मके भक्तोंकी कथायें अपने जीवनमें चरितार्थ करनेकी कोशिश करते हैं। वह पत्र अिस प्रकार है

"तुम्हारा पत्र मुझे मिल गया। वहां रहकर भी तुम यहांके अुद्देश्योंमें सहायक हो सकते हो। मैं देखता हूं कि लड़ाअी वहां भी खूब लड़नी होगी। अैसा करनेके लिअे तुम्हारा चारित्र्य बनना चाहिये। तुम हमारे धर्मके मूल-

तत्त्व जानते हो ? शायद तुम कहोगे कि मै तो सारी गीताजी जबानी सुना सकता हू और अुसका अर्थ भी मुझे आता है, फिर आप मूल तत्त्वोकी बात क्या पूछते है ? मूल तत्त्वोको जाननेका अर्थ मै यह करता हू कि अुनके अनुसार आचरण किया जाय। दैवी सम्पद्का पहला गुण 'अभय' है। यह श्लोक तुम्हे याद होगा। तुमने अभयपद किसी भी अशमे प्राप्त किया है ? या जो करना अुचित है अुसे निडर होकर, प्राणोका खतरा अुठाकर भी तुम कर सकोगे ? जब तक यह स्थिति न हो जाय तब तक अुसका सेवन करके अुसे प्राप्त करनेकी कोशिश करो। तब तुम जीवनमे बहुत कुछ कर सकोगे। अिस प्रसग पर तुम्हे प्रह्लादजी और सुधन्वा वगैराके दृष्टान्त याद करनेकी जरूरत है। यह न मानना कि ये सब दन्तकथाअे है। अैसे काम करनेवाले भारतके सपूत हो चुके है। अिसीलिअे हम ये आख्यान जबानी याद करते है। आज भी प्रह्लाद और सुधन्वा, हरिश्चन्द्र और श्रवण, हिन्दुस्तानमे नही है, अैसा नही मानना चाहिये। हम लायक हो जायगे तब हमारी अुनसे भेट भी हो जायगी। वे कोअी बम्बअीके मकानमे मिलने नही आयेगे। पथरीली जमीनमे गेहूकी फसलकी आशा नही रखी जा सकती। बम्बअीमे रहना हो तो मनमे यह मान्यता दृढ बना लेना कि बम्बअी नरककी खान है। अुसमे कुछ सार नही।"

* * *

"सुदामाजीका चरित्र मैने पढ लिया था। अुनकी और नरसिंह मेहताकी गरीबीसे स्पर्धा करनेका अुत्साह मुझमें पैदा हुआ था और है। अुस परसे मैने लिखा है कि का ज्ञान शुष्क है और सुदामाजीका सच्चा और अनुकरणीय है। श्रीकृष्णको मै परमात्माके रूपमे जानता हू। वे श्रीकृष्ण अर्जुनके साथी, सुदामाजीके मित्र और नरसिंह मेहताके रणछोड है। अुनके बारेमे आलोचना करनेका स्वप्नमे भी मेरा विचार नही था। तुम्हारे मनमे मेरे पत्र परसे अैसा भाव जिस हद तक आया, अुस हद तक मै पापी हू। मेरे हाथसे अिस विषयमे अेक अक्षर भी कैसे लिखा गया, यह विचार करके मै काप अुठता हू। तुम्हारा पत्र आया तभीसे मै अुद्विग्न रहता हू।

सुदामाजीकी स्त्रीने ताने मारे, अिसे मै अलकृत भाषा समझता हू। परन्तु वह शब्दश वैसा ही बोली हो तो भी कोअी आश्चर्य या विरोध मालूम नही होता। स्त्री तो यही कहेगी। सुदामाजीका अिरादा सब कष्ट सहन करनेका

हो तभी स्त्री अैसा कहेगी यह बात नही है। श्रीकृष्ण जैसे मित्र हो तो अुनकी मदद क्यो न ली जाय? अितना तो सच है कि सुदामाजी बहुत गरीब थे और अुस हालतमे अुन्हे सतोष भी था और वे पक्के भक्त भी थे। नरसिंह मेहताने श्रीकृष्णकी भक्ति की, फिर भी अपनी गरीबीकी स्थितिसे छुटकारा पानेकी अुन्होने अिच्छा तक न की।

*   *   *

"सियराम-प्रेमपियूष-पूरन, होत जनम न भरतको।
मुनिमन-अगम यम नियम शम दम, विषम व्रत आचरत को।
दुख दाह दारिद दम्भ दूषन, सुयश मिसु अपहरत को।
कलिकाल तुलसीसे शठन्हि हठि राम सन्मुख करत को।

"यह छन्द अयोध्याकाडमे अतिम है, अिस पर विचार करना। मेरे कानोमे अिसकी झकार सदा सुनाअी देती है। कठिन कालमे भक्तिको प्रमुखता दी गअी है। वह भक्ति करनेके लिअे भी यम-नियमादि तो जरूर चाहिये। अुसमे हमारी शिक्षा जड है। अुनके बिना सारी होशियारी बेकार है, यह मै हर क्षण देख रहा हू। तुम्हे दूसरा आशीर्वाद क्या दू?"

गाधीजीके पुत्र भाअी मणिलाल जोहानिसबर्गमे श्री कैलनबैकके साथ रहते थे। अुन्हे गाधीजीने नीचे लिखा पत्र भेजा था। अुस पत्रको पढनेसे हमें धर्मकी कथाओमे जो समानता होती है वह मालूम हो जाती है।

" मि० कैलनबैक चाहे तब सोये, परन्तु तुम्हे तो अेक ही नियम रखना चाहिये। खानेके बारेमें भी यही बात है। तुम जिन वाक्योको न समझ सके अुनका अर्थ यह है 'जो कर्म सिर्फ नियमसे (अक्षरार्थ करके) किये जाते है अुनके लिअे तो शाप है। फिर भी अैसा लिखा हुआ है कि जो नियममे बताये हुअे कर्म नही करते रहते वे सब शापित है।' भावार्थ यह है कि केवल पुस्तकीय ज्ञान पानेवाले लोग कभी मोक्ष प्राप्त नही कर सकते। अैसा ही वचन गीताजीमे है, अुस पर विचार कर लेना। 'त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन'— यह वाक्य अर्जुनसे श्रीकृष्णने कहा था। अिसका यह अर्थ नही कि शास्त्रविहित कर्म न किये जाय। परन्तु अुन्हे करना ही काफी नही है। अर्थ यह है कि अुनका गढ अर्थ समझ कर, अुनका हेतु समझ कर हम अुससे आगे बढे। जो आदमी विहित कर्म छोडकर शुष्क ब्रह्म-

वादी वन जाता है, वह न तो अिधरका रहता न अुधरका। वह शास्त्रका सहारा खो वैठता है, और ज्ञानका आधार अुसे मिलता नही, अिसलिअे वह गिरता ही है। अिसीलिअे 'गेलेशियन्स' को सन्त पॉलने कहा था ' 'तुम लोग शास्त्रके अनुसार कर्म तो करो ही, परन्तु अीसा पर श्रद्धा रखकर अुनकी शिक्षाका अनुसरण नही करोगे तो शापित रहोगे।' यही भावार्थ 'वॉण्ड मेड' और 'फ्री वुमन' के सम्वन्धमे है। वॉण्ड यानी वन्धन। शास्त्रको स्थूल माताकी अुपमा दी गअी है और कहा गया है कि वह तो गुलामीके दर्जेकी है, अिसलिअे अुसकी सन्तान भी गुलाम ही होती है।

"श्रद्धा अर्थात् भक्तिको दिव्य माताकी अुपमा दी गअी है और दिव्य माताकी सन्तान देवरूप होती है। यह भावार्थ समझकर आगे-पीछेके वाक्योका विचार करना और लिखना कि अच्छी तरह समझमे आया या नही। पहले 'कोरिन्थियन' के १५ वे प्रकरणके ५६ वे श्लोकका अर्थ यह है कि पाप ही मौतका डक है, यानी पापी मनुष्यके लिअे ही मौत डकके रूपमे है। और दूसरे वाक्यका अर्थ यह है कि पुण्यशालीके लिअे मृत्यु मोक्षका साधन है, और शास्त्रोके शुष्क ज्ञानमे शापका वल होता है। यह हम पग-पग पर देखते है। शास्त्रोके नाम पर सैकडो पाप होते है। पाचवे 'रोमन्स' के २० वे श्लोकका अर्थ तो आसान है। अुसके सिवा, शास्त्र घुसा और अपराव वढे। लेकिन जव जव पापका पुज वढा तव तव अीश्वरकी कृपा भी वढी। यानी अैसे कलिकालके समय भी शुष्क ज्ञानके वन्धनसे छूटनेवाले आदमी मिल गये। अुन्होने भक्तिमार्ग वता कर शास्त्रोका गूढार्थ सिखाया, यह अीश्वरकी कृपा है। 'जॉन' के १५ वे प्रकरणके तीसरे श्लोकका अर्थ यह है 'जो वचन मैने तुमसे कहे है, अुन वचनोके अनुसार चलनेसे तुम शुद्ध वनोगे।' 'are' को भविष्यका वाचक समझो और 'through' का अर्थ 'अनुसार चलनेसे' करो।

"जीवनमे सभ्यता-सम्वन्धी परिवर्तन करनेसे पहले विचार करना। पर मै चाहता हू कि परिवर्तन करनेके वाद अुनसे जोककी तरह चिपटे रहो। मि० कैलनवैकके गुणो पर मुग्ध रहो। अुनकी कमजोरी दिखाअी दे तो अुसे समझकर अुनसे दूर रहो। तुमने जो नया परिवर्तन किया है वह विचार-पूर्वक नही किया। जितने परिवर्तन मि० कैलनवैक करे वे सव करनेको तुम वंधे हुअे नही हो। तुम्हें स्वतत्र विचार करना और अुन पर दृढ रहना

चाहिये। अैसा करनेमे कभी भूल भी होगी। अुसकी चिन्ता नही करनी चाहिये। निर्मल चित्तसे खूब विचार करनेके बाद तुम्हे मेरे विचारोका विरोध करनेका भी अधिकार हे। और जहा अैसा करनेमे नीति दिखाअी दे वहा विरोध करना तुम्हारा फर्ज हे। तुम मोक्षका तत्त्व समझो और मोक्षेच्छु बनो, यह मेरी तीव्र अिच्छा हे। और यह तब तक कभी नही होगा जब तक तुममें स्वतत्र विचार करनेकी शक्ति और दृढता नही आयेगी। अभी तो तुम्हारी हालत किसी लताके जैसी हैं। लता जिस वृक्ष पर चढती है, अुसीका रुप ले लेती है। यह दशा आत्माकी नही है। आत्मा तो स्वतत्र है और मूल रुपमे सर्व-शक्तिमान हे।"

* * *

"काम अेप क्रोध अेप रजोगुणसमुद्भव।
महाशनो महापाप्मा विद्धयेनमिह वैरिणम्॥

"जब अर्जुनने श्रीकृष्ण भगवानसे पूछा कि मनुष्य अिच्छाके विरुद्ध भी किसलिअे पाप करता है, तो भगवानने अुसे अुपरोक्त अुत्तर दिया। अिसका अर्थ यह हे कि 'पापका कारण काम है, क्रोध है, वह रजोगुणसे अुत्पन्न होता है। वह बहुभक्षी हे और बहुत पाप करानेवाला है। अुसे जरूर अपना वैरी समझो।' यह सिद्धान्त हे। अिसलिअे जब मि० कैलनबैकको गुस्सा आया तब तुम्हे शात रहना चाहिये था। अपने बडे-बूढे क्रोध करे तब हम नम्र रहे, चुप रहे, और जवाब देना पडे तो कहे कि 'मै अपनी भूल सुधारूगा, अब मुझे माफ कीजिये।' अिसमें यह स्वीकार करनेकी बात नही है कि तुमने जान-बूझ कर अपराध किया हे। फिर जब बडे लोग शात हो तब जहा शका हो वहा विनयपूर्वक अुनसे पूछा जाय। मिस्टर कैलनबैक शात हो जाय तब तुम अुनसे पूछ सकते हो कि सेब सडे जा रहे थे, अत अुनमें से कुछ देनेमे क्या दोप हुआ?"

"डेविडके 'साम' समझने लायक हैं। अुनमें अुन्होने दुष्टोका नाश करनेकी जो अिच्छा बताअी है अुसका रहस्य यह हे कि अुनसे बुराअी सहन नही हो सकती थी। यही विचार रामायणमे है। राक्षसोका सहार देवताओं और मनुष्योने भी चाहा है। 'जय राम रमा' की स्तुतिमें भी यही भावना है। अुसका आध्यात्मिक अर्थ यह है कि डेविड (अर्जुन — दैवी सपत्ति) अपने शत्रु (दुर्योधन आदि — आसुरी सपत्ति) का नाश चाहता है। यह सात्त्विक

वृत्ति है और भक्तिभावमे यह दशा रहती है। जब ज्ञानदशा अुत्पन्न होती है तब दोनो प्रवृत्तिया दब जाती है और सिर्फ शुद्ध भाव — केवल ज्ञान — रहता है। अिस दशाका वर्णन बहुत करके बाअिबलमे नही आता। डेविड दोषयुक्त होने पर भी भक्त थे। और 'साम' मे अुनके जो अुद्गार है अुनकी भाषा सरल है। वे महान होने पर भी औश्वरके सामने दीन बनकर रहते है और अपनेको तिनकेके बराबर समझते है।"

गाधीजीने मेरे अधीर मनको धीरज बधानेके लिअे सन् १९१३ मे जोहानिसबर्गसे नीचेका पत्र फिनिक्स भेजा था। अिस पत्रमे अद्भुत वस्तु है। यह बार बार पढकर मनन करने योग्य है

"तुम्हारा पत्र पढा और फिर पढा। शकराचार्यने अेक श्लोकमे कहा है कि समुद्रके किनारे बैठ कर घासके तिनके पर पानीकी बूद रखकर समुद्र अुलीचनेवाले मनुष्यको जितने धैर्य और समयकी आवश्यकता है, अुससे ज्यादा धैर्य और समयकी आवश्यकता मनको मारनेमे यानी मोक्ष साधनेमे है। तुम तो अुतावले हो गये दीखते हो। मैने बहुत विचार किया है तो भी मृत्युका डर तो मेरा भी नही गया। परन्तु मै अधीर नही होता। प्रयत्नवान रहता हू — अिसलिअे किसी न किसी दिन जरूर मुक्त हो जाअूगा। प्रयत्न करनेका अेक भी मौका न छोडना हमारा कर्तव्य है। परिणाम लाना या चाहना प्रभुके अधीन है। फिर झझट किस बातकी? माता बालकको दूध पिलाते समय परिणामका विचार नही करती। अुसका परिणाम तो आता ही है। मौतका डर मिटाने और मनोविकार नष्ट करनेका प्रयत्न करके प्रफुल्लित रहो तो वह मिट जायगा। नही तो अैसा होगा कि बन्दरका विचार न करनेका विचार करनेसे अुसके विचार मनमे आते ही रहते है। हम पापयोनिसे जन्मे है, पापकर्मसे शरीरधारी बने है, यह सब मैल तुम पलभरमे कैसे धो सकोगे?

'सुतर आवे तेम तु रहे,
जेम तेम करीने हरिने लहे।'*

"यह ज्ञान अखा भगतने दिया है। तुलसीदासजी कहते है कि सकट हो या न हो, परन्तु रामनाम जपनेसे सब कुछ सिद्ध हो जाता है। हमे

* तुझे जैसा भी जीवन अनुकूल आवे वैसा जीवन तू बिता। परन्तु किसी भी तरह श्रीहरिको पहचान।

तो यही अर्थ सिद्ध करना है। अिसलिअे यह जप करते रहना। राम कैसे है, यह मनमे निश्चय कर लेना। वे राम निरजन है, निराकार हैं। वे राक्षसी वृत्तियोके समूह-रूपी रावणका दैवी वृत्तियो रूपी अनेक प्रकारके शस्त्रोसे सहार करनेवाले है। वे शक्तिके लिअे १२ वर्षकी तपस्या करनेवाले है। अन्तमे, शरीर या मनको अेक क्षण भी निठल्ला न रहने देना। अुत्साहपूर्वक दोनोको काममे लगानेसे तुम्हारी सब मुसीबते मिट जायेगी। वैसे तो भगवान पर भरोसा रखना। मुझ पर भरोसा रखना व्यर्थ है। ये सब भरोसे अूपरकी बाते करनेके बाद काम आयेगे।

"यह याद रखना कि जैसे देव हम चाहते है वैसे ही देव हमें मिलते है। जब तुलसीदासने रामचद्रके दर्शन करना चाहा तब श्रीकृष्ण राम बन गये और लक्ष्मीजी सीता बन गअी। म की खासी मिटाना। अुसका कारण खोजना।"

* * *

"हृदय पवित्र हो तो विकारेन्द्रियके विकारी होनेकी बात नही रहती। परन्तु हृदय क्या है? अुसे कब पवित्र मानें? हृदय ही आत्मा है या आत्माका स्थान है। अुसमे पवित्रता मानी कि शुद्ध आत्मज्ञान हुआ, और अुसके रहते अिन्द्रिय-विकार सभव ही नही है। परन्तु साधारण मान्यता अैसी है कि जब हम हृदयको पवित्र बनानेकी खूब कोशिश करते है, तब अुसे पवित्र हुआ मानते है। तुम पर मेरी प्रेमवृत्ति है। अिसका अर्थ अितना ही है कि वैसी वृत्ति रखनेकी मैं कोशिश करता हू। यदि अखड प्रेमवृत्ति हो तो मैं ज्ञानी हो गया। सो तो है नही। जिसके प्रति मेरा सच्चा प्रेम होगा वह मेरे हेतुका या वचनका अनर्थ नही करेगा। वह मेरा तिरस्कार तो करेगा ही नही। अत अिससे यह साबित होता है कि जब कोअी मनुष्य हमे शत्रु मानता है तब दोष पहले तो हमारा ही है। यह बात हमारे और गोरोके सम्बन्धमे भी लागू होती है। अिसलिअे सर्वांशमें हृदयकी पवित्रता अन्तिम स्थिति है। तब तक जैसे जैसे हम पवित्रतामें अूचे चढेंगे, वैसे वैसे हमारे विकार शान्त होते जायगे। विकार अिन्द्रियोमें है ही नही। 'मन अेव मनुष्याणा कारण बन्धमोक्षयो'। अिन्द्रिया तो मनोविकारोके प्रगट होनेके स्थान है। अुनके द्वारा हम मनोविकारोको जानते है।

"अिस प्रकार अिन्द्रियोका नाश करनेसे मनोविकार मिट नही जाते। हिजडे लोगोमें विकार पूरी तरह पाये जाते है। जन्मसे नपुसक पुरुषोमें

अितने अधिक विकार होते है कि वे बहुत बुरे काम करते देखे गये है। मेरी गधशक्ति मन्द है, फिर भी सुगन्ध लेनेको जी चाहता है, और जब कोअी गुलाब वगैराकी सुगन्धकी बात करता है, तब मन गधेकी तरह अुस तरफ चला जाता है और मै जबरन् अुसे वशमे रख पाता हू। जब मन पर काबू न होने पर भी विचारधारा तीव्र होती है, तब सुना गया है कि मनुष्य अिन्द्रियको काट डालते है। सभव है अुस समय यही अुनका कर्तव्य हो। मान लो कि मेरा मन विचलित होता है और मै अपनी बहन पर कुदृष्टि डालता हू। मुझे कामदेव जला रहा है, परन्तु मै सिर्फ मूढ नही बन गया हू। अैसे समय अगर और कोअी अुपाय न हो तो अैसा लगता है कि अिन्द्रिय-च्छेदन कर डालना ही मेरा पवित्र कर्तव्य है। धीरे धीरे अूपर अुठनेवाले पुरुषोका यह हाल नही होता। जिसे तीव्र वैराग्य हो गया हो, परन्तु जिसका पूर्व आचरण ठीक न रहा हो, अुसका यह हाल जरूर हो सकता है। अैसे पुरुषका विकार पैदा न हो और अिन्द्रिय विचलित न हो, अिसके लिअे तात्कालिक अुपाय (अिलाज) चाहना बाझ द्वारा पुत्रकी अिच्छा करनेके बराबर है। वह काम बहुत ही धीरजसे होगा। जैसे जादूका आम सिर्फ देखनेका होता है, वैसे ही तात्कालिक होनेवाली मनकी शुद्धिके बारेमे समझो। हा, अितना होता है मन पवित्र होनेके लिअे तैयार हो गया होता है और सिर्फ सत-समागमरूपी पारसमणिको ढूढता है। अुसके मिलने पर अुसे अपनी पवित्रताके अेकाअेक दर्शन हो जाते है और अपवित्रता सपनेकी-सी बात मालूम होने लगती है। यह कोअी तात्कालिक हुआ नही माना जायगा। बल्कि साधारण, थोडेसे थोडे समयमें होनेवाला और अुस हद तक तात्कालिक अिलाज माना जायगा।

"अेकान्त-सेवन, सत्सग, शुद्धि, सत्कीर्तन, सद्वाचन, निरतर शरीर-मन्थन, अल्पाहार, फलाहार, अल्पनिद्रा, भोगविलासका त्याग — जो अितना कर सकता है अुसे मनोराज्य हस्तामलकवत् प्राप्त हो जाता है। अितना किया जाय और दूसरी चीजोका ध्यान रखा जाय। जब जब मनोविकार अुत्पन्न हो तब तब अुपवासादि व्रत पाले जाय।

* * *

गाधीजीके हिन्दुस्तान आनेसे पहले फिनिक्स आश्रमके विद्यार्थियोको लेकर स्व० मगनलाल गाधी यहा आ गये थे और फिनिक्स आश्रमके नियमानु-

सार वोलपुर—शान्तिनिकेतनमें रहते थे। गाधीजी अिंग्लैण्ड होकर सन् १९१५ के फरवरी मासमे देश आये और थोडे दिन यहा ठहरकर रगून गये। वहासे अुन्होने भाअी श्री मगनलाल गाधीके नाम अेक पत्र लिख कर वताया था कि हमारे आश्रमके विद्यार्थियो और आश्रममे रहनेवालोके व्यवहारमे कैसा नियमन रखा जाय। वह पत्र नीचे दिया जाता है। अुसे पढकर हमे अिस वातकी कुछ कल्पना होगी कि श्री रामायणकी कथाको हम अपने जीवनमे किस तरह चरितार्थ करें.

"अहिंसाके वारेमे तुम्हारा खयाल ठीक है। दया, अक्रोध, अमान आदि अहिंसाके अग है। अहिंसा-धर्म सत्याग्रहकी वुनियाद है। यह वहुत स्पष्ट रूपमे कलकत्तेमें मैने देखा और वही विचार किया कि अिसे हमें व्रतके रूपमे आश्रम-व्रतोंमें दाखिल करना चाहिये। अिस विचारमे से यह निकल आया कि हमें सभी यम पालने चाहिये, और व्रतके रूपमे पालते हुअे हम अुनकी सूक्ष्म स्थितिको समझ सकते है। यहा सैंकडो लोगोके साथ मै जो वाते करता हू, अुनमे सारे यमोको सर्वोच्च स्थान देता हू।

सियराम-प्रेमपियूष-पूरन होत जनम न भरतको।
मुनिमन-अगम यम नियम शम दम विपम व्रत आचरत को॥

"यह छद मुझे अिस अवसर पर कलकत्तेमे याद आ गया और अुसका मैंने खव मनन किया। मै स्पष्ट देख सकता हू कि अिन व्रतोके पालनमें ही हिन्दुस्तानका और हमारा मोक्ष समाया हुआ है।

"अपरिग्रह-व्रतके पालनमे ध्यानमे रखनेकी मुख्य वात यह है कि अनावश्यक कुछ भी सग्रह न किया जाय। खेतीके कामके लिअे वैल न हो तो वैलोका और अुनके लिअे जरूरी सामानका सग्रह करेंगे। दुष्कालका डर जहा हमेशा रहता होगा वहा अनाज जमा करेंगे। परन्तु यह सवाल हमेशा पूछेंगे कि वैलोकी या अनाजकी जरूरत है या नही। सभी यमोको हमें विचारपूर्वक पालना है। अिसलिअे अुनमे दिनोदिन दृढता वढती जायगी और हमें नये नये त्याग सूझने लगेंगे। त्यागकी कोअी हद ही नही है। ज्यो ज्यो हमारा त्याग वढेगा त्यो त्यो आत्माके दर्शन हम अधिक करेंगे। मनकी गति परिग्रह छोड़नेकी तरफ होगी और शरीरकी शक्तिके अनुसार हम त्याग करेंगे, तो अपरिग्रह-व्रतका पालन हुआ माना जायगा।

"अिसी तरह अस्तेयके बारेमें। अपरिग्रहमें अनावश्यक वस्तुओके सग्रहका समावेश होता है। अस्तेयमे वैसी चीजोके अुपयोगका समावेश होता है। मेरा काम अेक कुर्तेसे शरीर ढककर चल जाये और फिर भी मै दो पहनू, तो मै दूसरेकी चोरी करता हू। क्योकि जिस कुर्तेका अुपयोग दूसरे कर सकते हो वह मेरा नही कहला सकता। अगर मै पाच केलोसे गुजर कर सकता हू, तो छठा केला खाना मेरे लिअे चोरी है। मान लो हमने सबके लिअे जरूरी समझ कर ५० नीबुओका परिग्रह रखा। मुझे सिर्फ दो नीबूकी जरूरत है। परन्तु ज्यादा है अिसलिअे यदि मै तीसरा ले लेता हू तो वह चोरी हुअी।

"अिस प्रकार अधिकके अुपयोगसे अहिंसा-व्रतका भी भग होता है। अगर अस्तेयकी भावनासे अुपयोगको घटायें तो हममें अुदारता बढेगी। अगर अहिंसाकी भावनासे अुपयोगको घटायें तो दयाकी भावना बढेगी। प्राणीमात्र, जीवमात्रको हम अभयदान दे, तो अिसमें दया–प्रेमका चिन्तन है। जो यह चिन्तन करेगा अुसका विरोध सपनेमें भी कोअी जीव नही करेगा, यह शास्त्रोका खास निश्चय है और मेरा अनुभव है।

"अिन सब व्रतोका सूत्र सत्य है। मनको धोखा देकर चोरीको अचोरी माना जा सकता है, और मनको धोखा देकर परिग्रहको अपरिग्रह माना जा सकता है। अिसलिअे बहुत सूक्ष्म विचारसे हम पग-पग पर सत्यको प्रगट कर सकते है। जब किसी चीजके बारेमें यह शका हो कि अुसका सग्रह करें या न करे, तब सग्रह न करना ही सीधा नियम है। त्यागमे सत्यका भग नही है। जहा बोलनेके बारेमे शका हो, वहा मौन रहना ही सत्यव्रतीका कर्तव्य है।

"मै यह चाहता हू कि तुम सब जो व्रत स्वतत्र विचारसे लिया जा सकता है अुसे ही लो। लेनेकी जरूरत तो मुझे हमेशा दीखती ही है। परन्तु जब तुममे से प्रत्येकको व्रत लेना जरूरी मालूम हो तभी लेना चाहिये और जितने व्रत लेने हो अुतने ही लेने चाहिये।

"रामचन्द्रजी कितने ही प्रतापी हो गये हो, कितने ही पराक्रम करके अुन्होने लाखो राक्षसोका नाश किया हो, परन्तु अुनके पीछे यदि लक्ष्मण और भरत जैसे भक्त न होते, तो रामको आज कोअी न जानता। साराश यह कि रामचन्द्रजीमें केवल असाधारण क्षात्रतेज ही होता, तो अुनका माहात्म्य थोडे समय तक रहकर नष्ट हो जाता। अुनकी तरह राक्षसोका सहार

करनेवाले तो अनेक पराक्रमी हो गये है। अुनमे से किसीकी कीर्ति और महिमा घर घर नही गाअी जाती । परन्तु रामचन्द्रजीमे कोअी अनोखा तेज था। अुस तेजको लक्ष्मणमे और भरतमे वे अुतार सके अिसी कारणसे लक्ष्मण तथा भरत जैसे महातपस्वी निकले। और अिस तपका माहात्म्य गाते हुअे तुलसीदासजीने कहा कि जो तप महामुनियोके लिअे भी अगम्य है अुस तपके करनेवाले भरतजी न जन्मे होते तो मेरे जैसे मूढको रामके सम्मुख कौन रखता? अिसका अर्थ यह हुआ कि लक्ष्मण और भरतजी मानो रामके यशके अर्थात् अुनकी शिक्षाके द्वारपाल हो। और सिर्फ तपमे ही सब कुछ नही समा जाता। क्योकि चौदह वर्ष तक आहार-निद्राका त्याग तो जैसे लक्ष्मणने किया था वैसे ही अिन्द्रजितने भी किया था। परन्तु तपका जो हार्द रामचन्द्रजीसे लक्ष्मणको प्राप्त हुआ था, वह अिन्द्रजितको नही हुआ था। अितना ही नही, अुसकी वृत्ति तपके प्रभावका दुरुपयोग करनेकी थी। अिसलिअे वह राक्षस कहलाया और भक्त तथा मुमुक्षु तपस्वी लक्ष्मणके हाथसे अुसकी पराजय हुअी। अिसी तरह गुरुदेवका आदर्श कितना ही अूचा हो, परन्तु यदि कोअी अुस आदर्शको अमलमे लानेवाला पैदा नही होगा, तो वह आदर्श जमानेके गहरे अंधकारमें पडा रहेगा। अिसके विपरीत यदि अुस आदर्श पर चलनेवाले निकल आयेंगे, तो वह अपना प्रकाश अनेक गुना फैला सकेगा। तप आदर्शको व्यवहारमे लानेकी सीढी है। अिसलिअे यह समझने लायक बात है कि वह तप — डिसिप्लिन — बच्चोके जीवनमे अुतारना कितना आवश्यक है।"

गांधीजीकी साधना

तीसरा भाग

१

विश्वासघात !

हम पहले जान चुके है कि दक्षिण अफ्रीकाकी सत्याग्रहकी लडाअीमें मुख्यत धार्मिक तत्त्व था। गाधीजीने यह लडाअी अपनी राजनीतिक विचार-सरणीके आधार पर नहीं छेडी थी, परन्तु धार्मिक विचारसरणीके आधार पर छेडी थी। अिसलिअे अिस वातकी खास सावधानी रखी गअी थी कि धार्मिक विचारोसे अकित हुअी अिस लडाअीके किसी भी अगमे सत्याग्रहके सिद्धान्तोके खिलाफ आचरण न हो। सन् १९०७में जनरल स्मट्सने गाधीजीको धोखा दिया था। गाधीजी मानते है कि, "अैसा व्यवहार करनेमे जनरल स्मट्सका अिरादा जान-बूझकर हिन्दुस्तानियोको धोखा देनेका नही था। अितनी नीचता जनरल स्मट्समें नही है। गोरोकी प्रधानता और अुन्हीके हितोकी रक्षा करना वे अपना फर्ज समझते है और अैसा करनेमे हिन्दुस्तानियोके साथ अन्याय करनेकी और जरूरत पडने पर अुन्हे सता-सता कर निकाल देनेकी नीति अुनकी सरकारने अख्तियार की। यह रीति-नीति सार्वदेशिक नीतिके या मानव-प्रेमके सिद्धान्तकी दृष्टिसे घटिया दर्जेकी कही जायगी। परन्तु साधारण नैतिक सिद्धान्तकी दृष्टिसे अुसे विश्वासघात या धोखा देना नही कहा जा सकता।" यह तो गाधीजीने अपने प्रतिपक्षीके प्रति अुदारताकी दृष्टिसे अपना विचार बताया। परन्तु जिस समाजमे जनरल स्मट्स अेक विशाल देशका कारबार चलाते थे अुस पर अुनके जीवनका क्या असर पडा था, अिसकी जाच करनेसे अैसा जान पडता है कि समाज पर तो यही असर पडा था कि जनरल स्मट्सने सन् १९०७मे हिन्दुस्तानियोको धोखा दिया। अगर दो पक्षोमे झगडा हो और अुनके बीच हुअे समझौतेके अर्थके बारेमे शका पैदा हो, तो जो पक्ष दूसरे पक्षसे अुचित न्यायकी माग करे अुसका समझा हुआ अर्थ ही स्वीकार करना चाहिये, अर्थात् किसी सरकार और अुसकी प्रजाके बीच हुअे समझौतेके अर्थके बारेमे बादमें गलतफहमी पैदा हो, तो प्रजापक्षने समझौतेका जो अर्थ समझौतेके समय समझा हो वही अर्थ माना जाना चाहिये। यही अुचित न्याय माना जायगा। परन्तु सरकारी पक्ष अपनी हुकूमतके नशेमें वह अर्थ स्वीकार न करे और अपने हितमे तथा सामनेवालेके अहितमें ही अुसका अर्थ निकाले, तो अुसे विश्वासघातके सिवा और क्या कहा जा सकता है?

फिर भी गांधीजीने हिन्दुस्तानियोके सामने अितना अूचा नैतिक आदर्श रख दिया कि अुस आदर्श तक पहुच सकनेमें असमर्थ होने पर भी हिन्दुस्तानी अुसका अनादर नही कर सके। और बादमे भी अिस लडाओीमे गांधीजीने अितनी नैतिक सूक्ष्मता बरती कि अुसे सार्वजनिक जीवनकी बुनियाद माना जा सकता है। अुस नीतिके गहरे सस्कार जनताके हृदयमे जमते रहे। सत्याग्रहकी लडाओीमे गांधीजीने पग पग पर मर्यादाअे रखी थी। अुन मर्यादाओसे हमारी लडाओी पूर्ण शुद्ध रही। ट्रान्सवालके हिन्दुस्तानी अपने सामाजिक हकोके लिअे लड रहे थे, अुसमे दूसरे पडोसी प्रान्तोके हिन्दुस्तानी निवासी भी अुनकी मदद करनेको अुत्सुक थे। फिर भी पडोसी प्रान्तोके हिन्दुस्तानियोको अैसा करनेसे मना कर दिया गया था। अिसका अेक ही अुद्देश्य था कि अेक प्रान्तकी सरकारके अन्यायके विरुद्ध लडी जानेवाली लडाओीमें दूसरे प्रान्तोके हिन्दुस्तानियोको शामिल करके सरकारको घबरा देना और अुससे लाभ अुठाना गांधीजीको ठीक नही मालूम हुआ। और जिन प्रश्नोके साथ सम्बन्धित लडाओीमे हिन्दुस्तानी गिरमिटिया मजदूरोका हित-सम्बन्ध नही था, अुनमे अुन्हे शामिल होनेको प्रेरित करना या अुकसाना और अुन मजदूरोके मालिकोको कठिनाओीमे डालकर सरकार पर परोक्ष दबाव डालना और विजय प्राप्त करना भी सत्याग्रहकी दृष्टिसे गांधीजीको अनुचित मालूम हुआ। अिसके सिवा, जिस लडाओीमें हिन्दुस्तानी नौजवान और बूढे शामिल हुअे, अुसमे अुनकी पत्नियोमे से बहुतसी स्त्रिया भी शरीक होनेको तैयार थी। परन्तु लडाओीमे स्त्रियोको आगे करके वहाकी सरकारको बदनाम कराना, बेअिज्जतीसे बचनेके लिअे सरकारको समझौता करनेकी स्थितिमे डाल देना भी गांधीजीको अनुचित प्रतीत हुआ। अिस प्रकार गांधीजीने सत्याग्रहकी लडाओीमे अनेक नैतिक सूक्ष्मताओका पालन किया। गांधीजीने अिस लडाओीमे विपक्षीकी किसी भी कठिनाओीका अनुचित लाभ अुठानेकी कोशिश नही की। अैसा सयम रखना किसी भी प्रजाके लिअे मुश्किल है। अनेक कठिनाअियोमे मुट्ठीभर सत्याग्रहियोके लिअे प्राणोको खतरेमे डालकर सत्यकी विजय होने तक जूझना और टिके रहना आसान है, परन्तु प्रतिपक्षी कठिनाओीमे हो तब अपनी बात आगे रखकर, अुसके विरुद्ध लडकर तथा अुसकी कठिनाओीमे वृद्धि करनेकी धमकी देकर अपना काम बना लेनेकी कुनीतिसे बच जाना बहुत कठिन है। लडाओी तो कामचलाअू समझौतेके कारण रुक गअी थी। परन्तु अुसके बाद सन् १९१३

के अप्रैल मासमें यूनियन पार्लियामेण्टमें 'न्यू अिमिग्रेशन विल' सरकारने पेश कर दिया। यह विल हिन्दुस्तानी जातिके लिअे विलकुल असतोपजनक था। अुसमे हिन्दुस्तानियोकी अुस समय तककी सत्याग्रहकी लडाअीके प्रश्नका फैसला नही हुआ था। रगभेद कायम रखा गया था। अिस मौके पर भी हिन्दुस्तानियोंमे विलकी खूव चर्चा हुअी। ट्रान्सवालमें तो मअी महीनेकी तीसरी तारीखको हिन्दुस्तानियोने विराट सभा करके सत्याग्रहका प्रस्ताव पास किया।

अितनेमे अेक और चौकानेवाली घटना हुअी। केपटाअुनके अेक मुसलमान व्यापारीकी पत्नी हिन्दुस्तानसे केपटाअुन गअी। अिमिग्रेशन-विभागने अुस महिलाको अुतरनेकी अधिकारिणी न मानकर अुतरने नही दिया। अुस महिलाके पतिने अिमिग्रेशन-अफसरके अिस निश्चयके खिलाफ केपटाअुनके हाअीकोर्टमें अपील की। हाअीकोर्टके जज मिस्टर मरलेने यह फैसला दिया कि जो भाअी अिस महिलाका पति होनेकी वात कहता है वह केपकॉलोनीका निवासी होनेका हक रखता है। अिसलिअे अुसकी पत्नीको भी वह हक होना ही चाहिये। परन्तु जिसे वह अपनी विवाहिता स्त्री कहता है वह वास्तवमें अुसकी विवाहिता स्त्री ही है अैसा कोअी कानूनी सबूत वह हिन्दुस्तानी नही दे सका। अिसलिअे अदालत अैसा निर्णय नही कर सकती कि यह महिला अुस हकदार हिन्दुस्तानीकी जायज पत्नी है। और अिसलिअे अुस स्त्रीको केपटाअुनकी हकदार निवासिनी नही ठहराया जा सकता। यह फैसला देकर हाअीकोर्टने अुस महिलाको वापस धकेल दिया। यह फैसला हिन्दुस्तानियोके लिअे भयकर माना गया। यह फैसला कायम रहता तो आयदा अुसका प्रमाण सभी फैसलोमे लिया जाना स्वाभाविक था। अितना ही नही, अिस फैसलेको सरकार स्पष्ट कानूनका रूप भी दे सकती थी। अैसा होने पर दक्षिण अफ्रीकासे हिन्दुस्तानियोकी जड जल्दी ही अुखड जाती। अुनकी करोडोकी सपत्ति नष्ट हो जाती। अिसका अर्थ यह होता कि अपने अपने धर्मके अनुसार हुअे विवाहोको सरकारी अदालतोमे दर्ज कराना चाहिये। हिन्दुस्तानियोमें अैसा कोअी रिवाज नही है। विवाह अुनमें अेक सामाजिक कर्तव्य माना जाता है और धार्मिक विधिसे किया जाता है। अिस प्रकार हिन्दुस्तानी लोग सामाजिक और धार्मिक सस्थाओमे राज्यसस्थाको ज्यादा महत्त्व नही देते। और अदालतोमें विवाह दर्ज करानेकी प्रथा हिन्दुओ, मुसलमानो, या पारसियो किसीमें भी नही है। अिसलिअे अूपरके फैसलेका सीधा अर्थ यह हुआ कि

(१) हिन्दू, मुसलमान और पारसी धर्मके अनुसार हुअे विवाह नाजायज माने जायेंगे, क्योंकि वे ब्रिटिश अदालतोमे दर्ज नही कराये गये है और अुन विवाहो पर सरकारकी मुहर नही लगी है। अिस तरह तीनो धर्मोका अपमान होगा।

(२) जो जो हिन्दुस्तानी विवाह हुअे है और आगे होंगे, वे सभी गैरकानूनी माने जायेंगे। अर्थात् हिन्दुस्तानी स्त्रिया अपने पतियोकी विवाहिता पत्नी न मानी जाकर रखेल समझी जायेगी। अिस प्रकार हिन्दुस्तानी स्त्रीत्वका भी अपमान होगा।

(३) हिन्दुस्तानी स्त्री नाजायज मानी जाय तो अुससे पैदा हुअी सतान भी नाजायज मानी जायगी। अिस प्रकार अैसी स्त्रिया या अुनसे अुत्पन्न होनेवाली सतान दक्षिण अफ्रीकाके बाकायदा निवासी नही माने जायेंगे। अत अुन्हे दक्षिण अफ्रीकासे निकाल दिया जायगा।

(४) जब सन्तान नाजायज मानी जायगी तो अुस सतानके पिताकी जायदादका कानूनी वारिस कौन होगा? कोअी नही।

(५) जब किसी आदमीका कोअी बाकायदा वारिस न हो तब अुस आदमीके मरनेके बाद अुसकी सपत्ति भी लावारिस मानी जायगी।

(६) अग्रेजी कानूनके अनुसार लावारिस सपत्तिकी मालिक सरकार मानी जायगी।

बस, अन्यायकी हद हो गयी। अिस अेक ही तीरसे सरकारने अनेक चिडियोका शिकार करना चाहा। अुसने अैसी अधम चाल चली कि दक्षिण अफ्रीकामें हिन्दुस्तानी आबादीका नामोनिशान न रह जाय, अितना ही नही, अुसकी करोडोकी जायदाद भी हडप कर ली जाय।

अितनेमे ही हिन्दुस्तानियो पर अेक और बम गिरा। गिरमिटसे स्वतत्र होनेवाले हिन्दुस्तानियो परसे तीन पौण्डका मुड-कर अुठा लेनेका मन्त्रियोने श्री गोखलेको वचन दिया था। अुसके अनुसार बिल पार्लियामेण्टमे पेश करनेके लिअे हिन्दुस्तानी नेताओने दबाव डाला, तो यूनियन सरकारने बताया कि चूकि तीन पौडका कर अुठा देनेके खिलाफ नेटालके गोरोका सख्त विरोध है, अिसलिअे सरकार पार्लियामेण्टमे अैसा बिल पेश करके नेटालके गोरोको नाराज करनेके लिअे तैयार नही है। अिसके अलावा, गोखलेजीको दिलाये हुअे विश्वासकी बात गलत है। अैसा कोअी भी आश्वासन मन्त्रियोने गोखलेजीको अधिकृत रूपमे नही दिया। अिस पर गाधीजीने श्री गोखलेसे यह स्पष्टी-

करण मगवा लिया कि मन्त्रियोंने अुनके साथ हुअी मुलाकातमें यह विश्वासपूर्ण आश्वासन दिया है कि पार्लियामेण्टकी अगली बैठकमें तीन पौंडका कर अुठा देनेका बिल पेश करके अुसे अुठा लिया जायगा। परन्तु मन्त्रियोंको सच-झूठकी क्या परवाह थी? श्री गोखलेने मन्त्रियोंकी मुलाकातके बाद दक्षिण अफ्रीकामें ही अनेक सार्वजनिक सभाओंमें और प्रसिद्ध गोरोंकी मुलाकातोंमें कअी बार जाहिर कर दिया था कि मन्त्रियोंने तीन पौंडका कर अुठा लेनेका मुझे आश्वासन दिया है। परन्तु अुस समय अिस बातका किसी भी मन्त्रीकी तरफसे जरा भी विरोध नहीं किया गया था। अिस सम्बन्धमें बहुत अूहापोह हुआ। सरकारने अिस प्रश्नको खटाअीमें डालनेकी चाल चलना शुरू किया और अेक बिल पेश किया। अुसमें अेक खास अुम्रसे बड़ी स्त्रियों परसे तीन पौंडका कर अुठा देनेकी सूचना की। अुस समय मि० श्राअिनर् और मि० मेरीमैन वगैरा सहृदय सदस्योंने अुसका सख्त विरोध किया, और वह अिस हेतुसे कि तीन पौंडके करवाले बिलका अितना भाग सुधार दिया जायगा, तो फिर भविष्यमें वह कर पूरी तरह अुठाया नहीं जायगा। अिससे अुन्होंने तो अैसा रवैया अख्तियार किया कि तीन पौंडका कर ही भयकर है, अिसलिअे वह बिलकुल अुठ जाना चाहिये, नहीं तो भले जैसा है वैसा ही रहे। अिस प्रकार सरकारका यह प्रपच नहीं चला और तीन पौंडका कर लगा ही रहा।

श्री गोखलेके प्रति यानी समस्त हिन्दुस्तानी प्रजाके प्रति यूनियन सरकारके अिस विश्वासघातसे हिन्दुस्तानियोंके दिलोंमें भारी खलबली मच गयी। अगर श्री गोखलेका और अिसलिअे सारे हिन्दुस्तानका घोर अपमान हिन्दुस्तानी लोग सहन कर लेते, तो वे 'निर्जीव और निष्प्राण' माने जाते, कायर और निकम्मे समझे जाते।

सरकारकी ये भूलें सुधारने और हिन्दुस्तानियोंको सत्याग्रहकी लड़ाअीमें पड़नेको बाध्य न करनेके लिअे गांधीजीने सरकारसे बहुत कुछ कहा, अनेक सूचनाअें दीं और समझौतेके प्रयत्न किये, परन्तु सरकारने अुन पर कोअी ध्यान नहीं दिया। अिसलिअे अिस विषयमें अप्रैल महीनेकी ३० तारीखसे यूनियन सरकारके मत्री मि० फिशरके साथ गांधीजीने जो पत्र-व्यवहार किया, वह मअी मासकी २४ तारीखको प्रकाशित कर दिया गया। अिससे यूनियन सरकारका विश्वास-भंग और अुसके विरुद्ध हिन्दुस्तानियोंकी तरफसे शुरू होनेवाली सत्याग्रहकी लड़ाअीकी आवश्यकता सबको मालूम हो गअी।

२

आखिरी लड़ाओकी तैयारी

सरकारने हिन्दुस्तानियोको केवल धोखा ही नही दिया, वल्कि भगवानसे डरकर अपना गुजर चलानेके लिअे अथक मेहनत करनेवाले हिन्दुस्तानियोको दक्षिण अफ्रीकासे अत्यन्त क्रूरतासे अुखाड फेंकनेकी चाले चली। अिस वुरे व्यवहारके विरुद्ध हिन्दुस्तानियोने अत्यत सच्चा और शुद्ध व्यवहार करके दिखाया। आज तक जो जो समझौते हुअे अुनमे जिस कारणके लिअे लडाअी छेडी गअी थी अुस पर सत्याग्रही मजवूतीके साथ कायम रहे। मौकेका फायदा अुठाकर न तो अुन्होने अपनी मागको थोडा वढाया और न अुसे थोडा कम किया। फिर भी नीतिके सिद्धान्तोका ढोग करनेवाली सरकारने अैसे अनेक आरोप लडाअीके दिनोमे हिन्दुस्तानियो पर लगाये। पिछली लडाअीमे तीन पौडका कर अुठा देनेकी और हिन्दुस्तानी विवाहोको जायज करार देनेकी मागे जोडी गअी, तव सद्‌गुणी (?) जनरल स्मट्सने यही आरोप हिन्दुस्तानियो पर लगाया। सत्याग्रहकी लडाअी हो रही हो और अुसके वीचमे सरकार नये नये कारण अुपस्थित करे, तो वे कारण लडाअीमे अवश्य जोडे जा सकते है और अैसा करना सत्याग्रहीके लिअे जरा भी अनुचित नही माना जायगा। अैसा न करे तो प्रतिपक्षी चालाकी करके लोटा पकडा कर घडा ले जाय और सत्याग्रहियोको मूर्ख वनाये, साथ ही लडाअीका अन्त भी न आये। जनरल स्मट्स तो कलम और वरछी दोनोमे वडे चालाक ठहरे। वे नीति और सत्याग्रहके सिद्धान्तोकी सूक्ष्मता अच्छी तरह समझते थे, अिसलिअे हिन्दुस्तानी निरे पोथी-पडित होते तो अपने ही सिद्धान्तोमे पूरी तरह फस जाते। परन्तु जनरल स्मट्सकी यह चालाकी गाधीजीके सामने न चली। हिन्दुस्तानियो पर लगाये गये आरोपोका करारा जवाव देकर गाधीजीने अुनका मुह वन्द कर दिया।

अिस तरह अेक तरफ यूनियन पार्लियामेण्टकी वैठक, दूसरी तरफ तीन पौडके करके वारेमे सरकारका विश्वासघात, तीसरी तरफ अिमिग्रेशन-कानूनका पार्लियामेण्टमे पास होना और चौथी तरफ जज सरलेका हिन्दुस्तानी विवाह-सम्वन्धी निर्णय — अिस प्रकार चारो ही तरफका वातावरण गरमा-

गरम था। अितनेमे ही अेक अैसी खास घटना घटी जो सत्याग्रही हिन्दुस्तानियोकी परीक्षा करनेवाली थी। दक्षिण अफ्रीकामे अेक वडी हडताल हुअी। रेलवे वगैरा तमाम सरकारी महकमे अिस हडतालसे अव्यवस्थित हो गये। अिस हडतालकी जडमे राज्यक्रान्तिका अुद्देश्य था। दक्षिण अफ्रीकामे कुछ गरम दलके लोगोको ब्रिटेनके साथ यूनियनका सम्वन्ध जरा भी पसन्द नही था और वे दक्षिण अफ्रीकामे ब्रिटिश साम्राज्यका नामोनिशान भी नही रहने देना चाहते थे। अैसे लोगोने अिस हडतालका कार्यक्रम वनाकर सारे देशमे, खास कर ट्रान्सवालमें, अधाधुवी फैला दी। सरकार भी वडी परेशानीमे पड गअी। अिस विकट अवसर पर हडतालियोके नेताओने गाधीजीसे कहा कि हिन्दुस्तानी भी सत्याग्रहकी अपनी लडाअी अिसी समय शुरू कर दे। साधारण राजनीतिकी दृष्टिसे तो यह मौका स्वागत करने लायक था। परन्तु सत्याग्रही गाधीजीने अैसी अनुचित कार्रवाअी करनेसे साफ अिनकार कर दिया और वता दिया कि, "सत्याग्रही विरोधीकी कठिनाअीसे फायदा नही अुठाना चाहेगा। अैसी कमजोरी सत्याग्रहीको शोभा नही देती। सरकारकी भारी कठिनाअीमें लडाअी शुरू करना तो मरतेको मारने जैसा होगा। सत्याग्रहीकी वीरता अैसी नीतिको निन्द्य मानती हे।" गाधीजीने हडतालियोके नेताओको और हिन्दुस्तानियोमें से जो भाअी अिस मौकेसे लाभ अुठानेकी सलाह दे रहे थे अुन्हे भी अैसा ही जवाव दिया।

अैसी वीरता और शुद्ध नीतिकी शत्रु भी तारीफ करता है। अिसका असर समझदार मनुष्यो पर अच्छा पडा। सरकार हडतालसे निपट सकी। अुसने खास खास नेताओको अेकदम पकडकर और चुपचाप जहाजमे विठाकर अिग्लैड भेज दिया। सेनाकी सहायता ली और देशमें फौजी कानून जारी कर दिया। दो महीनेकी लगातार कोशिशोके वाद शान्ति स्थापित हुअी। अिस अर्सेमें हिन्दुस्तानी रुके रहे और अुन्होने अपनी लडाअी नही छेडी। दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोकी हालतको देखते हुअे यह कार्रवाअी वडी चतुराअी भरी कही जायगी। सत्य पर कायम रहकर चलनेवाले मनुष्यकी नीतिमें कअी तरहकी चतुराअियोका समावेश होता है। सरकारकी अिस कठिनाअीका लाभ अुठानेको हिन्दुस्तानी सत्याग्रही ललचा जाते, तो सरकारकी भारी परेशानीसे फायदा अुठानेके वजाय हिन्दुस्तानी जाति पर गभीर जोखिम आनेकी पूरी सभावना थी, और शायद सूखेके साथ गीला भी जल जाता।

परन्तु सत्याग्रहियोकी रक्षा अुनका सत्य करता ही हे। अिसी समय श्री गोखलेकी सलाहसे अेक डेप्युटेशन अिग्लैण्ड भेजा गया। श्री गोखले भी वही थे। अुन्होने वहुत प्रयत्न किये। परन्तु यूनियन सरकारने अपना दुराग्रह नही छोडा और हिन्दुस्तानियोकी मागको भी स्वीकार न करनेका अपना निश्चय वडी सरकारको वता दिया।

दक्षिण अफ्रीकाकी हडताल खत्म हुअी और सव जगह शान्ति हो गअी, तो गाधीजीने हिन्दुस्तानियोकी वात छेडी। लेकिन वुरा तो अपनी वुराअीसे वाज नही आया। सरकारने नया अिमिग्रेशन-कानून पास करके सम्राटकी मजूरी भी हासिल कर ली। यह मजूरी सन् १९१३ के जून मासमे मिली। जुलाअीमे यह कानून सरकारी गजटमे प्रकाशित किया गया और अगस्तमे तो अुसके अमलके लिअे अलग अलग विभाग भी स्थापित कर दिये गये। अिस कारणसे हिन्दुस्तानियोने भी तैयारी की। 'अिण्डियन ओपीनियन' अखवारके जरिये सारे देशके हिन्दुस्तानियोमे गरमागरम वातावरण फैल गया। लडाअीके आसार दिखाअी देने लगे और सितम्बरकी १३ तारीखको गाधीजी तथा सरकारके वीच हुआ सारे महत्त्वपूर्ण मुद्दोवाला पत्र-व्यवहार प्रकाशित करके हिन्दुस्तानी सत्याग्रहियोने सत्याग्रहकी घोपणा कर दी और अपनी नीचे लिखी मागे पेश की

१ दक्षिण अफ्रीकाके किसी भी कानूनमें रगभेद न रखनेका सिद्धान्त सरकारको मान लेना चाहिये और अुसके अनुसार फ्री स्टेटके कानूनसे जातिभेद दूर होना चाहिये।

२ अेक पत्नीवाले हिन्दुस्तानी विवाहोको जायज मानना चाहिये।

३ तीन पौडका कर विलकुल अुठा देना चाहिये।

४ दक्षिण अफ्रीकामे पैदा हुअे हिन्दुस्तानियोके केपकॉलोनीमे प्रवेश करनेके हकोकी रक्षा होनी चाहिये।

५ भविष्यमे हिन्दुस्तानियो पर जो कानून लागू होगे, अुनका अमल नरमी और न्यायसे करनेकी नीति स्वीकार होनी चाहिये।

अूपरके पाच मुद्दे पेश करके हिन्दुस्तानियोने सन् १९१३ के सितम्बर मासमें सत्याग्रहकी लडाअी शुरू कर दी।

३

'चालीसके चालीस हजार'

अिन सब सधिवार्ताओ और सरकारके साथके पत्र-व्यवहारके दरमियान फिनिक्स आश्रम सत्याग्रहकी लडाअीकी तालीमका मुख्य केन्द्र बन गया। वहा रहनेवाले बडी अुम्रके सब लोग तो प्रेसका काम करते ही थे, अिसलिअे अखबारके तेज और अुत्साहप्रेरक लेख कम्पोज करते करते शब्दश अुनके हृदयमे अकित हो जाते थे। कम्पोजीटर कोअी पेशेवर लोग नही थे, वे तो सत्याग्रही योद्धा ही थे। गाधीजीके लेख छपनेसे पहले कम्पोजीटर युवक अुनके वीररसका पान कर लेते थे, और अुनके सत्यके सिद्धान्तोको अपनी रग-रगमे अुतार लेते थे। सारे दिन खेतीका, शालाका, प्रेसका या और कोअी काम करनेके बाद शामको प्रार्थना पूरी होने पर दिनभरकी घटनाओकी चर्चा होती। गाधीजी लडाअीके मुद्दोको समझाते थे और अुसके सिलसिलेमें जो प्रश्न पूछे जाते अुनका जवाब देते थे। जेलकी मुश्किले, जेलकी तालीम, जेलकी खुराक, जेलमें सत्याग्रहीका व्यवहार वगैरा विषयो पर अनेक सवाल गाधीजीसे पूछे जाते और गाधीजी अुनका जवाब देते चले जाते। अमुक कठिनाअीके अवसर पर सत्याग्रहीको किस ढगसे चलना चाहिये, अिसका निर्णय गाधीजी नीतिकी सूक्ष्मताको कायम रखकर देते थे। अिस प्रकार लडाअी शुरू होनेसे पहले डेढ महीने तक प्रार्थनाके बाद होनेवाली अेक अेक घटेकी अिस चर्चामे लडाअी-सम्बन्धी आवश्यक ज्ञान गाधीजीसे सबको मिल गया। अनेक शकाओका निवारण हो गया, हृदयकी कअी गाठे खुल गअी और सबके दिलोमें शुद्ध सत्यके प्रति श्रद्धा अुत्पन्न हो गअी।

अिन प्रसगोमे से अेक सुन्दर प्रसग यहा लिखने जैसा है।

लडाअीका वातावरण जमने लगा था। अेक रविवारको मैं प्रेसके कामसे डरबन गया था। जहा जहा हिन्दुस्तानियोकी दुकान या मकान पर मैं जाता, वही सवाल होता, "अब क्या करना है?" यह पूछनेके पीछे किसीके हृदयमें जिज्ञासा होती, किसीके हृदयमें लडाअीका अुत्साह मालूम होता, किसीके हृदयमें लडाअीके प्रति श्रद्धा जान पडती और किसीके हृदयमें लडाअीके प्रति

निरुत्साह और अुसके परिणामोके विषयमे अश्रद्धा मालूम होती थी। वहुतोके साथ हुअी वातोमे मुझे आखिरी वात ज्यादा मालूम हुअी और वातावरणमे हिन्दू-मुसलमानोके वीच कुछ वेदिली भी दिखाअी दी। गभीर झगडेकी कोअी वात नही थी, परन्तु आपसमे सकोचकी वृत्ति तो थी ही। हृदयका मिलन नही था।

अिस सारे वातावरणका असर लेकर मै शामकी गाडीसे फिनिक्स लौटा। रातको प्रार्थनाके वाद वाते हुअी। मैने गाधीजीसे पूछा

"हमने सरकारके साथ हुआ अतिम पत्र-व्यवहार प्रकाशित करके और अपनी मागे पेश करके लडाअी शुरू कर दी। परन्तु अभी तक हममे कोअी दोष मुझे मालूम नही होता। डरवनमे आज मै खूव घूमा, परन्तु मुझे लडाअीके वारेमे कोअी अुत्साह नजर नही आया। अितना ही नही, अधिकाश लोगोमे तो लडाअीके वारेमे अश्रद्धा ही भरी है। वहुतेरे लोग यह मानते है कि 'गाधीभाअी नाहक पेट दवाकर दर्द खडा कर रहे है। सिद्धान्तकी और मान-अपमानकी वातको छोडकर जो कुछ रोटी पैदा होती है अुसे करने दे तो वहुत अच्छा। गोरोके साथ झगडा खडा करनेसे तो अुलटे वे हमे ज्यादा दु ख देगे। अिसके बजाय आजकी स्थितिमे ही रहे तो क्या अच्छा नही होगा? जरा मूछ नीची रखकर चलेगे। यहा हम रुपया कमानेको आये है, वरवाद होनेको नही आये। स्वाभिमान रखना होता और अुसके लिअे जेलमे जाकर खराव होना होता तो यहा किसलिअे आते!'" अैसी जो साफ साफ वाते वहुतसे भाअियोने मुझसे की थी वे सब मैने गाधीजीको सुना दी। अुन परसे मेरे हृदय पर जो असर हुआ था अुससे दु खी होकर मैने पूछा "वापूजी, अिस यूनियन सरकारके साथ लडनेमे हमारी ताकत कितनी है? सात सालसे सत्याग्रहकी लडाअी शुरू हुअी है, परन्तु अुससे हमे कितना वल मिला? और अितनी वडी सरकारके साथ लडनेके लिअे हमारे पास आदमी कितने है? क्या आपने अिसका हिसाब लगाया है?

गाधीजीने हसते-हसते जवाव दिया "मैने तो रात-दिन हिसाब लगाया है। फिर भी तुम गिन लो। हमारे सत्याग्रही कौन अपरिचित है?"

मैने फिनिक्ससे ही शुरुआत की। नेटाल, ट्रान्सवाल और फिर केप-कॉलोनीमे से सत्याग्रहकी लडाअीमें अन्त तक जूझनेवाले योद्धाओके नाम मै अगुलियोके पोर पर गिनने लगा। तीनो प्रान्तोके नाम गिन लेनेके वाद जव

अेक भी नया नाम मुझे या गाधीजीको याद नही आया, तव कुल सख्या चालीसकी हुअी। मैंने कहा

"वापूजी, चालीस पूरे हो गये।" गाधीजीने गभीर स्वरमे पूछा. "परन्तु ये चालीस योद्धा कैसे है?"

मैंने अिस प्रश्नका मर्म मनमे समझकर जवाव दिया "ये चालीस अैसे है जो अन्त तक जूझेंगे, वे जीकर भी जीतेंगे और मरकर भी जीतेंगे।"

गाधीजी यह सुनकर अपूर्व जोशमे आ गये और वोल अुठे "वस, वस। अैसे चालीस सत्याग्रही योद्धा, प्राणोकी वाजी लगाकर अन्त तक जूझने-वाले चालीस सत्याग्रही योद्धा काफी है। तुम देख लेना अैसे चालीसके चालीस हजार'हो जायेंगे!" गाधीजी यह वाक्य वोलते समय वहुत भावावेशमे आ गये। अुनके रोगटे खडे हो गये। और वे आगे वोले "भले ही ये चालीस भी न हो, मै अकेला ही गोखलेजीके अपमानका वदला लेनेको काफी हू। कितनी ही वडी सल्तनत हो, परन्तु गोखलेजीके साथ विश्वास-घात करनेवाले और अुनका अपमान करनेवालेके खिलाफ मै अकेला ही काफी हू। जव तक गोखलेजीको दिया हुआ वचन नही पाला जायगा, तव तक पागल वनकर मै गोरोका द्वार खटखटाअूगा। गोखलेजीका अपमान! यह हो ही कैसे सकता है? यह कैसे सहन हो सकता है?"

सव शान्त होकर सुनते रहे। हमारे हृदयमे जो कुछ अश्रद्धा थी वह अिस अजेय श्रद्धाकी प्रचड अग्निमें जलकर भस्म हो गअी। आज भी वह प्रसग मेरे स्मृति-पटल पर ताजा ही है। गाधीजीकी वही भव्य मुखाकृति आखोके सामने खडी हो जाती हे। और अुसी हृदयके करुणापूर्ण निश्चयकी प्रतिध्वनि कानोसे टकराती हे।

लडाअी हुअी, अुसका अन्त आया और समझौता भी हुआ। अुसके वाद अिस लडाअीमें कितने मनुष्योने भाग लिया, यानी कितने आदमी जेलमे गये थे, जेलका खतरा अुठाकर भी हडतालमे शामिल हुअे थे और जेलमे जानेकी कोशिश करने पर भी पकडे नही गये थे, अिसकी गिनती करने वैठे तो कुल तादाद चालीस हजारकी हुअी। मै चौका। मुझे अुस रातकी और अुस समयकी भविष्यवाणी याद आअी "चालीसके चालीस हजार हो जायेंगे!"

४

शुभ आरम्भ

लडाओीकी रणभेरी बजने लगी। हिंसक लडाअी हो तो हजारो आदमी केसरिया बाना पहनकर निकले, शस्त्रास्त्रके भडार खाली हो जाय, तोपखाने खाली हो जाय, भयकर और प्राण-घातक जहरीले शस्त्रोसे मनुष्य अपने मानव-बधुओका खून चूसनेके अुत्साहमे पागल बन जाय, जो विपक्षका है वह हमारा शत्रु है, अैसा मानकर अुसमे से जितनोको मारा जा सके अुतनोको मारकर वाहवाही या अिनाम लेनेकी अिच्छासे प्रेरित होकर मनुष्यके बजाय पशुवृत्ति धारण किये हुअे मानव-पशुओके झुडके झुड रणक्षेत्रमे झोक दिये जाय और बादमे वे अेक-दूसरे पर भूखे गीधोकी तरह टूट पडें। परन्तु अिस तरहकी कोअी धावली फिनिक्स आश्रममे नही थी। थोडे दिन बाद दक्षिण अफ्रीकाकी यूनियन सरकारको हिला देनेवाली जो लडाअी लडनी थी, अुसकी तैयारी देखनेके लिअे कोअी फिनिक्स आश्रममे आता तो अुसे कुछ भी पता न चलता। वह बेचारा जैसे आता वैसे ही लौट जाता! किस बातकी तैयारी? औरोको मारनेकी? यहा तो औरोको मारनेकी मनाही थी। तब तैयारी किस बातकी? स्वय मर मिटनेकी? हा, पर अुसके लिअे बाहरी शस्त्र-साधनोकी या बाहरी तालीमकी कोअी जरूरत नही थी। अिसके अलावा, अिस अहिंसक लडाअीमें मर्द ही अकेले भाग ले सकते हो अैसी बात नही थी। सिर्फ नौजवान ही भाग ले सकते हो अैसी भी बात नही थी। स्त्री-पुरुष, फिर वे शरीरसे बलवान हो या कमजोर, तन्दुरुस्त हो या रोगी, सभी भाग ले सकते थे। अरे, बूढी मा या छोटा बच्चा तक अुसमे भाग ले सकता था। अुसके लिअे केवल हृदयकी सत्याग्रही वृत्ति ही आवश्यक थी। अुसे सिखानेके लिअे शिक्षा-शालाअे खोलनेकी जरूरत नही थी। आश्रमका वातावरण ही अुसकी तालीम दे रहा था।

अिस आखिरी लडाअीमें दो प्रचड शक्तियोकी वृद्धि हो गअी। आज तक तो किसी स्त्रीकी अिच्छा होने पर भी अुसे लडाअीमे शामिल होनेकी मनाही की जाती थी। परन्तु अिस लडाअीमे हिन्दुस्तानी स्त्रियोके स्त्रीत्व पर

किये गये हमलेका विरोध करना था। अिसमें तो हिन्दुस्तानी स्त्रियोंके स्वाभिमानकी रक्षा करनेका सवाल था। अिसीलिये यह फैसला हुआ कि स्त्रियोको भी जरूर शरीक होना चाहिये। अिसी तरह गिरमिटिया मजदूरोको आज तक लडाअीमें शामिल होनेकी सलाह या प्रेरणा नही दी जाती थी, परन्तु तीन पौंडके करकी लडाअीमे भाग लेना अुनका भी फर्ज हो गया। और हजारो गिरमिटिया मजदूर भी अिस लडाअीमें भाग ले सके। अिस प्रकार ये दो शक्तिया अिस लडाअीमें और जुड गअी।

परन्तु अिन शक्तियोको पैदा करके अुनका सग्रह करनेकी भी ताकत होनी चाहिये। गाधीजीको विश्वास तो था कि बहुतसी हिन्दुस्तानी बहनें जेल जानेको तैयार होगी। परन्तु स्वय मरे बिना स्वर्ग जानेकी बात किसीने सुनी है? गाधीजीको लगा कि कस्तूरबा अिस लडाअीके लिअे तैयार हो जाय और जेलमे चली जाय, तो सारी बाजी जीत ली जाय। परन्तु बाको तैयार कैसे किया जाय? अुसे हुक्म देकर जबरदस्ती तैयार करनेमे क्या मजा है? बादमें अैसे बल पर विश्वास कैसे रखा जा सकता है? कस्तूरबामें यह शक्ति तो जरूर है कि अेक बार किसी बातको वह समझ ले तो फिर अुस पर डटी रहती है। परन्तु यह भी सवाल है कि अुस बातको समझा कर अुसके लिअे बामें दृढता कैसे पैदा की जाय? गाधीजी अिसीका विचार करते रहते थे और मौका मिलने पर अुन्होने यह कार्य सफलतापूर्वक पूरा किया।

अेक दिन सदाके नियमानुसार पाखाना साफ करनेके बाद नहा-धोकर मैं लगभग साढे नौ बजे भोजनालयमें गया। गाधीजी भी अुसी समय शालासे आये। कस्तूरबा तो वहा थी ही। रोटीका आटा गूध कर अुन्होने रख दिया था। अुन्होने रोटिया बेलना शुरू किया और मैंने सेंकना शुरू किया। गाधीजी फुटकर काम कर रहे थे। काम करते करते गाधीजीने अेकाअेक कस्तूरबासे पूछा "तुम्हे कुछ मालूम हुआ?"

"क्या?" कस्तूरबाने जिज्ञासासे पूछा।

गाधीजीने जरा हसते-हसते जवाब दिया "आज तक तुम मेरी विवाहिता स्त्री थी। लेकिन अब तुम मेरी विवाहिता स्त्री नही रही।"

कस्तूरबाने जरा भौंहें चढाकर कहा "यह किसने कहा? तुम तो रोज नअी नअी समस्यायें ढूढ निकालते हो।"

गाधीजी हसते हसते बोले "मै कहा ढूढ निकालता हू? वह जनरल स्मट्स कहता है कि अीसाअी विवाहकी तरह हमारा विवाह अदालतमे दर्ज नही हुआ, अिसलिअे वह गैरकानूनी माना जायगा। और अिसलिअे तुम मेरी विवाहिता स्त्री न मानी जाकर रखेल मानी जाओगी।"

कस्तूरबाने गुस्सेमे आकर कहा "कहा अुसने अपना सिर! अुस निठल्लेको अैसी-अैसी बाते कहासे सूझती है?"

गाधीजीने सक्षेप करके कहा "परन्तु अब तुम स्त्रिया क्या करोगी?"

"हम क्या करेगी?" कस्तूरबाने पूछा।

"हम लडते है वैसे तुम भी लडो। सच्ची विवाहिता स्त्री बनना हो और रखेल न बनना हो, साथ ही तुम्हे अपनी अिज्जत प्यारी हो, तो तुम भी सरकारके खिलाफ लडो।"

"तुम तो जेलमे जाते हो!"

"तुम भी अपनी अिज्जतके खातिर जेलमे जानेको तैयार हो जाओ।" गाधीजीका वाक्य सुनकर कस्तूरबा आश्चर्यमे पड कर बोली "जेलमे! औरते भी कही जेलमें जाती है?"

"हा, जेलमें। स्त्रिया जेलमें क्यो नही जा सकती? पुरुष जो सुख-दु ख भोगते है, वह स्त्रिया क्यो नही भोग सकती? रामके पीछे सीता गअी। हरिश्चन्द्रके पीछे तारामती गअी। नलके पीछे दमयन्ती गअी। और सबने जगलमे बेहद दु ख अुठाये।"

गाधीजीका विवेचन सुनकर कस्तूरबा बोल अुठी "वे सब तो देवियोंके समान थी। अुनके कदमो पर चलनेकी शक्ति हममे कहा है?"

गाधीजीने गभीरतापूर्वक कहा "अिसमे क्या है? हम भी अुनकी तरह व्यवहार करे तो अुनके जैसे हो सकते है, देवता बन सकते है। रामके कुलका मै और सीताके कुलकी तुम। मै राम बन सकता हू और तुम सीता बन सकती हो। धर्मके खातिर अगर सीता रामके पीछे न गअी होती और महलमे ही बैठी रहती, तो अुसे कोअी सीतामाता न कहता। हरिश्चन्द्रके सत्यव्रतके खातिर तारामती बिकी न होती, तो हरिश्चन्द्रके सत्यव्रतमें कमी रह जाती। अुसे कोअी सत्यवादी न कहता और तारामतीको कोअी सती न कहता। दमयन्ती नलके पीछे जगलोके दु ख सहनेमें शामिल न हुअी होती, तो अुसे भी कोअी सती न कहता। अब अगर तुम्हे अपनी

आवरू रखनी हो, मेरी विवाहिता स्त्री बनना हो और रखेल समझी जानेके कलकसे मुक्त होना हो, तो तुम सरकारके खिलाफ लडो और जेलमे जानेको तैयार हो जाओ।"

कस्तूरबा चुप रही। मैं देखता रहा कि बा क्या जवाब देती हैं। यह सब सुननेमें मुझे मजा आ रहा था। अितनेमें कस्तूरबा बोल अुठी "तो तुम्हे मुझे जेलमें भेजना है न? अब अितना ही बाकी रहा है। खैर! परन्तु जेलका खाना मुझे अनुकूल आयेगा?"

"मै तुमसे नहीं कहता कि तुम जेलमें जाओ। तुम्हे अपनी अिज्जतके खातिर जेलमें जानेकी अुमग हो तो जाओ। और जेलका भोजन अनुकूल न आये तो फलाहार करना।"

"जेलमें सरकार फलाहार देगी?"

गाधीजी फलाहार प्राप्त करनेका अुपाय बताते हुअे बोले

"फलाहार न दे तब तक वहा अुपवास करना।"

कस्तूरबाने हसकर कहा "क्या खूब! यह तो तुमने मुझे मरनेका रास्ता बता दिया। मुझे लगता है कि जेलमें गअी तो मैं जरूर मर जाअूगी।"

गाधीजी सिर हिला कर खिलखिला पडे और बोले

"हा हा, मै भी यही चाहता हू। तुम जेलमें मर जाओगी तो मैं जगदम्बाकी तरह तुम्हें पूजूगा।"

"अच्छा, तब तो मैं जेल जानेको तैयार हू।" कस्तूरबाने दृढतासे अपना निश्चय बताया।

गाधीजी खूब हसे। अुन्हें बडा आनन्द हुआ। कस्तूरबा किसी कामसे बाहर गअी कि मौका देखकर गाधीजीने मुझसे कहा, "बामें यही खूबी है कि वह मन या बेमनसे मेरी अिच्छाके अनुसार चलती है।"

गाधीजीने तो यह वाक्य अपने गृहस्थाश्रम धर्मके सिलसिलेमें कहा था। परन्तु अुनकी अिच्छानुसार कस्तूरबाने व्यवहार किया, जिससे भारतीय स्त्रियोंके अुद्धारका मार्ग खुल गया। और आज हिन्दुस्तानमें स्त्रीशक्तिकी जो पवित्र और प्रचड ज्वाला प्रगट हो गअी है, मुझे लगता है कि अुसका बीज अिसी अवसर पर बोया गया था।

पिछले प्रकरणवाली घटना हुअी अुसी दिन श्री मगनलाल गाधी और श्री छगनलाल गाधीकी पत्नीसे पूछा गया। वे भी तैयार ही थी। गाधीजीके

रगूनवाले मित्र डॉ० प्राणजीवनदास मेहताकी पुत्री सौ० जयाकुवर वहन भी वही रहती थी। अुनकी भी लडाअीमे शामिल होनेकी प्रवल अिच्छा थी। फिर तो यह व्यवस्था होने लगी कि कौन जेलमें जाय और कौन फिनिक्समे रहकर प्रेसकी, अखबारकी और वहा रहनेवाले छोटी अुम्रके वच्चोकी देखरेख करे। जेल जानेमे स्पर्धा होने लगी। अतमें सारा निर्णय गाधीजीकी अिच्छा पर छोडा गया। गाधीजीने श्री मगनलाल गाधीको हुक्म दिया कि तुम जेल जानेकी अिच्छा न करो। जेलसे भी जेलके वाहर ज्यादा विकट कर्तव्य पूरा करना था। और अुस कामको कर सकनेकी शक्तिवाले तो श्री मगन-लाल गाधी अकेले ही थे। अुन्होने गाधीजीकी यह अिच्छा मान ली। अिस तरह योद्धाओकी तैयारी करके गाधीजी जोहानिसवर्ग गये और अिसका भी विचार किया कि वहाके योद्धाओका कैसा व्यूह रचा जाय। परन्तु अिस वार तो सारी लडाअी नेटालमे ही होनेवाली थी, अिसलिअे लडाअीका मुख्य केन्द्र नेटालमे ही रहना जरूरी था। फिनिक्सको लडाअीका केन्द्रस्थान वनाया गया। दूसरी ओर हिन्दुस्तानमे श्री गोखलेको भी लडाअीकी चिंता हुअी। तीन पौण्डके करके मामलेमे यूनियन सरकार द्वारा श्री गोखलेके साथ विश्वासघात करनेसे गाधीजीके दिलको कितनी सख्त चोट लगी होगी अिसका खयाल श्री गोखलेको था। और अुन्हे जैसा भी लगा कि जव सरकारने अैसी निन्द्य कार्रवाअी की है, तो वह हिन्दुस्तानियोको कुचलनेके लिअे अपनी पूरी शक्ति काममे लेगी और लडाअी लवे समय तक चलेगी। अिस प्रकार लडाअी लम्बी चली तो रुपयेकी भी जरूरत पडेगी। श्री गोखलेने गाधीजीसे हिसाब मागा कि फिलहाल कितने आदमी लडाअीमे भाग लेनेको तैयार है और कितने रुपयेकी जरूरत होगी। गाधीजीने वताया कि "अभी तो ज्यादासे ज्यादा साठ और कमसे कम सोलह सत्याग्रही है। और रुपयेके लिअे आप कोअी चिन्ता न करें।" यह सोलहकी सख्या जो अुन्होने वताअी वह फिनिक्स आश्रमके दलकी थी। अिस दलके वारेमे गाधीजीको अैसा विश्वास था कि धधकती आगमे कूद पडनेका हुक्म अुनकी तरफसे मिले तो भी अुसमे कोअी जी नही चुरायेगा। सभी आश्रममे रहनेवाले गाधीजीके अपने आदमी थे। वाहरके दो सज्जन थे (१) प्रसिद्ध देशभक्त पारसी रुस्तमजी सेठ और (२) जोहानिसवर्ग वाले वैरिस्टर जोसफ रॉयपनके भाअी सोलोमन रॉयपन। श्री रुस्तमजी सेठ तो यह जानकर कि लडाअीका

निश्चय हो गया है और कस्तूरवा भी तैयार हो गअी है, आग्रहपूर्वक अुम्मीदवारी करने लगे। परन्तु अुनके साथ अुनके पुत्र वीर सोरावजीने स्पर्धा शुरू कर दी। अन्तमें श्री रुस्तमजी सेठ जीते। "वा जेलमे जाय तव मैं किसकी व्यवस्था करनेको रहू? व्यवस्था करनी हो तो तुम करना। व्यवस्था न हो तो भले अव्यवस्था हो जाय। परन्तु मैं तो पहले ही दलमें जाअूगा।" अैसा निश्चय पुत्रको वताकर वे डरवन छोडकर दस दिन पहले ही फिनिक्समे आ डटे थे। श्री सोरावजी भी पिताजीको जेलमें भेज कर घर नही वैठे रहे। अुन्होने जेलसे भी ज्यादा कठिनाअिया अुठाअी और अधिक काम किया। वादकी वडी हडतालमें वेकार होनेवाले मजदूरोको भोजन वाटनेके लिअे वे सारे नेटालमें घूमे और गरीव मजदूरोको अुन्होने लडाअीमें टिकाये रखा। श्री सोलोमन रॉयपन पिछले दो माससे फिनिक्समे आकर रह रहे थे। अिसलिअे अुनके वहुत आग्रहके कारण अुन्हे भी शामिल किया गया। अिस प्रकार पहला दल चार स्त्रियो और वारह पुरुषोका वना। अुनके नाम ये है

(१) सौ० कस्तूरवा गाधी
(२) सौ० जयाकुवर मणिलाल डॉक्टर
(३) सौ० काशीवहन छगनलाल गाधी
(४) सौ० सतोकवहन मगनलाल गाधी
(५) सेठ पारसी रुस्तमजी जीवणजी घोरखोदू
(६) श्री छगनलाल खुशालचन्द गाधी
(७) श्री रावजीभाअी मणिभाअी पटेल
(८) श्री मगनभाअी हरिभाअी पटेल
(९) श्री सोलोमन रॉयपन
(१०) श्री रामदास मोहनदास गाधी
(११) श्री राजू गोविन्द
(१२) श्री शिवपूजन वदरी
(१३) श्री गोविन्द राजुलू
(१४) श्री कुप्पूस्वामी मुदालियार
(१५) श्री गोकुलदास हसराज
(१६) श्री रेवाशकर रतनशी सोढा

अिन सोलह आदमियोका दल निश्चित हुआ। यह भी तय हुआ कि लडाअी कब शुरू की जाय। किसीको पता नही था। जैसे दो हाथोसे ताली बजती है, अेक हाथसे नही बजती, अुसी तरह लडनेवाले पक्ष भी दो चाहिये। अेक पक्ष दूसरे पक्षको लडनेका मौका ही न दे, तो लडनेकी अिच्छा रखनेवाला पक्ष भी कुछ नही कर सकता। अिसलिअे कुछ भी शोर मचाये विना अचानक हमला करना था।

/ •

जहा तक मुझे याद है सन् १९१३ के सितम्बरकी १४ तारीख थी। गाधीजीके फिनिक्सके मकानमें सुबहसे अैसी तैयारिया हो रही थी, मानो कोअी विवाहोत्सव हो। सबको अपने-अपने पहननेके कपडे, ओढने-बिछानेके लिअे कम्बल और चादर, पानी पीनेके लिअे प्याला वगैरा सामान फौजी सिपाहियोकी तरह अपने साथ ही रखना था। सबने याद कर करके अपनी अपनी गठरियोमें सामान अिस तरह बाधा कि कधेसे लटकाया जा सके। कस्तूरबाने सबको कुमकुमका तिलक लगाया। दोपहरके बारह बजे। आश्रमके सभी निवासी वहा आ पहुचे। सब मुख्य खडमें बैठे। गाधीजीने काले रगका सूती पतलून और वैसा ही कमीज पहन रखा था। सारे खडमे शान्ति छाअी हुअी थी। प्रार्थना शुरू हुअी। सबने अेकाग्रतासे भक्त नरसिह मेहता रचित गाधीजीका प्रिय भजन 'वैष्णवजन' गाया। दूसरा भजन 'सुखदु ख मनमा न आणीअे घट साथे रे घडिया' गाया। प्रार्थना पूरी हुअी। हम सबने अेकके बाद अेक अुठकर गाधीजीको प्रणाम करके अुनके आशीर्वाद लिये। प्रफुल्ल चित्त और हृदयकी आशाभरी अुमगसे आशीर्वाद देते हुअे गाधीजीने किसीको धप्पा मारा, किसीका कान अैठा और किसीकी पीठ थपथपाअी। अिस प्रकार सबको अमृत-रस पिलाया। सबने अेक-दूसरेका आलिगन किया। बिछुडनेवाले आश्रममे रहनेवालोसे प्रेमपूर्वक मिले। अिस पवित्र प्रसगका वर्णन करनेकी शक्ति मुझमे नही है। केवल अुसका स्मरण ही कर सकता हू। हमारे हृदयके अुत्साहका पार नही था — मानो रणमत्त रणवीरोको स्वर्गके द्वारके समान धर्मयुद्ध प्राप्त हुआ हो! अैसे अुल्लासमे अेक घटा बीत गया। हमने आश्रमको प्रणाम किया। अब तो विजयके आनन्दमे ही भगवान आश्रमके दर्शन करायें, अैसी प्रार्थना करते हुअे हम सब स्टेशनकी तरफ रवाना हुअे। गाधीजी भी अेक छोटे बच्चेको गोदमे लेकर स्टेशन तक हमे विदा करने आये। हम स्टेशनके नजदीक पहुचे कि गाडी आ गअी। गाडी दो मिनट ही ठहरनेवाली थी, अितनेमें डिब्बेकी तलाश

कहा करें? वहाकी रेलोमें दूसरे दर्जेके डिब्बे हिन्दुस्तानियोके लिअे अलग रखे जाते थे। परन्तु अिस छोटी लाअिनमें अेक ही डिब्बा होता था। अुसमें आठ मुसाफिर बैठ सकते थे। हम तो शुरूमें ही सोलह आदमी थे। अिसलिअे अलग डिब्बा ढूढनेकी झझटमें न पड कर जो डिब्बा सामने दिखा अुसीमें बैठ गये। हमारा यह कदम रेलके नियमके विरुद्ध था। रेलवे अिन्स्पेक्टरका ध्यान हमारी तरफ जानेसे पहले गाडीकी सीटी हो गअी और गाडी चल पडी। गाधीजीको दूरसे प्रणाम करते करते हम अुनकी दृष्टिसे ओझल हो गये।

परन्तु यहा अेक मुश्किल पैदा हुअी। गाडी दूसरे स्टेशन पर खडी हुअी कि अिन्स्पेक्टर आया और अुसने हमसे डिब्बेमें से अुतर जानेको कहा। मैंने कारण पूछा तो अुसने कहा "यह डिब्बा रिजर्व्ड नही है, यह गोरोके लिअे है।" हमने कहा "सोलह मुसाफिरोको बैठाने लायक रिजर्व्ड स्थान तुम्हारे पास है ही नही। हमे तुम कहा बिठाओगे?"

अुसने कहा "दूसरी जगह बिठाकर रिजर्व्डका लेबल लगा दूगा और अुस जगहको रिजर्व्ड बना दूगा।"

मैंने कहा "तो फिर भले आदमी, अिसी डिब्बे पर लेबल लगा दो तो यही डिब्बा रिजर्व्ड हो जायगा।"

परन्तु अुसने मेरी बात मानी नही। हम काले आदमी चाहे जहा कैसे बैठ सकते थे?

हमने तो निश्चयपूर्वक कह दिया "हम नही अुतरेंगे। तुमसे जो हो सके सो कर लो।"

अुसने स्टेशन-मास्टरको बुलवाया। स्टेशन-मास्टरने हमें पहचान लिया और वह समझ गया कि अिन लोगोको छेडनेमें सार नही है। अुसने अुस अिन्स्पेक्टरको भी यही सलाह दी। पर मदमें चूर अिन्स्पेक्टरने अुसकी सलाह नही मानी। अुसने पुलिसको बुलाया और हमें अुतार देनेको कहा।

हमने कहा कि हमें अुतारना हो तो हमें गिरफ्तार किया हुआ जाहिर करो या हरअेकको अुठा अुठा कर बाहर फेंक दो। अुसके बिना हम नही अुठेंगे। वह दोनोंमें से अेक भी काम नही कर सकता था। पन्द्रह मिनिटकी धाधलीके बाद गाडी आगे चली। तीसरे स्टेशन पर भी वही झगडा हुआ। परन्तु वह सफल न हुआ। हम मजबूत रहे। हम अिस निश्चयसे अटल रहे

कि चार सौ मील दूर जाकर गिरफ्तार होनेसे तो यहा घरके आगनमे पकडा जाना ज्यादा अच्छा है। अिन्स्पेक्टर थक गया। चलती गाडीमे वह हमारे डिब्बेमे आया और गुस्सेमें बोलने लगा। मैंने कह दिया "तुम क्रोध करो या न करो अुसमे कुछ नही होगा। तुम्हारी ताकत हो तो हमें पकड लो या हमे अुठा अुठाकर गाडीमे से बाहर फेंक दो। अिन दोमे से अेक भी काम तुमसे न हो सकता हो तो समझदारीसे काम लेकर अगला स्टेशन आने पर रिजर्व्डके दो लेबल दोनो डिब्बो पर लगा दो तो सारा झगडा मिट जायगा।"

अन्तमे अुसे यही करना पडा। कस्तूरबा खुश हुअी। आनन्दमे आकर मुझसे कहने लगी "रावजीभाअी, हमे शुभ शकुन हो गये। हमारा शुभ आरम्भ हुआ। हम जीत गये।"

५

पहली गिरफ्तारी

हमारा दल डरबन होकर रातको जोहानिसबर्ग पहुचनेवाली डाकगाडीमें बैठा। हमे तीसरे दर्जेका अेक सीधा जानेवाला डिब्बा मिल गया, जिसमे हम सबका समावेश हो गया। दूसरे दिन चार बजे न्यूकैसल स्टेशन पर श्री कैलनबैक हमसे मिलने आये। वे वॉल्क्रस्टमे छावनी डाले बैठे थे और सरकार यदि हमे वहा अुतार दे और पकड ले, तो हमारी व्यवस्थाके लिअे अुन्होंने वहा तजवीज कर रखी थी। नेटालका आखिरी स्टेशन चार्ल्सटाअुन आने पर वे हमसे मिलकर चले गये। गाडी वहासे चली और वॉल्क्रस्ट स्टेशन आया। वॉल्क्रस्ट ट्रान्सवालकी हदमे पहला स्टेशन था। वॉल नामकी नदीको पार करनेके बाद वह पहला गाव आता है। अिस परसे अुसका नाम वॉल्क्रस्ट पड गया है। ट्रान्सवाल अिलाकेका नाम भी अिसी तरह पडा है। ट्रान्स = अुस पार, वॉल नदीके अुस पारका प्रदेश ट्रान्सवाल कहलाया। सरकारके अिमिग्रेशन-कानूनके अनुसार यहा अिमिग्रेशन-अफसर मुकर्रर किया गया था। नेटालसे आनेवाली कोअी भी गाडी यहा ठहरती थी। अिमिग्रेशन-अफसर हर मुसाफिरकी जाच करता था। मुसाफिरके पास ट्रान्सवालका निवासी होनेका परवाना होता तो अुसे देखकर वह जाने देता

था। जिनके पास अैसा परवाना न होता अुन्हें पुलिसके हवाले कर दिया जाता था। जिस प्रकार पुलिसकी देखरेखमें जाच करके अिमिग्रेशन-अफसर अनुमति देता तब गाडी वहासे आगे बढती। हमें ट्रान्सवालका यह अिमिग्रेशन-कानून तोडना था। परन्तु हमें भय था कि लडाअी करनेकी सरकारकी अिच्छा न हो तो वह हमें थका भी सकती है। हमारे दलमें लगभग सभी गाधीजीके सगे-सम्बन्धी और अपने आदमी थे। सबके नाम जान लेती तो सरकार किसीको न पकडती और जाने देती। अैसा होता तो हमारा पहला ही वार व्यर्थ जाता। अिसलिअे हमने निश्चय किया कि किसीका पूरा नाम न बतायें और झूठ भी न बोलें। यानी कस्तूरबा अपना नाम सिर्फ कस्तूरबा ही बतायें और कुछ न कहें। और, सबकी तरफसे अेक ही आदमी बात करे यह भी तय किया। अुसके लिअे श्री छगनलाल गाधीको चुना गया। और किसीसे पूछा जाय तो हमने पूछनेवालेसे यह कहनेका निर्णय किया "क्या पूछते हो? तुम गुजरातीमें बोलो।"

स्टेशन आया। अिमिग्रेशन-अफसर हमारे डिब्बेमें आया। अुसने ट्रान्सवालका पास मागा। श्री छगनलालने बताया, "पास हमारे पास नही है।"

अमलदारने कहा "पासके बिना तुम कैसे जा सकते हो?"

श्री छगनलाल "हमें जोहानिसबर्ग जाना है और पास तो किसीके पास नही है।"

अफसर "अिस प्रकार मै कैसे जाने दू? तुम सब नीचे अुतर जाओ।"

श्री छगनलाल "हम यो तो नीचे नही अुतरेगे। हमें नीचे अुतारना हो तो गिरफ्तार कर लो।"

यह वाक्य सुनकर वह चौंका। अुसने सबकी तरफ ताक ताक कर देखा। कोअी भी चोर-डाकू नजर नही आया। सब अुसे सीधे-सादे देहाती जैसे मालूम होते थे। परन्तु वह सोचमें पड गया। दूसरे अफसरके साथ कुछ सलाह करके अुसने हमसे फिर पूछा "तुम अुतरोगे नही?"

श्री छगनलाल "हमें गिरफ्तार नही करोगे तो हम नही अुतरेंगे। हमें तो जोहानिसबर्ग जाना है। हमें अपराधी मानकर पकड लो तो हम फौरन अुतर जायेंगे।"

अफसर "अच्छा तो मैं तुम्हे पकडता हू। तुम सव मेरे कैदी हो। सव नीचे अुतर जाओ।"

हम सव तैयार ही थे। चुपचाप नीचे अुतर गये। स्टेशन पर गोरो और हिन्दुस्तानियोकी भीड जमा हो गअी। यह क्या मामला है? क्या सत्याग्रहकी लडाअी छिड गअी? अफसरोको यह शका हुअी। हमे नीचे अुतारनेके वाद अुन्होने सवके नाम श्री छगनलाल गाधीसे जान लिये। अुन्होने सकेतके अनुसार सवके नाम दे दिये। वादमे अफसर सभ्यतासे वोला

"आप सव मेरे कैदी जरूर है, परन्तु आपको रखनेके लिअे मेरे पास जगह विलकुल नही है। सिर्फ दो हब्शियोके पडे रहने लायक अस्वच्छ स्थान मेरे पास है। अिसलिअे आप यहा अपनी सुविधाये जुटा लें तो आपके लिअे ठीक रहेगा। आप जैसे लोगोको मै मुसीवतमें नही डालना चाहता।"

श्री छगनलालने कहा "परन्तु हम आपको वचन नही देते कि हम आगे नही चल देंगे।"

अफसर हसकर वोला "मुझे विश्वास है कि आप भागेंगे नही। परन्तु कल दस वजे सव मेरे दफ्तरमे आ जाअिये।"

श्री कैलनवैकने पहलेसे ही अिंतजाम कर रखा था और वॉलक्रस्टके हिन्दुस्तानी व्यापारी हमे लेनेके लिअे स्टेशम पर आये भी थे। अुनमे से मि० अे० अेम० वदात नामके अेक मुसलमान व्यापारीके यहा हमे ठहराया गया।

दूसरे दिन दस वजे हम अिमिग्रेशन-विभागके दफ्तरमे गये। अफसरको जो विधि करनी थी अुसे करके वह हमसे कहने लगा "अव आप ठहर जाअिये। अेक दो दिन आपको रुकना पडेगा। मुझे जब तक सरकारका हुक्म न मिल जाय तव तक मै कोअी जल्दी नही कर सकता।"

हमे वहा छह दिन हो गये। परन्तु अफसर कोअी फैसला नही दे सका। नेटाल और जोहानिसवर्गसे सव हमे पूछते रहते कि तुम्हारा क्या हुआ? क्यो अभी तक निपटारा नही हो रहा है? हमारे वारेमे सरकार जो कदम अुठाती अुस परसे हमे आगेका व्यूह रचना था। दूसरी तरफ सरकारके लिअे भी यह कोअी खेल नही था। वह हमे सजा देती तो यह निश्चय हो जाता कि सरकारने हिन्दुस्तानियोके साथ लडाअी छेड दी है। जनरल स्मट्सको लडाअीके रगका कुछ अनुभव था। अिसलिअे हमे सजा देनेका

कदम अुनके लिअे गभीर विचारका विपय वन गया । लगभग चार-पाच दिनके सलाह-मशविरेके वाद वहाका मत्रि-मडल निर्णय पर पहुचा और रविवारके दिन सवेरे अिमिग्रेशन-अफसरको हुक्म मिला कि पहले तो हमे ट्रान्सवालसे निर्वासित किया जाय और फिर भी यदि हम अुसका हुक्म न माने तो हमें पकडकर सजा दे दी जाय। रविवारको सुवह ९ वजे दो पुलिस अफमर हमारे मकान पर आये और अुन्होने वारट दिखाये । निर्वासनके वारटका अर्थ हम समझते थे । हमने सोच लिया था कि सरकार अैसा भी कर मकती है। वारट मिलते ही हम सव तैयार हो गये। पुलिस अफसरोने कहा कि आपका सामान हो तो ले लीजिये। हमने कहा· "अिस तरह क्यो तग करते हो? वादमें हमें यही होकर तो ले जाओगे। तव लौटते हुअे हम अपना सामान ले जायेंगे।"

पुलिस अफसर समझ गये । वे हसे और हम सव रवाना हुअे । अखवारोमें 'पैसिव रेजिस्टर्सका वॉलक्रस्टमें जमाव' अैसे वडे शीर्पकसे खवर छपी । 'पैसिव रेजिस्टर्स' कैसे है, यह देखनेको वहुतसे गोरे झुड वनाकर आये। शायद देखनेके वाद अुन्होने अपने मनमें हमे मूर्ख या पागल समझा होगा । गावसे करीव अेक मील पर वॉल नदी वहती हे । छोटेसे झरने जैसी हे। अुस पर अेक पक्का पुल वना हुआ है। अुस पुलके वीचमे सफेद पत्थरकी लकीर खीची हुअी हे । अुस लकीरको ट्रान्सवाल और नेटालके वीचकी हदका निशान माना गया है । वहा हमें ले गये । अुस लकीरके अन्दर हमें खडे रखकर दोनो तरफकी दीवारो पर खडे रहकर पुलिस अफसरोने सम्राटके नाम पर हमें निर्वासन देनेका ढिंढोरा पढकर सुनाया और फिर हलके हाथसे पीछेसे जरा नेटालकी हदकी तरफ हमें धकेल दिया। हमने अेक कदम नेटालकी हदमें रखकर वापस दूसरा कदम ट्रान्सवालमें रखा। अिसलिअे पुलिस अफसरोने कहा "तुम सरकारका हुक्म तोडकर ट्रान्सवालमे घुसे, अिसलिअे हम तुम्हें पकडते है।"

यह तो छोटे वच्चोका खेल हो गया। अितनी क्रियामें हमें निर्वासित कर दिया, सम्राटकी सरकारका अनादर करके हम वापस देशमें भी आ गये और हमें पकड भी लिया गया। हम सव जैसे गये थे वैसे ही वापस आ गये । हम मुकामके सामने आये और अपना सामान हमने ले लिया। हमे ले जाकर अेक वगलेमें रखा गया और वताया गया कि हमारा मुकदमा मगलवार २३ ता० को चलेगा।

मगलवारको हमे वॉलक्रस्टके मजिस्ट्रेटकी अदालतमे ले जाया गया। सोलहो आदमियोको अिकट्ठा खडा रखा गया। हम पर यह आरोप लगाया गया कि, "तुम ट्रान्सवालके निवासी होनेका हक नही रखते। तुम खुद भी अिससे अिनकार करते हो कि तुम्हारे पास अैसा हक है। तुम्हारे पास वैसा परवाना है अिससे भी तुम अिनकार करते हो। अिसलिअे तुमको-निर्वासित किया गया। अुस हुक्मका अनादर करके तुम वापस ट्रान्सवालमे घुसे। यही आरोप तुम पर लगाया जाता है।"

हमने अिस आरोपको स्वीकार किया।

हमसे पूछा गया "तुम्हे अिस बारेमे कोअी सफाअी देनी है?"

हमने कहा "हमे कोअी सफाअी नही देनी है।"

मजिस्ट्रेटने फैसला सुनाया "तुम सबको तीन तीन महीनेकी सख्त सजा दी जाती है।"

आजकल हिन्दुस्तानकी सत्याग्रहकी लडाअीमे मजिस्ट्रेटोकी अदालतोमे चलनेवाले हमारे मामलोमे जो नाटक होता है, अुसके साथ तुलना करने पर ट्रान्सवालका हमारा यह मुकदमा बहुत ही हसने लायक मालूम होगा। सोलह आदमियोका अिकट्ठा मामला, सब पर अिकट्ठा अभियोग, सबके खिलाफ अेक ही अिकट्ठी शहादत और सबको अेक ही अिकट्ठी सजा। अिस तरह सोलह आदमियोको मुकदमा चलाकर सजा देनेमे अदालतको कोअी आधा घटा लगा होगा।

रूटरके प्रतिनिधि और अखबारोके प्रतिनिधि वहा मौजूद ही थे। अुन्होने देश-विदेशोमे चारो ओर समाचार भेजे कि कस्तूरबा वगैरा सोलह आदमियोके पहले दलको सजा दी गअी। बाहर कैसा अूहापोह मचा होगा, अिसका हमें पता नही चला। चार बहनोके सिवा सभी पुरुषोको हथकडिया पहना दी गअी और वहाकी जेलमें ले गये।

६

दक्षिण अफ्रीकाके जेलखाने

अब आगे क्या लिखा जाय, यह सवाल पैदा हो गया है। बाहर क्या क्या हुआ यह लिखू या जेलके भीतर हमें क्या क्या अनुभव हुअे यह लिखू। जिस समाजमें यह पढा जायगा, अुस समाजके बहुतसे भाअी-बहनोको कअी बार जेलका अनुभव हुआ होगा। अुन्हे मेरे अिस वर्णनमें रस आयेगा या नही, यह भी अेक सवाल है।

लेकिन मुझसे सुनी हुअी बातो परसे मित्रोने यह लिखनेका मुझसे आग्रह किया है। अिसलिअे मैं दक्षिण अफ्रीकाकी जेलोका खयाल देनेकी यहा कोशिश करता हू। लडाअीका क्या हुआ वगैरा बातें तो गाधीजीके ही शब्दोमें 'दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास' के दो भागोमें मिल जाती है। अुससे ज्यादा मै और क्या दे सकता हू? लेकिन गाधीजीने स्वय 'अिण्डियन ओपीनियन' के सुनहरी अकमें सन् १९१४ में आखिरी लडाअीका जो अनुभव थोडेमे सुन्दर ढगसे चित्रित किया है, वह अिस पुस्तकके अतमें परिशिष्ट – १ में दिया गया है। वह अिस पुस्तककी पूर्तिके रूपमें और दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहकी लडाअीकी अैतिहासिक दृष्टिसे भी अुपयोगी मालूम होगा।

मुझे कहना चाहिये कि हम सब मामूली दर्जेके कैदी थे। आदर्श कैदी तो हम कहला ही नही सकते थे। हिन्दुस्तानकी जेलोमें जैसे व्यवहारके लिअे हम 'तिकडम' शब्दका अिस्तेमाल करते है, अुसमे विश्वास रखनेवाले तो हम नही थे। लेकिन कमजोरीके कारण वैसा व्यवहार करनेका मौका आता तब हम पीछे भी नही रहते थे। अितना ही नही, हमें अपने अैसे व्यवहारके लिअे पछतावा भी नही होता था। परन्तु मेरे यह स्वीकार करनेसे अैसा मान लेनेकी जरूरत नही कि सज्जनोको शोभा न देनेवाले अुस व्यवहारको हम अच्छा समझते थे। नैतिक दृष्टिसे अवाछनीय आचरण हम कभी नही करते थे। लेकिन जेलके नियमोकी दृष्टिसे जो करने लायक नही होता अुसे जेल-कर्मचारियोके जाने बिना हम कर लेते थे। अैसा करने पर हम पकडे जाते तो झूठ कभी न बोलते थे। सच बात कह देते थे और नियम तोडनेका

अपराध स्वीकार करके अुसकी सजा भी खुशीसे भोग लेते थे। अिससे अधिक सूक्ष्म दृष्टिसे सत्य और नीतिका आचरण करनेकी हमने कभी अपेक्षा तो नहीं की, परन्तु अपनी शक्तिकी मर्यादा समझकर हमने अपने व्यवहारकी भी मर्यादा बना ली थी। अिसलिअे यह प्रकरण लिखनेका हेतु किसीको कोअी अनुकरणीय आचरण बताना नहीं है, बल्कि दक्षिण अफ्रीकाकी जेलोंका वर्णन करना, वहांके अनुशासन पर प्रकाश डालना और वहां हमारे ९० दिन किस तरह बीते अिसका थोडासा वर्णन देना है।

वॉल्क्रस्टकी जेल घर जैसी थी। जेलर भले आदमी थे। बाहरसे भी फिनिक्समें अिस्तेमाल होनेवाली रोटी और केक — मीठी रोटी तथा केले वगैरा फल मिल सकते थे। बहनोंके रहनेका भाग अलग था। परन्तु वहां तो हमें छह दिन ही रखा गया। सातवें दिन हम सबको वहांसे हटा दिया गया। बहनें भी हमारे साथ ही थीं। नेटालकी राजधानी मेरित्सबर्गकी सेंट्रल जेलमें हमें ले जाया गया। जेलमें घुसते ही बहनोंको अलग कर दिया गया। अुसके बाद हमने अुनकी परछाअी तक नहीं देखी। बाहर आनेके बाद ही अुनके दर्शन किये।

मुझे तो जेलकी कोअी कल्पना भी नहीं थी। वज्र जैसी कठोर बडी बडी दीवारें और चारों ओर सुनसान! मेरा पहला ही अनुभव कडवा रहा। हमें दवाखानेमें ले जाया गया। सबकी जांच की गअी। जांचमें रुस्तमजी सेठकी सदरी और जनेअू (कस्ती) देखा गया। अब तक हिन्दुस्तानियोंको ट्रान्सवालकी जेलोंका अनुभव था। नेटालकी जेलमें हम सत्याग्रही हिन्दुस्तानी पहले ही पहल आये थे, अिसलिअे जेलके कर्मचारी हमसे अपरिचित थे और हम जेलके प्रबन्धसे अनजान थे। पहलेकी लडाअीमें जेलके अधिकारियोंने रुस्तमजी सेठकी सदरी और जनेअू धार्मिक चिह्नके रूपमें अुनके पास रहने दिये थे, परन्तु यहां तो नया ही नियम था। अिसलिअे डॉक्टरने अुनकी सदरी और जनेअू अुतार डालनेकी सूचना की। अुससे कहा गया कि ट्रान्सवालकी जेलमें अिन्हें रखने दिया गया था, और अुनके टिकिट पर अिस बारेमें जो कुछ लिखा हुआ था वह भी बताया गया। परन्तु डॉक्टरने कुछ नहीं सुना। "यह ट्रान्सवाल नहीं, यह तो नेटाल है। अिसलिये विभागके मुखियाकी तरफसे जब तक वैसा हुक्म न मिलेगा तब तक हम वैसा करनेकी अिजाजत नहीं देंगे।" अिस तरह डॉक्टर गरजने लगा। और पुलिसको अुसने हुक्म दिया, "यह बुड्ढा अपने

हाथसे न निकाले तो दो आदमी अिसे पकड कर जबरन् ये चीजें खींच लो।" दो पुलिसवालोंने रुस्तमजी सेठकी सदरी और जनेअू जबरन् अुतार लिये। रुस्तमजी सेठ विरोध करते हुअे बोले "मेरे धर्मकी आज्ञानुसार सदरी और जनेअूके बिना मैं अन्न नहीं खा सकता।" हम दूसरोंका भी फर्ज हो गया कि जब तक रुस्तमजी सेठको अुनके सदरी-जनेअू न मिलें और अिसलिअे जब तक वे अुपवास करें तब तक हम भी अुपवास करें।

वहा सुपरिन्टेन्डेन्टको जेलका गवर्नर कहते थे। वह आया। अुसने भी अैसा ही कहा। हमें अपनी कोठरीमें ले जाकर बन्द कर दिया गया। वह सारा दिन पूरा हुआ। अुस दिन रातको ही श्री रुस्तमजी सेठ और श्री छगनलाल गांधीको वहासे हटा कर डरबनकी जेलमें ले गये। हमें अिस बातका पता सुबह लगा। सवेरे नौ बजे गवर्नर हमारे पास आया। अुसने हमसे भोजन लेनेको कहा। हमने बता दिया कि "जब तक रुस्तमजी सेठ भूखों मरते हों तब तक हम भोजन नहीं कर सकते।" अुस पर हमारी दृढताका असर पडा। अुसने कहा "हमने जेल-विभागके मंत्रीसे पुछवाया था। अुनकी अिजाजत हमें मिल गअी है कि रुस्तमजी सेठको अुनके धार्मिक चिह्न दे दिये जाय। अुन्हें डरबन भेज दिया गया है। परन्तु ये चिह्न वहा अुन्हें मिल जायगे और वे खाना जरूर खायेंगे।" हमने कहा "हमें यह विश्वास दिला दीजिये कि रुस्तमजी सेठको अुनके धार्मिक चिह्न मिल गये हैं।" गवर्नरने तुरन्त कर्मचारियोंसे जेल-विभागके मंत्रीका तार दफ्तरसे मगा कर हमें बताया। हमें यकीन हो गया और हमने अुपवास छोड दिया। हमने खाना खाया। रुस्तमजी सेठने भी डरबन जानेके बाद अुनकी सदरी और जनेअू मिल जाने पर खाना शुरू कर दिया। जेलमें सत्याग्रह करनेका हमें यह पहला पाठ मिला।

वहाकी जेल यहाके जैसी साफ-सुथरी परन्तु कम हवा-रोशनीवाली और दुमंजिला थी। आमने-सामने कमरोंके ब्लॉक और बीचमें गैलरी थी। हर कमरेके पीछे जाली होती और वह खुले यार्डमें पडती थी। परन्तु असल दरवाजा गैलरीमें होता। अिसलिअे आवश्यक हवा-रोशनी कमरेमें आ नहीं सकती थी। कमरा अितना बडा होता जिसमें पाच आदमी समा सकें। परन्तु आम तौर पर हर कमरेमें तीन कैदी रखे जाते थे। यहाकी तरह वॉच या वार्डरकी सख्या वहा नहीं है। वहा जेलकी दैनिक पुलिसकी पूरी देखरेखमें

ही सब कैदी रहते है। पुलिसमे गोरे और काले दोनो होते है। काले पुलिस-वालोमे मुख्यत वहाके मूल निवासी हब्शी होते है। असा होनेके कारण, हिन्दुस्तानकी जेलोमे नीच वृत्तिके वॉच-वार्डर जैसा आतक फैलाते है वैसा आतक वहा नही पाया गया। अिन पुलिसवालोको वार्डर नाम दिया जाता है। जमादारको हेड वार्डर कहते है। हवालदारको यार्ड-वार्डर कहते है। गोरे पुलिसवालोको सार्जण्ट-वार्डर कहते है। और काले पुलिसवालोको वार्डरके सादे नामसे पुकारा जाता है। अिसके सिवा, हेड जेलर और डेप्युटी-जेलर भी होते है। जो गवर्नर होता है अुसका अधिकार यहाकी जेलोके सुपरिन्टेन्डेन्टके बराबर ही होता है।

खुराकमे सुबह मक्कीके आटेका दलिया होता — जरा गाढा, अगुलियोसे खाने जैसा। अुसमे सिर्फ नमक होता था। अुसे वहा 'पुपु' कहा जाता है। दोपहरको हिन्दुस्तानियोके लिअे चावल और साग रहता। चावल और साग कहनेसे ललचा जानेकी जरूरत नही। चावल बहुत ही हलकी किस्मके और ककरोसे भरपूर। हम अूपर अूपरसे बचाकर खाते और आधे जो बाकी रहते अुनमें पानी डाल देते। टीनके जिस कटोरेमे खानेको दिया जाता अुसे हिलानेसे सब ककर नीचे बैठ जाते। फिर चावलका अेक अेक दाना बीनकर खा जाते। कोअी पूछे कि सागका क्या हाल था? सागका अर्थ था अेक बैगन या अेक गोभीका टुकडा या किसी दिन अेक-दो आलू। जो भी हो अुबालकर दे देते थे। नमक थोडासा चावल पर अेक तरफ रखा होता अुतना ही। स्वादमे बिलकुल सयमी कहू या सात्त्विक कहू? जरा भी सन्तोष न हो, असा दोपहरका भोजन होता था। सुबह तो कुछ सन्तोष हो भी जाता था। शामको छह औस डबल रोटी ओर मक्कीके आटेकी नमकीन काजी दी जाती। जिसे तीन महीनेसे ज्यादाकी सजा होती अुसे काजीके बजाय दूधके बिना तैयार की हुअी चाय दी जाती थी। रविवारको मटरके जैसी बीन्स नामकी अेक तरहकी दाल दी जाती, जो यहाकी 'वाल' की दालसे ज्यादा स्वादिष्ट होती थी अुसे अुबालकर अुसमे मसाला डालकर अच्छी तरह पकाया जाता और चावलके साथ दिया जाता था। अुसे ही हमारा पकवान कहिये या गोठ कहिये यह खाना खानेके बाद वहा अेक आश्वासन मिलता था, और वह यह कि खानेके बाद जूठे कटोरे हटा कर रख देने होते थे। ले जानेवाले अुन्हें ले जाते और धोनेवाले धो डालते थे।

हमने पहला दिन पूरा किया और रात बीती। छत्तीस घंटेका अुपवास था, अिसलिअे हमें कहीं बाहर नहीं निकाला गया। हमने भोजन लिया तब तक हमारी कोठरीके सिवा और कुछ दिखाअी नहीं दिया। नहाना-धोना भी कैसे होता? परन्तु खानेके बाद गवर्नर फिर आया। मैंने अुससे नहानेकी व्यवस्था कर देनेकी प्रार्थना की। अुसने हेड वार्डरको हुक्म दिया कि हरअेकको बड़ा तौलिया दिया जाय और शामको काम करके खाना लेनेके लिअे भोजनालय जानेसे पहले हमें नहा लेने दिया जाय।

पहले दिनके अुपवाससे कुदरती हाजतका कुछ ठिकाना नहीं था। परन्तु दूसरे दिन सुबह हम अुठे कि तुरन्त दरवाजा खुला। कोठरीके भीतर जो बालटी पेशाब या पाखानेके लिअे दी गअी थी वह हमींको अुठानी पड़ी। हमें अुसकी कोअी सूग तो थी नहीं। अुस बालटीको साफ करनेके बाद जिसे पाखाने जाना था अुसे ले गये। मैं तो वहांका दृश्य देखकर घबरा गया। गली लगभग छह फुट चौड़ी थी। अुसके दोनों ओर छोटी पानीकी नालियां थीं। अुनमें हमेशा पानी बहता रहता था। वहां किसी भी मर्यादाके बिना साथ साथ और आमने-सामने बैठना पड़ता था। अितना ही काफी नहीं था। पाखाने बैठे हुओंके सिरसे हब्शी वार्डर धप मार मार कर जल्दी करनेको कहते रहते। अिस जंगली तरीकेसे हम तंग आ गये। फिर तो हम कभी वहां पाखाने गये ही नहीं। जहां काम पर जाते वहीं चले जाते या रातको बालटीका अुपयोग करते थे।

तीसरे दिनसे हमें काम पर ले गये। जेलसे बाहर जेलका अेक बगीचा था। वहां लगभग सौ आदमी काम करते थे। हमें अुस बगीचेके अेक कोनेमें हब्शी पुलिसके साथ भेजा जाता था। बगीचेके अेक कोनेमें लगा हुआ सुन्दर मीठे पानीका छोटासा झरना बहता था। वह झरना लगभग पच्चीस फुट चौड़ा था। अुसमें से झारेमें पानी लेकर हम सागभाजीके पौधोंको सींचते, मिट्टी खोदते और नये पेड़ लगाते। अिस तरह हमारा काम चला। दातुन करने और झरनेके पास अूंची-नीची जमीनमें पाखाने जानेकी भी अच्छी सुविधा थी। अिस प्रकार हमारे दिन बीतने लगे।

७

जेलमें तिकड़म

हमारे दिन तो गुजरने लगे। कोअी खास तकलीफ नही थी। परन्तु दिल बेचैन रहता था। "हम जेलमे आ गये, अिसका असर बाहर क्या हुआ होगा? लोगोका अुत्साह कैसा होगा? सोचते थे कि जेल स्वर्ग जैसा होगा, परन्तु यह तो नरक जैसा है। यहा जीभका सयम रखना पडता है वह भी जबरदस्तीसे। तू-तडाक सुनना पडता है। बापूजी कहते है कि जेलमे बाहरसे भी कअी गुने अधिक अपमान सहने पडेगे। तो क्या अिस प्रकार जीवन बितानेसे कौमकी जो सेवा करनेको बापूजी कहते है वह हो सकेगी? किस तरह? हमारे दु ख अुठानेसे किसीका फायदा होता हो, हमारे जीवन-समर्पणसे किसीको जीवन-दान मिलता हो, हमारे दु ख सहन करनेसे दूसरे लोगोका खन अुबलता हो और हमारे बाद हमारी तरह अन्य लोग मरनेको तैयार होकर लडाअीमे पडते हो, तब तो जेलमें हमारा आना भी कामका है, दु ख अुठाना भी सार्थक है। परन्तु निश्चिन्त भावसे और बिना सोचे-विचारे विश्वास रखकर जेलमे जानेसे हमारे दु ख मिट जायेगे और कौमकी जीत हो जायगी, यह कैसे माना जाय?" अिस तरहके विचार आते रहते थे। फिर आश्वासन मिलता "अैसी अश्रद्धा न रखनी चाहिये। हम तो सिपाही है। सिपाहीको सरदारके हुक्मकी तामील करनी चाहिये। प्रश्न या आशका करना अुसका काम नही है।" फिर यह खयाल आता "बाहर क्या हाल होगा? क्या वातावरण बिलकुल ठडा होगा? कोअी आता-जाता मालूम नही होता। क्या लोग लडाअीमे भाग नही लेते होगे?" अिस प्रकार हृदयमे प्रश्नोत्तर होते ही रहते थे। परन्तु कोअी रास्ता नही सूझता था। हम बारहमे से दस रह गये थे। हममे से कोअी जेल-जीवनका अनुभवी नही था। किसीसे हमारा परिचय नही था। बाहरकी नयी पुरानी खबरे कैसे जानी जाय और किससे कैसे पूछी जाय? यही बात रोज मनमे रमी रहती। अितनी रटन सत्यकी की होती तो सत्यके मूर्तस्वरूपमे दर्शन हो जाते। परन्तु जो जिसे भजता है अुसे वही मिलता है। सब अपने स्वभावके अनुसार रटन करते है। हमारी भावना राजसी थी। और हृदयकी

तीव्रताके कारण वह भावना किस तरह सफल हुअी, यह विचार करने पर सचमुच आश्चर्य होता है।

अुस मीठे झरनेके दूसरी ओर दूर दूर छोटे छोटे घर दिखाअी देते थे। वहासे कभी कभी लडकिया पानी भरने आती दिखाअी पडती थी। वे घर स्वतन्त्र हिन्दुस्तानियोके — मद्रासियोके थे। अेक दिन मै सागके पौधोकी क्यारिया खोद रहा था। अितनेमे दूरसे दो मद्रासी युवकोको हाथोमे लम्बी लकडी और अुसके सिरे पर मछली पकडनेका काटा लटकाये आते हुअे मैने देखा। अुस जूलू सिपाहीको विश्वास था कि हम सब सज्जन है और भाग नही जायगे। गोरा वार्डर बहुत दूर था। किसी भी तरह देखा नही जा सकता था। अिसलिअे जूलू वार्डर हमारे बारेमे निश्चित था। अुन दो जवानोको झरनेके परले किनारे खडे देखकर मै भी हाथमे झारा लेकर नीचे अुतरा। धीरेसे मैने अुनसे पूछा, " तुम कहा रहते हो ? "

अुन्होने जवाब दिया "मेरित्सवर्गमे। वे हमारे घर दीख रहे है।"

"तुम दोनो शालामे पढते हो ? "

"हा।"

"मेरित्सवर्गमे हिन्दुस्तानी काग्रेसका दफ्तर है, अुसे तुम जानते हो ? "

"हा।"

"तुम मि० नायक और मि० वी० अेम० पटेलको जानते हो ? "

"हा, वे ही तो काग्रेसका सब काम करते है।"

"हम सत्याग्रही है। मै तुम्हे अेक सन्देश देता हू, अुसे अुनके पास पहुचा दोगे ? "

"जरूर, बडी खुशीसे।"

"तो मेरी तरफ अेक कागजका टुकडा और पेंसिल फेंको। कागजमे पेसिल रखकर, साथमे छोटासा पत्थर रखकर और डोरी लपेट कर मेरी ओर फेंको, तो वह यहा पहुच जायगा।

अुन युवकोने बडे अुत्साहसे वैसा ही किया। मैने बहुत छोटासा पत्र लिख दिया

"हम यहा है। यह पत्र लानेवाला जहा बताये वहा आअिये। साथमें 'अिंडियन ओपीनियन' और लडाअीसे सम्बन्ध रखनेवाली अखबारोकी दूसरी कतरने भी लेते आअिये।"

वे युवक तुरत चल दिये। साअिकलो पर गये अुन्हे पूरा अेक घटा भी नही हुआ होगा कि मैने दूरसे चार साअिकलोसे अुतरते हुअे चार आदमियोको देखा। दो युवक वही थे और दो दूसरे थे। जरा दूरसे मैने पहचान लिया कि ये तो वही आ गये। वे झरनेके अुस पार खडे हो गये। मै भी हाथमे झारा लेकर झरनेमे अुतरा और अुन्हें प्रणाम किया। मेरे सभी साथी दूरसे अुन्हे देखते रहे।

मैने शुरूमे ही कहा "तुम्हारे पास सिगरेटकी डिबिया हो तो अुसमे छह पेन्स रखकर मेरी तरफ फेक दो।"

अुन्होने वैसा ही किया। अुन्हे आश्चर्य तो हुआ। मै सिगरेटका शत्रु था। मैने डिबिया लेकर अुस जूलू सिपाहीको दे दी और कह दिया "तुम दूर जाकर बैठो। वहासे किसीको आते देखो तो मुझे खबर देना। तुम्हे यह तो विश्वास है न कि मै भागकर नही जाअूगा? मुझे अुन लोगोसे बाते करनी है।"

अुस सिपाहीने मेरा आभार माना। और "मुझे पूरा भरोसा है कि तुम भागकर हरगिज नही जाओगे। तुम्हे जो बाते करनी हो आरामसे करो," यह कहते कहते वह मेरी बताअी हुअी जगह पर जा बैठा। अुन भाअियोसे 'अिडियन ओपीनियन' और दूसरे अग्रेजी अखबारोकी कतरने मैने ली। बहुतसी बाते की और हर तीसरे दिन अिसी जगह मुकर्रर की हुअी सामग्री लेकर नियमित आनेका वचन देकर वे विदा हुअे। वे भी बहुत दिनोसे सोच रहे थे कि हमसे किस तरह मिला जाय।

बस, जिसकी जरूरत थी वह खुराक मिल गअी। सबके दिलोकी तमाम अुदासी और शिथिलता अुड गअी। अिस घटनाके बाद बाहरका गरमागरम वातावरण जानकर हमे खूब आनद हुआ और हमारे दिन भी अुमगमे बीतने लगे।

८

जेलमें सत्याग्रह

मुझे कितनी ही जेलोका अनुभव हुआ। परन्तु देश और विदेशकी सभी जेलोमें हर वातका अेकसा ही अनुभव हुआ, मानो वे सव अेक ही पक्षीके पख हो। सभी जगह कर्मचारियोकी अेक ही मनोवृत्ति। अैसा लगा कि सिर्फ हृदय ही नही, वल्कि अुसके साथ जिसे हम सावारण वुद्धि — Common sense— कहते है अुसे भी गिरवी रखकर वे नौकरी करते है। और छोटेसे मामूली सिपाहीसे लेकर वडे अफसर तक सव अेक-दूसरेके प्रति सन्देह और भयकी नजरसे देखते है। सरलता और सचाअी तो किसीमें होती ही नही। 'जेल मेन्युअल' ही अुनकी धर्म-पुस्तक होती है। कोअी जिज्ञासु हृदय अितनी अधतासे कहिये या वफादारीसे कहिये, वाअिवल, गीताजी या अन्य किसी धर्मग्रथका अध्ययन करे और अुसके अनुसार चले, तो जरूर अुसके जीवनका कल्याण हो जाय। अिन तीन मामलोमे मैंने सभी जेलोमे समानता देखी। जो वात जेलके डॉक्टरोके वारेमें हम यहाकी जेलोमे अनुभव करते है वही अनुभव मुझे दक्षिण अफ्रीकामे भी हुआ। अैसा लगा जैसे डॉक्टरके धधेको शोभा देनेवाला प्रेमपूर्ण हृदय वे जेलके दरवाजेके वाहर रखकर ही जेलमे घुसते है। लेकिन यह सव वर्णन करनेकी यह जगह नही। अिसलिअे मैं मूल वात पर आता हू।

अव तो जेलमे सत्याग्रहियोकी वाढ आने लगी। परिचित स्नेही आने लगे। हृदयकी सारी अुदासी जाती रही। परन्तु जेलके कुछ कष्ट खटकते थे। जो सत्याग्रही वहा जमा हुअे — हिन्दू या मुसलमान — वे मास नही खाते थे। मासाहारियोको सप्ताहमे दो वार मास दिया जाता था। और डॉक्टरोकी रायके अनुसार शरीरकी शक्ति वनाये रखनेके लिअे शरीरमें चिकने पदार्थ अेक खास मात्रामे पहुचना जरूरी था। सख्त मेहनत करनेवाले कैदियोके लिअे तो यह और भी जरूरी था। अिसलिअे हम घीकी माग करने लगे। गवर्नरने हमारी मागको हसीमें अुडा दिया। हमने डॉक्टरसे प्रार्थना की कि हमारी तन्दुरुस्तीके खयालसे हम जो मासाहारी नही है अुन्हे घी मिलना चाहिये। वे ताने मारने लगे "यहा तुम घी खाने आये हो? कौन तुम्हे

न्यौता देने गया था कि जेलमे चलो? आज घी मागा है, कल शक्कर और मक्खन मागोगे। तुम्हे जेलको नानाका घर बना देना है, क्यो?"

अब क्या किया जाय? क्या लडना चाहिये? अिसकी चर्चा होने लगी। अितनेमे मुझे किसी कारणसे चार-पाच दिन दवाखानेमे जाना पडा। वहा भाअी प्रागजी देसाअी मिले। अुन्हे दूसरी जेलमे जबरन् चेचकका टीका लगाया गया था, अिसलिअे बुखार आता था। अिस कारणसे अुन्हे सीधे दवाखाने ही ले आये थे। हमने अेक-दूसरेका आलिंगन किया। फिर दो-चार दिनमे ही भाअी सुरेन्द्रराय मेढ और भाअी मणिलाल गाधी आये। ये सब तो ट्रासवालकी जेलके योद्धा थे। भाअी प्रागजी देसाअीने पूछा "यहा क्या हाल है?" मैंने सब हाल कहा और बताया कि, "हमे कुछ न कुछ करना चाहिये। घी और स्वाभिमान दोनोके लिअे लडना चाहिये। और भी कुछ बाते शामिल करके लडना चाहिये। मुझे जेलके जीवनका अनुभव नही है। मै तो नया ही हू। अब आप सब आ गये, अिसलिअे मेरी जिम्मेदारी कम हो गअी।"

सबको अलग अलग बन्द किया जाता था, परन्तु दिनमे तो सब मिलते ही थे। वातावरण गरम होने लगा। हमने अधिकारियोसे विनती करनेका अेक भी अुपाय बाकी न छोडा। अिसलिअे आखिरमे अुपवास करनेका ही निर्णय किया। यह तय हुआ कि रविवारके चावल और 'बीन्स' खाकर सोमवारसे अुपवास शुरू किया जाय। सत्याग्रहियोकी सख्या लगभग अेकसौ हो गअी थी। सबसे कहा गया, सबको समझाया गया कि, "जेलकी लडाअी कठिन होती है। अुपवास करते हुअे भी काम करना पडता है। काम करते करते शरीर लाचार हो जाय तब वह अपने-आप काम बन्द कर देता है। अुपवास कितने करने पडेगे, यह निश्चित रूपमे नही कहा जा सकता। धर्म-प्रतिज्ञा करनी होगी। कमसे कम माग रखी जायगी, परन्तु जिस मागके लिअे सत्याग्रहकी प्रतिज्ञा ली हो, वह तो जानको जोखिममे डालकर भी पूरी करनी होगी। अुसमें समझौता नही हो सकता। अैसा करनेमे शरीरके चले जानेकी भी सभावना है। अिसमे चालाकी करे तो आत्माकी अधोगति होती है।" बहुतसे भाअी तैयार हो गये। सोमवारकी राह देखने लगे।

सोमवारकी सुबह हुअी। अुठनेका घटा बजा। दरवाजे खुले। सब दातुन-कुल्ला करने लगे। दातुन-कुल्ला करनेके बाद लौटने पर भोजनालयके

पास अेक कतारमें खडे रहना पडता था और 'पुपु' के तैयार रखे कटोरोमें से अेक अेक अुठाकर अपनी कोठरीमे ले जाना पडता था। हमने वही यार्ड-वार्डरको बता दिया कि हमने फैसला किया है कि जब तक हमारी माग पूरी न की जायगी तब तक हम अुपवास करेंगे, अिसलिअे हम 'पुपु' नही लेंगे। आप गवर्नर साहबको खबर दे दीजिये। यार्ड-वार्डर हम सबको अेक तरफ खडे रहनेका कहकर-साहबको बुलाने गया। गवर्नरको सुबह सात बजेके बजाय छह बजे अुठना पडा। वे शरीरसे जरा गोलमटोल थे। स्वभावसे चिल्लानेवाले। अपनी सत्ताका पूरा भान होनेके कारण जरा ढोंगी थे। फिर भी दिल अुनका कमजोर था। वे जल्दी जल्दी वहा आये। मैं तो अुनकी आखोमें पहले से ही आया हुआ था। कभी मौको पर मैंने दूसरोकी तरफसे शिकायतें की थी और यहा भी अुन्होने मुझे देखा। नयोको तो वे जानते भी नही थे। मेरा बिस्तर सवा महीने पुराना हो गया था, अिसलिअे वे मुझे ही भला-बुरा सुनाते हुअे आये "ये सब तुम्हारे ही काम है। नये आदमियोके आते ही अुन्हे अुकसाकर तुम झगडा करने लगे।"

"क्यों तूफान शुरू कर दिया?" अुन्होने पूछा।

मैंने नम्रतासे कहा "साहब, तूफान नही मचाया। हमने प्रतिज्ञा की है कि जब तक हमें घी न मिलेगा और अपमानजनक व्यवहार न होनेका आश्वासन नही मिलेगा, तब तक हम खाना नही लेंगे।"

"अच्छा, घी खाना है! खाना खाना! अब तो तुम्हे घी ही खिलाअूगा — सीधे कर दूगा। जाओ, बिलकुल मूर्ख न बनो। खाना ले लो।" अुन्होने पहले धमकीकी आवाजमें बोलकर बादमें अैसे भावसे कहा मानो सिखावन दे रहे हो।

मैंने शातिसे जवाब दिया "जब तक घी न मिलेगा तब तक न खानेका ही हमारा निश्चय है।"

साहबका पारा अूपर चढ गया। खूब चिल्लाये और बादमें बडे रोबके साथ हुक्म दिया "मैं जेलके गवर्नरकी हैसियतसे हुक्म देता हू कि जेलके नियमके अनुसार हर कैदीको अपना अपना खाना यहासे ले ही जाना चाहिये और कोठरीमे अपने सामने अेक घटे पडा रहने देना चाहिये। अिसलिअे सब खाना लेकर अपनी अपनी कोठरीमें जाओ।"

मैंने कहा "हम आपका हुक्म मान लेते है।"

अेक अेक करके खानेका कटोरा अुठाकर हम अपनी कोठरियोमें घुसे। सब कोठरिया बन्द करके हमें अेक घटे तक बन्द रखा गया। साढे

सात बजते ही घटी हुअी। कोठरिया खोलकर चौकमे सब कैदियोको कतारमें खडा करके अलग अलग दलोमे काम पर भेजनेका अिन्तजाम हो रहा था। अुस समय गवर्नर आये। जेलमें गवर्नरका बडा दबदबा होता है। वे फौजी ठाठमे रहते है। अुन्होने हुक्म दिया "जिसने खाना न खाया हो वह यहा अलग कतारमे खडा रहे।" हम लोग अलग कतारमे खडे हो गये। कुल ७२ आदमी थे। जो छोटी अुम्रके थे अुन सबको अलग कर दिया और हुक्म दिया कि, "बाकी सबको पत्थरके पहाड पर ले जाओ। वहा अिन्हे पत्थर फोडनेका काम सौंपो। अिनसे सख्त काम लिया जाय। जेलमे अुपवास करके तूफान मचाना कितनी मूर्खताका काम है, यह मैं तुम्हे अच्छी तरह बता दूगा।" यह कहकर वे चले गये। हमने तो अिन सब बातोकी आशा रखी ही थी, अिसलिअे हमे अुनसे कोअी डर नही लगा। परन्तु पत्थरकी खानो पर पहुचे तो वहा मालूम हुआ कि वार्डरोको खानगी तौर पर हुक्म दिया गया है कि हममे से किसीको काम करने करते चक्कर आ जाय, तो अुसे डोलीमे डालकर तुरत दवाखाने ले जाया जाय। यह जानकर और डोली देखकर हमे आश्चर्य हुआ, हम समझ गये कि साहब बहादुरका दिल घबरा रहा है। कोअी खास अुल्लेखनीय सख्ती मालूम नही हुअी।

अुन लडकोको तो बगीचेमे ही भेजा गया। अुसी दिन वे दोनो भाअी मिलने आये। लडकोने अुन्हे अुपवासका सारा हाल सुनाया और यह भी कहा कि गवर्नरने धमकी दी है और सबको पत्थरके पहाड पर भूखे पेट ले गये है। फिर क्या था? दोनो वहासे भागे। शहरमे जाकर हिन्दुस्तानी बाजारोमे जोरदार हडताल कराअी। बडी भारी सभा हुअी। "मेरित्सबर्गकी जेलमे सत्याग्रहियो पर बडा अत्याचार हो रहा है। बिलकुल निकम्मी खुराक खानेको दी जाती है और अुनका अपमान किया जाता है। अिसलिअे सत्याग्रहियोने जब तक अिस तरहका व्यवहार बद न हो तब तक भूखो रहनेका निश्चय करके अुपवास शुरू कर दिया है।" वगैरा गरमागरम भाषण हुअे। मन्त्रियो पर विरोधके तार भेजे गये और अिस मामलेका तुरत निपटारा करनेकी अुनसे प्रार्थना की गअी। अैसी हडतालें, अैसी सभाअे और अैसे प्रस्ताव दक्षिण अफ्रीकाके सभी बडे गावोमे हुअे। मन्त्रियोके नाम अनेक तार गये। अखबार तो अिसी बातसे भर गये। जेलके कर्मचारी चौक अुठे और घबरा गये। अुन्हे भी अैसा अनुभव पहली ही बार हुआ। मेरित्सबर्गकी जेलमे किये गये

अुपवासकी वात पाच हजार मील पार करके हिन्दुस्तानमें भी पहुच गअी। अुस दिन शामको काम परसे लौटने पर भाअी श्री प्रागजी देसाअी, सुरेन्द्रराय मेढ, मणिलाल गाधी, पडित भवानीदयाल (अव सन्यासी भवानीदयाल) और मै अिस तरह पाच आदमियोको अलग कर दिया और जूलू अपरावी कैदियोके अधेरे व्लाकमे वन्द कर दिया गया। हममे से कोअी अेक-दूसरेका मुह नही देख सकता था। काम भी हमको अिसी वार्डमें अलग अलग सौपा गया। अिस तरह दूसरा दिन भी वीत गया। दूसरे दिन सिटी मजिस्ट्रेट आकर हमारा हालचाल पूछ गये और हमे थोडी धमकी भी दे गये। तीसरा दिन वुधवार शुरू हुआ। दवाखानेमे मिस्टर डीक नामके अेक कम्पाअुण्डर थे। हमारा अुपवास अुन्हे कुछ खटका। मेरे साथ वे कुछ हिलमिल गये थे, अिसलिअे कहने लगे "तुम यह सब वेवकूफी कर रहे हो। जेलके गवर्नरकी स्थिति भी विपम वना रहे हो। तुम्हे घी देना अुसके हाथकी वात नही है। यूनियन पार्लियामेटने जो खाना निश्चित किया है, वह तुम किस तरह वदलवाओगे? तुम मर जाओ तो भी पार्लियामेट जेलकी खुराक क्यो वदलेगी? अिसलिअे तुम्हे अपनी मर्यादा समझनी चाहिये। अव भी चेत जाओ और घीके सिवा दूसरी मागे स्वीकार हो जाय तो अुपवास छोड दो।" मैंने भले मि० डीकके भाषणके जवावमें अितना ही कहा "अिसमे हमारी वडी परीक्षा हो सकती है। लेकिन हमें विश्वास है कि अन्तमें सरकारको हमारी माग स्वीकार करनी ही पडेगी। जब आप यह वात सावित हुअी देखेंगे तब आप ही हमें समझदार कहेंगे। आपकी सद्भावनाके लिअे मै आपका आभार मानता हू।"

जब हम पाच आदमियोको अलग किया गया, तव हमने विचार किया "वहुत अच्छा हुआ। हमारी लडाअीका आवार अव पाच आदमियो पर ही रह गया है। सब हार जाय तो भी जब तक हम पाच अटल रहेंगे तब तक हमारी जीत है।" लेकिन दूसरे ही दिन सवेरे वहुत वीमार हो जानेके कारण प० भवानीदयालको दवाखाने भेज दिया गया। अिनके सिवा, अुपवासके कारण काम करते करते वेहोश हो जानेवाले पाच-सात अन्य लोगोको भी दवाखाने ले जाया गया। तीसरे दिन वारह वजे भाअी रामदास गाधी अन्य विद्यार्थियोके साथ कतारमे वैठे थे। अुपवासको वावन घटे हो गये थे। रामदास जरा सिर दुखनेके कारण जमीन पर लेटे हुअे थे। सामने

खुराकसे भरे हुअे कटोरे पडे थे। अितनेमे जेलका बडा जेलर वहासे गुजरा। रामदासको पडा हुआ देखकर वह रुका और पूछने लगा "अिस तरह क्यो पडे हो?" रामदासने कहा "सिरमे चक्कर आ रहा है।" यह सुनकर वह विचारमे पड गया। तुरत ही लौट पडा। गवर्नरके दफ्तरमे गया और गवर्नर साहबसे कहा "साहब, अिन सत्याग्रहियोका कुछ न कुछ निपटारा कीजिये। अिन लोगोको बावन घटे तो हो गये। मेरी स्त्री मुझे सुबहकी चाय देनेमे पाच मिनटकी भी देर कर देती है, तो मेरे पैर लडखडाने लगते है और मेरा सिर चक्कर खाता है। अिन्हे तो बावन घटे हो गये है। अुस गाधीके लडकेके सिरमे चक्कर आ रहे है। अिस तरह भूखो मरनेसे किसी लडकेको कुछ हो गया तो मेरी और आपकी क्या दशा होगी? मै आपसे प्रार्थना करता हू कि आप अिसका जल्दी निपटारा करे, नही तो कोअी अघटित घटना हो गअी और अिन छोटे लडकोमे से कोअी मर गया, तो अुसकी जिम्मेदारी मेरे सिर नही होगी।"

हेड जेलरकी बात सुनकर गवर्नर और दूसरोने कुछ विचार किया और वे खानेके लिअे जिन कोठरियोमे हमे बन्द किया गया था वहा आये। अेकाअेक समयसे पहले दरवाजा खुला। हमने जेलके अनुशासनके खातिर खडे होकर अुन्हे सलाम किया। गवर्नरने मुझसे कहा "तुम जानते हो कि घीकी बात मेरे हाथमे नही है? मुझे हुक्म मिलनेमे देर भी हो सकती है। मै तो मानता हू कि सरकार तुम्हारी माग स्वीकार नही करेगी, और बादमे तुम्हे थक कर भी अुपवास छोडना पडेगा। परन्तु अुन छोटे बच्चोको तुमने किसलिअे अुकसाया है? अुनसे कह दो कि वे खाना खाये।"

मैने जवाब दिया "साहब, आपका खयाल गलत है। वे लडके तो अैसे है कि मै यदि अुन्हे खानेकी सलाह देने जाअू तो वे तिरस्कार करके मुझे निकाल दे। अुन्होने जो प्रतिज्ञा ली है अुसकी जोखिम भी वे अच्छी तरह समझते है। अिसलिअे अिस विषयमे वे किसीका कहना नही मानेगे। और माने तो भी अुन्हे अपनी प्रतिज्ञा तोडनेकी सलाह देना मेरा धर्म नही है।"

मेरा पिछला वाक्य सुनकर साहब चिढे "हा, हा, मै समझ गया। तुम मुझे धोखा देने चले हो! यह सब कारस्तानी तुम बडोकी ही है। अिनमे से कोअी लडका मर गया तो अुसकी जिम्मेदारी तुम लोगो पर होगी।"

मैंने तुरत कहा "नही साहव, हममें से किसीकी भी मृत्युके लिअे हम जिम्मेदार नही होंगे, वल्कि सरकार होगी। यहा मरकारके प्रतिनिधि आप है। अिसलिअे सारी जिम्मेदारी आपके सिर मानी जायगी।"

"अच्छा, नही मानना हो तो न मानो," यह कहकर वे वहासे चले गये। कोठरी वन्द हो गअी। अुसके वाद भाअी रामदासको तुरत दवाखाने ले जाया गया।

अिस तरह वुधवारका दिन भी वीत गया। अतमे गुरुवारका सूर्य अुगा। तलाश करने पर मालूम हुआ कि ७२के वजाय ४१ अपनी प्रतिज्ञा पर टिके रहे। अुनमे से सच्चे तो ३० थे। वाकी लोगोने चालाकी की। वन्द कोठरीमे तीन चारको वन्द करके खाना दिया जाता था, अिसलिअे अधिकारियोको पता न चलता था कि किसने खाया और किसने नही खाया। अुन्हे तो सिर्फ अितना मालूम होता था कि अमुक सख्याने नही खाया। अिससे फायदा अुठाकर कुछ लोग वारी वारीसे खाते थे। अिस प्रकार सख्या वनाये रखना सर्वथा अनुचित था। जो प्रतिज्ञा ली गअी हो अुसे शुद्ध स्वरूपमे पालना चाहिये। अुसमे चालाकी शोभा नही देती। गुरुवारको सुवह हमे काम करने विठाया गया। काम तो नामको ही था। वहा अेक सार्जण्ट-वार्डर वन्दूक लेकर आया और मेरे पास मेज पर वैठ गया। वैठते ही अुसने मुझसे कहा "सुनो, मुझे साहवकी तरफसे हुक्म मिला है कि तुम जरा भी किसीसे वात करो तो मै तुम्हे गोलीसे अुडा दू।" अुसके वोलनेके ढगसे मै समझ गया कि किसीसे वात न करने देनेकी गवर्नरकी सूचनाकी वह हसी अुडा रहा है। थोडी देर हुअी कि मि० डीक आ गये। वे मेरे सामने वैठ गये और मुझसे कहने लगे "मुझे सचमुच तुम्हारे साथ हमदर्दी है। तुमने कमाल कर दिया।" अिस प्रकार हमे मूर्ख कहनेवालेका विचार कैसे वदला, यह मै कुछ समझा नही। परन्तु थोडी देरमे वे वोल अुठे, "मि० गाधी वडा खतरा अुठा रहे है। पाच हजार आदमियोकी कूच और अुसमे डेढ सौ छोटे छोटे वच्चोवाली स्त्रिया! डॉक्टरी दृष्टिसे यह वडा खतरा है।" मै समझ गया कि वाहर कोअी न कोअी भारी गडवड होनी चाहिये। पिछले सात दिनोकी हमे कोअी खवर नही थी। मि० डीक तो और कुछ वोले विना चले गये। थोडी देर हुअी और अस्पतालका जूलू वार्डर आया। मुझे पाखानेकी हाजत हो रही थी। मैंने सार्जण्ट-वार्डरसे अिजाजत मागी "मुझे पाखाने जाना है। तुम अिजाजत दो

तो मै दवाखानेके साफ पाखानेमे अिस वार्डरके साथ हो आअू।" अुसने अुस वार्डरसे मुझे ले जानेको कह दिया। वार्डर चालाक था। दवाखानेमे कोअी था नही। अुसने मुझे पाखानेके पास ठहरनेको कहा और आफिसमें जाकर 'नेटाल विटनेस' नामका अग्रेजी दैनिक लाकर पाखानेमे रख दिया और मुझे कहा "अिस पाखानेमे जाओ।" मुझे आश्चर्य हुआ। मुझे तो जरा भी खयाल नही था। मैने अखबार मागा भी नही था। परन्तु अुसके हृदयमे अैसी अुमग अुठी होगी। मैने दरवाजा खोला। पाखानेमे घुसकर दरवाजा बन्द करके वह अखबार हाथमे लिया। गाधीजी, मि० पोलाक, मि० कैलनबैक और कूच करनेवाले हजारो मनुष्योके फोटो और कूचका विस्तृत वर्णन, तीनो नेताओकी गिरफ्तारी और अुन्हे दी गअी सजा वगैरा समाचारोसे सारा अखबार भरा था। मैने शातिसे पढा। ठीक पौन घटा लगाया और फिर बाहर निकला।

फिर तो जेलकी पत्रिकाकी आवृत्ति निकलती ही। अिस प्रकार अुपवासमे भी खूब आनददायक घटनाओके समाचार मिल जानेसे हमे अुपवासकी कमजोरी कुछ मालूम नही होती थी। यह न पूछिये कि मुझे जो समाचार मिले थे अुन्हे मैने सब जगह कैसे पहुचाया गया। लेकिन चौथे दिनका अुपवास हमसे डॉक्टर और गवर्नरके लिअे ज्यादा भारी हो गया। फिर तो डॉक्टरको अस्पतालमे स्थायी रूपसे रख लिया गया। कुल मिलाकर १८ अुपवासी दवाखानेमे पडे थे। डॉक्टर और गवर्नर दोनोको चिन्ता होने लगी। गवर्नर साहब दस दस मिनटसे दवाखानेमें आकर अुपवासियोकी तबीयतके बारेमे पूछताछ करते थे। डॉक्टर चिन्तातुर हृदयसे सबकी जाच करते थे। "चार दिनके अुपवास! अुनका भरोसा नही, कमजोर दिल घडीभरमे बन्द हो सकता है। अिसलिअे यह तो बडा खतरा कहा जायगा। अिस गाधीके लडकेको कुछ दूध पिलाया जाय तो बहुत अच्छा हो। अुसके गलेकी नली सूज गअी है। जैसे-जैसे अुपवास लम्बा होगा, वैसे-वैसे ज्यादा सूजेगी और अन्तमें श्वास लेना भी मुश्किल हो जायगा। वह थोडा दूध पीले तो खतरेसे बच जाय। अिन लडकोने तो गजब कर दिया! अुपवासको १०० घटे होने आये। कैसे रहा जाता है अिन लोगोसे?" अिस प्रकार चिन्तातुर होकर डॉक्टर बोलते और गवर्नर घबराते। यह सब तमाशा देखकर जूलू वार्डरोका जमादार मेरे पास आया। ७ फुट अूचा, लगभग

२५० पौंडसे भी ज्यादा वजन। मानो त्रेतायुगके भीमसेनका कलियुगी संस्करण हो! हाथमें सीसमकी चमकीली गदा घुमाता हुआ वह आया। गोरा वार्डर अुस समय नहीं था। यह जमादार मेरे सामने बैठ गया। हंसते हुअे चेहरेसे मानो प्राण-विनिमय कर रहा हो अिस तरह मेरे सामने देखता रहा और मेरे कंधेको थपथपाते हुअे कहने लगा "मधोता, म खूला मधोता" (सच्चा मर्द, सच्चा मर्द)। मैंने पूछा "क्यों जमादार, क्या है?" अुसने फिर अिधर अुधर नजर डालकर मुझे शाबाशी देते हुये कहना शुरू किया "अिन गोरे लोगोंको तुमने खूब सीधा किया है। वह बडा साहब दिनमें शायद ही अेक बार जेलमें घूमने आता था। अुसके बजाय अब बार-बार जेलमें भाग-दौड करता है। और अुसका दिल तो जैसे अुड ही गया हो, अिस तरह परेशान दिखाओी देता है। परन्तु तुम सच बात बताओ। अितने अधिक दिन क्या खाये बिना रहा जा सकता है? तुम लोगोंने कुछ मंत्र साध रखा दीखता है। तुम्हारे पास कोओी मंतर-जंतर होना चाहिये! मैं तो अेक दिनकी भूखसे ही मर जाअूं। परन्तु तुम चार-चार दिनके अुपवासके बाद भी शान्तिसे काम कर रहे हो!" मैंने कहा, "जमादार, हमारे पास कोओी मंतर-जंतर नहीं है, परन्तु भगवानके प्रति हमें श्रद्धा है और वही हमें बचाता है।"

"सच बात है, सच बात है। तुम भगवानके बंदे हो।" यह कहकर वह चला गया।

अुसको गये आधा घंटा हुआ होगा कि जेलके गवर्नर यार्डके दरवाजेमें घुसे। वे अकेले ही थे। अुनकी मुखमुद्रा पर घबराहटकी छाया फैली हुओी थी। वे मेरी तरफ आने लगे। मेरे नजदीक आ पहुंचे तो अनुशासनके खातिर मैं खडा होने लगा। परन्तु अुन्होंने लम्बा हाथ करके मुझे पकडकर वापस बिठा दिया। "बैठ जाओ, तकलीफ न करो", यह कहकर वे मेरे सामने अुकडूं बैठ गये। फिर मुझसे कहने लगे "मेरा अेक काम करो। गांधीका वह लडका दवाखानेमें है। डॉक्टर कहता है कि वह लडका थोडा भी दूध न पियेगा तो अुसके गलेकी नली सूज जायगी और सांस नहीं लिया जायगा। अिसका अुलटा नतीजा होगा। वह मेरा कहना नहीं मानता। तुम चलो और अुसे थोडा दूध लेनेको कहो। अैसा कहनेसे अुनकी या तुम्हारी प्रतिज्ञा हरगिज नहीं टूटेगी। मेरे और परमेश्वरके खातिर भी

तुम मेरे साथ चलो।" गवर्नरकी आवाज और वोलनेके अुनके ढगसे अुनके हृदयकी घवराहट मैं समझ गया। अुन्हे अिनकार करनेकी मेरी हिम्मत नही हुअी। अिसी तरह रामदाससे कहने जानेका साहस भी नही हुआ। लेकिन अिस धर्म-सकटसे वचनेका अुपाय मुझे सूझ गया। भाअी मणिलाल गाधीको मुझसे कोअी पचास फुट दूर विठा रखा था। अुनकी तरफ अिशारा करके मैंने कहा "वे मणिलाल गाधी वैठे हैं। वे अुस लडकेके वडे भाअी है। मेरे वजाय आप अुन्हे ले जायेंगे तो सभव है वह लडका मान जाय।" मेरे यह कहते ही गवर्नर साहव मेरे पाससे अुठ गये। मणिलालका हाथ पकडकर अुन्हे दवाखाने ले गये। मणिलालने रामदासको गवर्नर साहवकी वात सुनाअी। रामदास सोते सोते घुडके "तुम क्या समझकर मुझे कहने आये हो? क्या मैं अितना कमजोर हू कि जीनेके लिअे भी ली हुअी प्रतिज्ञा तोड दूगा? अिसलिअे तुम जिस दरवाजेसे आये हो अुसीसे वापस चले जाओ।" रामदासने जो कुछ कहा वह मणिलालने गवर्नर साहवको समझाया। वे निराश हो गये। यह वात लगभग दोपहरके ढाअी-तीन वजे हुअी। दो घटे वीत गये। साढे चार या पाच वजे होगे कि हेड वार्डर हमे वुलाने आया "तुम चारोको गवर्नर साहव यार्डमे वुला रहे है।" हम अुठे। धीरे-धीरे यार्डमे गये। दूसरे अुपवासी भी यार्डमे लाये गये थे। वहा गवर्नर साहव पहले दिनकी तरह ही रोवसे हमे कहने लगे "मुझे अभी तार मिला है कि सरकारने तुम्हारी घीकी माग मजूर की है। तुम्हे रोज आधी छटाक घी मिलेगा। आज हमारे पास घी नही है। परन्तु मैं तुम्हे वचन देता हू कि कलसे तुम्हे घी मिलेगा। आअिन्दा तुम अैसा मूर्खताका काम कभी न करना। तुमने कोअी फसाद किया होता, अुद्धतता की होती तो मैं तुम्हे सीधा कर देता। पर तुम तो मूर्खतापूर्ण कदम अुठाकर अुपवास करने लगे। मैं तुम्हे सजा भी किस वातकी दू?"

गवर्नर साहवका कहना सुनकर हमें हसी आ गअी। फिर तो हमने सारी वातोकी सफाअी की। घी अच्छी किस्मका होना चाहिये। अुसका नमूना भी हमने ही पसन्द किया। दूसरा मुद्दा हमारे स्वाभिमानका था। कुछ गोरे वार्डर हमे 'कुली' कहकर हमारा अपमान किया करते थे। वह अपमान अव न हो, अिसका हमने आश्वासन मागा। गवर्नर साहवने घटी वजाकर सवको अिकट्ठा किया और वैसा अपमान न करनेकी और साथ ही

हमे कोअी तकलीफ न देनेकी सख्त हिदायत दी। फिर हममें मे कुछ लोगोको तकिये, गद्दे और जूते नही मिले थे, अिन सबकी हमने माग की। जेलके भडारमे जितना सामान मौजूद था वह सब वही हमारे सामने रख दिया गया और बाकी तैयार करा देनेका वचन दिया गया। फिर आखिरी माग हमने यह की कि सत्याग्रहके पहले हम सब जैसे अेक साथ रहते थे वैसे ही मबको फिरसे अेक साथ कर दिया जाये। यह भी अुन्होंने मजूर किया। बस, काम पूरा हुआ। सब जगह आनद ही आनद छा गया। गवर्नर माहबके मामने ही जेलके अनुशासन जैसी कोअी चीज नही रही। कितने ही यार्ड-वार्डर और हेड वार्डर तो हमें जीत पर मुबारकबाद देने आये। चार दिन पहलेकी जेल चार दिनकी तपश्चर्याके बाद मदिर जैसी लगने लगी। अुसकी सारी भयानकता दूर हो गअी और स्वाभिमानके साथ हमारे दिन बीतने लगे।

अुपवासके बाद भोजनके मामलेमे असतोष रहा, परन्तु वह भोजनालयके कर्मचारियोकी बदमाशीके कारण रहा, मौका मिलने पर वह भी सब ठीक हो गया। जेलवालोने भोजनालयकी देखरेख रखनेके लिअे सत्याग्रहियोमें से किसी अेकको रखना मजूर किया। और हम सबने भाअी सुरेन्द्रराय मेटको रख दिया। अिस प्रकार भोजनालयकी शिकायत भी दूर हुअी।

परन्तु यहा हमारी तीन महीनेकी मियाद पूरी नही हुअी। लगभग पचीस दिन रहे कि हममें से सौ आदमियोको डरबन सेंट्रल जेल भेज दिया गया। वहा फिर नया दूल्हा और नअी बारातवाली बात हुअी। वहा भी चार दिनके अुपवास हुअे। वहाके सुपरिन्टेन्डेन्टको डीन कहा जाता था। वह बडा क्रूर और घाघ आदमी था। अुपवासके दिनोंमें भाअी प्रागजी देसाअी पर हमला हुआ, जिससे अुन्हे अेक महीने खाटमें पडा रहना पडा। चार दिनके अुपवासके अन्तमें डीन समझौता करने आया। वह बोला "मेरे मातहत दो हजार डच फौजी कैदी रह चुके है, लेकिन किसकी मजाल थी जो मेरा अनुशासन तोड सके? तुम्होंने मेरा अनुशासन भग किया है। तुमने मुझे जितना तग किया अुतना और किसीने नही किया।" अुसके कहनेका हेतु भी यही था कि अुसे यह नही सूझता कि वह अिससे कैसे निपटे। हमने अुसे गालिया दी होती, अुसके साथ अुद्दत बरताव किया होता या अुसका हुक्म न माना होता, तो अुसने हमें

कभीका सीधा कर दिया होता। परन्तु हमने अपनी नम्रता और स्वय दु ख अुठा लेनेकी कार्रवाअीसे अुसके सव रास्ते वद कर दिये थे।

सत्ताअीस दिनके निवाससे वह जेल भी, जो जूनी-पुरानी थी और जहा पृथ्वीके नरक जैसा कप्ट था, रहने लायक वन गअी ओर २२ दिसम्वर १९१३ को पहले-पहल पकडी गअी टोलीका छुटकारा हुआ।

९

लडाअीका रंग जमा

पहले दलको सजा होनेके वाद पहलेसे की हुअी व्यवस्थाके अनुसार वीर स्त्री-पुरुप क्या रुकनेवाले थे? खास तौर पर अिमिग्रेशन और व्यापारी परवानोके कानून तोडनेके रास्ते तो सवको मालूम ही थे। दूसरे कानून तोडनेकी कल्पना तक नही की गअी थी। श्री कस्तूरवाके जेलमे जाते ही ट्रासवालमे ग्यारह वहनोका अेक दल तैयार हो गया। अिन वहनोने पहलेसे ही तैयारी कर रखी थी। गाधीजीने अुन्हे वहुत चेतावनी दी। अुन्होने जेलकी असुविधाओ और कष्टोका वर्णन अिन वहनोको सुनाया। खाने-पहनने, ओढने-विछाने और वैठने-अुठने तकमे हर घडी अकुशमे रहना पडता है, सख्त काम करना पडता है, कपडे धोनेका, पीसनेका और अन्य काम वहा खूव करना पडता है, वगैरा वहुतेरी चेतावनिया दी। पर अुनमें से कोअी वहन पीछे हटनेवाली नही थी। सवके मनमें वडी अुमग थी। अुनमे से कुछ वहनोके पास दूध-पीते वच्चे थे। फिर भी वे सव तैयार हो गअी। अुनके नाम ये है

१ श्रीमती थवी नायडू, २ श्रीमती अेन० पिल्ले, ३ श्रीमती के० मुरगेसा पिल्ले, ४ श्रीमती अे० पी० नायडू, ५ श्रीमती पी० के० नायडू, ६ श्रीमती चिन्नस्वामी पिल्ले, ७ श्रीमती अेन० अेस० पिल्ले, ८ श्रीमती आर० अे० मुडलिगम्, ९ श्रीमती भवानीदयाल, १० श्रीमती अेम० पिल्ले, और ११ श्रीमती अेम० वी० पिल्ले।

ये वहने जेलमे जानेको तैयार हुअी, लेकिन जाय कहा? जोहानिसवर्गमे विना परवानेके फलोकी फेरी लगाने पर सरकार पकड नही रही थी। अिसलिअे ये वहने ऑरेंज फ्री स्टेटमे गअी, जहा अिमिग्रेशन-कानून कडाअीके साथ अमलमे लाया जा रहा था। वहा भी किसीने अुन्हे नही पकडा। तव वे

सब वहां फेरी लगाने लगीं। फिर भी कोओी नतीजा नहीं आया। अिस पर वे सब ट्रान्सवालमें होकर परवानेके बगैर नेटालमें घुसीं, परन्तु वहां भी नहीं पकड़ी गओीं। सरकार अुन्हें कैसे पकड़ती? अुनके लिअे तो भविष्यके गर्भमें महान कार्य नियत हो चुका था।

नेटालमें जब अुन्हें पकड़ा नहीं गया, तो अुन्होंने न्यूकैसल नामके गांवमें जाकर रहनेका निश्चय किया। वहां कोयलेकी खानें हैं। खानोंमें हजारों हिन्दुस्तानी गिरमिटिये थे। अुन्हें काम छोड़कर हड़ताल करनेको अुकसाना था। सब बहनें न्यूकैसल गओीं और मि० लेजरस नामके अेक हिन्दुस्तानी अीसाओी सज्जनके यहां ठहरीं। ये भाओी मध्यम श्रेणीके थे। जमीनके अेक छोटेसे टुकड़े पर मेहनत करके अपना गुजारा करते थे। अुन्होंने अिन बहनोंका आदर-सत्कार किया। बहनोंने दिनभर मजदूरोंके बीचमें घूमना शुरू किया। लगभग सभी बहनें मद्रासी थीं और मजदूरोंमें भी अधिकांश मद्रासी ही थे। बहनोंके प्रेमपूर्वक समझानेसे मजदूरोंके दिल पिघल गये। अुन्हें जीवनमें आज तक जो बात समझमें नहीं आयी थी वह अब समझमें आ गओी। अुनके हृदयमें विश्वास हो गया कि "यह लड़ाओी तो हमारे भलेके लिअे है। हम परसे तीन पौंडका कर अुठवा देनेके लिअे 'गांधी राजा' ने यह लड़ाओी छेड़ी है। राजाके समान बड़े गांधी राजाकी रानीको सरकारने जेलमें डाल दिया है, अुनके कुंवरोंको जेलमें डाल दिया है, यह सब हमारे भलेके लिअे हो रहा है, तब हम कैसे बैठे रह सकते हैं? और जो बहनें हमें कहने आओी हैं अुन्हें तो तीन पौंडका कर देना नहीं पड़ता। अिसलिअे अुनकी सिखावन अुनके स्वार्थके लिअे हरगिज नहीं है।" अिस सीधी-सादी समझसे अुन भोलेभाले लोगोंका हृदय लड़ाओीमें शरीक होनेके लिअे प्रेरित हुआ। धीरे-धीरे वातावरण गरम हुआ और हड़ताल शुरू हो गओी। अब सरकारको यकीन हो गया कि अिन बहनोंको आजाद रहने देनेमें काम नहीं चलेगा। अिसलिअे अुन ग्यारह बहनोंको अुसने पकड़ लिया। अुन्हें भी तीन-तीन महीनेकी सजा देकर मेरित्सबर्गकी जेलमें भेज दिया गया।

सरकारकी अिस कार्रवाओीका असर अुसने सोचा था अुससे अुलटा हुआ। वीर बहनोंकी वीरतासे हजारों मजदूरोंके दिलोंमें जोश भर गया। अुन्होंने अेकके बाद अेक कोठीमें हड़ताल करना शुरू कर दिया। बहनोंकी बिदाओीके बाद श्री थंबी नायडूने वहां जाकर डेरा जमाया, हड़तालियोंकी तादाद

बढने लगी। यह सब हकीकत गाधीजीको हर रोज मिलती रहती थी। गाधीजी फिनिक्समे रहते हुअे वहासे अेक दो बार जोहानिसबर्ग हो आये थे। अुन्होने आते-जाते अिमिग्रेशन-अफसरको परवाना नही बताया तो भी अुन्हे पकडा नही गया। जब थबी नायडूके सिर पर हडतालियोकी जिम्मेदारी बढ गअी, तो अुन्होने गाधीजीको न्यूकैसल बुलाया। गाधीजी वहा गये। जिन सज्जनने ग्यारह बहनोका सत्कार किया था, अुन्हीके यहा वे ठहरे। वहा यह जानकर कि 'गाधी राजा' आये है मजदूरोकी भीड अुलट पडी। खानोके मजदूरोकी सारी कोठियोमे तुरन्त हडताल हो गअी। मि० लेजरसके घरवालोने तो हद ही कर दी। अुनका घर अेक तीर्थस्थान बन गया। अुन्होने अपने घरकी सारी सामग्री, तमाम सामान आनेवाले लोगोकी सेवामे हाजिर कर दिया। सैकडो मनुष्योको खिलानेका काम भी अुन्होने अपने कधो पर ले लिया। लेकिन दो चार दिनमे ही लोगोका जोर बढ गया। अिन सबका प्रबन्ध कैसे किया जाय? अितने ही मे खानोके मालिकोने गाधीजीको बुलवाया। अुनसे गाधीजीने कहा, "हिन्दुस्तानियोको अनेक दुःख है, परन्तु अुनके लिअे मै अिस सत्याग्रहकी लडाअीमे मजदूरोका अुपयोग करना नही चाहता। सरकार मजदूरो परसे तीन पौडका कर अुठा दे तो मै शातिसे मजदूरोको काम पर लग जानेकी सलाह दे दूगा।" मालिकोने बताया कि यह अुनके हाथकी बात नही है, पर अैसी हडतालका नतीजा खराब होगा। हडतालियोको बहुत दुःख अुठाना पडेगा, वे परेशान होगे, आदि बहुतसी चेतावनिया और धमकिया अुन्होने गाधीजीको दी। खानोके मालिको और गाधीजीकी अिस मुलाकातकी बात सुनकर हडताली और भी अुत्तेजित हो गये।

गाधीजीने सोचा कि जिन लोगोने हडताल की है अुन्हे अपनी कोठरिया छोड ही देनी चाहिये, नही तो मालिक अुन्हे तग करेगे, कअी कठिनाअिया खडी करेगे और हडताली टिक न सकेगे। अिसलिअे गाधीजीने अुन लोगोको अपनी कोठरिया बन्द करके अपने साथ सिर्फ पहनने-ओढनेका सामान लेकर बाहर निकल आनेकी सलाह दी। यह सलाह सुनकर हजारो स्त्री-पुरुष गठरिया ले लेकर तैयार हो गये। वे सब न्यूकैसलमे अिकट्ठे हुअे। अुन्हे शुरूसे ही समझा दिया गया कि हडताल करोगे तो तुम्हे जेलमे जानेकी तैयारी रखनी पडेगी, जेलमे जो भी कष्ट अधिकारी देगे अुन सबको सहन करना पडेगा, यह सब सहन करनेकी शक्ति न हो तो हडतालमे शामिल न हो और

वापस काम पर चले जाओ। परन्तु अुनमें से कोओी भी अैसा कमजोर न निकला। अुन्होने यही कहा कि "आप जब तक लडेगे तब तक हम भी नही थकेगे।" लेकिन अिस तरह जमा हुअे मनुष्योके लिअे क्या किया जाय? अुन्हे भी शुरूकी सोलह आदमियोकी टोलीकी तरह सरहद पार करना हो, तो सरकार पकडेगी और अिस तरह छोटे-छोटे कओी दल पकडे जायेगे। लेकिन अधिक विचार करने पर यह खयाल गलत मालूम हुआ। अुसमें देर होनेका और सरकारके न पकडनेका भी डर था। तो क्या अिन लोगोकी भीडको अेक जगह बिठा रखा जाय? अिससे तो वे अुत्पात करने लगेगे। अुनमें कओी तरहकी वृत्तिके आदमी थे। चोरीका अपराध किये हुअे थे, हत्याके मुजरिम थे, व्यभिचारके अपराधी थे और शराबके व्यसनमे चूर रहनेवाले भी थे। अैसे लोगोके विशाल समूहको लम्बे समय तक सुलह-शातिकी बात पर टिकाये रखना बहुत मुश्किल था। अिसलिअे गाधीजीको अेक विलक्षण विचार सूझा। सभी लोगोकी अेक कूच टॉल्स्टॉय फार्मकी तरफ ले जाओी जाय। वहा जाते हुअे सरहद पर वॉल्क्स्टसे आगे सबको सरकार पकड ले तो भी अच्छा, और ठेठ तक जाने दे और पाच हजार मनुष्योके सरकारको चुनौती देकर कानून तोडने पर भी सरकार अुनका कुछ न करे, तो अुस कानूनकी कीमत ही क्या रहेगी? अिसके अलावा, अैसी जबरदस्त कूचसे अूहापोह और जागृति भी खूब होगी। अुन्होने अपना यह विचार सबको बताया। सबने सम्मति दी। गाधीजीने कूचमे शामिल होनेवाले सब भाअियो और बहनोके लिअे नीचे लिखी शर्ते रखी

१ कोओी भी शराब न पिये और बीडी वगैरा व्यसनकी चीजोके लिअे दाम न मागे।

२ रास्तेमे चोरी या दगा-फसाद न किया जाय।

३ जहा पडाव डालना हो वहा आकाशको छप्पर और जमीनको बिछौना समझकर सब रहे।

४ खानेकी सुविधा की जायगी, परन्तु जो कुछ और जितना कुछ मिल जाय अुसीमें सतोष मानना पडेगा।

५ मुकर्रर की हुअी जगह पहुचनेसे पहले या बादमें गाधीजीको सरकार पकड ले, तो शान्ति रखी जाय और अुनकी जगह पर जिसे नियत किया जाय अुसके अधिकारमे रहकर अुसकी आज्ञाका पालन किया जाय।

६ सवको या थोडोको पुलिस पकडने आये, तो झगडा किये विना खुशीसे पुलिसके अधीन हो जाय।

७ अैसा करते हुअे भी पुलिस जुल्म करे और शायद मारपीट करे, तो अुसे भी सहन कर लिया जाय, परन्तु अुसका सामना न किया जाय और पलटकर वार न किया जाय।

अूपरकी सव शर्ते अुन लोगोने मजूर कर ली। आखिरी शर्त अुनमे से कुछ लोगोको कडी लगी, फिर भी मवने अपने नेताकी वात मान ली। फिर कूच आरभ हुअी। रग-विरगी पोशाकवाले, अपढ, अज्ञान, कुछ हद तक जगली जैसे, व्यसनी, नीति या अनीतिका कुछ भान न रखनेवाले, चरित्र क्या और धर्म क्या अिसका भी जिनमे से अधिकाशको पता नही, अैसे हजारो आदमियोकी भीड चली। चमडीसे ढकी हुअी मुट्ठीभर हड्डियोके ककालवाले अेक अलौकिक पुरुपके हाथमे सवकी डोर थी। अुसके पास कोअी सत्ता नही थी, केवल हृदयका प्रेम था। वह सरदार होते हुअे भी सरदार न वना, परन्तु सेवक वना। अुसने लोगोकी सरदारी नही की, वल्कि सेवा की। सवकी सेवा करके अुन्हे सेवक वनाया। फिर तो कोअी भी किसीके लिअे भार न वना। अिस प्रेम और सेवाभावके अप्रतिम वन्धनके कारण विशाल मानव-समुद्र अिस पुरुपकी मर्यादामे रहा। जहा पडाव डाला जाता वहा ढेरो अनाजकी वोरिया पडी ही होती। व्यापारियोने भी गजव कर दिया। आवश्यकतासे कअी गुना अधिक अनाज और भोजन वे तैयार रखते थे। जहा ठहरते वहा मसजिदके चौकमे खाना वनाया जाता और पाच हजारके हिस्सेमे आनेवाला भोजन गाधीजी वाट देते थे। कम हो या ज्यादा हो, अच्छा हो या वुरा हो, कच्चा हो या पक्का हो, परन्तु गाधीजीके हाथसे वाटा हुआ भोजन लेकर सव वडे सतोषके साथ खाते और किसी भी शिकायत या झगडेके विना आगे वढते चले जाते। न्यूकैसलसे रवाना होकर चार्ल्सटाअुन गाव आया। वहा ज्यादा ठहरना पडा। यह गाव नेटालकी सरहदमे था। अुसके वाद जो गाव आता था वह ट्रासवालकी सरहदमे था। अिसलिअे ट्रासवालकी सरहदमे घुसनेसे पहले सरकारको सूचना देना गाधीजीने अुचित समझा। गाधीजीकी मर्यादा और विवेक-दृष्टिने अुन्हे वहुतेरी गलतफहमियो और अनर्थोसे वचाया है। अिस गावमे पडाव डालकर गाधीजीने ट्रासवालकी सरकारको नीचे लिखा सन्देश भेजा

"हम ट्रान्सवालमें वसनेकी गरजसे प्रवेश नही करना चाहते। हमारा प्रवेश सरकारके वचन-भगके खिलाफ अमली पुकार है, और हमारे स्वमान-भगसे होनेवाले दु खकी शुद्ध निशानी हे। हमें आप यही चार्ल्सटाअुनमे पकड लेंगे तो हम निश्चित हो जायेंगे। अगर आप अैसा नही करेंगे और हममे मे कोओी गुप्त रूपमे ट्रान्सवालमे घुस जायगा तो अुसके लिअे हम जिम्मेदार नही होंगे। हमारी लडाओीमे कोओी भी गुप्त चीज नही हे। किसीको व्यक्तिगत स्वार्थ सावना नही है। कोओी छिप कर प्रवेश करे यह हमें पसद नही है। परन्तु जहा हजारो आदमियोसे काम लेना हो और जहा प्रेमके सिवा दूसरा कोओी वधन नही हो, वहा किसीके कार्यके वारेमे हम जिम्मेदार नही हो सकते। और आप यह भी समझ लीजिये कि आप तीन पौंडका कर हटा देंगे तो गिरमिटिये वापस अपने काम पर चले जायेंगे और हडताल वन्द हो जायगी। अपने दूसरे दु ख मिटवानेके लिअे हम अुन्हे सत्याग्रहमे शरीक नही करेंगे।"

सरकारको अिस तरहका सदेश भेजनेके वाद वह किसी भी क्षण हडतालियोको पकड सकती थी। परन्तु अैसा कुछ मालूम नही हुआ। निमन्त्रण भी नही आया और पत्र भी नही आया। पाच हजारकी आवादीवाले चार्ल्सटाअुन गावमें दूसरे पाच हजार आदमियोको लेकर अधिक समय पडा रहना सलामत नही था। हमारी जरूरते भी कुछ विचित्र होती हैं। सफाओी हम रख नही सकते। अपने रहनेके या सार्वजनिक स्थानोको हम स्वच्छ नही रख सकते। अिन सव कुटेवोके कारण भी और अधिक समय तक अस्थिर दशामें पडे रहनेसे अुपद्रव होनेकी सभावना थी। अिसलिअे गाधीजीने ट्रान्सवालकी सीमा पार करनेकी तैयारी की। तैयारी करनेसे पहले फिर गाधीजीने शिष्टता दिखाओी। जनरल स्मट्सके मत्रीको टेलीफोनसे सारी वात वतायी। परन्तु आधे ही मिनटमें गाधीजीको अशिष्ट अुत्तर मिला "जनरल स्मट्स आपके साथ वात भी नही करना चाहते, आपकी अिच्छा हो वैसा कीजिये।" अव तो सरकारकी तरफसे किसी कार्रवाओीकी आशा नही रही। कूच शुरू हुओी। रास्तेमे कओी वाधायें आओी। सवको जोहानिसवर्ग पार करके टॉल्स्टॉय फार्ममें पहुचना था। रास्तेमें जो वीमार पड जाता अुसे गाडीमे रवाना कर देते। सवको गाडीमें ले जाना सभव नही था। अिसलिअे यह यात्रीसघ पैदल ही रवाना हुआ। रास्तेमे दो वच्चे मृत्युकी शरणमे चले गये। अेक वालकको सर्दीका वुखार

चढा और वह मर गया। दूसरा बच्चा अेक छोटेसे पानीके झरनेको पार करते हुअे अपनी माताके हाथसे गिर पडा, प्रवाहमे वह गया और मर गया। लेकिन असिसे न किसीने हार मानी और न कोअी निराश हुआ। सब बोल अुठे "हम जानेवालोका शोक करेगे तो अुससे वे वापस तो आयेगे ही नही। जीनेवालोकी सेवा करना ही हमारा धर्म है।" अिस तरह साधुओ और साध्वियोकी वह जमात आगे बढती रही। अतमे ट्रान्सवालकी हद आअी। वॉलक्रस्टके नालेके पास घुडसवार पुलिसका दल खडा था। वह अिस सघको रोकनेके लिअे नही खडा था, परन्तु अिसलिअे कि वॉलक्रस्टके गोरोने अुत्पात शुरू कर दिया था। अुनका अिरादा था कि गाधीजी अिस सघको लेकर ट्रान्सवालमे घुसे, तब बदूके लेकर सामने जाये और तूफान मचाकर अुन्हे वापस निकाल दे। दो दिन पहले वहा अेक सभा हुअी थी। अुसमे सभी गोरोको बुलाया गया था। मिस्टर कैलनबैक वहा जानेवाले सघके लिअे व्यवस्था करनेको पहलेसे ही पहुच गये थे। वे भी सभामे गये थे। खूब गरमागरम भाषण हुअे और सभाका पारा खूब अूचा चढ गया तब मि० कैलनबैक खडे हुअे। अुन्होने सबके रवैयेके खिलाफ अपना विरोध प्रकट किया। अुन्होने कहा कि, "हिन्दुस्तानी राजनीतिक हकोके लिअे नही लड रहे है। वे तो सामाजिक हकोके लिअे लड रहे है। वे अपने स्वाभिमानके लिअे लड रहे है। अुनकी लडाअी बिलकुल अुचित है। अितने सारे गोरोमे मै अेक अैसा हू कि तुम्हारी अमानुपिक वृत्तिके विरुद्ध अपनी आवाज अुठा रहा हू।" अिस तरह अुन्होने गोरोका खूब विरोध किया। बहुतसे गोरे शरमा गये, कुछ दब गये, कुछ गुस्सेमे आकर अुन्हे गाली देने लगे और मारनेको अुठे। अेक आदमीने तो मि० कैलनबैकको द्वन्द्वयुद्धकी चुनौती भी दे डाली। मि० कैलनबैक अैसे पहलवान थे कि अुससे अच्छी तरह निपट सकते थे। परन्तु अुन्होने बहुत शातिसे जवाब दिया "मैने शातिधर्म स्वीकार न किया होता तो मै तुम्हारी चुनौती बडी खुशीसे स्वीकार करता। फिर भी तुम्हे मुझ पर जितने वार करने हो तुम कर सकते हो।" अतमे सब ठडे पडे और बिखर गये। अिस सभाके कारण सरकार सावधान हो गअी और अुसने सत्याग्रहियोके सघके जानेसे पहले पुलिस-दल भेज दिया। गाधीजीको अिस सभाकी बात पहलेसे मालूम हो गअी थी। अुन्होने सबको चेता दिया था कि अगर वॉलक्रस्टके गोरे हमला करने आ जाय तो किसी भी हालतमे पीछे न हटकर सब आगे

ही वढते चले जाय। लेकिन वॉलक्रस्ट गावमे से गुजरने पर अैसी कोओी वात नही मालूम हुअी। सभी गोरे अिन यात्रियोके सघको खडे खडे देखते रहे। सारा सघ वॉलक्रस्ट पार करके आगे वढा और वहासे आठ मील दूर जाकर अुसने पडाव डाला।

पडाव पर रातके अधेरेमे पुलिस अफसर आया और अुसने गाधीजीको जगाया। कोओी न जान सके अिस तरह गाधीजी श्री पी० के० नायडूको अिस सारे सघकी जिम्मेदारी सौपकर पुलिस अफसरके साथ चले गये। पासके स्टेशनसे गाडीमे वैठकर वॉलक्रस्ट पहुचे। वहा अदालतमे दूसरे दिन सवेरे अुन पर मुकदमा चला। गाधीजीने अदालतमे मजिस्ट्रेटके सामने वयान दिया "मेरी देखरेखमे हजारो पुरुष, सैकडो स्त्रिया और छोटे छोटे वच्चे है। अुन्हे जगलमे निराधार रखकर मुझे पकड लिया गया है। अिसलिअे सरकारको मुझे पकडना ही हो तो या तो अुन सवको जोहानिसवर्गके पास टॉल्स्टॉय फार्মमे पहुचा देना चाहिये या सवको पकड लेना चाहिये। अिन दोनो वातोमे से सरकार अेक भी न कर सके तो जव तक वे टॉल्स्टॉय फार्ममे पहुच न जाय तव तककी मुझे मोहलत मिलनी चाहिये।" मजिस्ट्रेटने गाधीजीकी यह माग स्वीकार करके अुन्हे जमानत पर छोड दिया और वे फिर कूचमे शामिल हो गये। कूच फिर शुरू हुअी। जव स्टैण्डरटन गावके पास सारा सघ पहुचा तो वहा गाधीजीको फिर गिरफ्तार कर लिया गया। साथ ही कुछ साथियोको भी पकड लिया गया। स्टैण्डरटनके मजिस्ट्रेटने भी गाधीजीको अूपर वताये कारणसे ही छोड दिया। फिर कूच आगे वढी। अव सघ लगभग जोहानिसवर्ग पहुच गया। हेडलवर्ग नामके स्टेशनके पास फिर अिमिग्रेशन-अफसर जा पहुचा और गाधीजी पर नेटालके डडी गावके मजिस्ट्रेटका वारट तामील किया। अिस समय मि० पोलाक हिन्दुस्तानको जानेवाले डेप्युटेशनके सदस्यकी हैसियतसे जानेके पहले गाधीजीसे मिलने आये थे। हिन्दुस्तानकी जनताके सामने अिस सत्याग्रहका सव विवरण रखनेके लिअे श्री गोखलेने मि० पोलाकको हिन्दुस्तान आनेके लिअे लिखा था। मि० पोलाक अपने सफरका सारा सामान डरवन भेजकर कूचमे गाधीजीसे मिलने और अुनसे कुछ सलाह लेने आये थे। अिसी समय गाधीजीको तीसरी वार गिरफ्तार किया गया। गाधीजीने मि० पोलाकसे कहा, "अव तो हमारा सच्चा डेप्युटेशन यही हो सकता है। तुम्ही मेरी जगह ले लो।"

मि० पोलाकने गाधीजीकी जगह ले ली। गाधीजीको डडी ले जाया गया। वहा अुन पर खानोके मजदूरोको खानोसे निकालकर हडताल करानेका अभियोग लगाया गया, जिसमे अुन्हे नौ महीनेकी सजा हुअी। वहासे अुन्हे वॉलक्रस्ट ले गये। गाधीजीको पकडनेके बाद हेडलवर्ग स्टेशन पर सबके सभी लोगोको तुरत गिरफ्तार घोषित कर दिया गया और दो तैयार रखी हुअी स्पेशल गाडियोमे बिठाकर सबको न्यूकैसलकी अपनी अपनी खानोमे ले जाकर अुतार दिया गया। खानोको जेल-प्रदेश घोषित करके सबको वही रखा गया।

मि० पोलाकको भी मुक्त रखकर हिन्दुस्तान जाने देना सरकारको पसन्द नही था। अिसलिअे अुन्हे भी पकड लिया गया। मि० कैलनबैक बादके दलके नेता बनकर कूच कर रहे थे। अुन्हे भी सबके साथ पकड लिया गया। अिस प्रकार दोनो मित्रोको भी वॉलक्रस्ट ले जाया गया। वॉलक्रस्टकी जेलमें गाधीजी, मि० पोलाक और मि० कैलनबैक अिकट्ठे हो गये। परन्तु अिन तीनोको सात ही रोज वहा साथ रहने दिया गया। बादमे गाधीजीको ऑरेंज रिवर फ्री स्टेटके ब्लोमफोण्टीन शहरके अेकान्त जेलमे रखा गया, मि० पोलाकको जरमिस्टन जेलमे रखा गया और मि० कैलनबैकको प्रिटोरिया जेलमे रखा गया। अिस प्रकार सभी दलोको अुनके नेताओके साथ पकडकर सरकारने कूच करनेवाले हिन्दुस्तानी मजदूरोको अपनी अपनी खानोमे बिदा कर दिया, खानोको जेलकी हद घोषित कर दिया और बैरकोको जेल बनाकर वहा सबको रख दिया।

१०

'पुरानी संस्कृतिका प्रताप'

नेटालके अुत्तरी भागमे जो जागृति पैदा हुअी और लडाअी जमी, अुस पर हम पिछले प्रकरणमे लिख चुके है। लेकिन हिन्दुस्तानियोकी आबादी तो सारे नेटालमे फैली हुअी है। नेटालके वायव्य और नैऋत्य प्रदेशमे गन्नेकी पैदावार खूब होती है और सारा प्रदेश अिस तरह दिखाअी देता है जैसे कोअी अलौकिक अुद्यान हो। वह प्रदेश हिन्दुस्तानियोके पसीनेके प्रतापसे रमणीय बना है और अुत्तरके हिन्दुस्तानी किसानोसे ये नैऋत्य और वायव्य भागके हिन्दुस्तानी किसान ज्यादा सस्कारी और होशियार है। गिरमिटिया मजदूरोकी

हालत तो सभी जगह अेकसी है। गाधीजीकी धारणा थी कि न्यूकैसलकी तरफके हिन्दुस्तानियोकी हडताल और अुसके कारण होनेवाली जागृति तथा लडाओीमे पैदा होनेवाला जोश लडाओीको मफल वनानेके लिअे काफी है। अिमके मिवा, सारे नेटालमें सव जगह हडताल फैल जाय तो हडतालियोको कावूमे रखना भी मुश्किल हो जायगा। गिरमिटियोकी सख्या लगभग ५५ से ६० हजार थी। वे सव हडताल कर दे तो अुन्हे शान्त रखना, अुनकी हडतालको टिकाये रखनेके लिअे अुनके खानेका वन्दोवस्त करना, अुसके लिअे जरूरी आर्थिक सहायता, काफी सेवक और व्यवस्था करनेके लिअे आवश्यक जिम्मेदार आदमी जुटाना भी जरूरी था। परन्तु अिनमें मे कुछ भी गाधीजीके पास नही था। जो कुछ था वह मिर्फ आरम्भ की हुअी कूचके लिअे ही काफी था। गाधीजीके पास जो कार्यकर्ता थे अुन्हे सरकारने गाधीजीके साथ या आगे-पीछे पकड लिया था। अव तो श्री काछलिया मेठ सारे ट्रान्सवालके आन्दोलनकी देखरेख करनेवाले अकेले ही रह गये थे। मिस श्लेसिन ट्रान्सवालकी हद लाघनेकी व्यवस्था करनेवाली और सारी लडाओीका तफसीलवार हिसाव रखनेवाली अकेली रही थी। 'अिडियन ओपीनियन' सत्याग्रहकी लडाओीका अमूल्य मुखपत्र था। अुसके गुजराती विभागकी जिम्मेदारीके सिवा आश्रममे रहनेवाले छोटे-छोटे वच्चोकी देखरेख करनेवाले और कओी दृष्टियोसे विचार करके अनेक कामोकी निश्चित व्यवस्था करनेवाले सिर्फ श्री मगनलाल गाधी ही रह गये थे। 'अिडियन ओपीनियन' के अग्रेजी विभागकी जिम्मेदारीके सिवा लडाओीके रोजमर्राके सारे समाचार तार या पत्र द्वारा हिन्दुस्तानमे श्री गोखलेको भेजनेवाले और मारे आन्दोलनकी विगतवार सच्ची खवरे जुटाकर अुनका अुचित प्रकाशन करनेवाले श्री वेस्ट अकेले थे।

अिस तरह गिनतीके आदमी ही वाहर रहे थे। अुनमे भला क्या हो सकता था? फिर भी गाधीजीको पकडकर, श्री कैलनवैक और श्री पोलाकको पकड कर तथा सभी प्रसिद्ध और कसे हुअे योद्धाओको जेलखानेमें वन्द करके सरकारने आरामकी सास लेकर यह समझा होगा कि "अव शान्ति हो जायगी"। परन्तु राष्ट्रीय जागृति कभी अकेला आदमी भी कर सकता है? मनुष्योके — अुनके नेताओके पीछे कोओी अलौकिक पृष्ठवल होता है, जो विलक्षण काम करता है। गाधीजीको अैमी अेकान्त जेलमे वन्द

किया था कि अुनके विचारोकी छूत तक हिन्दुस्तानी जगतको न लगने पाये। परन्तु गाधीजीकी गिरफ्तारीके बादका सप्ताह तो सत्याग्रहकी ज्वालासे धधकता हुआ जान पडा। अमजिन्टो, स्टैनगर, वेटलम वगैरा परगनोमे न्यूकैसलके मजदूरोके यात्रीसघकी कथा विजलीकी तरह घर-घर पहुच गअी। जिन्होने कभी गाधीजीका नाम तक न सुना होगा, जिन्हे यह कल्पना भी नही होगी कि गाधीजी कौन है और कैसे है, अैसे हजारो अज्ञान और कुछ हद तक जगली वातावरणमे रगे हुअे गिरमिटिया मजदूरोके दिल अुछल पडे। "गाधी राजा जेलमे क्यो गये? अुनकी रानी जेलमे कैसे गअी? अुनके कुवर जेलमे किसलिअे गये? सरकारने अिस राजा जैसे आदमीको अुसके कुटुम्वके साथ कारावास क्यो दिया? हमारे लिअे! तीन पौण्डका कर अुठवानेके लिअे!" अैसी सीधी और सरल समझसे वे प्रेरित हुअे। अुन्हे कोअी दूसरा रास्ता दिखानेवाला नही था, कोअी समझानेवाला नही था, कोअी अुकसानेवाला नही था। अपने अपने कारखानेके लोगोने जमा होकर हडताल करनेका निश्चय किया। हडताले की गअी। अितना ही नही था, कुछ कारखानोमे से दो दो सौ हिन्दुस्तानी मजदूर हडताल करके परगनेकी अदालतके चौकमे जाकर वैठ जाते और पुलिस तथा मजिस्ट्रेटको पकडनेकी चुनौती देते "हमे सजा दो, हमे जेलमे भेजो। हमने गिरमिटका कानून तोडा है, हम गिरमिटिया मजदूर है, और हडताल करके अपने मालिकोकी अिजाजतके विना भाग आये है। अिसलिअे हम पर मुकदमा चलाकर हमे जेलमे भेजो।" अिस प्रकार वे निडर होकर वोलते रहते थे। पुलिसवाले कोडे लिये फिरते रहते, कुछको मारते, मगर वे अुठते ही नही थे। मजिस्ट्रेट कहता "तुमने कोअी गुनाह नही किया, तुम चले जाओ।" जवावमे वे कहते "हमारे गाधी राजा और अुनकी रानी तथा कुवरोने क्या अपराध किया था? हमे भी अुनके साथ जेलमे भेजो या अुन्हे छोडो।" अन्तमे मजिस्ट्रेट कहता "जाओ, तुम्हे अेक हफ्तेकी जेलकी सजा दी जाती है।" वह झुण्ड आग्रह करता "नही, तीन महीनेकी सजा दीजिये।" अन्तमे मजिस्ट्रेट हारकर अेक अेक मासकी सजाका हुक्म देकर सवके नाम वगैरा लिखकर पुलिसको सौप देता। पुलिस सवको जेलमे भेज देती और वे जेलके दरवाजेमे घुसते ही "गाधी राजाकी जय, वन्देमातकी जय" वोल कर सारी जेलको गुजा देते थे।

अिस प्रकार नेटालकी छोटी-वडी जेलें जयनादोसे गूजने लगी। दूसरी तरफ, गोरे लोगोके यहा, गोरे व्यापारियोके यहा या गोरोकी किसी भी सस्थामें नौकरी करनेवाले हिन्दुस्तानी अपना काम छोडने लगे। ये लोग तो अैसी हालतमे अपने पैरो पर खडे रह सकनेकी स्वतत्र स्थितिमे थे, पर गिरमिटिया हडताली क्या करे? डरवनके आसपासके पचास-साठ मीलके विस्तारमे हडताल फैल गअी। हर रोज हडतालके नये-नये समाचार आने लगे और अुसे चलानेके लिअे जिन लोगोसे जरा भी आशा नही रखी जा सकती थी अैसे अनेक लोग सेवकके रूपमे निकल आये। व्यापारी भी वैठे नही रहे। व्यापारियोने हडतालियोको भोजन देनेके लिअे काफी अनाज दिया। सेवक अनाजकी लारिया भर-भर कर सारे प्रदेशमे घूमे, किमीको भूखा न रहने दिया। हजारो मजदूर अैसा अनाज लेना ही नही चाहते थे। वे हडतालमे अन्त तक डटे रहनेका निश्चय कर चुके थे। सारे कारखाने खाली पड गये। खेतीके काम, शक्करके कारखानोके काम और दूमरे धधेवालोके सारे काम वन्द हो गये।

अिस प्रकार नायकके विना भी हिन्दुस्तानी लोग लडाअीमे सत्याग्रहके नियमोका कडाअीसे पालन करते रहे। डरवनमे हडताल शुरू हुअी। खानगी मकानोके दरवाजे-दरवाजे पर धरना दिया गया, परन्तु अुसमें विवेककी रक्षा की गयी। दवाखानोमे, वीमारोकी देखरेखमे और म्युनिसिपैलिटीके सफाअी-काममे जो हिन्दुस्तानी मजदूर या नौकर थे अुन्हे अपना काम छोडनेकी मनाही कर दी गअी। अिसका असर गोरोमे भी अच्छा हुआ। हमारी मर्यादा-पालनकी वृत्तिसे हमारा निश्चय-वल वढा। व्यवस्था अच्छी हुअी। अिस निरकुश हडतालमे भी नैतिक अनुशासन कायम रहा। सरकारसे यह सव कैसे सहन होता? अुसने यथासभव अपना जोर आजमा लिया। जुल्म भी खूब किये। हडताली दगा-फसाद करे, अैसे मौके भी पैदा किये। दगे होगे अिस आशासे दमनकी सारी सामग्री तैयार रखी गअी थी। हजारोका सफाया करके अुन्हे अिस तरह कुचल देनेकी सरकारने तैयारी की थी कि भविष्यमे हिन्दुस्तानी लोगोमे किसी भी तरहका आन्दोलन करनेकी शक्ति न रह जाय। परन्तु अुसके सारे मसूवे धूलमे मिल गये। अैसे समय भी पुलिसने अैसे प्रसग पैदा कर दिये, जिनमे हडतालियोके पत्थर मारने आदिका कारण वताकर गोली चलाअी गअी और अुन पर अमानुपिक अत्याचार किये गये। अिसमे कोअी चार गरीव मजदूरोकी हत्या हुअी। कुछ घायल हुअे। वेपटे,

व्यसनी, अज्ञान और चरित्रहीन माने जानेवाले अिन मजदूरो पर क्या क्या बीती, अिसका अेक प्रतिष्ठित सज्जनका आखो देखा और अुन्हीका किया हुआ वर्णन यहा लिख डालू, तो मै जो कहना चाहता हू वह स्पष्ट हो जायगा।

लडाअीका प्रताप यूनियन सरकारसे सहन नही हुआ। अुसने समझौता करनेके लिअे अेक कमीशन नियुक्त किया। सब नेताओको छोड दिया। सत्याग्रहियोको भी छोड दिया। अिसी बीच हिन्दुस्तानसे दीनबन्धु अेण्ड्रूज और अुनके मित्र मि० पियर्सन वहा पहुचे। अेण्ड्रूज तो गाधीजीके साथ प्रिटोरिया गये। मगर मि० पियर्सन फिनिक्स आश्रममे हमारे साथ रहे। फिनिक्ससे मील डेढ मील दूर जूलू युवक-युवतियोको आधुनिक प्रगतिशील युगके लिअे तैयार किया जाता था। खेती, बढअीगिरी, लुहारी, मोचीगिरी और साथ ही शिक्षाके अलग अलग विभागोका ज्ञान कराकर प्रत्येक युवक-युवतीको भावी जीवनके लिअे तैयार किया जाता था। अिस सस्थाके सस्थापक और व्यवस्थापक जेम्स डूवे और जॉन डूवे नामक ग्रेज्युअेटकी पदवीवाले दो सेवाभावी सज्जन थे। अमरीकाके हब्शी अिस सस्थाको अपनी सस्था मानकर खूब मदद करते थे। ये दोनो सज्जन दक्षिण अफ्रीकाके मूल निवासियोकी महासभाके भूतपूर्व अध्यक्ष भी है और अुसका सारा कारबार वे ही चलाते है। अिस सस्थाको 'नान्दा अिन्स्टिटयूशन' कहते थे। अिसके कार्यकर्ता फिनिक्स आश्रमके साथ अच्छा सम्बन्ध रखते थे। अमरीकाकी हब्शी महिला मिस ब्लैकबर्न छात्रालयकी सुपरिन्टेन्डेन्ट थी। वे फिनिक्स आश्रममे बार बार आती थी। वहासे दक्षिण अफ्रीकाके जूलू लोगोकी तरफसे अेक साप्ताहिक पत्र भी निकलता था। यह पत्र अग्रेजी लिपि और जूलू भाषामे छपता था। मि० पियर्सनने अिस सस्थाको देखनेकी अिच्छा प्रगट की। हम दोनो वहा अेक दिन गये। सारी सस्थाका कामकाज देखनेके बाद जूलू लोगोकी स्थितिके सम्बन्धमे जाननेके लिअे हम मि० जॉन डूवेके पास बैठे। सामाजिक और आर्थिक स्थितिके बारेमे बाते करते करते जूलू लोगोकी राजनीतिक स्थिति जाननेके लिअे मि० पियर्सनने पूछा "आपको सरकारकी तरफसे कोअी राजनीतिक अधिकार दिये गये है या नही?"

"कुछ नही। अिसमे तो हमारी हालत हिन्दुस्तानियोसे भी बुरी है। जहा समानताका नामोनिशान न हो वहा राजनीतिक समानताकी तो बात ही क्या की जाय?"

मि० पियर्सन भौंहे चढाकर वोले "यह तो वडा अन्याय है। आप अिस भूमिके असली मालिक हैं। अुसके अिंतजाममे आपको अुचित हिस्सा न मिले तो कहा जायगा कि आपके साथ वडा अन्याय होता है।"

मि० जॉन डूवेने जवावमे कहा "न्याय-अन्यायकी वात क्या करते है? यहाके गोरोको तो अिसीमे शका है कि हम लोग मानव-जातिके भी है या नही। वे तो हमे मनुष्य ही नही समझते।"

"तो आप गोरे लोगोकी अिस वृत्तिके विरुद्ध कोअी आन्दोलन नही करते? अिस तरह पोथी-पडित तैयार करके आप अपनी जातिका क्या भला करेंगे?" मि० पियर्सन जोशमें वोले।

"हम क्या हलचल या आन्दोलन करे?" मि० जॉन डूवेने निराशासे पूछा।

"मैं तो देख रहा हू कि यहाके अज्ञानी, असस्कारी गिरमिटिया मजदूरोको थोडे ही अर्सेमे गाधीजीने अेक खास वातावरणकी शिक्षा दे दी और अुन्हें अपने हकोके लिअे तथा अपने प्रति होनेवाले अन्यायका विरोध करनेके लिअे सत्याग्रहकी लडाअीमे शामिल कर दिया। जनसमूहको शिक्षा देनेका वह अच्छेसे अच्छा रास्ता है। आप भी अैसा आन्दोलन शुरू करें तो आपकी जाति तैयार हो जाय। आपको अपने जन्मसिद्ध अधिकारोके लिअे सरकारसे लडना चाहिये। सत्याग्रह और शान्तिके रास्ते लडकर हब्शी जनताको अिन गोरे लोगो और गोरी सरकारके सामने निडर वनाना चाहिये।"

मि० पियर्सन सच्चे और मानव-प्रेमसे पूर्ण हृदयकी अुमगसे ये वाक्य वोले कि तुरन्त मि० जॉन डूवे अिस तरहसे सीधे होकर वैठ गये मानो नीदसे जागे हो और वोले

"हा मि० पियर्सन, आपकी वात मैं समझता हू। मैंने अिस पर वहुत विचार किया है। गाधीजीके नेतृत्वमें हिन्दुस्तानियोने जो लडाअी लडी है, अुसका मैंने वहुत वारीकीसे अध्ययन किया है और मेरी आखोने अुस लडाअीके वहुतसे प्रसग देखे है। अुन्हे देखनेके वाद तो हिन्दुस्तानी मजदूरोको जगली समझ कर नफरतकी नजरसे देखनेके वजाय अव सारे हिन्दुस्तानियोके लिअे मेरे मनमें आदरभाव पैदा हो गया है। मि० पियर्सन, हिन्दुस्तानियो जैसा काम हमसे नही हो सकता। हममे वह दिव्य शक्ति नही है। अपनी आखोसे अुनका काम देख कर मैं तो आश्चर्यचकित हो गया हू। सत्याग्रहकी

लडाअी चल रही थी। तव अेक दिन मै डरवनसे आ रहा था। फिनिक्स स्टेशन पर अुतरा। यहा आते हुअे स्टेशनसे थोडी दूर पर रास्तेमे अेक मैदान पडता है। वहा लगभग पाच सौ हिन्दुस्तानी अिकट्ठे वैठे थे। वे अपने कारखानेमे हडताल करके वहा आये हुअे थे। गोरे मैनेजर, अुनके कर्मचारी और गोरी पुलिस अुनको चारो तरफसे घेरे हुअे थी। मै वहा आधे घटे तक यह देखनेके लिअे रुक गया कि देखे अव क्या होता है? वैठे हुअे हिन्दुस्तानियोकी पीठ पर सटासट कोडे पडने लगे। गोरे लाठियोसे अुन्हे मारते थे और कहते थे "अुठो काम करो, काम पर जाते हो कि नही?" परन्तु कोअी अुठता नही था। अुनका रोआ तक नही हिलता था। वे शान्तिसे जवाव देते थे "जव तक गाधी राजा जेलमे है, तव तक हम काम नही करेगे।" कोडो और लाठियोसे काम न चला तो वदूकोके कुन्दोका अुपयोग हुआ। पुरुपोके साथ स्त्रियो और वच्चोको भी गोरे मारने लगे। कुछ लोग रोते-चिल्लाते रहे, परन्तु वहासे हटे नही। अतमे घुडसवार आये और अुन पर घोडे दौडाये गये। "अुठो नही तो कुचल जाओगे।" वे चिल्लाये। घोडे कुछ आदमियोके पैरो और पीठ परसे गुजर गये। अुनकी चमडी अुतर गअी। घोडोके पैरोके घाव पड गये, परन्तु वे वहासे अुठे नही। अितनेमे पुलिस अेक हिन्दुस्तानी जमादारको वहा पकड लायी। वह अुन मजदूरोका नेता माना जाता था। अुसने हिम्मतसे जवाव देना शुरू किया। अुसके निडर जवावोके अिनाममे अुस पर जुल्म होने लगा। अुस पर होनेवाला जुल्म देखकर मै काप अुठा। अितनेमे अेक पुलिस अफसरने मेरी जातिके पुलिसवालेको हुक्म दिया "अिसे भालेसे छेद डाल। तू क्या देख रहा है? यह सब अिसी वदमाशकी कारस्तानी है।" अुस पुलिसने हुक्मकी फौरन तामील की और मजदूरोके अुस नेताको भालेसे छेद डाला। मजदूरोमे थोडी अुत्तेजना फैली तो अुसके वहाने गोली चलाकर अेक दोको और छेद डाला। वह नेता यमराजके दरवारमे पहुच गया। दूसरे घायल हुअे। परन्तु वे जहा वैठे थे वहासे जरा भी नही हिले। मै अुन गोरोकी क्रूरतासे कापता हुआ और हिन्दुस्तानियोकी अिस हिमालय जैसी दृढता पर आश्चर्य करता हुआ यहा आया। मि० पियर्सन, मै अपने लोगोको अिस भयकर रास्ते पर चलाअू, तो हमारा सर्वनाश हो जाय। हिन्दुस्तानी मजदूर कितने ही अपढ, अज्ञान, असस्कारी और जगली क्यो न हो, परन्तु हिन्दुस्तानियोकी प्राचीन सस्कृतिके प्रतापसे

अुस सस्कृतिसे रगा हुआ खून अुनकी रगोमे दौड रहा है। गाधीजी जैसे नेताके मिल जानेसे वह सस्कृति ताजी हो गअी। अुनकी मूल दैवी शक्ति प्रकट हो गअी और वे विलक्षण सहनशक्ति दिखला सके। अुनकी जगह हमारे हब्शी लोग हो तो अुनका तामसी स्वभाव किसीके भी हाथमे नही रह सकता। अपने बचावके खातिर भी वे सामना जरूर करेगे। और यहाके गोरोको तो अितना ही चाहिये। मेरा कोअी भाअी अुत्तेजित होकर किसी गोरेको मार दे तो हमारी शामत आअी समझिये! अेक ही क्षणमे मेरे हजारों भाअियोका शिकार हो जाय और हमारा सर्वनाश हो जाय। सत्याग्रहकी लडाअी लडनेका हमारा बूता नही है। अिसमे हिन्दुस्तानियोकी शक्ति ही टिक सकती है।"

मि० पियर्सन और मै मि० जॉन डूबेके अिस हृदयद्रावक वर्णनको सुनकर गद्गद हो गये। अीसामसीहके सच्चे अनुयायी मि० पियर्सन हिन्दुस्तानियोके लिअे आखे बन्द करके अीश्वरसे दुआ मागते हुअे अुठे। अिस प्रकार अुन दोनो सज्जनोसे मिलकर हम फिनिक्स आश्रमको लौटे आये।

११

हिन्दुस्तानकी मदद

पिछले प्रकरणमे जिस घटनाका वर्णन किया गया है वैसी कुछ घटनाअें नेटालमे भी हो गअी। फिनिक्स आश्रमकी भी कडी परीक्षा हो गअी। सारी लडाअीका केन्द्रस्थान फिनिक्स है, यह बात तो सभीको मालूम थी। और बहुतसे भडके हुअे गोरे जमीदारो और पुलिस कर्मचारियोकी वक्र-दृष्टि भी फिनिक्स पर ही थी। फिनिक्सके चारो ओर जमीदारोके अड्डे थे। आश्रममे बडी अुम्रके लोग बहुत नही थे। श्री मगनलाल गाधी और मिस वेस्ट दो ही थे। मिस वेस्टका पूरा नाम मिस आदादेवी वेस्ट था। ये बहन बहुत ही सरल, भली, ममतालु और सेवाभावी थी। आश्रममे छोटी अुम्रके बच्चोकी देखरेखका काम अुन्होने किया। खाना बनाना, परोसना, बरतन साफ करना वगैरा सारे काम वे ही करती थी। अिसके सिवा, विद्यार्थियोको अग्रेजीकी शिक्षा देना, प्रेसका काम करना, प्रेसका हिसाब रखना और खेतीका काम करना — अिस तरह मिस आदादेवी वेस्टने बहुत

वडी सेवा की। लडकोने भी आश्रममे रहकर लडाअीमे पूरा हिस्सा लिया। भयवाले वातावरणमे ढाअी मील दूर स्थित स्टेशन तक डाक ले जाना और वहासे लाना, अखवारकी प्रतिया नियमित रूपसे पहुचाना, सामान ले जाना व लाना, और आसपासके सैकडो हडताली मजदूरोके फिनिक्समे आकर रहनेके दिनोमे सवके लिअे खानेका अिन्तजाम करना, रहनेकी व्यवस्था करना, वगैरा वेहद मेहनतका काम अिन वहादुर वच्चोने निडरतासे किया। फिनिक्सकी सस्था भी अेक यात्राधामके समान हो गअी थी। सैकडो हडतालियोका वहा जमाव हो गया था। मि० वेस्ट सारे आन्दोलनका पूरा हाल लम्वे तारो द्वारा श्री गोखलेको हिन्दुस्तान भेजते थे, अिसलिअे सरकारको वे वहुत खटकते थे। यह सूचना शुरूसे ही कर दी गअी थी कि फिनिक्स सस्थामे जो लोग है वे जेल जानेकी अुम्मीदवारी हरगिज न करे। परन्तु जब वुलावा आ जाय तव कौन वीर अुसका अनादर कर सकता था?

अिस प्रकार जव नेटालमे चारो तरफ आग सुलग अुठी तव हिन्दुस्तानने भी कमाल किया। हिन्दुस्तानके विशाल क्षेत्रमे काम करनेवाले सभी दल — सामाजिक क्षेत्रके दल और राजनीतिक क्षेत्रके दल — दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोकी सत्याग्रहकी लडाअीमे अेक-दूसरेसे हाथ मिलाकर अपनी मदद देने लगे। रुपयेकी तो वर्षा ही होने लगी। श्री गोखलेने धनवानोसे रुपयेकी माग नही की, परन्तु जनतासे हृदयभेदी अपील की। और हिन्दुस्तानी जनताने अुसका कितना सुन्दर जवाव दिया! अुसमे मालदारोने दिया और गरीव वूढी विधवाओने भी दिया। पुरुषोने दिया और स्त्रियोने भी दिया। युवकोने दिया और युवतियोने भी दिया। वाल-छात्रालयोके वच्चोने मिठाअीका त्याग करके अुस पर खर्च होनेवाली रकम पाच हजार मील दूर दक्षिण अफ्रीकाकी जेलोमे दुःख भोगनेवाले और गोलियोके सामने छाती खोलकर खडे रहनेवाले अपने गरीव भाअियोकी लडाअीमे दी। गुरुकुल कागडी और शान्तिनिकेतनके सैकडो विद्यार्थियोने अिस लडाअीमे सहायता देनेके लिअे गावोसे चन्दा करनेको हाथोमे झोली धारण की। हिन्दुस्तानका अेक भी भाग अैसा नही होगा, जहा अिस सत्याग्रहकी लडाअीकी वात न पहुची हो। हिन्दुस्तानमे अेक भी सार्वजनिक सेवक अैसा नही होगा, जिसने दक्षिण अफ्रीकाकी सरकारके अिस जुल्मके वारेमे अपना विरोध प्रकट न किया हो। श्री गोखले तो रोगशय्या पर पडे होने पर भी अिसी कामके पीछे पागल

बन गये थे। अुन्होंने रात-दिन कुछ न देखा और दक्षिण अफ्रीकाका छोटेसे छोटा समाचार जानकर देशके कोने कोनेमे पहुचा दिया। अिसके सिवा, अुस समयके वाअिसरॉय लॉर्ड हार्डिजको भी गोखलेजी लडाअीके पूरे तथ्योसे परिचित रखते थे। देशके तमाम बडे गावो और शहरोमें सभाजे हुअी। सभाओमे सार्वजनिक फण्ड अिकट्ठा हुआ, दक्षिण अफ्रीकी सरकारके जुल्मोका सख्त विरोध हुआ। *लाहौरकी अेक विराट सभामे दीनबन्धु मी०* अेफ० अेण्ड्रूजने श्रोताओको दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोके दु खोका वर्णन करके करुणरसमे रुला दिया और अुनकी वीरताका वर्णन करके श्रोताओको अुत्साहित किया। अिसी सभामे दीनबन्धुने अपनी अुम्रभरकी बचतके दो हजार रुपये दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहके फण्डमे दे दिये। करोडोका स्वामी लाख रुपये दे, अुससे दीनबन्धुने लाखो गुना अधिक दे दिया। अपना सर्वस्व दे दिया। दीनबन्धुकी अैसी तीव्र सहानुभूति देखकर श्री गोखलेने मि० वेस्टकी गिरफ्तारीकी खबर मालूम होने पर अुनकी जगह काम करनेके लिअे दीनबन्धु अेण्ड्रूजको भेजनेका विचार किया। दीनबन्धु तैयार हो गये और अुनके साथ अुनके मित्र मि० पियर्सन भी तैयार हो गये। दोनो आदमी नेटालके लिअे रवाना हो गये। सारे देशमे वातावरण अितना गरम हो गया कि लॉर्ड हार्डिज चेते। अुन्होंने जनताकी तीव्र भावनाको पहचाना और जनताकी आवाजके साथ अपनी आवाज मिलाकर हिन्दुस्तानियोके प्रतिनिधिके रूपमे अपना फर्ज अदा किया। मद्रासके अपने स्मरणीय भाषणमे अुन्होंने दक्षिण अफ्रीकाकी सरकारकी कडी टीका की और बडी सरकारको चेतावनी दी कि १८५७ के बाद हिन्दुस्तानमे अैसा असतोष कभी भी सर्वव्यापी नही हुआ था, ब्रिटिश सरकारको बीचमे पडकर कोअी निर्णय जरूर करना चाहिये। औपनिवेशिक स्वराज्य भोगनेवाले अुपनिवेशोकी अितनी नग्न आलोचना और हस्तक्षेपके लिजे ब्रिटिश सरकारसे की गअी विनती अुसे जरूरतसे ज्यादा मालूम हुअी। परन्तु लॉर्ड हार्डिज अपनी बात पर डटे रहे और हिन्दुस्तानियोकी सत्याग्रहकी लडाअीको अुचित बताकर अुनकी बडी तारीफ करने लगे। अिस तरह सारे हिन्दुस्तानने दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोकी अिस लडाअीके प्रति सहानुभूति दिखाअी और अपूर्व अुत्साहसे अुसमें मदद दी।

१२

समझौतेकी राह पर

'हिम्मते मरदा मददे खुदा'—यह सूत्र जितना अिस लडाअीमे सच्चा साबित हुआ, अुतना और किसी मौके पर नही हुआ होगा। लडाअी शुरू करते समय जिन बलोका जरा भी खयाल नही था अैसे बल भी लडाअीकी मददमें दौड पडे। गाधीजी तो शुरूसे ही कहते थे कि हम खुद सच्चे होगे तो सारा ससार हमारी तरफ दौडता आयेगा। मि० पोलाक डेप्युटेशनके सदस्यके रूपमे हिन्दुस्तान आनेसे पहले कूचमे गाधीजीसे मिलने गये थे। और अुसी समय गाधीजीको सरकारने पकड लिया था। तब अेक ही क्षणमे हिन्दुस्तानका सफर रोक कर अपनी जगह लेनेकी सूचना देते हुअे गाधीजीने मि० पोलाकसे कहा था कि, "हमारा सच्चा डेप्युटेशन तो अब यही रहनेमे है। हम अपनी शक्ति बतायेगे तो डेप्युटेशनके बिना ही सारा हिन्दुस्तान हमारी सब बाते जान लेगा।" यह कहकर हिन्दुस्तानके लिअे रवाना होनेवाले मि० पोलाकको, जो पाच-सात मिनटके लिअे मिलने आये थे, अपनी जगह सौपकर गाधीजी पकडनेके लिअे आये हुअे अफसरके अधिकारमे चले गये। मि० पोलाकने वह जगह ले ली और बादमे सरकारने अुन्हे भी पकड लिया। हिन्दुस्तानकी जनताने जब यह जाना कि डेप्युटेशनमे आनेवाले मि० पोलाक जेलमे चले गये, तब अुनके हिन्दुस्तानमे अुपस्थित रहनेसे जो असर होता अुससे कही ज्यादा अच्छा असर अुस पर हुआ। अिस प्रकार गाधीजीने अिस लडाअीका आधार अुसके शोरगुलकी अपेक्षा जनताकी शक्ति पर ज्यादा रखा था। अिस शक्तिने हिन्दुस्तानमें खलबली मचा दी और अिग्लैण्डमे भी खलबली मचा दी। लॉर्ड अेम्पथीलने ब्रिटिश सरकार पर खूब दबाव डाला और अुस सरकारको भी आखिर बीचमें पडना पडा।

यूनियन सरकारकी तो साप-छछूदर-जैसी गति हो गअी। अुसे हिन्दुस्तानियोकी अैसी प्रचड शक्तिका खयाल ही नही था। अुसने सोचा था कि गाधी अपने कुछ साथियोको भडका कर लडाअी छेडेगा, परन्तु सबको जेलमे बन्द करके हम अिस लडाअीको दबा देगे और शान्त कर देगे। परन्तु

दो ही मासमे अुसे वस्तुस्थितिका पता लग गया। हिन्दुस्तानियोको कुचल कर किसी भी तरह दक्षिण अफ्रीकासे निकाल देनेके लिअे नये-नये कानून बना कर जनरल स्मट्सने वहाके गोरोको बहुत भडकाया था। ट्रान्सवालका खूनी कानून और नया अिमिग्रेशन-कानून वगैरा पार्लियामेण्टमें पेश करते हुअे सन् १९०७ से १९०९ तक जनरल स्मट्सने जो जो अुद्गार प्रकट किये थे, अुन परसे हम समझ सकेंगे कि जनरल स्मट्सने गोरोको अुभाडकर यह मुसीबत खडी की थी। परन्तु अब तो हालत अुलटी हो गअी। हिन्दुस्तानी सत्या-ग्रहियोका यह प्रचड बल यूनियन सरकारसे हजम नही हो सकता था। हजारो आदमियोको जेलमे बन्द रखनेकी अुसकी शक्ति नही थी। और नि शस्त्र सत्याग्रही लोगो पर अुसने जो जुल्म गुजारे अुससे दुनियाके सभ्य देशोमें अुसकी निन्दा होने लगी। अितना ही नही, खुद दक्षिण अफ्रीकामें भी समझ-दार गोरे सरकारकी अिस जालिम नीतिको धिक्कारने लगे। अिससे जनरल स्मट्स और अुनके साथी अब घबरा गये थे। अुन्हें भी अिसका कुछ न कुछ निपटारा करना ही था। परन्तु कैसे किया जाय? अेकदम सरकार झुकती है तो अिज्जत जाती है और वहाके गोरे अुसे भला-बुरा कहते है। अुसे तो दोनो तरफकी बात रखनी थी। अिसलिअे लोकमतसे डर कर चलनेवाली सरकार जिस ढगसे अैसे झगडोका निपटारा करती है वही ढग यूनियन सरकारने अख्तियार किया।

यूनियन सरकार जानती तो थी ही कि हिन्दुस्तानी क्या मागते है, क्योकि अुसके पास खुली मागे मौजूद थी। वह यह भी जानती थी कि अिस लडाअीमें हिन्दुस्तानियो पर क्या क्या जुल्म हुअे है, क्योकि वे सब अुसकी मजूरीसे ही हुअे थे। फिर भी अुसने अिन सब बातोकी जाच करके अुनका निप-टारा किस तरह किया जाय, अिसकी रिपोर्ट देनेके लिअे अेक कमीशन नियुक्त किया। कमीशनके अध्यक्ष सर विलियम सॉलोमन नामक अेक प्रति-ष्ठित सज्जन थे। अिससे कमीशन सॉलोमन कमीशन कहलाया। अुसके दो और सदस्योमें मि० अेसलीन और मि० वायली नामक दो नेटाली सज्जन थे। यह कमीशन नियुक्त करके अुसकी सूचना ब्रिटिश सरकारको दे दी गअी। भारत-सरकारने अिस मौके पर यह आग्रह किया कि अिस कमीशनमें सारे प्रश्नका फैसला अुचित रूपमें हो और हिन्दुस्तानियोके हितोकी रक्षा हो, अिसके लिअे भारत-सरकारकी तरफसे भी कोअी समझदार प्रतिनिधि रहना

चाहिये। ब्रिटिश सरकारकी मजूरीसे वाअिसरॉयने अुस समयके सयुक्त प्रान्तके लेफ० गवर्नर सर वेन्जामिन रॉवर्टसनको भारत-सरकारके प्रतिनिधिके रूपमे भेजा।

कमीशनको तो वैसा ही काम करना था जैसी यूनियन सरकारकी तरफसे प्रेरणा मिले। अिसलिअे पहले तो अुसने यह सिफारिश की कि हिन्दुस्तानियोकी मागोकी जाच करनेका जो काम कमीशनको सौपा गया है वह हिन्दुस्तानी नेता जब तक जेलोमे होगे तव तक नही हो सकेगा, अिसलिअे कमीशनके कामकी सरलताके लिअे सर्वश्री गाधी, पोलाक और कैलनबैकको छोड दिया जाय। सरकारने अिस सिफारिश पर तुरन्त अमल किया। गाधीजीको ब्लोमफोन्टीनसे प्रिटोरिया लाकर वताया गया कि आप रिहा कर दिये गये है। गाधीजी जोहानिसवर्ग पहुचे कि मि० पोलाक और मि० कैलनवैक भी अुन्हे मिल गये। तीनो नेटाल पहुचे। ये तीनो नेता १९ दिसम्बरकी शामको डरवन स्टेशन पर अुतरे। सारे नेटालमें वडा अुत्साह फैल गया। घर घर रोशनी की गअी और आनन्दोत्सव मनाया गया। गाधीजी डरवन पहुचे तव तक अुन्होने अपनी कोअी राय जाहिर नही की। वहा पहुचनेके बाद जो कार्यकर्ता वाहर थे अुनसे वे मिले, परिस्थिति पर विचार किया और अव क्या किया जाय अिसका निर्णय किया। वात यह थी कि नेताओको छोडनेसे पहले या वादमे सरकारने अुनके साथ कोअी वातचीत नही की और न नेताओको अुसने यही वताया कि सरकार क्या करना चाहती है। तब अिसे समझौता कैसे कहा जाय?

सरकारने घोषणा की कि हिन्दुस्तानियोके प्रश्नकी जाच करके अुनकी शिकायतोका निपटारा करनेके खातिर अुचित सूचनाअे देनेके लिअे कमीशन नियुक्त किया गया है। परन्तु अुसमे हिन्दुस्तानियोका क्या हाथ होगा? कमीशनमे हिन्दुस्तानियोका अेक भी प्रतिनिधि-सदस्य नही था। कमीशन नियुक्त करनेमे हिन्दुस्तानियोकी सलाह नही ली गअी थी। सबसे वडी कठिनाअी तो यह थी कि कमीशनमे जो दो सदस्य मि० अेसलीन और मि० वायली नियुक्त किये गये थे, अुन दोनोके पिछले कार्यो पर हिन्दुस्तानियोके हित-विरोधी होनेका कलक लगा हुआ था और अुन्हे सब कोअी जानता था। अिसलिअे पहले तो सब नेताओने निश्चय किया कि अैसा कमीशन स्वीकार करनेमे हिन्दुस्तानियोका अपमान है, अत अुसे अस्वीकार करके अुसका वहिष्कार किया जाय।

अैसा निर्णय करनेका और भी अेक कारण था। हिन्दुस्तानियोकी सत्याग्रहकी लडाअीसे पहले दक्षिण अफ्रीकामे मजदूर-दलका वडा फसाद हुआ था। अुसमे वहुतसे आदमी मारे गये थे। लोगोके जान-माल भी खतरेमें पड गये थे। आम जनताका और सरकारका वहुत नुकसान हुआ था। सरकारको फौजी कानून घोषित करना पडा था। अिस फसादके वाद अुसकी जाच करके फैसला देनेके लिअे जो कमीशन सरकारने नियुक्त किया था, अुसमे दोनो पक्षोसे पूछकर दोनो तरफके प्रतिनिधि नियुक्त किये गये थे और वादमें मामलेकी जाच हुअी थी। हिन्दुस्तानियोका सवाल भी अैसा ही था। लेकिन दोनोमे वहुत वडा फर्क था। और वह यह था

(१) हिन्दुस्तानियोको गोरे मजदूरोकी तरह राज्यक्रान्ति नही करनी थी। अुन्हे तो हिन्दुस्तानियोके प्रति जो अन्यायपूर्ण व्यवहार किया जाता था और अन्याय तथा रगभेदवाले जो कानून वनाये जाते थे अुन्हीको हटवाना था।

(२) हिन्दुस्तानियोने जान-मालको कोअी हानि नही पहुचाअी थी।

(३) अुलटे, हिन्दुस्तानियोने जेल भुगत कर, मार-पीट सहकर और अपने जान-मालका खतरा अुठा कर भी अहिंसक व्यवहार किया था और शान्ति कायम रखी थी।

अिसलिअे सीधा न्याय प्राप्त करनेकी हिन्दुस्तानी अधिक पात्रता रखते थे। फिर भी जैसी स्वाभिमानपूर्ण सधिवार्ता करके गोरे मजदूरोके प्रश्नकी जाचके लिअे कमीशन नियुक्त किया गया था, वैसी सधिवार्ता हिन्दुस्तानियोके प्रश्नके लिअे सरकारने नही की। वल्कि कमीशनमे जो सदस्य नियुक्त किये गये वे भी विरोधी मनोवृत्तिवाले ही नियुक्त किये गये। हिन्दुस्तानियोके प्रति यह खुला अन्याय था और अुनका खुला अपमान था। अिस आशासे कि भविष्यमें यह कमीशन किसी न किसी तरहका लाभ पहुचायेगा, अुसे स्वीकार कर लेना अपमानजनक समझौता होगा और अिसमे स्वाभिमानकी हत्या होगी — अिस वातको पूरी तरह समझकर हिन्दुस्तानियोके नेताओने कमीशनका वहिष्कार करनेकी प्रतिज्ञा लेनेका निश्चय किया।

हमने गाधीजीकी आज तककी देशसेवा या जनसेवाकी सभी प्रवृत्तियोमें देखा है कि आत्मशुद्धिका हेतु अुनमे मुख्य होता है। गाधीजीको छोडनेसे पहले नेटालमें सरकारने हिन्दुस्तानी मजदूरो पर जो जुल्म ढाया और जिसके

परिणामस्वरूप कोओी चार हत्याये हुओी और कुछ लोग घायल हुओे, अुसके बारेमे सारा हाल जानकर गाधीजीको गहरा दुख हुआ। अुनके हृदयमे जो वेदना हुओी अुसका वर्णन अुनके हृदयसे बाहर होनेके कारण मै भला कैसे कर सकता हू ? परन्तु अुस वेदनाके कारण कमीशनके साधारण बहिष्कारके साथ अुन्होने दो व्यक्तिगत प्रतिज्ञाओे ली

(१) जिस तीन पौण्डके अत्याचारपूर्ण करको अुठवानेकी लडाओीमे चार भाअियोने अपना बलिदान दिया है, वह कर जब तक न अुठे तब तक मै अेक बार ही भोजन करूगा और वह भी सिर्फ फल ही खाअूगा।

(२) जब तक यह कर अुठ न जाय तब तक मरे हुओे चारो मद्रासी भाअियोके शोकमें मद्रासी रिवाजके मुताबिक मै शोककी पोशाक पहनूगा। यानी कोट-पतलून छोडकर पाच हाथकी लुगी और मोटे कपडोका घुटनो तकका कुर्ता ही पहनूगा तथा सिरके बाल और मूछे मुडवाअूगा।

ये दो व्रत भी गाधीजीने साथियोसे पूछकर अुनकी सम्मतिसे लिये। २० दिसम्बरकी रातको डरबनमे हिन्दुस्तानियोकी अेक विराट सभा हुओी। वहा गाधीजी अूपरकी विचित्र लगनेवाली पोशाकमे अुपस्थित हुओे और अुन्होने अपने पुण्यप्रकोपकी जो ज्वाला सभामे प्रकट की अुससे हजारो श्रोतागण स्तब्ध हो गये। अुनके जीवनमे अिस पुण्यप्रकोपके प्रतापसे अनोखी शक्ति पैदा हुओी। और जब गाधीजीने कमीशनके बहिष्कारका प्रस्ताव पेश करके अुसके कारण समझाये, तव अेक भी वेसुरी आवाजके विना हिन्दुस्तानियोने अेकमतसे अुस प्रस्तावका स्वागत किया।

अिस प्रस्तावसे हिन्दुस्तानियोने यह घोपित किया कि यूनियन सरकारने जो कमीशन नियुक्त किया है वह अेकतरफा है। अुसमे हिन्दुस्तानियोकी राय नही ली गओी है। अितना ही नही, बल्कि हिन्दुस्तानियोके हितकी दृष्टिसे देखनेवाले सदस्योकी नियुक्ति भी नही की गओी है। अिसलिअे अिस कमीशनमे जब तक हिन्दुस्तानियोके प्रतिनिधि या हिन्दुस्तानियोके प्रति हमदर्दी रखनेवाले सिनेटर डब्ल्यू० पी० श्राअिनर और सर जेम्स रोजअिन्स जैसे सज्जनोको नियुक्त न किया जाय, तब तक अिस कमीशनका बहिष्कार किया जायगा।

अुन्होने यह भी निश्चय किया कि सरकारकी तरफसे हिन्दुस्तानियोकी मागोका आशाजनक अुत्तर अिसी महीनेमे न मिल जाय, तो १ जनवरी १९१४ के दिन डरबनसे ट्रान्सवाल तककी अेक बडी कूच शुरू की जाय और

अुसमें यथासंभव अधिकसे अधिक हिन्दुस्तानियोंको शामिल होनेका निमंत्रण दिया जाय।

ये दो प्रस्ताव अुस रातको पास हुअे, अिसलिअे दक्षिण अफ्रीकाके अंग्रेजी अखबारोंने अैसा शोर मचाया, मानो अेक नया धड़ाका हुआ हो। हिन्दुस्तानके राजनीतिक हलकोंमें और अिंग्लैण्डमें भी अैसा ही असर हुआ। अिन दोनों प्रस्तावोंके बारेमें कैसा अूहापोह मचा, यह हम आगे देखेंगे। अभी तो मैं अिस प्रस्तावके बादके दो दिनोंमें हुअी अेक अपूर्व घटनाकी तरफ मुड़ूंगा।

१३

प्रेम और शौर्यकी प्रतिमा

ता० २२–१२–'१३ के दिन पहले दलको जेलमें गये तीन मास पूरे हुअे। श्रीमती कस्तूरबा वगैरा बहनें मेरित्सबर्गकी सेन्ट्रल जेलमें थीं। गांधीजी डरबनसे मेरित्सबर्ग जाकर सब बहनोंका स्वागत करनेके लिअे जेलके दरवाजे पर खड़े थे। साथमें मि० कैलनबैक भी थे। अस्थि-पंजर पर मढ़े हुअे चमड़ेमें प्रबल आत्माको लेकर माता कस्तूरबा दूसरी बहनोंके साथ ता० २२–१२–'१३ के रोज सुबह जेलके बाहर निकलीं। अुन्हें लेकर गांधीजी डरबन पहुंचे। अुसी दिन दूसरे भाअी भी डरबन जेलसे छूटे।

शामके पांच बजे होंगे। डरबनमें रुस्तमजी सेठका मकान लोगोंसे खचाखच भरा था। आगे दफ्तरके भागके नीचे पीछेकी ओर खुला चौक था। वहां हड़तालमें बलिदान होनेवालोंके आप्तजनों और घायलोंकी अेक बड़ी भीड़ बैठी थी। अुन सबको आज मिलनेके लिअे ही बुलवाया गया था। सभी गांधीजीके दर्शनोंकी अभिलाषाके साथ मृत आत्माओंके शोकपूर्ण स्मरणमें बैठे थे। मैं गांधीजीके पास ही बैठा था। थोड़े समय बाद गांधीजी अुठे। मि० लेजरस नामके अेक मद्रासी भाअीको अपना दुभाषिया बनाकर अुन्होंने साथ लिया। मैं भी पीछे पीछे गया।

'गांधी राजा'को आते देखकर विलाप करते हुअे सब खड़े हो गये। अेक बहन, जिसका निर्दोष पति जालिम सरकारकी पुलिसकी गोलीसे मारा गया था, अेकदम आगे बढ़ आअी, 'गांधी राजा'के चरणोंमें लेट गअी और अपने विलापाश्रुओंसे 'गांधी राजा'के चरणोंको भिगोने लगी।

वस अितना काफी था ! अुस समय मैंने क्या देखा ? कोअी अनोखी वात देखी। भगवान वुद्ध या ओीमाके जीवनमे जो पढा और सुना था, परन्तु देखा नही था, वही दृश्य वहा देखा। सैकडो वर्षोकी गुलामी, परतत्रता और भूखके दु खोसे पीडित, मारकाट और लूटसे दीन वनी हुअी, चिथडोके भीतर करुण दशामे खडी अेक अश्रुपूर्ण स्त्रीकी मूर्तिके सामने अुसके कधो पर अपने दोनो हाथ रखकर अुसका अुद्धार करनेवाला कोअी अलौकिक पुरुप मैंने वहा खडा देखा। दु खी, दीन, युगोसे लुटी हुअी और अनेक प्रहारोसे जर्जरित भारतमाताकी अश्रुपूर्ण आखोकी ओर वह पुरुप टकटकी लगाकर देखता ही रहा। वातावरण विलकुल शान्त था। अपूर्व पवित्रता, गभीरता, दु ख और प्रचड पुण्यप्रकोप अुस वातावरणमे भरा था। प्रेम और शौर्यकी अुस प्रतिमाने भारतमाताके सारे दु खोका दर्शन अुम मूर्तिमे किया। आखोमे आसुओके मोती चमक अुठे। अन्तमे मृदु स्वरसे वह पुरुप वोला "वहन, रो मत। तुझे विधवा वनानेवाला मैं हू। अपना सिर मैं तेरी गोदमे रखता हू। मुझे तू माफ कर। तेरा पति अमर हो गया है। वह देशकी सेवामे जालिमोके हाथो मारा गया है। फिर भी वह अमर है। वहन, शान्त रह। रो नही। अिस दु खका अन्त क्या अिस तरह होगा ? मेरी हजारो वहने, लडकिया और मेरी अपनी पत्नी भी जव तेरी तरह प्यारी मातृभूमिके अिस सेवायज्ञमे विधवा होगी, तभी अिस दु खका अन्त होगा।" अितना कहकर वह पुरुप शान्त हो गया। अुसने अुस माताके आसू करुणार्द्र होकर पोछे, अुस माताको नमस्कार किया और वहासे हटकर दूसरोकी तरफ गया।

मै तो स्तव्ध होकर खडा ही रहा। दूसरी तरफ घूमकर मैंने अपनी आखोके आसू पोछ डाले। मैंने अिस वातका अितमीनान किया कि मै जाग रहा हू या सपना देख रहा हू।

अुस वहनको आश्वासन मिला और वह शान्त हुअी। मै भी अिस घटनाको याद करता हुआ अुस पुरुषके पीछे पीछे घूमा।

अिस पवित्र प्रसगके दूसरे ही दिन दीनवन्धु अेण्ड्रूज और भाअी पियर्सन डरवनके वन्दरगाह पर अुतरनेवाले थे। गाधीजी और दूसरे सव लोग रातको फिनिक्स जाते थे और सुवह डरवन वापस आते थे। दीनवन्धु और पियर्सन हिन्दुस्तानसे रवाना हुअे तव तो अिस जानकारीके साथ जहाजमे वैठे थे कि गाधीजी वगैरा सव जेलमे है। पन्द्रह दिनके सफरके दरमियान

दक्षिण अफ्रीकामे क्या क्या हुआ, जिसका अुन्हे कुछ भी पता नही था। न कमीशनका पता था, न नेताओको छोडनेका पता था। अुनके खयालसे पहली कठिनाओ तो यह थी कि डरबन जाकर किससे मिलेंगे और गाधीजी या पोलाकसे जेलमें किस तरह मिलेंगे। स्टीमर डरबन पाअिण्टमे पहुचा। गाधीजी, मि० पोलाक, मि० कैलनबैक और कुछ प्रमुख व्यापारी पाअिण्ट पर खडे थे। वहाके दो अग्रेजी अखबारोके प्रतिनिधि भी मौजूद थे। दीनबन्धु और भाओी पियर्सन जहाजसे नीचे अुतरे। हिन्दुस्तानियोकी भीडमे अुन्होने मि० पोलाकको देखा। मि० पोलाकके सिवा और किसीको अुन्होने पहले देखा नही था। परन्तु मि० पोलाक अुनसे मिले अिसके पहले गाधीजी अुनसे अस्पष्ट रूपसे मिले। गाधीजीका फकीरी भेस देखकर अुन्होने समझा कि हिन्दुस्तानी लोग साधुओ या फकीरोको हर शुभ कार्यमे आगे रखते है, अिसी तरह आज भी किसी फकीरको आगे रखा है। दूसरे नम्बर पर मि० पोलाक थे। दीनबन्धु मि० पोलाकसे मिले और बहुत ही आतुरताके साथ बोल अुठे

"मुझे जरा भी अुम्मीद नही थी कि मै आपको यहा देख सकूगा। अब तो मेरी सारी चिन्ता दूर हो गओी। अब मुझे बताअिये कि गाधीजी किस जेलमे है? मै अुनसे कब मिल सकूगा और किस तरह मिल सकूगा? मुझे पहले अुन्हीसे मिलना है।"

दीनबन्धुकी बात सुनकर मि० पोलाक कुछ हसे और बोले

"गाधीजीसे तो आप सबसे पहले मिल लिये! वे रहे गाधीजी। वे भी छूट गये है।"

दीनबन्धु अेण्ड्रूजको आश्चर्य हुआ। अुस त्यागमूर्ति जैसे पुरुष पर अुन्होने नजर डाली। आश्चर्यचकित दृष्टिसे और पूज्य भावसे अुन्होने गाधीजीके सिरसे पैर तक नजर घुमाओी। दो कदम पीछे हटकर, नमस्कार करके, गाधीजीकी चरणरज अुन्होने अपनी आखो पर रखी। भाओी पियर्सनने भी नम्रता और स्नेहपूर्ण हृदयसे गाधीजीको और अन्य सबको हाथ जोडकर प्रणाम किया। मानो बहुत दिनोके बिछुडे हुअे आत्मीय जनोका आज फिर मिलाप हुआ हो, अैसे आनन्द और आत्मीय भावमे सब डेरे पर आये। रातको हम सब फिनिक्स गये।

दूसरे दिन वहाके अग्रेजी अखबारोमें दीनबन्धु और भाओी पियर्सनने बन्दरगाह पर गाधीजीको जिस तरह प्रणाम किया अुसके विरुद्ध सख्त

आलोचना हुअी । "मि० गाधी कैसे ही सन्त या महान हो, फिर भी वे हिन्दुस्तानी है। दक्षिण अफ्रीकाकी भूमि पर अुतर कर रेवरेण्ड अेण्ड्रूज जैसे अग्रेज सज्जन अैसा व्यवहार करे तो अिससे गोरोकी अिज्जतको नुकसान पहुचता है । रेवरेण्ड अेण्ड्रूजको जानना चाहिये कि यह हिन्दुस्तान नही, परन्तु दक्षिण अफ्रीका है।" दीनवन्धुने अिसका करारा जवाव देकर अुनके मुह वन्द कर दिये।

१४

कमीशनका वहिष्कार क्यो ?

दीनवन्धु अेन्ड्रूज आये और अुसी रात फिनिक्समे देर तक जागकर अुन्होने गाधीजीसे सारा हाल जान लिया। पहले तो कमीशनके वहिष्कारकी वात अुन्हे अच्छी नही लगी। अिस लडाअीके लिअे हिन्दुस्तानमे श्री गोखलेने जो कुछ किया और वाअिसरॉयकी भी लडाअीके प्रति सहानुभूति प्राप्त की तथा वाअिसरॉयने भी जिस अच्छे भावसे वडी सरकार पर दवाव डाला, अुस सवके परिणामस्वरूप यूनियन सरकारने जो कुछ करनेका विचार किया हो अुसे वह कमीशनके जरिये कराये तो अुसमे क्या वुराअी है? अैसे कमीशनका हिन्दुस्तानी लोग वहिष्कार करे, तो अुसका असर भारत-सरकार पर, वडी सरकार पर और हिन्दुस्तानके राजनीतिक क्षेत्रोमें कितना वुरा होगा, यह विचार दीनवन्धुके मनमे घुटने लगा। परन्तु जव गाधीजीने सत्याग्रहकी रीति-नीति, हिन्दुस्तानियो द्वारा की गअी प्रतिज्ञाओके विस्तृत कारण और कमीशनको मान लेनेमे हिन्दुस्तानियोके भयकर अपमानकी वात विस्तारसे वतायी, तो दोनो मित्रोको यकीन हो गया कि हिन्दुस्तानियोका वहिष्कारका कदम सत्य और सिद्धान्तके अनुसार है। जव यह विश्वास हो गया तो दोनो मित्रोने कमीशनके वहिष्कारमे पूरी सम्मति दी। अितना ही नही, ओसाअी नववर्षके मगल-दिवस पर गाधीजी जो कूच आरभ करनेवाले थे, अुसमे शामिल होनेकी अपनी तैयारी भी वताअी।

परन्तु कमीशनके वहिष्कारकी वातने सभी जगह वडी गलतफहमी पैदा कर दी। दक्षिण अफ्रीकाके अखवार तो यही कहने लगे कि हिन्दुस्तानी

लोग अुद्धतता और मूर्खता कर रहे है। हिन्दुस्तानके अखवार कहने लगे, "गाधीने कमीशनका वहिष्कार घोषित करनेमे जल्दवाजी की है। अिसमें अुनका हठीलापन हे। सत्याग्रहीका अैसा कदम भले ही अुचित माना जाता हो, परन्तु राजनीतिक सूझ-वूझवाला पुरुष अैसा पागलपन नही करेगा।" वम्वअीके शेर सर फीरोजशाह मेहता तो नाक-भौह सिकोड कर कहने लगे "यह तो गाधीका हठ और अविचारीपन माना जायगा।"

अिस तरह सारे हिन्दुस्तानका वातावरण डावाडोल हो गया। अिग्लैडमे भी लॉर्ड अेम्पथीलकी कमेटी नाराज हुअी। अुन्होने गाधीजीको तार दिया "हिन्दुस्तानियोको कमीशनकी वात स्वीकार कर लेना चाहिये। अुनके अिस निश्चयके लिअे हमे वडा अफसोस है।" गाधीजीने अिस तारका अुतनी ही दृढतासे जवाव दिया "हिन्दुस्तानी लोग कौमके स्वाभिमानकी रक्षाके लिअे दृढ है। कमीशनको स्वीकार कर लेनेमे हिन्दुस्तानका अपमान है। आपकी सलाहके लिअे हम आपका आभार मानते है। परन्तु हमे अफसोस हे कि हम आपकी सलाहको मान नही सकते।" अिस तरह पत्र, तार और अखवारोंमे आलोचनाअे आती रहती और अुन्हे पढकर अुन पर चर्चाये होती रहती। शामका समय अिन चर्चाओमे ही जाता। अितनेमे हिन्दुस्तानसे श्री गोखलेका तार आया। तारका भावार्थ यह था कि "कमीशनको न मानकर नव-वर्षके दिनसे दूसरी कूच शुरु करनेके समाचारोसे मुझे वडा दुख हुआ। आपके अिस निश्चयसे मेरी और वाअिसरॉय लॉर्ड हार्डिजकी स्थिति वडी विषम हो गअी हे। यह विश्वास रखकर कि यूनियन सरकार आपके प्रश्नोका निपटारा जरूर करेगी कमीशनको स्वीकार कर लीजिये। अुसके सामने जरूरी सवूत दीजिये और कूच वन्द रखिये।"

अैसा स्पष्ट तार, अुसमे गोखलेजीकी हार्दिक प्रार्थना, अिस प्रश्नके साथ अुनकी तीव्र सहानुभूति आदि वातोको सोच कर सभीका दिल धडकने लगा। गोखलेजीकी सलाह न मानी गअी तो अुन्हे कितना वुरा लगेगा और अुनकी तवीयत पर अिसका कितना वुरा असर होगा ? परन्तु गाधीजी जैसे कुसुमकी भाति कोमल थे वैसे ही वज्रकी भाति कठोर भी थे। वे तो दृढ ही रहे। रातकी चर्चाके समय अुनसे पूछा गया कि

"श्री गोखले वाअिसरॉयके आश्वासन पर यकीन दिलाते है कि कमीशनको स्वीकार करके कूच वन्द रखनेसे कमीशन अच्छी सिफारिशे

ही करेगा और सरकार अुन्हे मजूर करके हमारे प्रश्नका फैसला करेगी, तो फिर श्री गोखलेके आश्वासन पर विश्वास रख कर अुनकी सलाह माननेमें क्या हर्ज है?"

गाधीजीने अटल रहकर जवाब दिया "सम्राट् महोदय खुद आकर मुझे आश्वासन दे कि यह कमीशन स्वीकार करनेसे तुम्हे हिन्दुस्तानका स्वराज्य दे दूगा, तो भी मै कहूगा कि अैसा निकम्मा और अपमानभरा स्वराज्य मुझे नही चाहिये। हिन्दुस्तानको अपमानित करके नीचा मुह रखकर मैं स्वराज्य लू तो वह स्वराज्य कैसा होगा? और कितने दिन तक टिकेगा? हिन्दुस्तानका स्वाभिमान पहले। अैसा होगा तो हिन्दुस्तानका स्वराज्य स्वाभिमानके पीछे पीछे अपने-आप चला आयेगा।"

हम तो सब चुप रहे। अिन वचनोके सामने क्या कहा जा सकता था? गाधीजीने तुरत ही श्री गोखलेके तारके जवाबमे अेक लम्बा तार अिस तरह भेजा

"आपके दु खको मै समझ सकता हू। बडीसे बडी बातको छोडकर आपकी सलाहका आदर करनेकी मेरी अिच्छा रहती है। लॉर्ड हार्डिजने जो सहायता दी है वह अमूल्य है। मै यह भी चाहता हू कि वह सहायता आखिर तक मिलती रहे। परन्तु मै चाहता हू कि आप हमारी स्थितिको समझे। अिसमे हजारो आदमियोकी प्रतिज्ञाका सवाल है। प्रतिज्ञा शुद्ध है। सारी लडाअीकी रचना अिस प्रतिज्ञा पर हुअी है। अगर प्रतिज्ञाका बन्धन न होता तो हममें से बहुतसे लोग आज तक गिर गये होते। हजारोकी प्रतिज्ञा पर अेक बार पानी फिर जाय तो फिर नीति-बधन जैसी कोअी चीज ही नही रहती। प्रतिज्ञा लेते समय लोगोने पूरा विचार कर लिया था। अुसमे किसी प्रकारकी अनीति तो है ही नही। बहिष्कारकी प्रतिज्ञा लेनेका कौमको अधिकार है। मै चाहता हू कि आप भी अैसी सलाह दे कि अिस प्रकारकी प्रतिज्ञा किसी भी व्यक्तिके लिअे न टूटे और हर तरहका खतरा अुठाकर भी अुसका पालन होना चाहिये। यह तार लॉर्ड हार्डिजको बता दीजिये। मै चाहता हू कि आपकी स्थिति विषम न हो। हमने लडाअी अीश्वरको साक्षी रखकर, अुसीकी सहायता पर आधार रखकर आरभ की है। अिसमें बुजुर्गोकी और बडे आदमियोकी मदद हम मागते है और चाहते है। वह मिले तो हमें खुशी होती है। परन्तु मदद मिले या न मिले, मेरी नम्र राय यह है कि

प्रतिज्ञाका बन्धन हरगिज न टूटना चाहिये। अुसके पालनमें मैं आपका समर्थन और आशीर्वाद चाहता हू।"

अिस तरह गाधीजी पर बडे दबाव पडे, परन्तु वे हिन्दुस्तानके स्वाभिमान और ली हुअी प्रतिज्ञाके नाम पर दृढ रहे। श्री गोखलेको और वाअिसरॉयको यह पसन्द नही आया। फिर भी अुनमें से किसीने अपनी हमदर्दी वापस नही ली। दूसरी तरफ जनरल स्मट्स भी मजबूत रहे, परन्तु अुनकी मनोदशामें बडा फर्क पड गया। जो जनरल स्मट्स अेक महीने पहले गाधीजीके साथ बात भी नही करना चाहते थे, वे अब किसी तरह हिन्दुस्तानियोंके सवालका सच्चे दिलसे निपटारा करना चाहते थे। अिसलिअे जब गाधीजीने जनरलको लिखकर यह बताया कि वे कमीशनको स्वीकार न करनेकी सलाह कौमको क्यो दे रहे है, तब अुन्होंने भी साफ दिलसे अपने कारण बता दिये कि वे कमीशनमें परिवर्तन क्यो नही कर सकते। गाधीजीने नीचेका प्रथम पत्र लिखा था

"हम कमीशनका स्वागत करते है। परन्तु अुसमे दो सदस्य जिस ढगसे नियुक्त किये गये है अुसके विरुद्ध हमें सख्त अेतराज है। अुनके व्यक्तित्वके प्रति हमारा कोअी विरोध नही है। वे प्रसिद्ध और समझदार नागरिक है। परन्तु अुन दोनोने बहुत बार हिन्दुस्तानियोंके प्रति अपनी अरुचि प्रगट की है। अिसलिअे अनजानमे भी अुनसे हमारे साथ अन्याय हो सकता है। मनुष्य अपना स्वभाव अेकाअेक नही बदल सकता। ये दो सज्जन अपना स्वभाव बदल डालेंगे, यह मानना कुदरतके कानूनके खिलाफ है। फिर भी हम यह नही चाहते कि अुन्हे हटा दिया जाय। हमारी तो अितनी ही सूचना है कि अुसमे कोअी तटस्थ पुरुष और बढा लिये जाय और अिसी हेतुसे हम सर जेम्स रोजअिन्स और माननीय डब्ल्यू० पी० श्राअिनरके नाम सुझाते है। ये दोनो प्रख्यात व्यक्ति है और अपनी न्यायवृत्तिके लिअे मशहूर है। हमारी दूसरी प्रार्थना यह है कि तमाम सत्याग्रही कैदियोंको छोड दिया जाय। अगर अैसा न हुआ तो हमारे लिअे जेलसे बाहर रहना मुश्किल हो जायगा। अब अुनको जेलमें रखनेका कोअी कारण नही रह जाता। और अगर हम कमीशनके सामने सबूत दे तो हमें खानोंमें जहा-जहा गिरमिटिये काम करते है वहा जानेकी छूट होनी चाहिये। अगर हमारी प्रार्थना स्वीकार न हो, तो हमें अफसोसके साथ फिर जेलमें जानेके अुपाय ढूढने पडेंगे।"

गाधीजीके अिस पत्रके जवाबमे जनरल स्मट्सने कमीशनमे किसी भी तरहका फेरबदल करनेसे साफ अिनकार कर दिया। फिर भी अुन्होने अेक दलील बहुत ही अुचित दी कि, "कमीशन किसीके पक्षके सतोषके लिअे नही है। वह सरकारके सतोषके लिअे है। जैसे हिन्दुस्तानियोकी सम्मति नही ली गअी, वैसे ही जमीदारो या गोरोकी अन्य किसी सस्थाकी सम्मति भी नही ली गअी। फिर भी कमीशनको निष्पक्ष और अदालती बनाया गया है।" गाधीजीने जनरल स्मट्सके जवाबकी अिस दलीलको पकड लिया। अिस मुद्देमे गाधीजीने देखा कि हिन्दुस्तानी प्रजा अपनी प्रतिज्ञा पर कायम रहकर भी समझौता कर सकती है। अिसलिअे अुन्होने जनरल स्मट्ससे मुलाकात की।

अैसा करके गाधीजीने समझौता भी किया और कमीशनका बहिष्कार करनेकी हिन्दुस्तानियोकी प्रतिज्ञाका पालन भी हुआ।

अिस लडाअीका समझौता होनेके बाद गाधीजीने अपनी विचारधारासे अेक नअी खोज की। की हुअी प्रतिज्ञा पर दृढ रहनेसे अुसके कितने मीठे परिणाम आये, अिस बारेमे अुन्होने 'अिडियन ओपीनियन' मे अेक लेख लिखा था। अुसका सार यह था

हिन्दुस्तानी प्रजाने कमीशनको स्वीकार किया होता तो क्या होता? हिन्दुस्तानी अपनी सारी शक्ति कमीशनके सामने अपने लाभके सबूत पेश करनेमे लगाते। हम पर कितने कितने जुल्म हुअे, तीन पौडका कर कितना अनुचित है, हिन्दुस्तानियोका कितना अपमान किया जाता है, वगैरा कअी बाते साबित करनेकी हम कोशिश करते। गोरी प्रजा, जमीदार और व्यापारी अिससे अुलटी बात साबित करनेका प्रयत्न करते। जो जुल्म हुअे अुन्हे बतानेमे भी किसी हद तक अतिशयोक्ति हो सकती थी। हमारी जरा भी अतिशयोक्ति होती, तो वे अुस सारी बातको गलत ठहरानेकी कोशिश करते। अैसा करनेमे स्पर्धा होती। अेक-दूसरेके खिलाफ कीचड अुछाला जाता। अेक-दूसरेको झूठा साबित करनेकी कोशिश की जाती। अग्रेजी अखबार जमीदारो और व्यापारियोकी मालिकीके ठहरे, अिसलिअे वे तो अुन्हीका पक्ष लेते, और अभी जो थोडा-बहुत पक्ष वे हमारा लेते है, अुसके बजाय वे भी हम पर धूल अुडाने लगते। अिस प्रकार दोनोके हृदयकी बुरी वृत्तिया जाग्रत होती और स्पर्धामे अेक-दूसरेके प्रति शिष्टाचारका पालन करना भी हम भूल जाते। अैसी हालतमे प्रमाण देते देते छह महीने तो जाचमें ही पूरे हो जाते। शायद

अिससे भी ज्यादा समय लग जाता। कमीशनकी रिपोर्ट तैयार होनेमे भी वहुत देर लग जाती। नतीजा यह होता कि कमीशनकी रिपोर्ट अिसी मौसमकी पार्लियामेण्टमे तो हरगिज नही पेश हो पाती। अत दूसरे वर्षके लिअे अुसकी मियाद वढ जाती। ये सारे परिणाम स्वाभाविक रूपमें किसी व्यक्तिके हेतुके विना भी आ सकते थे।

परन्तु कमीशनका वहिष्कार करके हिन्दुस्तानियोने अपनी धर्म-प्रतिज्ञाका पालन किया, यह अमूल्य परिणाम तो अुसका हे ही। दीर्घ दृष्टिसे विचार करने पर हम देख सकेंगे कि कमीशनके वहिष्कारका अर्थ यह हे कि अुसके सामने जो कोअी सवूत दे अुसका विरोध न किया जाय और न अुसका समर्थन ही किया जाय। अैसा करनेसे विरोधी पक्षके सामने खीचतान करके अपने पक्षको हमसे अधिक सवल वनानेकी आकाक्षा रखनेका कारण नही रहा। अुनके लिअे हजारो झूठी वाते खडी करके हमारी शिकायतोको झूठी ठहरानेका कारण भी नही रहा। अिसलिअे अखवार वगैरा जिन अनावश्यक साधनोकी मदद लेनेकी अुन्हे आवश्यकता नही पडी, अुनकी सहायता भी अुन्होने नही ली। अिससे व्यर्थकी स्पर्धा पैदा नही हुअी। अितना ही नहीं, अखवारोकी सहानुभूति हमारे प्रति वैसी ही वनी रही। न तो हमने अुनकी निन्दा की और न अुन्होने हमारी निन्दा की। और पिछली लडाअीके समय हमारे स्वार्थ-त्याग और सहनशीलताके कारण सहानुभूतिशील गोरोके दिलमें हिन्दुस्तानियोके लिअे जो हमदर्दी पैदा हुअी थी वह कायम रही। जिस कमीशनका काम छह महीनेमे भी पूरा न होता अुसका काम अेक पक्षकी साक्षी लेकर पन्द्रह दिनमे ही पूरा हो गया। और अुसकी रिपोर्ट भी जल्दी ही पूरी हो गअी। सव मामला ताजा होनेके कारण रिपोर्ट भी अच्छी वनी। वह रिपोर्ट अिसी मौसमकी पार्लियामेण्टमें पेश हुअी और अुसके अनुसार जहा जरूरत हुअी वहा हिन्दुस्तानियोकी मागोको सतुष्ट करनेके खातिर आवश्यक फेरवदल करके पार्लियामेण्टने कानून वनाये। और समझौता भी जल्दी हो गया। अिस प्रकार अपनी धर्म-प्रतिज्ञाका पालन करनेसे हमारे धर्म और कर्म दोनो सुधरे।

अिसे क्या कहा जाये ? अिसे राजनीतिक कुशलताकी पराकाष्ठा कहा जाय या नही ?

१५
सुलहके दूत

जनरल स्मट्सकी धारणा थी कि लडाअीको लंबे अर्से तक चलाने देकर सत्याग्रहियोको दवा दिया जाय। सत्याग्रहकी लडाअीमे हार तो हो ही नही सकती। जीत अुसमे निश्चित है। परन्तु अुसमे समयका प्रश्न रहता है। समयका प्रश्न सत्याग्रहियोके जोर पर निर्भर है। सत्याग्रहकी लडाअीमे ज्यादा आदमी शामिल हो तो अुसका परिणाम जल्दी आता है और थोडे आदमी हो तो अुसमे देर लगती है। अिसी तरह हमने देखा कि दक्षिण अफ्रीकामे हिन्दुस्तानियोने अैसी शक्ति वताअी कि तीन ही मासमे सरकारको झुकनेके सिवा कोअी चारा नही रहा। अिसलिअे अिस आखिरी समझौतेकी वृत्ति जनरल स्मट्सके दिलमे पैदा करनेवाली प्रथम वस्तु तो हमारी शक्ति ही कही जायगी। जब हमने पर्याप्त शक्तिका अुपयोग किया और अुचित पुरुषार्थ किया, तब हमारी मदद पर दूसरी शक्तिया भी आ गअी। ये शक्तिया कौन कौनसी थी, अिसे अब हम देखे।

हिन्दुस्तानका लोकमत हमारा सहायक बना यह हमने देख लिया। अुस लोकमतको तैयार करनेवाले श्री गोखले अिस लोकमतके जनक माने जायेगे।

हिन्दुस्तानके लोकमतके जोरके कारण माननीय वाअिसरॉय लॉर्ड हार्डिजको भी हमारी मदद पर आना पडा। लोकमतने अुनके हृदयमें बसी हुअी न्यायवृत्तिको जाग्रत किया।

हिन्दुस्तानके लोकमतकी शक्ति और लॉर्ड हार्डिजकी दृढताके कारण ब्रिटिश सरकारको भी हमारी सहायतामे आना पडा। अिन तीनो बलोका हाल हम पहले जान चुके है। अिसके सिवा, कअी व्यक्तियोने सुलहके दूतके रूपमे जो सुदर काम करके दिखाया, अुसीको बताना अिस प्रकरणका हेतु है।

पहले तो आते है दीनबधु अेण्ड्रूज और भाअी पियर्सन। अुन्होने दक्षिण अफ्रीकामे जो काम किया, वह हृदयकी अुमगसे और भ्रातृभावसे किया। अुन्होने आज तक हिन्दुस्तानियोके बीच रहकर हिन्दुस्तानमे और अुसके बाहर हिन्दुस्तानियोके हितेच्छुओके रूपमें नही, बल्कि हिन्दुस्तानियोके रूपमें

ही काम किया है। दक्षिण अफ्रीकामें समझौता सरल और अच्छा हो, अिस-लिअे अुन्होने जी-तोड मेहनत की। अुन्होने गाधीजीका रास्ता पकड लिया। गाधीजीका दृष्टिविन्दु समझने और वादमे गोरे नेताओ, मत्रियो और अखवारोके प्रतिनिधियोसे मुलाकात करने, अुनके विचार जानने और अिन सवके साथ गाधीजीके दृष्टिकोणका मेल वैठानेके लिअे अुन्होने अथक प्रयत्न किया। जव प्रारभिक समझौतेकी वातचीत शुरु हुअी, तव अेक घटना हो गअी। सव मत्रियो और गाधीजीके साथ समझौतेकी शर्ते तय हुअी। वातचीतके अनुसार समझौतेकी शर्तोके विषयमे अेक-दूसरेको लिखे गये पत्रोके मसौदे मजूर हुअे। अिन पत्रोको वाकायदा लिखकर और अुन पर हस्ताक्षर करके अेक-दूसरेके पास पहुचाना वाकी था। अितनेमे फिनिक्ससे गाधीजीके नाम प्रिटोरियाके पते पर तार गया कि "कस्तूरवा वहुत वीमार है और खतरनाक हालतमें है। अिसलिअे जल्दी आअिये।" गाधीजीने तार पढा और मि० अेण्ड्रूजको वताया। मि० अेण्ड्रूजने कहा "हमे अिसी वक्त चलनेके लिअे तैयार हो जाना चाहिये।"

गाधीजी "समझौतेके पत्रोका क्या होगा?"

मि० अेण्ड्रूज "वे डाकके जरिये भेज दिये जायेंगे और प्राप्त किये जायेंगे।"

गाधीजी "अैसा कैसे हो सकता है? कौमका समझौता होता हो, और यह निश्चित हो कि चौवीस घटोमें पत्रोका आदान-प्रदान हो जायगा, तव किसी भी कारणसे यहासे जाकर समझौतेको कअी दिन तक आगे वढानेके खतरेमे हिन्दुस्तानी कौमको डालनेका मुझे क्या अधिकार है?"

मि० अेण्ड्रूज "लेकिन तारमे यह लिखा है कि मिसेज गाधीकी भयकर स्थिति है। जानेमे दो दिन देर करनेसे कुछ भी परिणाम आ सकता है।"

गाधीजी "मेरे अपने कर्तव्यको छोडकर अेक दिन जल्दी चले जानेसे वह वच ही जायगी, अिसका भी क्या भरोसा है?"

मि० अेण्ड्रूज "तव क्या करे?"

गाधीजी "यह काम पूरा करके ही यहासे हटना चाहिये, और कुछ हो ही नही सकता।"

मि० अेण्ड्रूज चुप रहे, वडे चिन्तित हो गये। तुरत ही वहासे अुठे। टेली-फोन अुठाया। जनरल स्मट्सको वुलाकर वात की "यहा हम पर

अेक धर्म-सकट आ पडा है। फिनिक्ससे तार आया है कि श्रीमती गाधी भयकर रोगमे फस गअी है। और मि० गाधीको तुरत ही बुलाया है।"

जनरल स्मट्सने जवावमे कहा "मि० गाधी खुशीसे जा सकते है। हमारा समझौता अब निश्चित है।"

मि० अेण्ड्रूज "आप मि० गाधीको तो जानते ही है। अुनका यह कहना है कि चाहे फिनिक्स जानेमे चौबीस घटेकी देर हो, परन्तु कौमका काम छोडकर मै किसी हालतमे नही जा सकता। अिसलिअे आप मेरी अेक विनती सुनेगे?"

जनरल "हा, जरूर आप कहे वैसा करनेको मै तैयार हू।"

मि० अेण्ड्रूज "शाम तो होनेवाली है, फिर भी मि० गाधीकी तरफका पत्र तैयार करके अुस पर अुनके हस्ताक्षर करवाकर मै आपके पास आता हू। आप अपना पत्र तैयार करवाकर और अुस पर हस्ताक्षर करके मुझे दे देगे?"

जनरल "देर तो बहुत हो जायगी। मुझे और भी दूसरे जरूरी काम है। फिर भी आप मि० गाधीका पत्र ले आअिये। मै अपना पत्र यथासभव जल्दी ही तैयार करके दे दूगा।"

शाम हो गअी थी। मि० अेण्ड्रूजने तुरत हिन्दुस्तानियोकी तरफसे शर्तनामा तैयार कराया, अुस पर गाधीजीके हस्ताक्षर कराये और स्वय दूत बनकर गये। रात हो जाने पर भी जनरल स्मट्स आफिसमे ही थे। अुन्हे बहुत रुकना पडा। अुन्होने गाधीजीका पत्र पढा और निर्णयके अनुसार सरकारकी तरफसे स्वय पत्र लिखकर और अुस पर हस्ताक्षर करके मि० अेण्ड्रूजको दे दिया। मि० अेण्ड्रूजने जनरल साहबका बडा आभार माना और पत्र लेकर रातके दस बजे वापस डेरे पर आये। गाधीजी और अेण्ड्रूज तुरत रातकी गाडीसे फिनिक्सके लिअे रवाना हुअे।

कस्तूरबाकी हालत बडी गभीर थी। गाधीजी अैन वक्त पर आ पहुचे। अैसे समय भी अुन्होने डॉक्टरको नही बुलाया। खुद ही अुनकी बीमारीका अिलाज किया और कस्तूरबा खतरेसे पार हो गअी।

दीनबन्धु अेण्ड्रूजने अिस तरह भ्रातृभावमे ही काम किया। अुन्होने दक्षिण अफ्रीका जाकर वहाके वातावरणमे बडा सुन्दर परिवर्तन कर दिया। अिसमें भी केपटाअुनके गोरे श्रोताओकी अेक विराट सभामे, जिसमें दक्षिण अफ्रीकाके गवर्नर जनरल लॉर्ड ग्लेडस्टन दीनबन्धुका भाषण सुनने गये थे,

दीनवन्धुने कमाल कर दिया। हिन्दुस्तानियो, हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तानकी सस्कृतिके वारेमे अुन्होने अैसा भावपूर्ण प्रवचन दिया कि अुसे सुनकर वहुतोकी आखोमे आसू वहने लगे। अिस तरह अनेक सेवायें करके दीनवन्धु और भाअी पियर्सन वहासे सीधे अिंग्लैण्ड चले गये।

अिन दोनो साधु पुरुषोके अलावा हिन्दुस्तानमे गये हुअे भारत-सरकारके प्रतिनिधि सर वेंजामिन रॉवर्ट्सनने भी समझौतेके लिअे अच्छा काम किया। अुसके लिअे अेक अलग प्रकरण देनेकी मै आशा रखता हू, अिसलिअे यहा अिस सम्वन्धमे नही लिखता।

अूपर लिखे व्यक्तियोके सिवा कुछ अज्ञात व्यक्तियोने जो काम किया है, अुसके वारेमे दुनिया कुछ नही जानती। गाधीजीने अुनके विषयमें काफी लिखा मालूम नहीं होता। अुन व्यक्तियोके वारेमें मै जो कुछ जानता हू अुसे यहा वता दू तो अुपयोगी होगा। ये दो छिपे व्यक्ति है मिस हॉवहाअुस और मिस माल्टीनो नामक दो सहेलिया। अुनके वारेमें मै अगले प्रकरणमें लिखूगा।

१६

सेवाभावी सखियां

श्रीमती कस्तूरवाके जेलसे छूटनेके वाद अेक महिला फिनिक्समें आअी। लगभग सत्तर वर्षकी अुम्र होने पर भी अुनके शरीरमें जवानीका जोश भरा था। शरीरसे खूव हृष्टपुष्ट और अूची-पूरी थी, चलनेमें अैसी तेज मानो धनुषसे तीर छूटा हो, हास्य तो अुनके मुह पर सदा ही वना रहता था, हृदय प्रफुल्लित और अत्यन्त स्नेहशील था। सत्तर वर्षकी वूढी होने पर भी वे अच्छे अच्छे नौजवानोको शर्मानेवाली तन और मनकी स्फूर्तिसे भरपूर थी।

अुन्होंने कस्तूरवाको पहचाना। हमारे रोजमर्राके कामोमें वे घुलमिल गअी। वादमें जेलकी वातें की। वडे नम्र और स्नेहपूर्ण प्रश्न करके कस्तूरवासे जेलका हालचाल पूछने लगी। खाने-पीनेकी तकलीफ, अुसके लिअे किये गये अुपवास, और जेलके सख्त काम वगैराकी वातें कस्तूरवाने टूटी-फूटी अग्रेजीमें सुनाअी। मानो सव कुछ समझ गअी हो, अिस तरह अुन महिलाने अेक दीर्घ

निश्वास लिया और बोल अुठी "गजब हो गया! यह भारी निर्दयता कही जायगी। यह सरकारको क्या सूझा? अिस महिलाको जेलमे डालनेकी बात अुसे कैसे सूझी? अिसने क्या अपराध किया था? यह अपराध करे, अैसी कोअी चीज ही अिसमे नही है। अिसके चेहरे पर तो बिलकुल निर्दोपता ही झलक रही है। निर्दोष पवित्र देवी जैसी यह कस्तूरबा जनरल स्मट्सका क्या अपराध कर सकती थी? देखो न, अिसके शरीरमे भी क्या रह गया है? निरी अस्थि-पजर, खूनकी अेक बूद भी कही नजर आती है? अरेरे, जनरल स्मट्सको यह क्या सूझा? मिसेज गाधी, मै तो दूर केपटाअुनसे खास आप ही को देखने आअी हू। मै जनरल बोथासे सब हाल कहूगी और अुनकी तो अच्छी तरह खबर लूगी। अगर वे अैसी पवित्र निर्दोप देवियोको जेलमे डालेगे तो राज्य कैसे चला सकेगे?"

वह महिला अिस तरह बोलती ही रही और कस्तूरबाकी तरफ देख देखकर पूछती रही "मिसेज गाधी, मुझे सच कहिये, आपको जेलमे सरकारने बहुत सताया? आपका शरीर कितना दुबला हो गया है! बिलकुल पीला मालूम होता है।"

अुनका नाम था मिस माल्टीनो। अुनका माल्टीनो कुटुम्ब दक्षिण अफ्रीकामें मशहूर था। अुनके भाअीका नाम मि० जेम्स माल्टीनो था, जो दक्षिण अफ्रीकाकी पार्लियामेण्टके अध्यक्ष थे। अिस सत्तर वर्पकी युवा कुमारीने सारी जिन्दगी समाजकी सेवामे ही बिताअी है। या यो कहिये कि समाज-सेवाके साथ ही अुसने विवाह किया है। दक्षिण अफ्रीकामे नि शस्त्र सत्याग्रहकी लडाअी हुअी और अुसके सामने अतमे यूनियन सरकारको भी झुकना पडा। अिसका असर दूर दूर तक हुआ। बहुतोको यह लडाअी बडे चमत्कारके समान लगी। मिस माल्टीनो और अुनकी सहेली मिस हॉबहाअुसको भी अैसा ही लगा। मिस हॉबहाअुसने अपनी सहेली मिस माल्टीनोको जाच करके सच बात मालूम करनेके लिअे फिनिक्स भेजा था। मिस हॉबहाअुस अेक अग्रेज महिला है। अुनका नाम दक्षिण अफ्रीकाके बोअर लोगोमें घर घर प्रसिद्ध है। बोअर लोग, छोटे-बडे सभी, अिस महिलाको बडी बहनके नामसे सम्बोधन करते है। अग्रेजो और बोअर लोगोमे तो जैसे जन्मसे ही वैरभाव था। अैसा बेसुरा सम्बन्ध होने पर भी यह अग्रेज महिला बोअर स्त्री-पुरुपो, बालको, बूढो और युवक-युवतियो सबकी बडी बहन कैसे बन गअी, अिसका अेक अितिहास है।

सन् १९०२ मे दक्षिण अफ्रीकामें बोअर-युद्ध हुआ। लॉर्ड किचनर अुस समय सेनाके सेनापति थे। अुनकी अधीनतामें अंग्रेज सेनाने दक्षिण अफ्रीकामें अनेक निन्द्य अत्याचार किये थे। अन्याय, अत्याचार और दुराचार — किसी भी अुपायसे ट्रान्सवालके बहादुर और वीर मुट्ठीभर बोअर लोगोको कुचल देना ही अंग्रेजोका सकल्प था। अिसलिअे बोअर-युद्ध शुरू करनेमें अंग्रेज राजनीतिज्ञोने धर्म-अधर्म या नीति-अनीतिको नही देखा। अिसी तरह लडाअी छिटनेके बाद अंग्रेज सेनाने भी अत्याचार और निर्दय राक्षसी कृत्य करनेमें कोअी कसर नही रखी। बोअर लोगोने अपने स्त्री-बच्चोको अेक जगह जमा करके और अलग निवासस्थान बनाकर अिसलिअे वहा रख दिया था कि वे सही-सलामत रहे और अुन्हें लडाअीके कष्ट न अुठाने पडे। बोअर योद्धा देशके अलग अलग भागोमें बहादुरीसे लडनेमें मशगूल थे। अंग्रेज सेनाने अिसका लाभ अुठाया। अुसने बोअर स्त्री-बच्चोके रहनेकी जगह पर हमला करके अुनके कैम्पको आग लगा दी। अंग्रेज सेनाके जगली पशुओ जैसे सैनिकोने अनेक स्त्रियो पर अत्याचार करके अुनकी लाज लूटी। और अनेक बालको तथा कैम्पकी रक्षाके लिअे रखे हुअे गिनतीके वीर बोअर योद्धाओ पर अंग्रेज सेनाके डाकू टूट पडे और अुन्हे कत्ल कर डाला। जब तक मानव-जाति जीवित रहेगी तब तक यह निन्द्य कार्य अंग्रेज जातिके अितिहासमें अुनका काला कलक बनकर रहेगा।

यह सचाअी धीरे धीरे प्रकाशमे आअी। तार या अखबारोके जरिये तो अैसे समाचार अधिकारी लोग अिंग्लैण्डमें जाने नही देते थे। परन्तु पत्रव्यवहारके जरिये और धर्म तथा नीतिके प्रेमी मनुष्योके मार्फत ये समाचार अिंग्लैण्ड पहुचे। अुनकी चर्चा होने लगी। न्यायप्रिय और सहृदय अंग्रेजोने अपने भाअियोके अिस निन्द्य व्यवहारका विरोध किया। अुस समय अेक अंग्रेज युवा कुमारीका हृदय अुबल अुठा। पुण्यप्रकोपसे अुसके हृदयमे आग लग गअी। अुसने खुद दक्षिण अफ्रीकामे जाकर अैसे निर्दोष बच्चो और स्त्रियोकी हत्याके बारेमे जाच करके अुनकी सेवामें ही सारा जीवन बितानेका निश्चय किया। अुसने अिंग्लैण्डमें भी अिन निन्द्य अत्याचारोका खूब प्रचार किया। जब वह दक्षिण अफ्रीकाके जहाजसे डरबन बन्दरगाह पर अुतरी, अुस समय दक्षिण अफ्रीकाके अंग्रेजोका मिजाज हाथमे नही रहा। अपने देशकी अेक पवित्र, दयाकी मूर्ति जैसी सेवाभावी कुमारीको दक्षिण अफ्रीकाके अंग्रेजोने दुतकारा, गालिया दी

और देशद्रोही वताया, कुछने अुस पर सडे हुअे अडे फेककर हमला किया। फिर भी अिन सव अपमानो, तकलीफो और खतरोकी परवाह न करके वह कुमारी ट्रान्सवालमे आअी। अुसने सारी हालत चल रही लडाअीके भयानक वातावरणमे भी खुद देखी, और जहा वोअर स्त्रियो और वच्चोका कैम्प था, वहा जाकर अुनकी देखरेख और सेवाका काम अपने हाथमे लिया। अिसी वीर और न्यायप्रिय दयालु अग्रेज कुमारीका नाम मिस हॉवहाअुस था। वहा अिस महिलाकी मदद करनेवाली दूसरी सेवाभावी वहने भी मिल गअी और अुन्होने वोअर-युद्धके वीचमे पशुवृत्तिवाली अग्रेज सेनाके खतरेसे सैकडो वोअर स्त्री-वच्चोकी रक्षा की। जो काम सैकडो शस्त्रधारी योद्धा नही कर सकते, वह काम अिस वीर युवतीने अपने नैतिक वलसे कर दिखाया।

अुसके वादसे मिस हॉवहाअुस वोअर जातिकी जीवन-मित्र वन गअी। अुन्होने अुसीके वीच जीवन विताया। और शुद्धहृदय वहादुर वोअर जातिने अुन्हे अपनी 'वडी वहन' का प्यारभरा नाम दिया। वोअर जाति जनरल वोथाको 'वडा भाअी' मानती थी और अिस अग्रेज रमणीको 'वडी वहन' समझती थी।

मिस माल्टीनो फिनिक्स आअी, सारा हाल जानकर केपटाअुन गअी और मिस हॉवहाअुसको सव वाते सुनायी। अुन दयालु और नीतिप्रिय वहनका हृदय जल अुठा। अुन्होने खानगी तौर पर जनरल स्मट्स और जनरल वोथासे हिन्दुस्तानियोके प्रश्नका निपटारा करनेका आग्रह किया और खुद आश्वासन प्राप्त करके १ जनवरी, १९१४ के दिन हिन्दुस्तानियोकी घोषणानुसार वडी कूच शुरू होनेसे पहले गाधीजीको नीचेके आशयका तार दिया

"मेरे जैसी अेक अवलाकी प्रार्थना पर अपनी कूच पन्द्रह दिनके लिअे मुलतवी रखिये।" वगैरा

जनरल स्मट्सके पत्रमे वताअी हुअी समझौतेकी कुछ आशाके साथ अिस तारसे भी गाधीजीके दिल पर वहुत अच्छा असर हुआ। गाधीजीका मिस हॉवहाअुसके साथ कोअी परिचय नही था, परन्तु वे अिस महिलाकी अच्छी प्रतिष्ठाके वारेमें कुछ जानते थे। अैसी निर्मल, न्यायनिष्ठ, नीतिप्रिय, सहृदय और वीर रमणीकी मागका अनादर करना गाधीजीको पसन्द नही आया। अुन्होने तुरन्त सवके साथ सलाह-मशविरा करके जाहिर कर दिया कि "कूच १५ जनवरी तक मुलतवी रखी जाती है।"

अिसके बाद ही गाधीजीने जनरल स्मट्ससे मुलाकात की। जनरल स्मट्स गाधीजीको देखकर खूब हसे। अुनके विचित्र दिखावे, विचित्र वेश, और हाथमें बासकी पतली और अूची लकडीको देखकर लगता था मानो वे कोअी फकीर हो। जनरल स्मट्सने अपने आठ सालके विरोधीको अैसे वेशमे आज ही देखा और वे बोल अुठे

"यह खूब रहा। अब मुझे मालूम हुआ कि अिन तीन महीनोमे अितनी भारी गडबड किस तरह हुअी। अिस लकडीमे ही कोअी जादू है। अिसीने यह सारा चमत्कार किया है। मुझे आपका यह लिबास और यह स्वाग अच्छा नही लगता।"

गाधीजीने भी मुक्तहास्य करके कहा "यह स्वाग जिस घडी आप चाहे अुसी घडी मै अुतार सकता हू। अिसे अुतरवाना आपके हाथकी बात है।"

जनरल स्मट्स गाधीजीसे अिस तरह बातें करने लगे, जैसे अपने किसी मित्रसे मिले हो।

अुस मौके पर जनरल स्मट्स गाधीजीके साथ शुद्ध भावसे बोले थे। अिस बारेमे गाधीजीने अेक सार्वजनिक सभामे कहा था

"The words that General Smuts so often emphasized still ring in my ears He had said, 'Gandhi, this time we want no mental or other reservation, but all the cards be on the table, and I want you to tell me wherever you think that a particular passage or word does not read in accordance with your own reading' And it was so"

"अुस समय जनरल स्मट्सने बार बार जो स्पष्टता की अुनकी गूज अभी तक मेरे कानोमें बनी हुअी है। जनरल स्मट्सने कहा था कि, 'गाधी, अिस बार हमें जरा भी अस्पष्टता नही चाहिये। मनका भेद या और कोअी चालाकी नही चाहिये। खेलके सारे पत्ते हम मेज पर खोलकर रख दे। मै चाहता हू कि हमारे समझौतेकी किसी कलम या शब्दका अर्थ आपको अपनी समझके अनुसार स्पष्टता करता हुआ न दीखे तो आप मुझे जरूर कहें।' और अन्तमें हमारा समझौता अैसा ही स्पष्ट और शुद्ध साबित हुआ।"

गाधीजी अुस समयकी जनरल स्मट्सकी यह मार्मिक वाणी समझ गये थे और अुन्होने हसकर कहा था कि, "आप कोअी भेद या चालाकी रखेंगे

तो भी अुससे मुझे या मेरी कौमको कोअी नुकसान नही होगा। आज तक मुझे लाभ हुआ है और आपकी भेदनीति या चालाकीसे अुलटे मेरी कौमको ज्यादा लाभ होगा।"

फिर दोनो विरोधियोने बातचीत करके प्रश्नका निपटारा कर डाला। क्या निपटारा किया, यह हम अगले प्रकरणमे देखेगे।

१७

प्रारंभिक समझौता

प्रारम्भिक समझौता होनेसे पहले गाधीजी और जनरल स्मट्सकी मुलाकाते कअी बार हुअी थी और अुन्होने काफी बातचीत की थी। अिसमे सर बेंजामिन रॉबर्ट्सनने भी मदद दी थी। अन्तमे समझौतेके चिह्नस्वरूप अेक-दूसरेको पत्र लिखनेका फैसला हुआ। वह पत्रव्यवहार अिस प्रकार है।

हिन्दुस्तानियोकी तरफसे गाधीजीका जनरल स्मट्सको लिखा पत्र

"हम अपनी प्रतिज्ञाके कारण कमीशनमे आपके बताये अनुसार मदद नही दे सकते। अिस प्रतिज्ञाको आप समझ सकते है, और अुसकी कद्र भी करते है। आप कौमके साथ सधिवार्ता करनेका सिद्धान्त स्वीकार करते है, अिसलिअे सबूत देनेकी बातके सिवा दूसरी तरहसे कमीशनको मदद देने और अन्तमे अुसके काममे बाधक न बननेकी सलाह तो मै अपने देशभाअियोको दे सकता हू। और जब तक कमीशनका काम जारी रहे और नये कानून बने तब तक सरकारकी स्थितिको विषम न बनानेके लिअे सत्याग्रहको मुलतवी रखनेकी सलाह मै अुमे दे सकूगा। हम पर जेलमे और हडतालके दिनोमे जो दुःख पडे अुनके बारेमे मुझे कहना चाहिये कि अपनी प्रतिज्ञाके कारण हम अिन दुःखोको साबित नही कर सकेंगे। सत्याग्रहीकी हैसियतसे जहा तक हो सके हम अपने दुःखोकी शिकायत नही करते और न अुनका मुआवजा मागते है। परन्तु अिस समयके हमारे मौनका यह अर्थ न होना चाहिये कि हमारे पास साबित करनेके लिअे कोअी सामग्री ही नही है। मै चाहता हू कि आप हमारी स्थितिको भी समझ सके। और जब हम सत्याग्रह मुलतवी करते है, तो जो लोग अभी लडाअीके सिलसिलेमे जेलमे बन्द है वे छूटने चाहिये। हमारी मागें क्या है यह भी मै यहा बता देना अुचित समझता हू

(१) तीन पौण्डका कर रद हो।

(२) हिन्दू, मुसलमान अित्यादि विधियोके अनुसार हुअे विवाह जायज माने जाय।

(३) पढे-लिखे हिन्दुस्तानी अिस देशमें आ सकें।

(४) ऑरेन्जियाके विषयमें जो करार हुअे है अुनमें सुधार हो।

(५) यह आश्वासन दिया जाय कि प्रचलित कानूनका अमल अिस तरह होगा कि हमारे मौजूदा हकोको नुकसान न पहुचे।"

यह पत्र २१ जनवरी, १९१४को गाधीजीने लिखा। अुसी दिन जो जवाब जनरल स्मट्सकी तरफसे गाधीजीको मिला, अुसका आशय यह था

"आप कमीशनके सामने गवाही नही दे सकते, जिसके लिअे सरकारको अफसोस है। परन्तु वह आपकी स्थितिको समझ सकती है। आपने कष्टोकी बात छोड देनेका अिरादा जाहिर किया, अुसका हेतु भी सरकार समझती है। सरकार तो अिन कष्टोसे अिनकार ही करती है, परन्तु जब आप अुनका सबूत पेश नही कर रहे है तो सरकारके लिअे अिस मामलेमें कुछ करनेकी जरूरत नही रह जाती। सत्याग्रही कैदियोको छोडनेके बारेमे आपका पत्र मिलनेसे पहले ही सरकार हुक्म भेज चुकी थी। कौमको होनेवाले कष्टोकी जो सूची आपने दी है, अुसके बारेमें कमीशनकी रिपोर्ट मिलने तक सरकार अपनी कार्रवाअी मुलतवी रखेगी।"

अिस प्रकार प्रारंभिक समझौता हुआ। परन्तु जैसे दूधका जला छाछको भी फूक कर पीता है, अुसी तरह बहुतसे हिन्दुस्तानियोको भी डर लगा। अुन्हे अिस समझौते पर पूरा विश्वास नही हुआ। वे गाधीजीसे कहने लगे

"आप फिर जनरल स्मट्सके जालमें फस गये। वह कजी आखोवाला बडा बदमाश है। आप बहुत सरल है। आपको वह दो बार धोखा दे चुका है, फिर भी आप अुस पर विश्वास कर बैठे। हिन्दुस्तानियोकी शक्ति, लडाअीमें जाग्रत हुआ हमारा जोश, अुससे हिन्दुस्तानमें अुत्पन्न हुआ असतोष और वहाके वाअिसरॉय तथा अुनके कारण ब्रिटिश सरकार द्वारा यूनियन सरकार पर डाला हुआ दबाव — अिन सबके कारण जनरल स्मट्सने हा भर ली है। परन्तु सब कुछ शान्त हो जानेके बाद आप देखना वह जैसाका तैसा ही हो जायगा। जब तक धारासभामें कानून पास नही हो जाता, तब तक आपको सत्याग्रह बन्द ही नही करना था।"

अिस प्रकार वहुतसे मित्र कहते रहे। परन्तु दीनवन्धु अेण्डूज जैसे साधु पुरुप और सर वेजामिन रॉवर्ट्‌सन जैसे भारत-सरकारके प्रतिनिधिके वीच-वचावसे यह समझौता हुआ था, अिसलिअे गाधीजीको भविष्यमे धोखा होनेका डर नही था। और अिस वार तो जनरल स्मट्‌सने शुरूसे ही वहुत शुद्ध हृदयमे काम लिया था। अुसका भी गाधीजी पर अच्छा असर पडा था।

यह समझौता हो जानेके वाद थोडे ही दिनोमे कमीशनका काम पूरा हुआ। अुसमे अुन्ही गिनतीके हिन्दुस्तानियोने गवाही दी, जो सत्याग्रहकी लडाअीके वहुत विरोधी थे, और वह गवाही भी कौमके विरुद्ध तो थी ही नही। कमीशनने तुरन्त अपनी रिपोर्ट तैयार कर ली। अुस रिपोर्टके प्रकाशित होने और अुस पर कमीशनके सदस्योके हस्ताक्षर होनेसे पहले जनरल स्मट्‌सकी तरफसे अुसकी अेक प्रति गाधीजीको मिली। गाधीजीने अुसमे कुछ सुधार सुझाये और अुन सुझाये हुअे सुधारोके अनुसार रिपोर्टमें परिवर्तन भी हुआ। रिपोर्ट जैसा सोच रहे थे अुससे भी ज्यादा सतोषजनक निकली। अुसमे तीन पौण्डका कर रद करने, हिन्दुस्तानी विधिसे हुअे विवाहोको जायज मानने, भविष्यमे हिन्दुस्तानियोके मौजूदा हकोकी रक्षा करने वगैराकी कितनी ही छोटी-छोटी सिफारिशे भी थी। अव अिन सिफारिशोको केवल पार्लियामेण्टमे काननके रूपमे पास ही करना वाकी था। अैसा करनेमें मदद देनेका आश्वासन भी पार्लियामेण्टके वहुतसे प्रमुख सदस्योकी तरफसे गाधीजीको मिल चुका था। अिसलिअे गाधीजीको अव अतिम समझौतेके वारेमे जरा भी शका नही रही थी।

१८

सर बेंजामिन रॉवर्ट्‌सन

सर वेजामिन रॉवर्ट्‌सन अेक प्रख्यात आअी० सी० अेस० थे। मध्यप्रान्तके कमिश्नर कहिये या गवर्नर कहिये, परन्तु वहाके मुखिया वे ही थे। वे लॉर्ड वर्कनहेडके कथित फौलादी ढाचेके अेक सुदृढ अग, हिन्दुस्तानके सनदी नौकरोके वुजुर्ग और ब्रिटिश साम्राज्यवादके अेक कट्टर पुजारी थे। भारत-सरकारने दक्षिण अफ्रीकामें अुन्हें भेजा तो था हिन्दुस्तानियोके हितोकी रक्षाके लिअे प्रतिनिधि वनाकर, परन्तु सर वेंजामिनसे दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोके हितोकी रक्षामें कुछ मदद हुअी हो तो वह मजवूरीसे ही हुअी। वे

अुनका कोअी अहित तो कर ही नही सकते थे। अिसलिअे वे नीचा मुह करके चलती गाडीमे बैठ गये और समझौतेको सफल बनानेमें नाममात्रकी सहायता अुन्हें करनी पडी।

प्रथम तो दक्षिण अफ्रीकामे अुतरनेके बाद नेटालमे, जो लडाअीका मुख्य गढ था, किसी भी तरहकी पूछताछ किये बिना या जिनके दु:ख मिटानेके लिअे वे वहा गये थे अुनके बारेमे थोडी भी जाच किये बिना, नेटाल पार करके वे प्रिटोरियामे यूनियन सरकारके मेहमान बन कर बैठ गये। भारत-सरकारके दबावसे अुसकी अिज्जत रखनेके लिअे यूनियन सरकारने कमीशन नियुक्त किया। गांधीजीने यह सलाह दी कि हिन्दुस्तानी अुसे स्वीकार न करें, अिसलिअे अुनके मनमे हिन्दुस्तानियो और गांधीजीके प्रति कुछ घृणा पैदा हो गअी। हिन्दुस्तानियोकी अिस कार्रवाअीसे अुन्हे भारत-सरकारका अपमान हुआ लगा। हिन्दुस्तानियोकी प्रतिज्ञा या कमीशनमें हुअे हिन्दुस्तानियोके अपमानकी बात तो अुनके ध्यानमें ही नही आअी। अिसलिअे दक्षिण अफ्रीकामें जाकर अुन्होने अुलटे प्रयत्न करना शुरू कर दिया।

हिन्दुस्तानमें बहुत अर्सेसे रहनेके कारण बनी आदतसे पहले तो अुन्होंने हिन्दुओ और मुसलमानोमे फूट डालनेका साहस किया "दक्षिण अफ्रीकामे मुसलमानोके बडे बडे व्यापार है। करोडोकी जायदादे है। और हिन्दू तो अिनेगिने है। अुनमें भी बहुत थोडे ही स्थायी निवासी और जायदादवाले है। अिसलिअे हिन्दू चाहे जैसे लडे तो भी अुनका नुकसान नही हो सकता। अुनके पास खोनेको है ही क्या? लेकिन मुसलमानोको सरकारके विरुद्ध जानेमें बडा नुकसान है। अिसलिअे अैसा करना अुन्हे पुसायेगा नही। मुसलमानोको अपनी भलाअीके खातिर दक्षिण अफ्रीकाकी सरकार और भारत-सरकारको खुश रखना चाहिये। कमीशन तो दोनो सरकारोने सलाह करके मुकर्रर किया है। अिसलिअे मुसलमान अुसमे भाग लेंगे और अपने सबूत पेश करेंगे, तो भविष्यमें अुनका जो नुकसान होनेवाला है वह नही होगा। अितना ही नही, अुनके भलेकी कुछ सिफारिशे भी कमीशन करेगा।"

अैसी चालबाजी सर बेंजामिनने शुरू की, परन्तु अुनकी कुछ चली नही। जो थोडेसे हिन्दुस्तानी लोग लडाअीके बिलकुल विरोधी थे, वे सर बेंजामिनकी सिखावनके बिना भी सबूत देनेके लिअे जानेवाले थे, और वे गये भी।

परन्तु वे हिन्दुस्तानियोकी आबादीका अेक फीसदी भाग भी नही थे। सारे हिन्दुस्तानी अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ रहे। सर बेंजामिनकी यह पहली चाल असफल रही। अुन्होने यह भी देख लिया कि जनरल स्मट्सका गाधीजी पर सिर्फ बहुत विश्वास ही नही है, बल्कि गाधीजीको सतुष्ट किये बिना अब सरकारका काम ही नही चल सकता। सबको हिन्दुस्तानियोकी शक्तिका भरोसा हो गया था और अुस शक्तिका सामना करनेकी अुनकी ताकत नही थी। अुन्होने यह भी देखा कि शुरूमें मत्रियो और गाधीजीके बीचकी बातचीतमे जनरल स्मट्सने सर बेंजामिनको शामिल रखनेकी भी जरूरत नही समझी। अुन्हे प्रिटोरियाके अेक होटलमें ही पडा रहना पडा। अुन्होने यह भी देख लिया कि हिन्दुस्तानियोके नेता अुनकी खुशामद करने या अुनका आदर-सत्कार करने या सभाओमे अुन्हें निमत्रण देने या अुन्हें सलाम करने नही आते। तब अुन्हे लगा कि हिन्दुस्तानके नेता कुछ दूसरी ही मिट्टीके बने है। शिष्टाचारके खातिर जब गाधीजी अुनसे मिलने अुनके निवासस्थान पर गये, तब गाधीजीकी विचित्रता देखकर अुन्हे कुछ आश्चर्य हुआ और बातचीतमे ही गाधीजीके मनोबल और काम करनेकी पद्धतिसे वे भोठे पड गये।

अितनेमे अेक महत्त्वपूर्ण प्रसग पैदा हो गया। समझौतेकी शर्तोमे हिन्दुस्तानी विवाहको जायज साबित करानेवाली जो कलम थी, अुसके बारेमे कुछ मुसलमानोका यह आग्रह था कि मुसलमानोके मजहबके अनुसार चार स्त्रिया करनेकी अिजाजत है, अिसलिअे किसी मुसलमान हिन्दुस्तानीके चार स्त्रिया हो तो वे चारो शादिया जायज मानी जानी चाहिये। गाधीजीने यह स्पष्ट कह दिया था कि मै अैसी माग हरगिज नही कर सकता। अुनकी दलील यह थी कि मौजूदा जमानेमे अेक स्त्रीके साथका विवाह ही कानूनकी दृष्टिसे जायज और नीतिमय माना जाता है और कअी स्त्रियोके साथ की गअी शादी जगली समझी जाती है। अिस मान्यताके विरुद्ध जाकर, अनुचित माग करके मै विदेशी लोगोके सामने हिन्दुस्तानियोकी नैतिक दुर्दशाको स्वय नही बताअूगा। वे अैसी कोअी माग करनेके लिअे तैयार नही थे, जिससे हिन्दुस्तानी प्रजा नैतिक दृष्टिसे पाश्चात्य लोगोसे नीची सिद्ध हो। मुस्लिम मजहबके बारेमें गाधीजीकी यह दलील थी कि पैगम्बर मुहम्मद साहबके फरमान — 'चारसे ज्यादा स्त्रियोके साथ शादी करे अुसे मुसलमान ही न समझा जाय' — का अर्थ नैतिक दृष्टिसे यही हो सकता है कि सच्चा और नेक मुसलमान खुदामें

ही लीन रहे और दुनियादारीमें कभी न पडे। जो मुसलमान अितनी शक्ति न रखता हो वह ससार-धर्म स्वीकार करके और मनको सयममें रखकर अेक पत्नीके साथ विवाह-सम्बन्ध करे। लेकिन कोअी सतान-प्राप्तिके लिअे या मनकी कमजोरीके कारण या अन्य किसी कारणसे चार स्त्रियोसे शादी करे तब तक तो वह क्षम्य माना जायगा। परन्तु मुसलमान होनेका दावा करनेवाला कोअी आदमी चारसे ज्यादा स्त्रियोसे शादी करे, तो अुसे मुसलमानोकी गिनतीमे से भी निकाल देना चाहिये। अिस प्रकार पैगम्बर साहबने मनुष्यमात्रकी दुर्बलताकी मर्यादा बाधकर मानव-समाजकी बहुत बडी सेवा की है। कितने ही मुसलमान भोग-विलासकी भारी लालसा रखते हुअे भी पैगम्बर साहबके फरमानके कारण अधोगतिसे बच गये होगे। अिस समझके कारण गाधीजीने चार स्त्रियो तककी शादीको जायज माननेकी माग करनेमे अिनकार कर दिया।

सर बेजामिन रॉबर्ट्सनको यह बात मालूम हुअी। अुन्होने अिस मतभेदका लाभ अुठानेकी कोशिश की। अुनसे मिलने जानेवाले कुछ मुसलमान सज्जनोको अुन्होने समझाया कि, "मुसलमान मजहबके अनुसार चार स्त्रियो तककी शादीको जायज माननेकी माग गाधीजीको करनी चाहिये, परन्तु गाधीजी यह माग अिसलिअे नही करते कि अैसा करनेमें हिन्दुओका बहुत लाभ नही है।" अैसा समझानेसे कुछ मुसलमान भाअी विचलित हो गये और गाधीजी पर दोषारोपण करने लगे कि, "सर बेंजामिन तो तैयार है, परन्तु गाधीजी अिनकार करते है।" गाधीजीने अिसका निराकरण करनेके लिअे सर बेजामिनसे मुलाकात की और अुन्हें बताया कि, "आपके दिलमे मुसलमान भाअियोके लिअे जो सहानुभूति है, अुससे मुझे बहुत खुशी हुअी। मै तो अेक ही स्त्रीके साथ हुअे विवाहको नीति-सगत मानता हू। अेकसे ज्यादा स्त्रियोके साथके विवाहको मै नीति-विरुद्ध मानता हू। अत मुसलमान भाअियोकी मागके अनुसार अधिक स्त्रियोवाली शादीको जायज माननेकी माग स्वीकार करनेके लिअे सरकार तैयार हो, तो भी मै हिन्दुस्तानियोके प्रतिनिधिकी हैसियतसे वैसी माग करके हिन्दुस्तानियोको विदेशी लोगोकी नजरमे नही गिराअूगा। अितने पर भी सरकार अैसे विवाहोको जायज माने, तो अुसमें मेरा जरा भी विरोध नही है। अिसी प्रकार आप खुद मुसलमानोकी तरफसे अैसी माग करे और सरकार आपकी

मागका आदर करके अुसे मान ले, तो मैं अुसका भी विरोध नही करूगा। अितना ही नही, मै आपका और सरकारका अेहसान मानूगा।"

गाधीजीका अैसा साफ जवाब सुनकर और अुनकी निश्चलता देखकर सर बेंजामिन समझ गये। और जिस कमीशनका गाधीजीने बहिष्कार किया, अुसी कमीशनकी रिपोर्ट गाधीजीके पास पहले भेजी गअी और अुसमे अुन्होने जो जो सुधार सुझाये अुन्हे मजूर करनेके बाद ही कमीशनके सदस्योके हस्ताक्षर रिपोर्ट पर हुअे, यह जान कर तो सर बेजामिन आश्चर्यचकित हो गये। और तभी वे साहब गाधीजीके प्रतापको समझ सके। बादमे तो अुन्होने गाधीजीका जरा भी विरोध नही किया और भेदनीति या चालाकीसे कभी काम नही लिया। तबसे वे गाधीजीके साथ अधिक घुलने-मिलनेकी कोशिश करने लगे और गाधीजीके साथ अुन्होने पत्र-व्यवहार भी शुरू कर दिया। अितना ही नही, दक्षिण अफ्रीका छोडनेसे पहले फिनिक्सकी सस्था देखनेकी अिच्छा भी अुन्होने प्रकट की।

अेक दिन गाधीजीने श्री मगनलाल गाधीको और मुझे बुलाकर कहा "आज मि० पोलाकका पत्र आया है। वे आज ढाअी बजेकी गाडीसे सर बेजामिन रॉबर्ट्सन और अुनके मत्री मि० स्लेटरके साथ यहा आनेवाले है। अुनके साथ मि० पोलाक तो रहेगे ही, फिर भी हमारी तरफसे तुम अुन्हे स्टेशन तक लेने जाओ तो ठीक रहेगा।" हम तीन-चार आदमी गये। स्टेशन पर गाडी आअी और मेहमान अुतरे। मि० पोलाकने हम सबका अुनसे परिचय कराया। सबके साथ हाथ मिला लेनेके बाद हम लोग चले। अुन्होने शायद यह मान लिया होगा कि किसी सवारीमे बैठ कर फिनिक्स जाना होगा। परन्तु मि० पोलाकने स्टेशनकी हदसे बाहर निकल कर रास्ते पर आते ही कह दिया कि सस्थामे सवारी नही रखी जाती। वहाके लोग सब काम-काज खुद ही करते है। हम सब बातें करते हुअे चलने लगे। सस्थाके मकान आ गये। गाधीजी जहा खुद रहते थे अुस मकानके दरवाजेमें खडे थे। अुन्होने सर बेंजामिनका स्वागत किया। सब बीचके खडमें बैठे। मेज पर हमेशा बिछाअी जानेवाली धुली हुअी स्वच्छ चादर बिछी थी। चौकके बगीचेके फूलोको फूलदानियोमें सजाकर मेज पर रखा गया था। वहा बैठकर बातें की, कुछ मिनटके बाद गाधीजीने फल वगैराके नाश्तेका सामान मगाया। केले, अनन्नास, सतरे, नारगी, पपीता, आम वगैरा ताजे फल लाकर रखे गये। गाधीजीने अुनमे से

कुछ फल लेनेकी सर बेंजामिनसे प्रार्थना करते हुअे कहा, "ये फल मेरे और मेरे साथियोके लगाये, पाले और बडे किये हुअे पेडोके है। अिसलिअे शुद्ध स्वदेशी है। हमारे ही बगीचेमें हमारी ही मेहनतसे बडे हुअे वृक्षोके फल प्रेमसहित अर्पण करनेसे अधिक अच्छा स्वागत हम आपका क्या कर सकते है? अिसके सिवा, आपको पसन्द आये तो हम यहा जो गेहूकी 'क्यूने ब्रेड' काममे लेते है और यही तैयार करते है, वह भी आपके लिअे हाजिर करे। जो कुछ हम आपकी सेवामें अर्पण करें अुसे स्वीकार करके हमे आभारी कीजिये।" सर बेंजामिन रॉबर्ट्सनको गाधीजीका शुद्ध शिष्टाचार देखकर बहुत आनन्द हुआ और तीनो ही मेहमान नाश्ता करने लगे। सर बेंजामिन फलोकी मिठासका बखान करते जाते थे और खाते जाते थे। गाधीजीने हस कर कहा, "यहाकी मीठी जमीनके फल मीठे होते है। परन्तु अिन फलोमे हमारे पसीनेकी मिठास मिल गयी है, अिसलिअे वे और भी मीठे लगते है।" सर बेंजामिन गाधीजीके कहनेका भावार्थ समझ गये और आश्रमके सादे तथा स्वावलम्बी जीवनकी प्रशसा करने लगे। लगभग पौन घटा हो गया। सर बेंजामिनको सस्थामें घुमाना चाहिये, प्रेस वगैरा दिखाना चाहिये, अिस हेतुसे गाधीजीने नम्र भावसे क्षमा मागते हुअे कहा "मुझे माफ कीजिये, सर बेंजामिन, सस्थाकी सब जगहे, प्रेस, पुस्तकालय वगैरा आपको मि० पोलाक बतायेंगे। मिसिस गाधी बीमार है, अिसलिअे मै आपके साथ नही आ सकूगा। आशा है कि आप अिसके लिअे मुझे क्षमा करेंगे।"

सर बेंजामिन साहबने खडे होकर अुतनी ही नम्रतासे कहा, "हा, हा, मुझे याद आया। यह बात तो मै भूल ही गया था कि मिसिस गाधी बीमार है। अब अुनकी तबीयत कैसी है? मेरी अुनसे मुलाकात हो सकती है?"

गाधीजीने कहा "जरूर, बडी खुशीसे। आअिये, वे यही पासवाले कमरेमे है।"

कस्तूरबा बिस्तर पर सोअी हुअी थी। सस्थामे पलग काममें नही लिया जाता था। दो लकडीके पटियोको अिकट्ठा करके अुन पर कम्बल और अूपर चादर बिछाकर बिछौना बनाया गया था। सर बेंजामिनको वहा ले जाया गया। अुन्होने कस्तूरबासे अुनकी तबीयतके बारेमें पूछा। गाधीजी और कस्तूरबाके घरकी यह सादगी और साज-समान देखकर अुन साहबके हृदय पर कैसा असर हुआ होगा यह तो वे ही जानें। परन्तु सर बेंजामिनने

कहा “मि० गाधी, आप मिसिस गाधीकी सेवामे ही रहिये। हम मि० पोलाकके साथ सब जगह घूम आयेगे। आप हमारे साथ चलनेकी जरा भी तकलीफ न कीजिये।”

यह कह कर सर बेंजामिन वगैरा वहासे चले गये। प्रेस, पुस्तकालय, बगीचा वगैरा देखा। लौटकर गाधीजीके पास गये और अुनसे विदा ली। गाधीजीने मकानके द्वार पर खडे रहकर अुनका स्वागत किया था और वही खडे रहकर अुन्हे शिष्टतापूर्ण विदा दी। हिन्दुस्तानके मध्यप्रान्तके सर्व-सत्ताधारी राजा, सर बेंजामिन रॉवर्ट्सन गाधीजीके फिनिक्स आश्रममे आये और चले गये। जिन पैरो चलकर वे आये थे, अुन्ही पैरो चल कर वापस गये। अुन्होने कोअी अेक घटा वहा विताया। अुसमे अेक चीज वे छोड गये, वह था अुनका ‘अपना तेज’। और अेक वस्तु वे अपने साथ ले गये। वह था वहाकी सब बातें देखकर अुनके दिल पर हुआ यह असर “हिन्दुस्तानमें ब्रिटिश साम्राज्यका कोअी भयकर शत्रु हो तो वह मि० गाधी है।”

१९

लड़ाओका अन्त

प्रारम्भिक समझौतेके कारण सब सत्याग्रही छोड दिये गये। दोनो पक्ष शान्तिसे यूनियनकी सिनेटकी जून मासकी बैठकमे रिलीफ बिल पास होनेकी बाट देखने लगे। सन् १९१४ के जून मासमे सिनेटकी जो बैठक हुअी अुसमे जनरल स्मट्सने रिलीफ बिल पेश किया। अुस बिलको पेश करते समय पहलेके अक्खड जनरल स्मट्सने जो नम्रतापूर्ण छोटासा भाषण* दिया अुससे सत्याग्रहकी सपूर्ण विजय प्रकट होती है। अुन्होने गाधीजीको दिलाये हुअे विश्वासके अनुसार खूब कोशिश की और अुस बिलको पास कराया। अुस बिलमे नौ कलमें हैं। अुसमें यह तय किया गया कि जो शादी हिन्दुस्तानमें जायज मानी जाती है, वह दक्षिण अफ्रीकामे भी जायज मानी जायगी। अेकसे ज्यादा स्त्रियोके साथकी शादी जायज नही मानी जायगी और वे स्त्रिया भी पतिकी जायज पत्निया नही मानी जायेंगी।

* जिज्ञासु पाठकोको यह भाषण ‘अिंडियन ओपीनियन’ के स्वर्ण-जयती अकमें मिल सकेगा।

गिरमिटिया मजदूरोकी मियाद पूरी होनेके बाद अुन्हे स्वतत्र नागरिकके रूपमे दक्षिण अफ्रीकामे रहना हो, तो तीन पौण्डका मुड-कर अुन्हे नही देना पडेगा अैसा तय किया गया।

दक्षिण अफ्रीकामें बाकायदा रहनेवाले हिन्दुस्तानियोको सरकारकी तरफसे जो प्रमाणपत्र दिये गये हो, अुनका मूल्य अिस बिलमें आका गया है। यानी जिन हिन्दुस्तानियोके पास अैसे प्रमाणपत्र हो अुन प्रमाणपत्रोका हेतु कहा तक सिद्ध हो सकता है, अिसकी स्पष्ट व्याख्या अिस बिलमें की गअी है। अिन सब बातोके बारेमें सिनेटमें प्रेमपूर्ण चर्चा हुअी और कानून पास हुआ। जिन-जिन बातोको कानूनमें शामिल करना जरूरी न जान पडा, अुनके बारेमें जनरल स्मट्सने सरकारके प्रतिनिधिकी हैसियतसे गाधीजीको लिखे अपने पत्रमे सन्तोपजनक स्पष्टीकरण किया है। अुसमे केप-कॉलोनीके अन्दर शिक्षित हिन्दुस्तानियोके आनेके हककी रक्षाके बारेमे, जिन्हे दक्षिण अफ्रीकामें आनेकी खास अिजाजत मिले अुनके बारेमे, जो शिक्षित भारतीय सन् १९१४ से पहले आ चुके हो अुनके बारेमें और अेकसे ज्यादा स्त्रियोसे शादी करनेवालोको अपनी दूसरी स्त्रियोको मेहरबानीके तौर पर लाने देनेके बारेमे स्पष्टीकरण हुआ है। अिसके सिवा, जनरल स्मट्सके पत्रमे यह भी बता दिया गया है कि, "मौजूदा कानूनोके बारेमें यूनियन सरकारकी सदा यह अिच्छा रही है और अब भी यह अिच्छा है कि अिन कानूनोका अमल न्यायपूर्वक और भोगे जानेवाले हकोकी रक्षा करके ही किया जायगा।"

अूपरके पत्रके जवाबमें ३० जूनको गाधीजीने जनरल स्मट्सके नाम जो पत्र लिखा, अुसका सार अिस प्रकार है

"आपका आजकी तारीखका पत्र मुझे मिला। आपने धीरज और नम्रतापूर्वक मेरी बात सुनी अिसके लिअे मै आपका आभारी हू। हिन्दुस्तानियोको राहत पहुचानेवाले कानून और हमारे बीचका पत्र-व्यवहार सत्याग्रहकी लडाअीका अत करते है। यह लडाअी सन् १९०६ मे शुरू हुअी। अिसमें हिन्दुस्तानियोको भारी दु ख सहने पडे और आर्थिक हानि अुठानी पडी तथा सरकारको भी चिन्तामें पडना पडा है। मत्री महोदय जानते है कि मेरे कुछ भाअियोकी माग बहुत ज्यादा थी। अलग अलग प्रान्तोमें व्यापारिक परवानोके कानून — जैसे ट्रान्सवालका 'गोल्ड लॉ', 'ट्रान्सवाल

टाअुनशिप अेक्ट' और सन् १८८५ का ट्रान्सवालका कानून नम्वर ३ — अैसे है, जिनमे कोअी अैसा फेर-वदल नही हुआ है जिससे रहनेके मकानोके वारेमे हिन्दुस्तानियोको पूरा हक मिले, व्यापारकी छूट मिले और जमीनके स्वामित्वका अधिकार मिले। अिससे अुन्हें असन्तोष हुआ है। कुछ लोगोको तो अिसी कारणसे असतोष रहा है कि अेक प्रान्तसे दूसरे प्रान्तमे जानेकी अुन्हे पूरी आजादी नही दी गअी है। कुछको अिस वातका असतोष रहा है कि हिन्दुस्तानियोको राहत देनेके कानूनमे शादीके प्रश्नके वारेमे जो कुछ हुआ अुससे अधिक होना चाहिये था। मुझसे अुन्होने यह माग की थी कि अूपरके सव मामले सत्याग्रहकी लडाअीमे शामिल किये जाये। परन्तु मैंने अुनकी माग मजूर नही की। अिस प्रकार सत्याग्रहकी लडाअीके मुद्दोके रूपमे तो ये वाते शामिल नही की गअी, फिर भी अिससे अिनकार नही किया जा सकता कि किसी दिन सरकारको अिन वातो पर अधिक विचार करके राहत देनी होगी। जव तक यहा रहनेवाले हिन्दुस्तानियोको नागरिकताके पूरे हक नही दिये जायेंगे, तव तक पूरे सतोपकी आशा नही रखी जा सकती। मैंने अपने भाअियोसे कहा है कि आपको धीरज रखना चाहिये और हर अुचित अुपायसे अैसा लोकमत वनाना चाहिये, जिससे भावी सरकार अिस पत्र-व्यवहारमे वताअी हुअी शर्तोसे भी ज्यादा आगे जा सके। मै आशा रखता हू कि दक्षिण अफ्रीकाके गोरे जव समझेगे कि हिन्दुस्तानसे गिर-मिटिया मजदूर अव आने वद हो गये है और दक्षिण अफ्रीकामें नये आने-वालोसे सम्वन्धित कानूनके द्वारा स्वतत्र हिन्दुस्तानियोका यहा आना भी रोक दिया गया है और जव वे समझेगे कि यहाके राजकाजमे किसी भी तरहका हस्तक्षेप करनेकी हिन्दुस्तानियोकी महत्त्वाकाक्षा है ही नही, तव अुन्हे अैसा लगेगा कि मेरे वताये हुअे हक हिन्दुस्तानियोको देने ही चाहिये और अिसीमे न्याय है। अिस वीच अिस प्रश्नका निपटारा करनेमें पिछले कुछ महीनोसे सरकारने जो अुदार रवैया अख्तियार किया है वही अुदार रवैया आपके पत्रमे वताये अनुसार मौजूदा कानूनोका अमल करनेमें वना रहेगा, तो मुझे विश्वास है कि सारे यूनियनमे हिन्दुस्तानी कुछ शान्तिसे रह सकेंगे और सरकारके लिअे परेशानीका कारण नही वनेंगे।"

२०
गांधीजीका वसीयतनामा

अूपरका शीर्षक पटकर पाठकोको आश्चर्य होगा। १८ वर्ष पहले गाधीजीका वसीयतनामा कैसा? वह अुन्होने क्यो लिखा होगा? किसके हकमे लिखा होगा? कितनी जायदाद अुस वसीयतनामेमें लिखी होगी? समाजमे आम तौर पर तो यही रिवाज है कि मनुष्य मरनेसे पहले अपने वसीयतनामेमें यह वता देता है कि अुसकी सम्पत्तिका अुत्तराधिकार सच्चे अुत्तराधिकारीको मिले और अुसके वाद अन्य कोअी व्यवस्था करनी हो तो वह भी अुसमे वताअी जाती है। गाधीजीको भी अेक समय अपनी सपत्तिकी व्यवस्था करनेकी जरूरत मालूम हुअी।

पिछले प्रकरणमे वताये अनुसार केपटाअुनकी सिनेटमे अिंडियन रिलीफ विल पास हुआ और वाकीका स्पष्टीकरण गाधीजीने जनरल स्मट्सके पत्र द्वारा करा लिया। अुस पत्रमें वताये अनुसार शादीके कानूनमे मुसलमानोको सन्तोप नही हुआ था। व्यापारके परवाने लेनेमें और विकती जायदादे खरीदनेमें भी कठिनाअी थी। अुनकी यह माग थी कि यह मौका अच्छा है, हमारा वल सगठित हो गया है और सरकार नरम पडी है, अिसलिअे समयका लाभ अुठाकर दूसरी मागे भी मजूर करा ली जाय। गाधीजीने नीति और सत्याग्रहके सिद्धान्तके विरुद्ध कोअी भी माग करनेसे अिनकार कर दिया। लडाअीके आरम्भमे आगे चलकर हिन्दुस्तानी कितनी शक्ति दिखायेंगे अिसका गलत अदाज लगाये विना जिन प्रश्नोके लिअे लडते लडते मुट्ठीभर सत्याग्रहियोके मर-मिटनेका निश्चय हुआ था अुन्ही प्रश्नोके निपटारेकी मागे पेश की गअी थी। अुन मागोसे किसी भी हालतमें पीछे नही हटा जा सकता था। कौमने लडाअीमे साथ न दिया होता, तो अुतनी ही मागोके लिअे अत तक लडकर मर जाना पडता। अुनमे से अेक भी माग कम नहीं हो सकती थी। अिसी तरह कौमने सत्याग्रहमे वहुत अच्छा साथ दिया, अिस कारण अुससे लाभ अुठाकर कोअी छोटीसी माग भी अुनमें जोडी नही जा सकती थी। गाधीजीका कहना यह था कि मागे अुचित हो और अुनकी प्राप्तिके लिअे हमारे पास काफी शक्ति हो, तो कितनी ही मजवूत सरकारको

भी अुन्हे मजूर करना ही पडता है। जनताका सच्चा नैतिक बल और समझ कर किये हुअे त्यागका वल जनताको सतेज और जाग्रत रखता है। मनुष्य जिस बलसे अिच्छित वस्तु प्राप्त कर सकता है, अुस वस्तुको टिकाये रखनेके लिअे अुसी वलको सतेज रखना पडता है। पशुवलसे प्राप्त की हुअी वस्तुको टिकाये रखनेके लिअे पशुवलकी ही तैयारी रखनी पडती है। अुसके खजरो, तलवारो और तोपोको जग लगने देनेसे काम नही चलता। अिसी तरह सत्याग्रहसे प्राप्त की हुअी वस्तुको टिकाये रखनेके लिअे सत्याग्रहके हथियारको जग लगने देनेसे काम नही चल सकता। जनतामे अैसा सामर्थ्य होना चाहिये कि वह किसी भी क्षण किसी भी अन्यायके विरुद्ध लड सके। अैसी तैयारीसे जनता नप्ट नही होती वल्कि समृद्ध वनती है।

परन्तु पैसेको परमेश्वर माननेवाले कुछ वेसमझ भाअी अिसे न समझ सके। समझे हो तो भी जान-वूझकर फसाद करनेके लिअे असतोष फैलाने लगे 'गाधी तो तीन पौण्डके करके लिअे ही लडे और अुसे अुठवा दिया, परन्तु अुसका फायदा सिर्फ हिन्दुओको ही मिला। कारण, गिरमिटिया मजदूरोमे अधिकाग हिन्दू ही है। और दूसरी बातोमे मुसलमानोको कोअी खास लाभ नही हुआ।' कुछ विघ्न-सन्तोपी और द्वेपी मनुष्य अिस तरहका शोर मचाने लगे। परिणाम-स्वरूप सन् १९०७ मे जैसा वातावरण पैदा हो गया था वैसा ही वातावरण जोहानिसवर्गमे पैदा हो गया। कुछ गुण्डे गाधीजी पर हमला करके अुन्हे मार डालनेकी वाते खुले आम करने लगे। जोहानिसवर्गसे यह वात फिनिक्समें पहुची। गाधीजी अिस मौके पर केपटाअुनमे थे। फिनिक्ससे गाधीजीको अेक पत्र लिखकर किसीने जोहानिसवर्गके खतरेका समाचार दे दिया। जोहानिस-वर्गमे भी अैसे पत्र वहा गये। मि० कैलनबैक अुस समय जोहानिसवर्गमे थे। वे यही कहते थे कि, "गाधीजीकी रक्षा करनेकी चिन्ता हमें करनेकी जरूरत नही। वे स्वय अपना वचाव करनेकी ताकत रखते है।" कुछ लोगोका गाधीजीसे यह आग्रह था कि केपटाअुनसे अुन्हे सीधा नेटाल जाना चाहिये और जोहानिसवर्गमे नही अुतरना चाहिये। परन्तु गाधीजी अैसे डर-पोक नही थे कि अपने पर हमला होनेके डरसे जोहानिसवर्ग न जाकर सीधे फिनिक्स जानेको तैयार हो जाते। अुन्होने निश्चय कर लिया कि जोहानिसवर्ग जाना ही चाहिये। वहा जानेसे अुन पर हमला हो और अुसमे अुनकी मौत हो जाय, तो भी वह सत्याग्रहके सिलसिलेमें ही होगी, और अैसी मौत तो

वे चाहते ही थे। सत्यके पालनमें गलतफहमी पैदा होनेके कारण किसी भी वहाने अपने ही आदमी गाधीजीकी हत्या कर दें तो अैसी मृत्यु गाधीजी चाहते थे, अैसे अवसरका स्वागत करनेके लिअे वे तैयार थे। अिसलिअे वे जोहानिसवर्ग जानेको तैयार हुअे। अुन्हें भी लगा कि अैसा हमला हो सकता है जिससे अुनकी मृत्यु हो जाय। अिस खयालसे गाधीजीने फिनिक्सवासियोके नाम अेक महत्त्वपूर्ण पत्र लिखा। वह पत्र अिस प्रकार है

"केपटाअुन
फागुन सुदी १४, १९७०

"चि० छगनलाल,

"अिस समय मुझे फुरसत है। मेढ लिखते है कि मेरे प्राण लेनेके लिअे जोहानिसवर्गमें फिर प्रयत्न हो रहे है। अैसा हो तो वह वाछनीय है और अपना काम मै पूरा हुआ समझूगा। अिस कारणसे डर कर मुझे जोहानिसवर्गसे दूर नही रहना है। अैसी परिस्थितिमें या और किसी कारणसे मेरी मृत्यु हो जाय, तो मेरे विकसित किये हुअे कुछ विचार, जो मैंने तुम्हारे सामने नही रखे है, यहा मै लिख डालना चाहता हू।

"कुटुम्वकी सेवा पहले करना चाहिये, यह वाक्य परमार्थकी दृष्टिसे वहुत वास्तविक है। कुटुम्वकी सेवा जो कर सके वही कौमकी सेवा या देशकी सेवा कर सकता है। कुटुम्व-सेवा किसे कहे, यही सोचनेकी वात है। अैसा लगता है कि शुद्ध आचरण अिस विचारको आसानीसे वता देता है।

"मुझे लगता है कि हम जो नौकरीका या राज्याश्रित जीवन विताते रहे है वह कनिष्ठ जीवन है। हमारा कुटुम्व मशहूर है, अिसलिअे हम लुटेरोकी टोलीमें माने जाते है। वुजुर्गोको दोप दिये विना यह कहा जा सकता है कि अुन्होने जनताकी सेवा तो की होगी, परन्तु वह स्वार्थसिद्धिके सिलसिलेमें हुअी है। साधारण दृष्टिसे देखें तो अुन्होने ठीक न्याय किया लगता है। यानी प्रजा पर अुन्होने थोडा जुल्म किया। आजकल हमारे कुटुम्वकी हालत खराव है। अगर नौकरी न मिले तो सव वेकार भटकते फिरें। सूक्ष्म दृष्टिसे देखे तो नारणदास वम्वअीमे गुलामी कर रहा है। दूसरे कुटुम्वी वेकार है या राज्यकी खटपटमे रचे-पचे रहकर अपना गुजारा करते है। सव सन्तान पैदा करने और शादिया करने वगैरामे मशगूल है। माताओंको वडा लोभ अपने वच्चोका विवाह करनेका है।

"अिससे कैसे अुद्धार हो? हो सके तो रास्ता बदल दिया जाय। प्रथम तो किसान ही बना जाय। अुसमे हमारे कठोर भाग्यके कारण असह्य कष्ट सहने पडे तो हम जुलाहे वगैराकी मजदूरी करे। जिस हालतमे फिनिक्समे रहते है अुसी हालतमे रहे। अपनी जरूरते कमसे कम रखे। भोजनकी पद्धति जैसी सोची गअी है अुसे यथासभव कायम रखें। दूधको हमने पवित्र वस्तु मान लिया है। दूध हम ले परन्तु अपवित्र समझकर ले। यह महान परिवर्तन है। अिसकी जडें गहरी है। अिसके परिणाम ठोस हैं। यह दूसरी बात है कि सब अिस बातको मानेगे या नही। परन्तु यह जान कर भी कि दूध करोडोके लिअे अलभ्य है वह छोडने लायक है। यह विचार कभी मेरे मनसे नही निकल सकता कि दूध शुद्ध मास है और अहिंसा-धर्मका विरोधी है। यह बात मुझे नही जचती कि अिस शरीरसे अब दूध, घी वगैरा लेना चाहिये। आगका यथासभव कम अुपयोग करके गुजर किया जाय। परिवारके जो लडके आना चाहते हो अुन्हें हम ले और रखे। वे अूपरके विचारोके साथ न चले तो यहा नही रह सकते। जो विधवायें अिस तरहके जीवनमे शामिल न होना चाहे, अुन्हे आदरके साथ कह दिया जाय कि अिस रहन-सहनके अनुसार हर आदमी पर जो खर्च होता है अुसका ड्योढा खर्च अुन्हे देकर हम अपना ऋण चुका देगे। अिसके सिवा और कुछ नही दे सकते। किसीकी शादी-वादीके झगडेमें हम न पडे। बडे होने पर जो विवाह करना चाहेगे वे खुद अिस बारेमे देख लेगे। लडकिया होगी तो अुनके लिअे वर ढूढने ही पडेगे, परन्तु जो वर तुलसीके पत्तेसे सन्तुष्ट होकर विवाह करेंगे अुन्हें कन्याये देगे। अेक पाअी भी खर्च नही करेगे। अैसा वर न मिलेगा तब तक हम अिन्तजार करेगें और लडकियोको धीरज रखना सिखायेगे। अैसा करनेसे लोगोकी बातें सुननी पडेगी और तिरस्कार होगा, तो सब प्रेमपूर्वक सह लेंगे। अगर हमारा आचरण अटल रहेगा, तो कोअी कठिनाअी नही आयेगी। सतान पैदा करना हमारे धर्मका अग नही है। गृहस्थीको फैलाना हमारा कर्तव्य नही है। जो गृहस्थी है अुसके मोहमे फसे बिना अिस तरह जीवन जीना चाहिये कि हमारे और दूसरोके लिअे मोक्ष सुलभ हो जाय। यही जीवनका अेकमात्र रहस्य मालूम होता है। अिसीमें अपनी सेवा, कुटुम्बकी सेवा, कौमकी सेवा और राज्यकी सेवा आ जाती है। यह स्थिति आ जाय तो हमें वही रुक नही जाना है, बल्कि अिससे आगे बढना है।

"अिस आचरणमे जो शामिल होगा वह भी हमारा कुटुम्बी ही बन जायगा। अुसमें रावजीभाअी, मगनभाअी, प्रागजीभाअी और जो कोअी दूसरे लोग आयेंगे अुन्हें हम लेंगे। मेरी अकाल मृत्यु हो जाय तो मेरी सिफारिश है कि तुम लोग अूपर लिखे अनुसार आचरण करना। तुम्हे फिनिक्स अेकाअेक नहीं छोडना चाहिये, परन्तु अुद्देश्योको ध्यानमें रखकर जीवन जीना चाहिये। मगनलालसे मुझे पूरी आशा है। जमनादास तालीमसे तैयार हो जाय तो अुसमे यह सत्त्व है। अुसमे आग्रह भी है।

"मेरी मृत्यु हो जाने पर जिन विधवाओका बोझा खास तौर पर मुझे अुठाना चाहिये अुनके लिअे रुपया तुम डॉक्टर मेहतासे मागना। वहासे न मिले तो तुम लोगोको, जो अूपरके अुद्देश्योको मानते हो, अनेक सकट सह कर, बेगार करके भी अितना रुपया जुटाना चाहिये। हरिलालको अपना निर्वाह स्वय करना पडेगा। बच्चोको वह तुम्हारे या जो लोग देशमें हो अुनके सुपुर्द कर दे। फूलीके पास रुपया है, अिसलिअे अुसे कुछ देनेकी जरूरत नही। अब रह गअी गोकीबहन, नन्दकुवर भाभी, गगा भाभी और गोकुलदासकी बहू। वे साथ रहे तो अुनकी मेहरबानी होगी, अुनकी शोभा बढेगी। साथ न रहें तो हरअेकको अलग अलग निर्वाहका साधन दिया जाय। बच्चे अुन्हें दे दिये जाय। परन्तु जहा दूसरे रहते हो वहा वे भी आ जाय तो ज्यादा ठीक होगा। अैसा करने पर अुनके गुजरका खर्च कुल मिलाकर ४० रुपया भी नही होगा। बाका भी यही हिस्सा समझना चाहिये। बाको समझना चाहिये कि अुनके साथ ही रहना ठीक होगा। अुसे भी बच्चे सौंप देना चाहिये। जो लडके अपनी माका बोझा अुठा सके, अुन्हे अैसा करनेकी स्वतत्रता है ही। अूपरका जवाब जो बच्चे हमारी मदद मागे अुनके लिअे है। हरिलाल बाका भार अुठाकर अुसे रख ले तो बहुत अच्छा। नन्दकुवर भाभीको रखे तो और अच्छा। फिर तो गोकीबहन, गोकाकी बहू और गगा भाभीका ही प्रश्न रह जाता है। काकू अपनी माका बोझा अुठा ले तो ठीक ही है। और शामलदास अपनी माका अुठा ले। जो निराधार रह जाय अुसके लिअे अूपरका रास्ता है। तुम जिस ढगसे रहते हो अुससे ज्यादाकी आशा कोअी नही रख सकता, और न किसीको रखनी चाहिये। मै अिसी तरहके जीवनको श्रेष्ठ मानता हू, अिसलिअे अूपरके विचार मुझे क्रूर नही लगते। यह न्याय गरीबीके आधार पर है, और यही आधार मुझे सही मालूम होता है।

"मेरे मरनेके वाद अिस पत्रका अुपयोग किसीको भी वतानेमे कर सकते हो। अभी तो मगनलाल, रावजीभाओी, मगनभाओी, प्रागजी और जमुनादास अिसे पढे। मै चाहता हू कि अिन लोगोके सिवा और किसीके सामने अिसकी चर्चा न हो। अितने आदमियोको भी न पढना चाहिये अैसा तुम्हे लगे, तो जिसे तुम ठीक समझो अुसीको पढाना।

"मेरे खयालसे यह पत्र अितना सम्पूर्ण है कि तुम्हारे मनमे जो सवाल अुठेगे अुनका जवाव तुम्हे अिसीमे मिल जायगा। फिर भी कोओी वात रह गओी जान पडे तो मुझसे पूछना। मुझसे चर्चा करनी हो तो प्रश्न लिख कर रखना। मुझसे मतभेद हो तो नि सकोच वता देना। यह जिम्मेदारी तुम्हें अपनी शक्तिसे अधिक मालूम हो तो वह भी वता देना। तुम्हे जो सूझे वह सारी आलोचना करना।

मोहनदासके आशीर्वाद

"पुनश्च मणिलाल वहा नही है। नही तो अुसे भी पढनेकी अिजाजत देता। अभी अिस पत्रकी नकल कर लेना। ठीक लगे तो रजिस्ट्रीसे अुसे पढनेके लिअे भेज देना और वापस मगा लेना।"

अूपरका पत्र लिखकर गाधीजी जोहानिसवर्ग चले गये। वहा पहुचने पर वहुत लोग अुनसे मिले। कुछ सभाये हुओी। वहा अुनका स्वागत हुआ। दूसरे या तीसरे दिन अुन्हें अेक सभामें निमत्रण दिया गया। सभा मुसल-मान भाअियोने की थी। कुछ लोगोने गाधीजीको वहा न जानेकी सलाह दी। परन्तु अुन्होने कहा "मालिक नौकरको वुलाये और नौकर न जाये तो वह कितना अुद्धत और हरामी माना जायगा? देशभाओी मेरे मालिक है, वे मुझे किसी भी समय वुलावें तो मुझे जाना चाहिये।" गाधीजी वहा गये। सभामें अुनसे समझौतेकी वातें समझानेके लिअे कहा गया। समझाते वक्त अुनमे वीच वीचमे प्रश्न पूछना शुरू हुआ। और फिर असभ्यतामे शुरू करके अुत्पात क्रमश वढने लगा। अैसा मालूम होने लगा कि अभी दगा हो जायगा। अितनेमे अेकाअेक अेक महाक्रूर पठान हाथमे अेक वडा जुला छुरा लेकर सामने निकल आया और वोल अुठा "खवरदार, कुछ वदमाश गाधीभाओी पर हमला करनेको तैयार है। परन्तु किसीने अुन्हे जरा भी नुकसान पहुचाया तो वह मेरे अिस छुरेका शिकार होगा।" यह कहकर विकराल पठान मीर आलम हाथमें छुरा लिये हुअे सिहके समान खडा हो गया।

गाधीजी जरा हसते हुअे चेहरेसे अुस पठानकी तरफ देखते रहे और बोले "भाअी मीर आलम, अितना गुस्सा किसलिअे ? मेरे पास आओ, हम सब भाअी भाअी है। कोअी मुझ पर हमला नही करेगा।"

मीर आलम वही खडा रहकर गरजा "आप तो फकीर है, आपको पता नही। मै सब जानता हू। आप पर अुगली भी अुठानेवालेको मै खतम कर दूगा।"

सारा तूफान शान्त हो गया। फसादी अेक अेक करके खडे होकर चल दिये। गाधीजी, सेठ काछलिया और दूसरे मुसलमान मित्र रह गये। सभा पूरी हुअी। वहासे अुठकर गाधीजी अपने डेरे पर पहुचे। मीर आलम पठान वहा तक अुनके साथ रहा। गाधीजी पर पहला हमला करनेवाले मीर आलम पठानको ही भगवानने आज गाधीजीकी रक्षाके लिअे भेजा और सब धर्मोका यह सिद्धान्त सच्चा साबित हुआ कि प्रेम ही सबकी रक्षा करता है।

२१

स्वदेश-गमन

समझौतेके बाद और अुससे सम्बन्ध रखनेवाला कानून यूनियनकी सिनेटमें पास हो जानेके बाद गाधीजीने कुछ समय फिनिक्समें बिताया। अब वे हिन्दुस्तान आनेके लिअे अधीर हो गये। श्री गोखलेकी भी प्रबल अिच्छा थी कि गाधीजी जहा तक हो सके जल्दी ही हिन्दुस्तान आ जायें। सत्याग्रहकी लडाअी न हुअी होती तो गाधीजी जल्दी ही आ गये होते। श्री गोखले बार-बार लिखते रहते थे और वे दक्षिण अफ्रीका गये तब अुन्होने गाधीजीको रूबरू कहा था कि, "आप दक्षिण अफ्रीकाको छोडिये, आपका काम तो हिन्दुस्तानमे है।" परन्तु हाथमें लिया हुआ काम अधूरा छोडकर सारे हिन्दुस्तानकी सेवाकी महत्त्वाकाक्षामें पडनेकी वृत्ति गाधीजीमें नही थी।

'स्वधर्मे निधन श्रेय परधर्मो भयावह ।'

अपना कर्तव्य भले ही बडे परिणाम लानेवाला न हो, फिर भी अुसे छोड महत्त्वाकाक्षाके वश होकर अपना आरम्भ न किया हुआ — या स्वाभाविक रूपमें न प्राप्त हुआ — महान कार्य करनेका भी अुन्हें कभी लोभ नही होता था। परन्तु अन्तिम समझौता हो जानेके बाद तो गाधीजी हिन्दु-

स्तान आनेके लिअे अधीर हो अुठे। अिस समझौते और स्वदेश-गमनके बीचका समय अुन्होने फिनिक्समे बिताया। अिस बीच अनेक हृदयस्पर्शी घटनाअें हो गअी। रातको प्रार्थनाके बाद अनेक विषयो पर चर्चायें तो होती ही थी और अब तो कभी-कभी ये बाते भी होने लगी कि हिन्दुस्तान जाकर क्या किया जाय। हिन्दुस्तानमे भी बगभगके बाद राजनीतिक नवयुग आरम्भ हुआ था। हिन्दुस्तानके नेता भी अेक-दूसरेकी बराबरीके माने जाते थे। 'लाल, बाल और पाल' की त्रिमूर्तिका नाम घर-घर याद किया जाता था। बगालमे सुरेन्द्रनाथ बेनर्जी सिहकी-सी गर्जना करके बगालको गूजा रहे थे। बम्बअीमे बेताजके बादशाह माने जानेवाले सर फीरोजशाह मेहताका प्रभुत्व था। श्री गोखले बडी धारासभाको हिलाते रहते थे। श्री अरविन्द घोष युवकोके हृदयोमे नवचेतना अुडेल रहे थे। अिसके सिवा, जब जब काग्रेस या प्रान्तीय परिषदें होती थी तब तब अनेक विद्वान और बुद्धिमान नेताओकी बाढ आ जाती थी। कोअी बैरिस्टर, कोअी प्रोफेसर और कोअी रसायनशास्त्री, कोअी सर और कोअी नाअिट, कोअी माननीय, कोअी रावसाहब, कोअी खान बहादुर और कोअी दीवान बहादुर, अिस प्रकार विद्वत्तामे, भाषामे, लेखनमे, भाषण देनेमें, दलीलें करनेमे और पदवियां प्राप्त करनेमे जनताको आश्चर्यमे डालने-वाले अनेक नेताओकी कतार काग्रेस और परिषदोके मच पर जमा होती थी। यह सब सोचकर फिनिक्समे रहनेवाले अेक भाअीने गाधीजीसे पूछा .

प्रश्न "बापूजी, हम देशमें कहा रहेगे?"

अुत्तर "जहा अनुकूलता और अुचित स्थान मिल जायगा वही।"

प्रश्न "अनुकूलता और अुचित स्थान तो बहुत होगे। परन्तु हमे अेकाअेक अैसा स्थान कैसे मिल जायगा?"

अुत्तर "कोअी स्थान न देगा और अैसा स्थान प्राप्त करनेके लिअे हमारे पास पूजी नही होगी, तो अन्तमे कबा गाधीका राजकोटका झोपडा तो है ही। अुसीको हजम कर लेंगे। वही जाकर डेरा डाल देंगे।"

अेक और भाअीने सवाल किया "वहा जायगे तब हम बिलकुल अनजान होगे। अैसी हालतमें देशसेवाका क्या काम करेंगे?"

अुत्तर "जहा रहेंगे वहा अेक खेत ले लेंगे। अुसमे खेती करेंगे। कातने और बुननेका काम करेंगे। आसपासकी गदगी हटा कर जगह साफ करेंगे और भगवानकी प्रार्थना करके वातावरणको शुद्ध और पवित्र बनायेंगे।"

यह अुत्तर सुनकर अेक तीसरे भाअीने पूछा

"परन्तु देशमे तो लोग हमसे बडी-बडी आशायें लगाये बैठे होगे। यहासे सत्याग्रहकी लडाअीमें नअी विजय प्राप्त करके जायेंगे, अिसलिअे लोग तो हमारे बारेमे बडी बडी आशायें लगा कर आयेंगे। आपने कल कहा था कि आप देश जायेंगे तब काठियावाडी पगडी, अगरखा और धोती पहनेंगे। और आप यह भी चाहेंगे कि हम भी देशकी देहाती पोशाक पहने। प्रथम तो हमारे सघका यह देहाती ढग देख कर ही लोग निराश हो जायगे।"

अुत्तर "निराश क्यो होंगे? लोग हमे बनावटी अग्रेजोकी तरह टोपवाले न देखकर अपने ही जैसे पायेंगे, तो हमारे पास विश्वास और अुमगके साथ आयेंगे। हमारे शिक्षित भाअियोने अग्रेजी पोशाकके लिअे हमारे मनमे जो भ्रम पैदा कर दिया है वह दूर हो जायगा। हमारी देहाती पोशाकसे शिक्षित और अशिक्षित लोगोके बीच जो अतर होगा वह मिट जायगा। हम लोगोके अधिक नजदीक पहुच सकेंगे। हम अुन्हीके बन जायेंगे, अुनके हृदयमें स्थान प्राप्त कर सकेंगे। अुनके सुख-दु ख जल्दीसे जान सकेंगे और अुनके सुख-दु खमे भाग लेनेकी कोशिश करेंगे।"

अेक भाअी आतुरतासे बीचमें ही बोल अुठे "परन्तु बापूजी, देशमें आपसे लोग अैसी आशा रख कर नही बैठे होगे। वहा तो सर फीरोजशाह मेहता और सर सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी जैसे कौंसिलोको गूजाकर गवर्नर और वाअिसरॉयको हिलानेवाले धीर नेता है। आप अेक अहिंसक लडाअी जीत कर देशमें जायेंगे। जिस देशकी जनता अपनी गुलामीको दूर करनेके लिअे विदेशी सत्तासे लडी न हो, वह तो आपसे देशके लिअे योद्धा मागेगी। तब आप अुनके सामने किसे रखेंगे?"

अुत्तर "यह बात तुमने सच कही। अुस समय मै अपने योद्धाओको जनताके सामने पेश करूगा। अुस समय जनताको मै अपने योद्धाओका परिचय दूगा कि ये रहे मेरे योद्धा, जिन्होने देशकी सेवाके लिअे कअी बार कारावास भुगतकर जेलको महल माना है। ये रहे मेरे योद्धा जिन्होने देशकी सेवामें गरीबीका व्रत लेकर सारा जीवन अर्पण करनेका निश्चय किया है। ये रहे मेरे सिपाही जो देशसेवाके खातिर कोअी भी खतरा अुठानेको तैयार है। जरूरत पडने पर ये बीमारोकी सेवा कर सकेंगे और जरूरत पडने पर भूखे पेट रहकर भी अपना रोटीका टुकडा दूसरोके मुहमे डाल देंगे। जरूरत

पडेगी तो ये लोगोका मलमूत्र साफ करनेमे भी जी नही चुरायेगे और जरूरत हुअी तो हिन्दुस्तानके लिअे जेल जाने या फासीके तख्ते पर चढनेमें भी अिन्हे हिचकिचाहट नही होगी।

"अैसे अैसे वीर योद्धाओको मै हिन्दुस्तानकी जनताके चरणोमे अर्पण करूगा और यह भी देखूगा कि अुनके मुकावलेमे कौसिलो और असेम्वलियोको हिला देनेवाले नेता कैसे योद्धा पेश करते है। हिन्दुस्तानकी मुक्तिके लिअे राजा-महाराजा, राय वहादुर और खान वहादुर, सर और नाअिट या वकील और वैरिस्टर काम नही आयेगे। हिन्दुस्तानके अुद्धारके लिअे कौसिलो और असेम्वलियोको हिला देनेवाले भी काम नही आयेगे। हिन्दुस्तानकी मुक्तिके लिअे प्राण निछावर करनेवाले लोग चाहिये, त्यागी वीर और वीरागनाअे चाहिये। अपना सारा जीवन देशसेवाकी आगमे तपा देनेवाले साधुचरित, निडर, निर्भय, विरोधियोकी वन्दूककी गोलिया खुली छाती पर झेलनेवाले और फासीके तख्ते पर दौडते दौडते चढनेवाले वीर सत्याग्रही योद्धा चाहिये। मेरे पास जो पूजी है वह तो मै देशके चरणो पर धर ही दूगा। लेकिन मै यह भी तो देखूगा कि सारे देशमे अैसी पूजी अभी और कितनी है?"

अिस तरह विनोदमें गाधीजीने वहुत कुछ कह दिया। अेक वात तो वे वार-वार कहा करते थे "देशसेवाका मनोरथ दिलमे रखनेवाला कोअी भी युवक और कुछ नही तो छह आनेकी कुदाली खरीदकर खेतमे काम करेगा। वह वडे वकील-वैरिस्टरसे भी ज्यादा देशसेवा करता है, यह नया पाठ तो मै देशके सामने रखूगा ही।"

अिस प्रकार वातचीत और हसी-दिल्लगीमे हमारे आखिरी दिन वीते और स्वदेश-गमनकी तैयारी की गअी। फिनिक्समे प्रेस चलता रहे, साप्ताहिक पत्र 'अिण्डियन ओपीनियन' नियमित निकला करे, सत्याग्रह-सम्वन्धी दूसरा साहित्य भी प्रकाशित होता रहे, अिसके लिअे हममें से कुछके वही रहनेका प्रवन्ध किया गया। अन्य लोगोके लिअे यह निर्णय हुआ कि वे गाधीजीके साथ हिन्दुस्तान आयें। अुस समय श्री गोखले अिग्लैण्डमें थे। अुनकी यह अिच्छा थी कि गाधीजी हिन्दुस्तान आनेसे पहले अिग्लैण्डमे अुनसे मिल लें। श्री गोखले वीमार थे, अिसलिअे तुरन्त हिन्दुस्तान आ नही सकते थे। अत यह निश्चय हुआ कि गाधीजी अिग्लैण्ड जाये और वाकी लोग

हिन्दुस्तान जायें। अिस प्रकार श्री मगनलाल गाधीके नेतृत्वमे लगभग तीस फिनिक्सवासियोका यह सघ हिन्दुस्तान आया। और गाधीजी बा तथा मि० कैलनबैकके साथ अिग्लैण्ड गये। मि० कैलनबैकको हिन्दुस्तानमे आकर गाधीजीके साथ रहकर जीवनके नये-नये प्रयोग करनेका बडा अुत्साह था। परन्तु अुनके अिग्लैण्डकी हदमे घुसते ही १४ जुलाअी, १९१४ के दिन अिग्लैण्ड यूरोपीय युद्धमे फस गया। जर्मन होनेके कारण मि० कैलनबैकको सरकारने यह अिजाजत नही दी कि वे लडाअीके दरमियान गाधीजीके साथ हिन्दुस्तान आ जाये। गाधीजी श्रीमती कस्तूरबाके साथ अिग्लैण्डके अनुभवोकी बानगिया चखकर हिन्दुस्तान आ गये।

२२

अुपसंहार

दक्षिण अफ्रीकामें गाधीजीके जीवनके २१ वर्ष पूरे हुअे। सत्याग्रहकी लडाअी १९०६ में आरम्भ हुअी और १९१४ मे पूरी हुअी। अिस आठ वर्षके अर्सेमे लोगोने लडाअीका पानी अुतरते भी देखा और लडाअीके ज्वारकी प्रचड लहरे भी देखी। अतमें अिन लहरोसे दक्षिण अफ्रीकाकी यूनियन सरकार काप अुठी और अुसने सत्याग्रहके ज्वारकी अुछलती हुअी लहरोके सामने जाकर नम्र भावसे नमन किया और अुसके जोशको शान्त किया। आठ वर्षकी सत्याग्रहकी यह लडाअी गाधीजीके धार्मिक जीवनका महान प्रयोग थी। जिस सत्याग्रहकी वृत्ति पशुबलसे त्रस्त ससारको आतरिक शान्ति देनेवाली है, जिस सत्याग्रहके महान सग्रामको सारी दुनिया आज आशाभरी निगाहसे देख रही है, अुस सत्याग्रहका पहला प्रयोग गाधीजीने दक्षिण अफ्रीकामे किया। युगोसे होते आ रहे भयकर और क्रूर युद्धोमें मनुष्य मनुष्यके गले काटते है, भाअी भाअीकी गरदन काटते है, अेक-दूसरे पर भयकर अस्त्रशस्त्रोके साथ जगली भेडियोकी तरह टूट पडते है और अेक-दूसरेका खून पीते है, राक्षसी तोपो और दूसरे शैतानी साधनोकी मददसे लाखो मनुष्यो द्वारा हजारो वर्षके प्रयत्नसे जुटाअी हुअी जीवनकी सामग्रियोका पलभरमे नाश कर डालते है, और बादमे लडाअीका नशा, लाल खूनका नशा अुतरने पर थककर निराश हो जाते है और

ठडी आहे भरते है — अैसे नाजुक समय पर सत्याग्रहकी जो वृत्ति निराश और भयभीत आत्माओको विश्वास और आश्वासन देती है, अुस सत्याग्रह-वृत्तिकी साधना गाधीजीने अिन आठ वर्षोमें की।

आज भी ससार अैसी अुथल-पुथलसे थक कर अव शान्ति चाहता है। अैसी शान्ति आज तक भारतवर्ष ससारको देता आया है। भारतभूमिने जगतकी आध्यात्मिक धात्रीके रूपमे आज तक अपना कर्तव्य पूरा किया है। दुनियाकी अलग अलग प्रजाओकी अपनी कोअी न कोअी विशेषता होती ही है। और कुदरतकी अिस देनके आधार पर अिस जमानेमे प्रत्येक राष्ट्र प्रगतिके मार्गमें आगे वढ रहा है। पश्चिमके राष्ट्रोने अपने पुरुषार्थसे प्रगतिका विलक्षण वेग वताकर ससारको दिङ्मूढ वना दिया है। अितने पर भी प्रगति करनेवाले राष्ट्रोको, साहसके साथ अपनी नाव भर-समुद्रमे छोड कर तूफानमे फस जानेवाले नाविककी तरह, कही भी अपने जीवनका किनारा दिखाअी नही देता। भारत-भूमि अिन राष्ट्रोको आश्वासन देने और अुनकी जीवन-नौकाको तूफानसे वचानेके लिअे पैदा हुअी है। दक्षिण अफ्रीकाकी सत्याग्रहकी लडाअीके आठ वर्षका काल भविष्यकी महान क्रान्तिके प्रयोगका काल माना जा सकता है। अैसा मालूम होता है कि भगवानने गाधीजीको अिस प्रयोग-यज्ञकी वेदीका पुरोहित (अध्वर्यु) वनाया है। दक्षिण अफ्रीकाकी सस्कारहीन भूमिमे २१ वर्षकी कठिन तपश्चर्या करनेके वाद गाधीजीने सारे ससारके शान्तियज्ञके पुरोहितकी दीक्षा ली। जगतको सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक या धार्मिक अवोगतिके अधकारसे वाहर निकाल कर अुसे अुत्क्रान्तिके प्रकाशमें लानेका अेकमात्र रामवाण अुपाय सत्याग्रह ही है, यह पाठ अुन्होने जगतको सिखाया। हिन्दुस्तानने अज्ञानरूपी अधकारसे, आर्थिक अधोगतिसे और विदेशियोकी गुलामीसे मुक्त होकर विलकुल स्वतत्र होनेके लिअे जो शान्तिमय महायुद्ध छेडा है, अुसकी विजय निश्चित है। अुस विजयके मीठे और दीर्घजीवी फल भोगकर जगत शान्तिको प्राप्त करेगा। हजारो वर्ष वीत जायेंगे, गगा-यमुनाके पुण्य-प्रवाहके घर्षणसे वज्रके समान पर्वतोकी चट्टानोकी रेतके थर महासागरमे जम जायेंगे। जलकी जगह स्थल और स्थलकी जगह जल हो जायगा। फिर भी भारतभूमिके अिस सत्याग्रह-युद्धका मुक्तिदाता मत्र महासागरोके अुस पार देश-देशान्तरमें और निर्जन वन या मरुस्थलके वातावरणमें गूजा करेगा। हजारो वर्ष वादकी प्रजायें सत्याग्रहके अिस

महान प्रयोगके जन्मस्थान दक्षिण अफ्रीकाकी भूमिको पवित्र तीर्थके समान मानेंगी और हजारो यात्री अुसकी यात्राके लिअे जायेंगे।

भविष्यके गर्भमें क्या छिपा है, अिसका मनुष्यको कैसे पता चले ? परन्तु अितिहासकी पुनरावृत्तिया भूतकालमें भी अनेक हुअी है और आज भी हो रही है। ससारके अिम होते आ रहे निश्चित अनुभवसे हम कह सकते है कि दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोकी सत्याग्रहकी लडाअी, हिन्दुस्तानियोका अुस ममयका तप, त्याग और सहनगीलता, सत्याग्रहके मत्रदाताके रूपमें गाधीजीकी कुशलता, सत्यप्रियता, वीरता, त्यागवृत्ति, धर्म, श्रद्धा, निर्भयता और निश्चलता—ये सव भविष्यके गर्भमें छिपे हुअे महा अनलकी मूल चिनगारिया है। दक्षिण अफ्रीकाके डेढ लाख हिन्दुस्तानियो द्वारा मुलगाअी हुअी चिनगारियोने पिछले पन्द्रह वर्षोंमें हिन्दुस्तानके पैतीस करोड हृदयोमें कैसा प्रचड रूप धारण किया है और अुनकी ज्वालाका तेज कितनी दूर समुद्र-पारके देशोमें पहुच गया है, यह देखनेके वाद भविष्यकी कल्पना हमें आसानीसे हो सकती है।

अैसे भव्य महा अनलकी चिनगारी जिस साधनासे प्रकट हुअी, अुसका मैंने जितना मुझे मालूम था अुतना वर्णन अिन प्रकरणोमे किया है। अुसमें कोअी कूटनीतिज्ञताके पाठ नही, राजनीतिज्ञोकी कारस्तानिया नही, सेना या हत्यारे साधनोकी सहार-लीला नही, घृणा और वैरका वातावरण नही, रक्तपात नही और खून-खच्चर भी नही है। परन्तु अुसमें जैसा शुद्ध हेतु है वैसे ही शुद्ध साधन है, और वैसा ही शुद्ध परिणाम भी नजर आता है।

हेतु सत्यका पालन और अुससे प्राप्त होनेवाला मनुष्यमात्रका कल्याण।

साधन अहिंसा-वृत्तिसे आत्मशुद्धि करके मानव-सेवा करनेमें जो भी दु ख आ पडे अुसे प्रेमसे सहना, शरीर-वलसे अुसका प्रतिकार न करना, परन्तु प्रेमभाव, सहनशीलता तथा आत्मत्यागसे अुसका प्रतिकार करना।

परिणाम शुभ तथा जालिमो और पीडितो दोनोके लिअे कल्याणकारक। घृणा और वैरभाव मिट कर शाति स्थापित होती है, प्रेमभावकी वृद्धि होती है और लोगोकी खुशहाली वढती है।

दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोने अुपरोक्त हेतुसे और शुद्ध साधनोसे शुभ परिणाम प्राप्त किया। अिस लडाअीमें अुन्होने स्वय वडे वडे कष्ट

सहन किये। अुसमे कुछ लोगोके वलिदान दिये गये, वहुतोकी जमीन-जायदादको नुकसान पहुचा। परन्तु अुन्होने अैसा कोअी काम नही किया, जिससे विरोधी पक्षके जानमालकी हानि हो, और स्वय अपने जानमालकी कमसे कम हानिसे अिच्छित वस्तु प्राप्त की। अुसके परिणामस्वरूप दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी आज तक वहा टिके हुअे है। अितना ही नही, दूसरे अुपनिवेशोमें भी वे टिके हुअे हैं। यह अुस लडाअीका स्थूल परिणाम हैं। अुसका सूक्ष्म परिणाम अुसकी आध्यात्मिकता हैं, जिसके वल पर अिस समय हिन्दुस्तानकी जनता निर्भय होकर अुसी अहिंसाके रास्ते पैंतीस करोड मनुष्योकी आजादी हासिल करनेके लिअे लड रही है। भगवान अुसे वीरतासे लडनेकी शक्ति दे और विजयी वनाये!

परिशिष्ट

१

सत्याग्रहकी अन्तिम लड़ाओीका मेरा अनुभव

अन्तिम लडाओीको बहुत अर्सा हो गया है। अुसके अनुभव लिखनेका मुझे समय ही नही मिला। अुसमें मिले हुये अनुभवोका लाभ 'अिंडियन ओपीनियन' के पाठकोको देना था। पाठकोको याद रखना चाहिये कि अन्तिम लडाओी अुस सत्याग्रहका तीसरा प्रकरण थी। पहला प्रकरण पूरा हुआ तब हमने — मैंने तो जरूर — अुसे अन्तिम समझा था। परन्तु जब दूसरा प्रकरण शुरू होनेका समय आया तब बहुतेरे लोग मुझसे कहने लगे कि अब कौन लडेगा? कौम बार-बार अितनी शक्ति नही दिखा सकेगी। जब मैंने यह सुना तो मैं हसा था। सत्य पर मेरी अचल श्रद्धा थी। मैंने जवाब दिया "लोगोको अेक बार मजा आ गया है, अिसलिअे अब वे अधिक जोरसे लडेंगे।" हुआ भी वैसा ही। पहली बार सौ दो सौ हिन्दुस्तानी जेलमे गये। दूसरी बार सैकडो गये। अितना ही नही, नेटाल जाग गया और वहाके नेता सत्याग्रहमें भाग लेने आये। लडाओी खूब लम्बी चली, लेकिन जोर कम नही हुआ और हम आगे ही बढते गये। अन्तिम लडाओीमें तो मैंने हारकी ही बाते सुनी। "बार बार सरकार तुम्हें दगा दे, तुम धोखेमे आओ और बार बार लोग खड्डेमें गिरें, यह हो ही नही सकता।" — अैसी कडवी बातें मुझे सुननी पडती थी। मै खूब समझता था कि सरकारके दगेके सामने मेरी या किसी औरकी चल नहीं सकती। हम प्रामिसरी नोट लिखवाते है, परन्तु हस्ताक्षर करनेवाला अिन्कार करे या दिवालिया हो जाय, तो अिसमें लिखवानेवालेका क्या दोष? मैं तो जानता था कि सरकार वचन-भग करेगी तो जैसे हमें ज्यादा मेहनत करनी पडेगी वैसे ही अुसे ज्यादा देना पडेगा। कर्जदार कर्ज चुकानेमे जितना ज्यादा समय लगायेगा अुतना ही अुसे ज्यादा बोझा अुठाना पडेगा। यह अटल नियम सासारिक और धार्मिक दोनो तरहके ऋण पर लागू होता है। मैंने यह भी जवाब दिया कि, "सत्याग्रहकी लडाओी अैसी है कि अुसमें हारने

या पछतानेकी बात ही नही रहती। वह लडाअी हमेशा मनुष्यको अधिक बलवान बनाती है। अुसमें थकान नही लगती और हर मजिल पर आदमीकी ताकत बढती है। अगर हममे सचाअी होगी तो हिन्दुस्तानी कौम अिस बार ज्यादा काम करेगी और अपना नाम ज्यादा रोशन करेगी।" जब मैने यह जवाब दिया तब मुझे सपनेमे भी खयाल नही था कि बीस हजार दलित-पीडित हिन्दुस्तानी जाग अुठेगे और अपना नाम तथा अपने देशका नाम अमर कर देगे। जनरल बोथाने अपने अेक भाषणमे कहा है कि हिन्दुस्तानियोने जैसी हडताल की और कायम रखी, वैसी गोरे न तो कर सके और न कायम रख सके। अन्तिम लडाअीमे स्त्रिया शामिल हुअी, सोलह वर्षके जवान लडके बडी सख्यामे सम्मिलित हुअे और लडाअीने बहुत बडा धार्मिक रूप ग्रहण किया। दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोकी बात सारी दुनियामे फैल गअी और हिन्दुस्तानमे गरीब और अमीर, जवान और बूढे, पुरुष और स्त्री, राजा और प्रजा, हिन्दू, मुसलमान, पारसी और अीसाअी, बम्बअीवाले, मद्रासवाले, कलकत्तेवाले और लाहौरवाले सब जागे, सब हमारे अितिहाससे परिचित हुअे और सब हमे मदद देने लगे। बडी सरकार चौकी और वाअिसरॉयने जनताका रुख देखकर जनताका पक्ष लिया। ये सब विश्वविदित बाते है। ये बाते मै लडाअीका महत्त्व बतानेके लिअे लिख रहा हू। यह लेख लिखनेका मेरा मुख्य हेतु यह है कि जिन बातोसे मै अधिक परिचित हू, जिनका हिन्दुस्तानको पता नही है और जिनका दक्षिण अफ्रीकामे रहनेवाले हिन्दुस्तानी भाअियोको भी पूरा भान नही है, अुन बातोका मै दर्शन करा दू।

टॉल्स्टॉय फार्ममे जो तालीम ली गअी वह सब अिस अन्तिम लडाअीमें काम आअी। सत्याग्रहियोने जो जीवन वहा बिताया, वह अिस लडाअीमे अमूल्य साबित हुआ। अुसी जीवनकी नकल अधिक अच्छे रूपमें फिनिक्समें की गअी। जब टॉल्स्टॉय फार्म बन्द किया गया तब अुसमे रहनेवाले जो विद्यार्थी आनेको तैयार थे वे फिनिक्समें आ गये। फिनिक्समे नियम कठोर बने। प्रत्येक विद्यार्थी और अुसके मा-बापके साथ यह शर्त थी कि जो विद्यार्थी फिनिक्समें रहेगे वे यदि बालिग हो तो अुन्हे दुबारा लडाअी छिडने पर अुसमें शरीक होना पडेगा। सच पूछा जाय तो फिनिक्समे मुख्य शिक्षा ही सत्याग्रहकी हो गअी। फिनिक्समें रहनेवाले कुटुम्बो पर भी यह नियम लागू हो गया। अुसमे सिर्फ अेक ही परिवार अलग रहा। अिसका

नतीजा यह हुआ कि फिनिक्सको चलानेके लिअे जितने आदमियोकी जरूरत थी अुनके सिवा वाकी सव लडाअी छिडी तव अुसमें भाग लेनेको तैयार थे। अिसलिअे तीसरी लडाअीकी शुरुआत फिनिक्सवालोसे हुअी। जव स्त्रिया, पुरुष और वच्चे लडाअीमें शामिल होनेको निकले अुस समयका दृश्य तो मैं भूल ही नही सकता। प्रत्येककी अेक ही भावना थी यह लडाअी धर्मयुद्ध है और हम तीर्थयात्राके लिअे निकले है। चलते समय अुन्होने जो भजन-कीर्तन किया अुसमेंका अेक प्रसिद्ध भजन है "सुख-दु ख मनमा न आणीअे।"[1] अुस मौके पर जो आवाज वच्चो, स्त्रियो और पुरुषोंके मुहसे निकल रही थी अुसकी गूज अभी तक मेरे कानोमें मौजूद है। अिस सघके साथ ही महान पारसी रुस्तमजी थे। वहुतोका खयाल था कि मि० रुस्तमजीने पिछली वार अितना दु ख भोगा है कि वे अव लडाअीमे शरीक नही होगे। अैसा कहनेवाले मि० रुस्तमजीकी महत्ताको नही जानते थे। औरतें और वच्चे जाये और वे घर वैठे रहें, यह अुनसे वर्दाश्त ही नही हो सकता था। मुझे अुस समयकी दो और घटनाअे याद आ रही है। मि० रुस्तमजी और अुनके केसरी सिंह जैसे लडके सोरावजीमें स्पर्धा हुअी। सोरावजी कहते थे कि "वावा, मुझे जाना है, अपनी जगह मुझे जाने दो या मुझे भी साथ ले चलो।"

दूसरी घटना स्व० हुसैनमियाके साथ मि० रुस्तमजीकी मुलाकातकी थी। मि० रुस्तमजी अुनसे मिलने गये तव अुनकी आखोसे आसुओकी धारा वह चली और अुन्होने कहा "चाचाजी, मैं अच्छा होता तो आपके साथ जेल आता।" भाअी हुसैनका देशके प्रति वहुत अधिक प्रेम था। अुन्होने विस्तर पर पडे पडे भी लडाअीको सहारा दिया और जो कोअी अुनसे मिलता अुसके साथ वे लडाअीकी ही वाते करते थे।

फिनिक्समे जो लोग वचे रहे, अुनमें सोलह वर्षसे कम अुम्रके लडके भी थे। अुन्होने और कार्यकर्ताओने जेलसे वाहर रह कर भी जेल जानेवालोसे अधिक काम करके वता दिया। अुन्होने रात-दिनका भेद मिटा दिया, अपने साथियो और वडोके छूटने तक कडे व्रत लिये, अलौने भोजन पर गुजर किया और जोखिमके काम भी वेधडक होकर अपने सिर ले लिये। जव विक्टोरिया काअुण्टीमें हडताल हुअी, तव सैकडो गिरमिटियोने फिनिक्समें आसरा लिया। अुनकी सभाल करना वडा भारी काम था। गिरमिटियोके मालिकोकी तरफसे

---

[1] मनमें सुख-दु ख न लायें।

धावा होनेका डर रहते हुअे भी निडरतापूर्वक काम करते रहना दूसरी बडी विशेषता थी। पुलिस वहा गअी और मि० वेस्टको पकड ले गअी, और लोगोके पकडे जानेकी भी सभावना थी। अिन सब बातोकी तैयारी रखी, परन्तु अेक भी आदमी फिनिक्समे विचलित नही हुआ। मै अूपर कह चुका हू कि अिसमे सिर्फ अेक ही कुटुम्ब अपवाद रहा। अिस अवसर पर फिनिक्सके कार्य-कर्ताओने कौमकी जो सेवा की, अुसका अन्दाज हिन्दुस्तानी कौम लगा नही सकती। यह गुप्त अितिहास अभी तक लिखा नही गया है, अिसलिअे अुसका कुछ भाग मै यहा दे देता हू, वह अिस आशासे कि किसी दिन कोअी जिज्ञासु ज्यादा हकीकते जानकर फिनिक्सके कार्यकर्ताओके कार्यका मूल्य कुछ हद तक आक सकेगा। मुझे अधिक लिखनेका लोभ होता है, परन्तु फिनिक्सको यही छोड देता हू।

फिनिक्सका दल जेल चला गया तो जोहानिसबर्गसे नही रहा गया। वहा भी औरते अधीर हो गअी। अुनमे जेल जानेका बहुत ही अुत्साह था। मि० थबी नायडूका सारा परिवार तैयार हो गया। अुनकी पत्नी, साली, सास, मि० मुरगनकी सम्बन्धी बहने, श्रीमति पी० के० नायडू, अपना नाम अमर कर जानेवाली बहन वालियामा और दूसरी स्त्रिया तैयार हुअी। वे गोदमे बच्चोको लेकर निकल पडी। मि० कैलनबैक अुन्हे लेकर फ्रीनीखन गये। वहा जानेमे यह आशा थी कि वे फ्री स्टेटकी सरहद पर जाकर लौटते समय पकडी जायगी, लेकिन अुनकी अुम्मीद बर न आअी। अुन्होने कुछ दिन दुःख-सुखमे फ्रीनीखनमे बिताये। वहा टोकरियोमे सामान लेकर फेरी लगाते हुअे पकडे जानेकी कोशिश की, लेकिन किसीने अुन्हे पकडा नही।

परन्तु अिस निराशामे अमर आशा छिपी हुअी थी। अगर अुन स्त्रियोको सरकारने फ्रीनीखनमे ही पकड लिया होता तो शायद हडताल न होती। यह तो निश्चित है कि जिस पैमाने पर हडताल पडी अुस पैमाने पर तो वह हरगिज न पडती। लेकिन कौमके सिर पर अीश्वरका हाथ था। वह सदा सत्यका बेली है। अुन स्त्रियोको न पकडा गया, अिसलिअे यह तय हुआ कि वे नेटालकी हदको पार करें। अगर वहा भी अुन्हे न पकडा जाय तो वे मि० थबी नायडूके साथ न्यूकैसलको अपना केन्द्र बनायें। वे नेटालके लिअे रवाना हुअी। सरहद पर भी पुलिसने अुन्हें नही पकडा। अब न्यूकैसलको अुन्होने अपना घर बनाया। वहा मि० डी० लेजरसने अपना घर अुनको सौप दिया और अुनकी

स्त्री और साली मिस थामसने अिन सत्याग्रही स्त्रियोकी सेवा करनेकी जिम्मेदारी ले ली।

निश्चय यह था कि ये स्त्रिया न्यूकैसलमें गिरमिटियोकी स्त्रियोसे और गिरमिटियोसे मिलें, अुन्हे अुनकी हालतका सच्चा चित्र बतायें और तीन पौण्डके करके बारेमें हडताल करनेको समझायें। फिर जब मै न्यूकैसल पहुचू तब हड-ताल की जाय। परन्तु अिन स्त्रियोकी अुपस्थिति तो सूखे औधनमे दियासलाओका काम कर गओ। गादी-तकियोके बिना न सोनेवाली और शायद ही कभी मुह खोलनेवाली अिन स्त्रियोने गिरमिटियोमें सार्वजनिक भाषण दिये। वे जागे और मेरे पहुचनेमे पहले ही अुन्होने हडताल करनेका आग्रह किया। काम बडा जोखिम भरा था। मुझे मि० नायडूका तार मिला। मि० कैलनबैक न्यूकैसल गये और हडताल शुरू हुआी। मै न्यूकैसल पहुचा तब तक तो दो कोयलेकी खानोके हिन्दुस्तानी मजदूर काम बन्द भी कर चुके थे।

मि० हॉस्केनकी अध्यक्षतामें काम करनेवाली यूरोपियन सहायक समितिने मुझे बुलाया। मै अुनसे मिला। अुन्होने हमारे आन्दोलनको पसन्द करके प्रोत्साहन देनेका निश्चय किया। मै अेक दिन जोहानिसबर्गमें रह कर न्यूकैसल पहुचा और वहा ठहरा। मैने देखा कि लोगोमें अपार अुत्साह था। अिन स्त्रियोकी मौजूदगी सरकार बरदाश्त न कर सकी और अुन्हें आवारा होनेके अभियोगमे जेल भेज दिया। अब मि० लेजरसका घर सत्याग्रहकी धर्मशाला बन गया। वहा सैकडो गिरमिटियोके लिअे खाना पकानेका बन्दोबस्त करना पडा। अिससे मि० लेजरस घबराये नही। न्यूकैसलके हिन्दुस्तानियोने अेक कमेटी बनाओ। मि० सिदात अुसके अध्यक्ष नियुक्त हुअे। काम धडल्लेसे चला। और भी खानोके हिन्दुस्तानियोने काम बन्द कर दिया। अिस प्रकार खानोके हिन्दुस्तानी मजदूर जब काम बन्द करते चले गये, तो कोयलेके मालिकोकी सस्थाकी बैठक हुआी। मुझे वहा बुलाया गया। अुनके साथ मेरी खूब बातचीत हुआी, परन्तु प्रश्नका निपटारा नही हुआ। अुनकी माग यह थी कि हम हडताल बन्द कर दे तो वे सरकारको तीन पौण्डके करके बारेमें लिखें। अिसे कभी सत्याग्रही मजूर कर सकते थे? हमारा मालिकोके साथ वैर नही था। हडतालका हेतु मालिकोको दु ख देना नही था, बल्कि स्वय दु ख अुठाना था। अिसलिअे कोयलेके मालिकोकी सलाह मानने लायक नही थी। मै न्यूकैसल वापस आया। अिस बैठकका परिणाम मैने बताया तो मजदूरोका अुत्साह और भी बढा। और अधिक खानोमे काम बन्द हुआ।

अब तक मजदूर अपनी अपनी खानोमे रहते थे। न्यूकैसलकी कार्य-कारिणीने सोचा कि जब तक गिरमिटिये अपने मालिकोकी जमीन पर रहेंगे, तब तक हडतालका पूरा असर नही पडेगा। यह डर था कि वे लालच या डरमें आकर काम शुरू कर देगे। और मालिकका काम न करते हुअे भी अुसके मकानमे रहना या अुसका नमक खाना अनीति होगी। अिस तरह गिरमिटियोका खानो पर रहना दोषपूर्ण था। अन्तिम दोष सत्याग्रहके शुद्ध प्रयासको मलिन बनानेवाला मालूम हुआ। दूसरी तरफ, हजारो हिन्दुस्तानियोको कहा रखा जाय और अुन्हे कैसे खाना खिलाया जाय, यह अेक बडा प्रश्न था। मि० लेजरसका मकान अब बहुत छोटा मालूम होने लगा। अैसा लगा कि बेचारी दो स्त्रिया रात-दिन मेहनत करके भी काम नही निपटा सकती थी। फिर भी हर तरहकी जोखिम अुठाकर भी सही चीज ही करनेका निश्चय हुआ। गिरमिटियोको अपनी खाने छोडकर न्यूकैसल आ जानेके समाचार भेज दिये गये। यह खबर मिलते ही खानोमे से कूच शुरू हो गअी। बेलगीकी खानके हिन्दुस्तानी पहले आ पहुचे। न्यूकैसलमे अैसा दृश्य खडा हो गया जैसे सदा यात्रियोका सघ ही आता रहता हो। जवान, बूढे और औरतें। कोअी स्त्री अकेली और कोअी गोदमें बच्चोवाली, परन्तु सब अपने सिरो पर गठरी लिये होती थी। मर्दोंके सिर पर पेटिया होती थी। कोअी दिनको आ पहुँचते तो कोअी रातको। अुनके लिअे भोजनका प्रबन्ध करना पडता था। अिन गरीब आदमियोंके सतोषका मैं क्या वर्णन करू? जो मिल गया अुसीमें वे सुख मान लेते थे। शायद ही कोअी रोता देखा जाता था। सबके चेहरो पर हसी खिली रहती थी। मेरी दृष्टिमें तो वे तैंतीस करोड देवताओंमें मे थे। स्त्रिया देवीरूप थी। अुन सबको आश्रय कहा दिया जाय? सोनेके लिअे जमीन पर घास और अूपर आकाशका छत था। अीश्वर अुनका रक्षक था। किसीने बीडी मागी। मैंने समझाया कि वे गिरमिटियाके रूपमें नही निकले है, वे हिन्दुस्तानके सेवकोके रूपमें निकले है। वे धार्मिक लडाअीमें शामिल हुअे है। अैसे समय अुन्हे शराब, तम्बाकू वगैरा व्यसन छोडने चाहिये। जो न छोडें अुन्हे सार्वजनिक रुपयेसे अपनी जरूरते पूरी करनेकी आशा नही रखनी चाहिये। अुन साधु पुरुषोने मेरी यह सलाह मान ली और अुसके बाद किसीने बीडीके लिअे पैसे खर्च करनेकी मुझसे माग नही की। अिस प्रकार खानोंमें से मजदूरोकी कतार पर कतार आनी शुरु हुअी। अिसमें अेक

स्त्रीको, जो गर्भवती थी, रास्तेमे गर्भपात हो गया। अैसे अनेक दुःख अुठाने पर भी कोअी थका नही, कोअी पीछे नही हटा।

न्यूकैसलमे हिन्दुस्तानियोकी आवादी वहुत वढ गअी। हिन्दुस्तानियोकी जगहे भर गअी। अुनसे जितने मकान मिल सके अुतनोमें स्त्रियो और वूढोका समावेश हो गया। यहा यह कहना चाहिये कि न्यूकैसलके गोरोकी आवादीने वहुत विनय दिखाया। अुन्होने सहानुभूति भी दिखाअी। किसी भी हिन्दुस्तानीको तग नही किया। अेक भली महिलाने अपना मकान मुफ्त अिस्तेमाल करनेको दे दिया। और भी छोटी छोटी मदद वहुतसे गोरोकी तरफसे मिलती रहती थी।

परन्तु अैसी स्थिति नही थी कि न्यूकैसलमे हजारो हिन्दुस्तानियोको सदाके लिअे रखा जा सके। मेयर घवराये। न्यूकैसलकी आवादी आम तौर पर तीन हजारकी मानी जाती थी। अैसे गावमे दूसरे दस हजार आदमी हरगिज नही समा सकते थे। दूसरी खानोके मजदूर भी काम वन्द करने लगे। अिसलिअे यह सवाल अुठा कि अव क्या किया जाय। हडतालका मकसद जेल जानेका था। सरकार चाहती तो मजदूरोको पकड सकती थी। परन्तु हजारोके लिअे अुसके पास जेल ही नही थी। अिसलिअे अभी तक अुसने मजदूरोको पकडा नही था। तो अव सरल अुपाय यही रह गया था कि ट्रान्सवालकी हद लाघ कर पकडे जाय। यह भी लगा कि अैसा करनेसे न्यूकैसलमें भीड कम हो जायगी और हडतालियोकी अधिक परीक्षा भी हो जायगी। न्यूकैसलमें खानोके जासूस हडतालियोको प्रलोभन दे रहे थे। परन्तु अेक भी मजदूर नही टूटा। फिर भी अिस लालचसे अुन्हे दूर रखना कार्यकारिणीका फर्ज था। अिन कारणोसे न्यूकैसलसे चार्ल्सटाअुन तक कूच करना ठीक मालूम हुआ। रास्ता लगभग ३५ मीलका था। हजारो आदमियोके लिअे रेल-किराया खर्च नही किया जा सकता था। अिसलिअे निश्चय हुआ कि सव मजवूत पुरुष और स्त्रिया पैदल जायें। जो स्त्रिया न चल सकें अुन्हे रेलमें ले जाना तय हुआ। रास्तेमे पकडा-धकडी होनेकी सभावना थी। फिर यह अपने ढगका पहला ही अनुभव था। अिसलिअे यह निश्चय हुआ कि पहला दल मैं ले जाअू। पहले दलमें लगभग ५०० व्यक्ति थे। अुनमे लगभग ६० स्त्रिया अपने वच्चो सहित थी। अिस दलका दृश्य मैं कभी भूल नही सकता। दल 'द्वारकानाथकी जय', 'रामचन्द्रजीकी जय', 'वन्दे

मातरम्' आदि नारे लगाता हुआ चलता था। दो दिन चल सकने लायक दाल-चावल हरअेकके पल्लेमे बाध दिये गये। सब अपनी अपनी गठरिया बाधकर चल पडे। अुन्हे नीचे लिखी शर्ते सुना दी गअी थी

(१) मै पकडा जाअू अैसी सभावना है। अगर अैसा हो जाय तो भी दलको कूच जारी रखनी चाहिये और जब तक वे खुद न पकडे जाये तब तक चलते रहना चाहिये। रास्तेमे खाने-पीनेका वन्दोवस्त करनेकी पूरी कोशिश की जायगी। फिर भी किसी दिन खानेको न मिले तो भी सतोष रखना चाहिये।

(२) लडाअीमे शामिल रहने तक शराब वगैराका व्यसन छोड देना चाहिये।

(३) मरते दम तक पीछे न हटना चाहिये।

(४) रास्तेमे रात पड जाय तो मकानकी आशा न रखकर घास पर पडे रहना चाहिये।

(५) रास्तेमे आनेवाले पेड-पत्तोको जरा भी नुकसान न पहुचाना चाहिये और पराअी चीजको बिलकुल न छूना चाहिये।

(६) सरकारी पुलिस पकडने आये तो गिरफ्तार हो जाना चाहिये।

(७) पुलिसका या किसीका भी सामना नही करना चाहिये। मार पडे तो अुमे सहन करना चाहिये और बदलेमे वार करके अपना बचाव नही करना चाहिये।

(८) जेलमे जो दु ख आये अुन्हे सहन करना चाहिये। और जेलको महल समझकर अुसमे दिन बिताना चाहिये।

अिस सघमें सभी वर्णके लोग थे। हिन्दू थे, मुसलमान थे, ब्राह्मण थे, क्षत्रिय थे, वैश्य थे और शूद्र भी थे। कलकतिया थे और तामिल थे। कुछ पठानो और अुत्तरकी तरफके मिन्धियोको मार खाकर भी अपना बचाव न करनेकी शर्त कडी लगी थी। परन्तु अुन्होने यह शर्त खुशीसे मान ही नही ली, बल्कि परीक्षाका समय आने पर अपना बचाव भी नही किया।

पहले दलकी कूच अैसी स्थितिमे शुरू हुअी। पहली ही रातको जगलमें घास पर सोनेका अनुभव हुआ। रास्तेमें लगभग डेढ सौ आदमियोके लिअे वारट मिले। वे खुशीसे गिरफ्तार हो गये। पकडनेको अेक ही पुलिस अफसर आया था। अुसके साथ और कोअी मदद न थी। पकडे हुअे लोगोको किस

तरह ले जाय, यह सवाल अुसके सामने खडा हो गया। हम चार्ल्सटाअुनसे सिर्फ छह मील दूर थे। अिसलिअे मैंने पुलिस अफसरसे कहा कि पकडे हुअे आदमी भले ही हमारे साथ कूच करें और अुन्हें चार्ल्सटाअुनमें पकड लिया जाय, या आप अपने अफसरसे पूछकर अुसके हुक्मके मुताबिक करे। अफसर मेरे सुझावको मानकर चला गया। हम चार्ल्सटाअुन पहुचे। चार्ल्सटाअुन बहुत छोटा गाव है। अुसकी आबादी मुश्किलसे अेक हजार आदमियोकी होगी। अुसमें अेक ही आम रास्ता है। हिन्दुस्तानियोकी आबादी बहुत थोडी है। अिसलिअे हमारे सघको देखकर गोरोको आश्चर्य हुआ। चार्ल्सटाअुनमे अितने हिन्दुस्तानी कभी आये नही थे। पकडे गये लोगोको न्यूकैसल ले जानेके लिअे गाडी तैयार नही थी। पुलिस अुन्हे कहा रखे? चार्ल्सटाअुनके थानेमें अितने कैदियोको रखनेकी जगह नही थी। अिसलिअे पुलिसने गिरफ्तार किये हुओको मुझे सौंप दिया और अुनके खानेके दाम चुका देना मजूर किया। अिसे सत्याग्रहका थोडा सम्मान नही कहा जा सकता। साधारणतया हममें से पकडे हुअे कैदियोको हमें सौपा ही कैसे जा सकता है? अुनमें से कोअी चला जाय तो हमारी जिम्मेदारी नही मानी जा सकती थी। लेकिन सब लोग यह समझने लग गये थे कि सत्याग्रहीका काम तो गिरफ्तार होना ही है। अिसलिअे हम पर अुनका विश्वास जम गया था। अिस प्रकार पकडे हुअे लोग चार दिन तक हमारे साथ रहे। जब पुलिस अुन्हे ले जानेको तैयार हुअी, तब वे खुशीसे चले गये।

दलोकी भरती होती रही। किसी रोज चार सौ तो किसी रोज अिससे भी ज्यादा। बहुत लोग पैदल चलते और स्त्रिया मुख्यत गाडीसे आती। चार्ल्सटाअुनके हिन्दुस्तानी व्यापारियोके मकानोमें जहा जगह थी वहा अुन्हे ठहराया गया। वहाके कार्पोरेशनने भी मकान दिये। गोरे बिलकुल तग न करते थे, अितना ही नही, वे मदद भी देते थे। वहाके डॉक्टर ब्रिस्कोने मुफ्त अिलाज करनेकी जिम्मेदारी ली और हम जब चार्ल्सटाअुनसे आगे बढे तब अुन्होने कीमती दवायें और कितने ही अुपयोगी औजार हमें मुफ्त दिये। खाना मस्जिदके मकानमें बनता था। चूल्हा दिन-रात जलाना पडता था। खाना बनानेवाले हडतालियोमें से ही तैयार हो गये थे। अतिम दिनोमें चारसे पाच हजार मनुष्योको खिलाना पडता था। फिर भी ये मजदूर कायर नही बने। सुबह मक्कीके आटेकी काजी शक्कर डालकर दी जाती थी और अुसके साथ रोटी।

शामको चावल, दाल और शाक दिया जाता था। दक्षिण अफ्रीकामे लगभग सभी लोग तीन समय खानेवाले होते है। गिरमिटिये हमेशा तीन बार खाते है, परन्तु लडाअीमें अुन्होने दो बारसे सन्तोष किया। वे सूक्ष्म स्वाद लेनेवाले भी होते है। परन्तु वह स्वाद भी अुन्होने यहा छोड दिया।

अिन झुण्डके झुण्ड जमा हुअे लोगोका क्या किया जाय, यह विचार करने लायक प्रश्न बन गया। चार्ल्संटाअुनमे सुविधा-असुविधा सहकर भी अितने ज्यादा मनुष्योको लम्बे अर्से तक रखा जाय, तो रोगके फूट निकलनेकी सभावना थी। हमेशा काम करनेवाले हजारो मनुष्य बेकार बैठे रहे, यह भी ठीक नही था। यहा यह कह देना जरूरी है कि अितने गरीब आदमियोके जमा होने पर भी चार्ल्संटाअुनमे अुनमे से किसीने चोरी नही की। पुलिसकी जरूरत किसी समय नही पडी। और न पुलिसको किसी समय ज्यादा काम करना पडा। तो भी अुत्तम मार्ग यही मालूम हुआ कि अब चार्ल्संटाअुनमे बैठे न रहे। अिसलिअे ट्रान्सवालमे घुसनेका और अगर अत तक न पकडे जाय तो टॉल्स्टॉय फार्म पहुचनेका निश्चय किया गया। कूच करनेसे पहले हमने सरकारको खबर दी कि हम गिरफ्तार होनेके खातिर ट्रान्सवालमें घुसेंगे। हमें वहा रहना नही है, वहाके हकोकी अिच्छा भी नही है, परन्तु जब तक सरकार हमें नही पकडेगी तब तक हम अपनी कूच जारी रखेंगे। अतमे हम टॉल्स्टॉय फार्म पर डेरा डालेगे। अगर सरकार तीन पौण्डका कर अुठा देनेका वचन दे, तो हम वापस जानेको तैयार रहेगे। सरकारके मनकी अैसी स्थिति नही थी कि वह अिस नोटिस पर ध्यान देती। अुसके जासूस अुसे बहका रहे थे। वे यह समझा रहे थे कि लोग थक जायगे। सरकारने सब भाषाओमे नोटिस छपवाकर हडतालियोमें बाटे थे।

अतमें चार्ल्संटाअुनसे भी आगे बढनेका समय आ पहुचा। ६ नवम्बरको तडके ही तीन हजार लोगोका सघ रवाना हुआ। सारी कतार अेक मीलसे ज्यादा लबी थी। मि० कैलनबैक और मै पिछले हिस्सेमें थे। सघ सरहद पर पहुचा तब पुलिस दल वहा मौजूद था। हम दोनो वहा जा पहुचे और पुलिसके साथ हमारी बातचीत हुअी। अुसने हमें पकडनेसे अिनकार कर दिया। अिसलिअे जुलूस अनुशासनके साथ और शान्तिपूर्वक फॉक्सरस्टके बीचमे निकला। शहरके बाहर स्टैण्डर्टन रोड पर जाकर सबने पडाव डाला। सबने भोजन किया। यह प्रबन्ध किया गया था कि स्त्रिया कूचमें

शामिल न हो, फिर भी अुनके जोशकी वाढको रोकना मुश्किल हो गया और कुछ स्त्रिया भी शामिल हो गओ। परन्तु कुछ स्त्रिया और वच्चे अभी तक चार्ल्सटाअुनमें ही थे। अुनकी देखभाल करनेके लिअे मि० कैलनवैकको फॉक्सरस्टकी हद लाघनेके वाद वापस भेज दिया।

दूसरे दिन पामफर्डसे आगे पुलिसने मुझे पकड लिया। मुझ पर प्रवेशका अधिकार न रखनेवाले आदमियोको ट्रान्सवालमें लानेका अिलजाम था। औरोको पकडनेका अुसे हुक्म नही था। अिसलिअे फॉक्सरस्ट पहुचनेके वाद सरकारको मैंने नीचे लिखा तार दिया "सत्याग्रहकी लडाओके मुख्य प्रचारकको सरकारने पकड लिया, अिससे मुझे खुशी हुओ। परन्तु साथ ही मै यह कहे विना नही रह सकता कि अिसके लिअे जो मौका चुना गया वह दयाकी दृष्टिसे देखते हुअे अत्यन्त विपम है। सरकार शायद जानती होगी कि अिस कूचमें १२२ स्त्रिया और ५० वच्चे है और सव अितनी ही खुराक पर गुजर कर रहे है कि ठिकाने पहुचने तक जिन्दा रह सकें। ठड और धूपसे अुनकी रक्षाके कोओ साधन नही है। अैसी हालतमें मुझे अुनसे अलग करना न्यायकी हत्या करना है। जव कल रातको मुझे पकडा गया तव अपने साथके आदमियोको वताये विना ही मै अुन्हें छोड आया हू। वे शायद क्रोधसे पागल हो जाये। अिसलिअे मै चाहता हू कि या तो मुझे अुनके साथ कूच करनेकी अिजाजत दी जाय या सरकार अुन्हें रेलगाडीसे टॉल्स्टॉय फार्म पहुचा दे और खाना भी दे। जिन पर अुन लोगोका विश्वास है अुन्हें अुनसे अलग कर देना और साथ ही अुनके लिअे भोजन वगैराका कोओ वन्दोवस्त न करना अनुचित माना जायगा। मै आशा रखता हू कि फिरसे विचार करनेके वाद सरकार अपना निश्चय वदल लेगी। अगर कूचके दरमियान कोओ अकल्पित घटना हो गओ और खास तौर पर दूधपीते वच्चोवाली महिलाओमें से किसीकी मृत्यु हो गओ, तो अिसकी जिम्मेदारी सरकारकी होगी।"

जुलूस आगे चला। मुझे वॉल्क्रस्टके न्यायाधीशके सामने खडा किया गया। मुझे सफाओ तो कुछ देनी ही नही थी। परन्तु जो लोग पामफर्डमे आगे गये थे और जो अुस समय चार्ल्सटाअुनमें पडे थे अुनकी कुछ वाते सुनानी थी। अिसलिअे मैंने मियाद मागी। सरकारी वकीलने अिस पर अेतराज किया। न्यायाधीशने वताया कि जमानत सिर्फ हत्याके अभियोगमें ही नामजूर की जा सकती है। अिसलिअे अुसने ५० पौण्डकी जमानत मागी और अेक

हफ्तेकी मियाद दी। जमानत अुसी समय वॉल्क्रस्टके अेक व्यापारीने दे दी। मैं रिहा होकर सीधा कूच करनेवालोसे जा मिला। अुनका अुत्साह दुगुना हो गया। अिस बीच प्रिटोरियासे तार आ गया कि मेरे साथके हिन्दुस्तानियोको पकडनेका सरकारका अिरादा नही है, नेताओको ही गिरफ्तार किया जायगा। अिसका अर्थ यह नही था कि और सबको छोड दिया जायगा। परन्तु सरकार सबको पकड कर हमारे कामको सरल बनाना या हिन्दुस्तानमें खलबली पैदा करना नही चाहती थी।

पीछेसे दूसरी अेक बडी टोलीको लेकर मि० कैलनबैक आ रहे थे। हमारी दो हजारसे अधिककी टोली स्टैण्डर्टन आ पहुची। वहा मुझे फिर पकड लिया गया और मुकदमेकी २१ तारीख रखी गअी। हम आगे बढे। परन्तु अब सरकारसे यह सब हजम नही हो सकता था। अिसलिअे अुसने पहले मुझे अिन सबसे बिलकुल अलग कर देनेकी कार्रवाअी की। अिस समय मि० पोलाकको डेप्युटेशन लेकर हिन्दुस्तान भेजनेकी तैयारी हो रही थी। अुसके लिअे रवाना होनेसे पहले वे मुझसे मिलने आये। परन्तु 'हरि करे सो होय' वाली बात हो गअी। मुझे रविवारको ग्रेलिगस्टाडमें फिर तीसरी बार पकड लिया गया। अिस बारका वारट डडीसे निकला हुआ था और अभि-योग गिरमिटियोसे काम छुडवानेका था। यहासे मुझे बहुत ही चुपकेसे डडी ले जाया गया। अूपर मैं बता चुका हू कि मि० पोलाक हमारे साथ कूचमें थे। अुन्होने यह काम सभाल लिया। डडीमें मगलवारको मुकदमा चला। मेरे विरुद्ध लगाये गये तीनो अभियोग मुझे पढकर सुनाये गये। मैंने अुन्हे स्वीकार किया और अिजाजत लेकर बताया कि, "मेरे अपने प्रति और सभी लोगोके प्रति न्यायके खातिर मुझे कहना चाहिये कि मुझ पर जो अभियोग लगाये गये है अुनकी सारी जिम्मेदारी अेक वकीलके नाते और नेटालके पुराने निवासीके नाते मैं अपने पर लेता हू। मैं मानता हू कि अिन लोगोको कॉलोनीके बाहर ले जानेसे लोगोके मन पर जो असर पडा है अुसका हेतु अच्छा था। खानवालोके खिलाफ हमारी कोअी शिकायत नही है। अिस लडाअीमें अुन्हें भारी हानि हो रही है, अिसका मुझे अफसोस है। मैं हिन्दु-स्तानी मजदूरोको रखनेवाले मालिकोसे भी विनती करता हू कि तीन पौंडका कर मेरे देशभाअियो पर भार स्वरूप है और अिसलिअे वह रद होना चाहिये। मुझे लगता है कि माननीय श्री गोखले और जनरल स्मट्सके बीच जो स्थिति पैदा

हो गअी, अुसे देखते हुअे बहुत ज्यादा ध्यान खीचनेवाली लडाअी छेडना मेरा फर्ज था। स्त्रियोको और दूधपीते बच्चोको जो सकट सहने पडे है अुन्हें मैं समझता हू। फिर भी मेरा खयाल है कि लोगोको सलाह देना मेरा फर्ज था और वह फर्ज मैंने अदा किया है। जब तक तीन पौडका कर रद नही हो जाता, तब तक काम न करने और भीख मागकर पेट भरनेकी सलाह अपने देशभाअियोको बार-बार देना मै अपना कर्तव्य समझूगा। मुझे विश्वास है कि दु ख भोगे बिना अुन पर होनेवाले जुल्मोका अत नही आयेगा।"

मै तो आरामसे जेलमें जाकर बैठ गया। बादमे वॉलक्रस्टमें मुझ पर मुकदमा चला और डडीमे हुअी नौ मासकी जेलकी सजाके अलावा वहा तीन महीनेकी जेलकी सजा और हुअी।

अिसी अर्सेमे मुझे खबर मिली कि मि० पोलाक गिरफ्तार हो गये है और हिन्दुस्तान जानेके बजाय जेलमे जा बैठे है। मै तो खुश ही हुआ, क्योकि मेरे खयालसे अुस डेप्युटेशनसे यह डेप्युटेशन बडा था। अिसके बाद तुरन्त ही मि० कैलनबैक पकडे गये। और वे भी मि० पोलाककी तरह तीन महीनेके लिअे जेलमे जा बैठे। यह मान कर कि नेताओको पकड लेनेके बाद लोग झुक जायेंगे, सरकारने भूल ही की। सब हडतालियोको कोअी चार स्पेशल गाडिया भर कर डडी और न्यूकैसलकी खानो पर वापस ले जाया गया। वहा अुन पर बडा जुल्म हुआ। अुन्हे बहुत कष्ट सहने पडे। परन्तु कष्ट सहनेके लिअे तो सब निकले ही थे। सभी नेता थे। अुन्हे तथाकथित नेताओके बिना अपनी शक्ति दिखानी थी और वह अुन्होने अच्छी तरह दिखा दी। दुनिया जानती है कि वह शक्ति अुन्होने किस तरह दिखाअी। कवि दयारामने* सच कहा है कि

"महाकष्ट भोगे बिना कृष्ण भगवान किसे मिलते है? चारो युगके साधुओको खोजकर देख लो। वैष्णवजनके प्रति बिरले ही लोगोका प्रेम होता है। भक्तिके विरोधी लोग तो अुन्हे पीडा ही देते है। पाप और पुण्य दो कहने भरको है, असलमे नन्दकुवरका नचाया यह सारा जगत

* गुजरातीके अेक प्रसिद्ध प्राचीन कवि।

नाचता है। प्रभुकी अिच्छाके बिना पत्ता भी नही हिलता, परन्तु अपरिपक्व मनका भ्रम दूर नहीं होता — वह अपनेको ही कर्ता मानता है।"

मोहनदास करमचन्द गांधी

[अिस लेखका शेष भाग मि० गांधीकी तरफसे लिखा जानेवाला था, परन्तु यूरोपीय युद्धके कारण अुन्हे जरूरी अवकाश नही मिला। — अ औी ओ]

२

सत्याग्रह-युद्धके अितिहासकी नोंध

१९०६

४ अगस्त — ट्रान्सवाल लेजिस्लेटिव कौंसिलमें अेशियाटिक अमेण्डमेन्ट अेक्ट पेश करनेका मि० डकनने प्रस्ताव रखा।

११ सितम्बर — जोहानिसबर्गके अेम्पायर थियेटरमें हिन्दुस्तानियोकी खास सभा हुअी। यह हत्यारा कानून (खूनी कानून) पास हो जानेकी सूरतमें अुपस्थितोमें से हरअेकने अुसे न मानकर जेल जानेकी शपथ ली। अिंग्लैण्ड डेप्युटेशन भेजनेका प्रस्ताव पास हुआ।

१२ सितम्बर — ट्रान्सवालकी धारासभामें हत्यारा कानून पास हुआ।

१ अक्तूबर — हिन्दुस्तानियोका डेप्युटेशन जोहानिसबर्गसे रवाना हुआ।

८ नवम्बर — डेप्युटेशन औपनिवेशिक मंत्री लॉर्ड अेल्गिनसे मिला।

२९ नवम्बर — लंदनमें 'साअुथ अफ्रीका ब्रिटिश अिंडियन कमेटी' कायम हुअी। सर लेपेल ग्रिफिन अुसके पहले अध्यक्ष और मि० रीच मंत्री नियुक्त हुअे।

१ दिसम्बर — डेप्युटेशन विलायतसे रवाना हुआ।

३ दिसम्बर — हत्यारे कानूनको सम्राटने नामंजूर कर दिया।

१९०७

२२ मार्च — बडी सरकारके नामंजूर किये हुअे हत्यारे कानूनको ट्रान्सवालकी नअी पार्लियामेण्टने २४ घंटेमें पास कर दिया।

२ मअी — अिस कानूनको सम्राटकी मजूरी मिल गअी।

१ जुलाअी — हत्यारे कानूनका अमल शुरू हुआ और अुसके अनुसार प्रिटोरियामे पहले-पहल नाम दर्ज करनेको रजिस्ट्रेशन आफिस खोला गया। आजमे यह आफिस चार महीने तक गाव-गाव घूमा, लेकिन लगभग सभी जगहो पर अुसका वहिप्कार हुआ। ८००० की आवादीमें से लगभग ४०० से भी कम लोगोके नाम दर्ज हुअे। अिस मियादके वाद पकड-वकड शुरू हो गअी।

१८ सितम्वर — माननीय श्री गोखलेका अेसोमियेशनको यह तार मिला "आपकी लडाअीका मैं अच्छी तरह अवलोकन करता रहता हू। चिन्तातुर होकर अुस पर ध्यान दे रहा हू। अत्यत सहानुभूति रखता हू। लडाअीकी तारीफ करता हू। अीश्वरकी अिच्छा पर दृढतासे आधार रखना।"

२५ अक्तूवर — हत्यारे कानूनके विरुद्ध ट्रान्सवालके ७ या ८ हजार हिन्दुस्तानियोंमें से ४५२२ हस्ताक्षरोवाला अेक लम्वा प्रार्थनापत्र अेसो-सियेशनकी तरफसे सरकारको भेजा गया।

३ नवम्वर — आजसे रजिस्ट्रेशनकी अर्जिया लेना वन्द हो गया।

११ नवम्वर — सत्याग्रहियोकी धरपकड पहले-पहल शुरू हुअी।

२७ दिसम्वर — मि० गाधीको अदालतमें हाजिर होनेका नोटिस मिला।

२८ दिसम्वर — जोहानिसवर्गमें मजिस्ट्रेट मि० जोर्डनने मि० गाधीको ४८ घटेमें ट्रान्सवाल छोडनेका हुक्म दिया।

१९०८

१० जनवरी — जोहानिसवर्गमें मि० जोर्डनने मि० गाधीको दो मासकी सादी कैदकी सजा दी।

३० जनवरी — सत्याग्रही कैदियोको छोडा गया। ट्रान्सवाल सरकारने हिन्दुस्तानियोकी स्वेच्छापूर्वक नाम दर्ज करानेकी माग मजूर कर ली और हत्यारा कानून रद करनेका वचन दिया।

१० फरवरी — मि० गाधी, मि० यवी नायडू और कुछ अन्य लोग रजिस्ट्रेशन आफिस जा रहे थे अुस समय मि० गाधी पर हमला हुआ।

२४ जून — सरकारने हत्यारा कानून रद करनेमे अिनकार कर दिया, अिसलिअे सत्याग्रहकी लडाअी फिर शुरू हुअी। मि० सोरावजी पहले-पहल

नेटालसे ट्रान्सवालमें घुसे। और २० जुलाओको अुन्हें वॉलक्रस्टके मजिस्ट्रेटने अेक महीनेकी जेलकी सजा दी।

१२ जुलाओ — स्वेच्छापूर्वक नाम दर्ज करानेके बाद मिले हुअे लगभग दो हजार परवाने जोहानिसबर्गकी विराट सभामें जलाये गये।

२२ जुलाओ — लॉर्ड सेलबोर्नके नाम बड़ी सरकारका अैसा तार आया कि रोडेशियामें बने हुअे कड़े अेशियाओ कानूनको सम्राटकी मंजूरी नहीं दी जा सकती।

२२ अगस्त — स्वेच्छापूर्वक दर्ज कराये गये नामोंको जायज मानने और दूसरे हिन्दुस्तानियोंके नाम दर्ज करनेके बारेमें ट्रान्सवाल पार्लियामेण्टके दोनों सदनोंमें कानून पास हो गया।

३० अगस्त — प्रिटोरियाकी सार्वजनिक सभामें और २०० स्वेच्छापूर्वक लिये गये प्रमाणपत्र जलाये गये।

७ सितम्बर — मि० गांधी वॉलक्रस्टमें गिरफ्तार हुअे और अेक सप्ताह बाद अुन पर मुकदमा चला। अुसमें अुन्हें दो महीनेकी सख्त कैदकी सजा मिली।

९ नवम्बर — आजसे ५ दिनमें २२७ हिन्दुस्तानी जेल गये। अुनमें से ज्यादा तो हिन्दू और मुसलमान व्यापारी थे। अिस संख्यामें ६४ जोहानिसबर्गके, ७९ जर्मिस्टनके और ६० प्रिटोरियाके हिन्दुस्तानी थे।

१४ नवम्बर — अिस सप्ताहमें २२७ हिन्दुस्तानी जेलमें गये। अिस संख्यामें ६४ जोहानिसबर्गसे, ९७ जर्मिस्टनसे, ६० प्रिटोरियासे और ६ दूसरे स्थानोंसे गये थे।

१७ नवम्बर — ५३ तामिल लोग फेरी लगाते हुअे पकड़े गये और अुन्हें ७ दिनकी जेल मिली।

२२ नवम्बर — कलकत्तेमें मि० अब्दुल जबरकी अध्यक्षतामें सत्याग्रहियोंके प्रति सहानुभूति दिखानेको अेक बड़ी सभा हुओ।

१३ दिसम्बर — मि० गांधी दो मासकी दूसरी बारकी कैद पूरी करके छूटे।

१९०९

९ जनवरी — 'मरक्यूरी' के प्रतिनिधिने मि० गांधीसे मुलाकात की। अुसमें अुन्होंने बताया था कि ट्रान्सवालमें लगभग दो हजार हिन्दुस्तानी जेल हो आये हैं।

१५ जनवरी — मि० गांधी नेटालसे ट्रान्सवाल जाते हुअे वॉलक्रस्टमें तीसरी बार पकड़े गये। कुछ सप्ताह बाद मुकदमा चला। अुसमें अुन्हें तीन मासकी कैद हुअी। अुसी दिन हमीदिया सोसाअिटीके अध्यक्ष मि० अुमरजी साले, जिनकी अुम्र ६५ वर्षकी थी, और मि० डेविड अर्नेस्ट वगैरा प्रसिद्ध हिन्दुस्तानियोंको तीन तीन मासकी सजा हुअी थी।

२९ जनवरी — क्रूगर्स डोरपमें लुहार-परिषद हुअी। अुसमें प्रस्ताव पास हुआ कि किसी भी तरहके लाअिसेंस न लिये जायें और दुकानें बन्द करके फेरी लगाकर जेल जाया जाये।

६ फरवरी — ट्रान्सवालकी मि० हॉस्केनकी कमेटीने हिन्दुस्तानियोंको राहत पहुंचानेके बारेमें 'लंदनके टाअिम्स' को पत्र लिखा।

१० फरवरी — रोडेशियाका अेशियाअी कानून बडी सरकारने नामंजूर कर दिया।

१२ फरवरी — पारसी रुस्तमजी और कुछ और लोगोंको छह छह महीनेकी जेल हुअी।

६ मार्च — बॉक्सबर्ग, नॉरवुड, ब्लोमफोन्टीन, बारबर्टन और क्रूगर्स डोरपमें लोकेशन कायम करनेके लिअे गोरोंने हलचल शुरू की।

१० मार्च — डेलागोआ-बेके रास्तेसे सत्याग्रही कैदियोंको हिन्दुस्तानमें निर्वासित करना शुरू हुआ।

१२ मार्च — प्रिटोरियामें मिसेज पिल्लेके मुकदमेमें मि० गांधीको हाथोंमें हथकड़ियां डालकर अदालतमें ले जाया गया।

५ अप्रैल — १४ सितम्बरसे १७ मार्च तक हुअे पत्र-व्यवहार वगैराकी ब्ल्यूबुक बडी सरकारने प्रकाशित की।

२० अप्रैल — मि० काछलिया और दूसरे १८ सत्याग्रही कैद पूरी करके छूटे।

४ मअी — सत्याग्रही हिन्दुस्तानियोको जेलमे घी देना शुरू हुआ।

२४ मअी — मि० गाधी तीसरी वार तीन मासकी कैदकी सजा पाकर जेल गये।

७ जून — जर्मिस्टनमे गोरोकी लिटरेरी अेण्ड डिबेटिग सोसाअिटीमे मि० गाधीने 'सत्याग्रहकी नीति' विषय पर मार्मिक भाषण दिया।

१६ जून — जोहानिसबर्गकी आम सभामे अे० अेम० काछलिया, हाजी हवीव, वी० अे० चेटियार और अेम० के० गाधीको विलायत तथा सर्वश्री अेम० अे० कामा, अेन० जी० नायडू, अी० अेस० कुवाडिया तथा अेच० अेच० पोलाकको हिन्दुस्तान भेजनेका प्रस्ताव पास हुआ। अिस डेप्युटेशनके रवाना होनेसे पहले ही सर्वश्री काछलिया, कुवाडिया, कामा और चेटियारको पकड लिया गया।

४ जुलाअी — जोहानिसवर्गकी जेलसे छूटनेके वाद जेलमे भोगे हुअे कष्टोके कारण नागापनकी मृत्यु हो गअी।

१६ जुलाअी — मुजफ्फरी जहाजमे १४ हिन्दुस्तानियोको हिन्दुस्तानमे निर्वासित किया गया।

१ सितम्वर — वम्वअीके शेरीफने दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहके वारेमे चर्चा करनेके लिअे जो सार्वजनिक सभा वुलाअी, अुस पर वम्वअी सरकारने रोक लगा दी। आखिर यह सभा १३ दिन वाद हुअी।

१६ सितम्वर — ट्रान्सवालके डेप्युटेशनने विलायतमे लॉर्ड क्रूसे मुलाकात की।

१३ नवम्वर — विलायत गया हुआ हिन्दुस्तानी डेप्युटेशन क्लीडोनन कैसल जहाजमे रवाना हुआ।

१ दिसम्वर — हिन्दुस्तानमे श्री रतन टाटाने २५ हजार रुपयेका जो दान दिया था अुसकी घोपणा हुअी।

१९१०

२५ फरवरी — हिन्दुस्तानकी वडी धारासभामे मि० गोखलेका गिरमिटकी प्रथा वन्द कर देनेका प्रस्ताव पास हुआ।

१ जून — दक्षिण अफ्रीकाका यूनियन वना। अुसी दिन मि० सोरावजी शापुरजी अडाजणिया सातवी वार गिरफ्तार हुअे।

४ जून — मि० कैलनबैकने सत्याग्रहियोंके रहनेके लिअे लोलीमें अपना फार्म दिया।

१३ जून — २६ सत्याग्रही हिन्दुस्तानसे प्रेसिडेन्ट जहाजमें वापस आये।

२६ जुलाअी — पुर्तगाल सरकारकी मददसे हिन्दुस्तानियोंको जो निर्वासित किया गया था, अुसके विरुद्ध लॉर्ड अेम्पथीलने लॉर्डसभामें खूब चर्चा की।

३० जुलाअी — जिन हिन्दुस्तानी बच्चोंके नाम आज तक बालिग होने पर सरकारी रजिस्टरमें दर्ज हो सकते थे, अुनके नाम १९०८ का कानून बन जानेके बाद बालिग होने पर भी रजिस्टरमें दर्ज करनेसे अिनकार किया गया।

२२ अगस्त — छोटाभाअीके लडकेका मशहूर टेस्ट केस जोहानिसबर्गकी अदालतमें शुरू हुआ। अुसमें आखिर छोटाभाअीकी जीत हुअी।

२८ सितम्बर — मि० पोलाक ८५ निर्वासित हिन्दुस्तानियोंके साथ डरबन आये।

१६ अक्तूबर — स्व० नारायण स्वामी गरट्रूड वुरमन जहाजमें देशसे लौटते हुअे डेलागोआ-बेमें मर गये।

१९११

२५ फरवरी — यूनियन गजटमें अिमिग्रेशन रेस्ट्रिक्शन बिल प्रकाशित हुआ।

२९ अप्रैल — वह बिल पार्लियामेण्टके चालू अधिवेशनमें मुलतवी रखा गया।

२० मअी — शर्ती समझौता हुआ और सत्याग्रहकी लडाअी फिर मुलतवी हो गअी।

[अिसके बाद लगभग दो वर्ष तक थोडी शान्ति रही और १९१३ में फिर चौंकानेवाली घटनाअें हुअी, जिनकी तफसील अिस प्रकार है]

१९१३

२२ मार्च — हिन्दुस्तानियोंके धर्म पर हमला। न्यायाधीश सरलेने फैसला दिया, जिसमें मुसलमानी शरीअतके अनुसार विवाहित महिला मरियमका अपने पतिके साथ हुआ विवाह नाजायज ठहराया गया।

३ अप्रैल — यूनियन गजटमें नया अिमिग्रेशन-बिल प्रकाशित हुआ।

३ मअी — जोहानिसबर्गकी सार्वजनिक सभामे सत्याग्रह शुरू करनेका प्रस्ताव पास हुआ। अिसी हफ्तेमे स्त्रियोकी तरफसे भी अैसा प्रस्ताव गृहमत्रीको भेजा गया।

२४ मअी — ३० अप्रैलसे मि० गाधी और मि० फिशर (गृहमत्री) के बीच हुआ पत्र-व्यवहार प्रकाशित हुआ।

७ जून — अुपरोक्त पत्र-व्यवहारका अधिक भाग प्रकाशित हुआ।

२१ जून — नये अिमिग्रेशन-कानूनको सम्राटकी मजूरी मिल गअी।

१५ जुलाअी — यनियन गजटमे नये कानूनकी धाराअे प्रकाशित हुअी।

१ अगस्त — नये कानूनके अनुसार तीनो कॉलोनियोमे अपील-बोर्ड स्थापित हुअे। अिन बोर्डोमे अेक अेक अिमिग्रेशन अफसर भी सदस्य थे।

१३ सितम्बर — सत्याग्रहकी शुरुआत। सरकार और मि० गाधीके बीचका तमाम जरूरी मुद्दोवाला पत्र-व्यवहार प्रकाशित हुआ।

२२ सितम्बरसे १५ अक्तूबर — नेटाल और ट्रान्सवाल दोनोसे बडी सख्यामे सत्याग्रही पुरुप और स्त्रिया फेरी लगाकर या सरहद पार करके पकडे गये और जेल गये।

१६ अक्तूबर — न्यूकैसलसे तीन पौण्डके करके विरुद्ध हडताल शुरू हुअी और सब जगह फैल गअी।

६ नवम्बर — मि० गाधी हडतालियोके साथ ट्रान्सवालमे घुसे।

११ नवम्बर — डडीमे मि० गाधीको ९ महीनेकी सजा हुअी।

२८ नवम्बर — हिन्दुस्तानके वाअिसरॉयका भापण हुआ

११ दिसम्बर — कमीशन नियुक्त हुआ।

१९ दिसम्बर — सर्वश्री गाधीजी, कैलनवैक तथा पोलाक छोड दिये गये।

१९१४

१६ फरवरी — समझौतेके अनुसार यूनियनकी जेलोसे सारे सत्याग्रही कैदी छोड दिये गये।

१८ मार्च — कमीशनकी रिपोर्ट प्रकाशित हुअी।

३ जून — रिलीफ बिल प्रकाशित हुआ।

३० जून — अन्तिम समझौता हुआ।

३

सत्याग्रही कौन हो सकता है ?

अिस प्रश्नका जो अुत्तर ५ वर्ष पहले 'अिंडियन ओपीनियन' मे दिया गया था, अुस पर आज हम फिरसे विचार करे। विचार करने पर यह मालूम होता है कि वह अुत्तर यथार्थ था। अुस समय शायद ही कोअी जानता था कि यह लडाअी अितनी जग-प्रसिद्ध हो जायगी और आठ वर्ष तक चलेगी। परन्तु ज्यो ज्यो वह आगे वढी त्यो त्यो हम ज्यादा मजवूत वने, ज्यादा समझ सके और ज्यादा सीख सके। अतिम भागमे तो सैकडो और हजारोने खुद अनुभव किया और अुससे सभीको मालूम हो गया होगा कि अिस लडाअीमे हार जैसी चीज तो है ही नही। कोअी चीज न मिले तो हम देख सकते है कि अुसमे सत्याग्रहीका दोष है, सत्याग्रहका दोष नही है। यह वात वडे ध्यानसे समझने लायक है। शरीर-वलकी लडाअीमे अैसा नियम लागू नही होता। अुसमे दो सेनाअे मिलती है तव सिर्फ लडनेवालोकी कमजोरीसे ही हार नही होती, लडनेवाले वहुत वहादुर हो तो भी दूसरे साधन कमजोर होने पर अुनकी हार हो जाती है। जैसे, विरोधियोके पास अुनसे ज्यादा अच्छे हथियार हो, या अुन्हे अच्छी जगह मिल गअी हो, या अुनके पास युद्धकी कला अधिक हो तो अुनकी हार हो सकती है। अैसे वहुतसे वाहरी कारणोसे शरीर-वलमे लडनेवालोकी हार-जीत होती है। परन्तु सत्याग्रहमे लडनेवालोके मार्गमें वाहरी कारण विलकुल वाधक नही वन सकते। सिर्फ अुनकी कमजोरी ही अुनके लिअे वाधक होती है। फिर, साधारण लडाअीमे जो पक्ष हार जाता है अुसके सारे आदमी हारे हुअे माने जाते है और हारते भी है। सत्याग्रहमे अेकके जीतनेसे दूसरे भले ही जीते हुअे माने जाये, परन्तु सवके हारने पर भी जो खुद हारा न हो वह औरोकी हारसे नही हारता।

तव अिस वातका विचार करना अत्यन्त जरूरी है कि जो अितनी वढिया — विना हारकी — अेक ही परिणामवाली लडाअी है, अुसे कौन लड सकता है ? अिससे हम ट्रान्सवालकी लडाअीके कुछ परिणामोको समझ सकेंगे और यह देख सकेंगे कि और जगहो पर या दूसरे अवसरो पर यह लडाअी कैसे लडी जा सकती हैं और कौन लड सकता है ?

सत्याग्रहका अर्थ समझते समय हम देखते है कि पहली शर्त तो यह है कि यह लडाअी लडनेवालोको सत्यका आग्रह — सत्यका वल — रखना चाहिये। यानी अुस आदमीको केवल सत्य पर ही आधार रखना चाहिये, अेक पैर दहीमे और अेक पैर दूधमे अैसा नही चल सकता। अैसा मनुष्य वीचमे कुचल दिया जायगा। सत्याग्रह कोअी गाजरकी वासुरी नही है कि जव तक वजी वजाते रहे, नही तो खा गये। अैसा माननेवाले कहीके नही रहते। शरीर-वलकी कमीवाले लोग या शरीर-वल काम न देनेके कारण लाचारीसे सत्याग्रही वनना पडता है अैसा माननेवाले लोग ही सत्याग्रहकी लडाअी लडते है, अैसा कहना विलकुल निरर्थक है। यह कहा जा सकता है कि अैसा माननेवालोको अिस लडाअीका कोअी ज्ञान नही है। सत्याग्रह शरीर-वलसे अधिक तेजस्वी है और शरीर वल अुसके सामने अेक तिनकेके समान है। शरीर-वलमे मुख्य वात यह है कि मनुष्य अपने शरीरकी परवाह न करके लडाअीमे जूझता है, यानी वह डरपोक नही होता। सत्याग्रही तो अपने शरीरको कुछ गिनता ही नही। अुसमे डर घुस ही नही सकता। अिसीलिअे वह वाहरके हथियार धारण नही करता और मौतका डर रखे विना अत तक लडता है। अत सत्याग्रहीमे शरीर-वलवालेसे ज्यादा हिम्मत होनी चाहिये। अिस प्रकार सत्याग्रहीके लिअे पहले तो सत्यका सेवन और सत्य पर आस्था होना जरूरी है।

अुसमे पैसेके प्रति अुदासीनता होनी चाहिये। दौलत और सत्यमे सदा अनवन रही है और अत तक रहेगी। जो दौलतको पकडे रहता है वह सत्यका पालन नही कर सकता, यह हमने ट्रान्सवालमे वहुतसे हिन्दुस्तानियोके अुदाहरणसे देख लिया। अिसका अर्थ यह नही कि सत्याग्रहीके पास धन हो ही नही सकता। अुसके पास धन हो सकता है, परन्तु पैसा अुसका परमेश्वर नही वन सकता। सत्यका पालन करते हुअे पैसा रहे तो ठीक है, नही तो अुसे हाथका मैल समझ कर छोड देनेमे पलभरके लिअे भी हिचकिचाहट नही होनी चाहिये। जिसने मनको अैसा नही वना लिया है, अुससे सत्याग्रह हो ही नही सकता। और जिस देशके राजाके खिलाफ सत्याग्रही वनना पडता है, अुस देशमें सत्याग्रहीके पास धन होना मुश्किल वात है। राजाका जोर मनुष्य पर नही चलता, परन्तु अुसकी दौलत पर या अुसके डर पर चलता है। या तो खजाना लूट लेनेके डरसे या अुसके शरीरको नुकसान पहुचानेके डरसे राजा प्रजासे जो भी कराना चाहे करा लेता है। अिसलिअे अन्यायी

राजाके राज्यमें ज्यादातर अन्यायमे भाग लेनेवाले मनुष्य ही पैसा जमा कर सकते है। सत्याग्रही तो अन्यायमे शरीक हो ही नही सकता। अिसलिअे अैसी स्थितिमे सत्याग्रहीको गरीबीमें ही अमीरी मानना चाहिये।

अिस सम्बन्धमे यह बात विचार करने योग्य है कि शरीर-बलको आजमाते हुअे भी अिनमें से बहुतसी बाते छोडनी पडती है, भूख, प्यास, सरदी और गरमी सहनी पडती है, कुटुम्बका मोह छोडना पडता है, और रुपया-पैसा छोडना पडता है। बोअर लोगोने शरीर-बलसे काम लेते हुअे यह सब छोडा। अुनके शरीर-बलके आग्रहमे और हमारे सत्याग्रहमे बडा फर्क यह है कि अुनकी बाजी जुअेका खेल थी। अिसके सिवा, शरीर-बलमे वे अभिमानी बन गये, आवे जीतकर ही वे अपनी पहलेकी दशाको भूल गये। अत्याचारियोके खिलाफ अत्याचारी हथियारोसे लडकर वे हम पर अत्याचारी बन गये है। सत्याग्रही लडकर जीतता है तो अुसकी जीतका परिणाम स्वय अुसके लिअे और दूसरोके लिअे भी अच्छा ही होता है। सत्याग्रही सत्यकी रक्षा करके कभी अत्याचारी बन ही नही सकता।

सत्याग्रहीको कुटुम्बका मोह छोडना पडता है। यह बहुत मुश्किल बात है। परन्तु सत्याग्रह अपने नामके अनुसार तलवारकी धार है। और अन्तमे अिसमे भी कुटुम्बको लाभ ही होता है, क्योकि कुटुम्बियोको सत्याग्रहकी लगन लगनेका समय आ जाता है, और जिसे यह लगन लग जाती है अुसे फिर और कोअी अिच्छा नही रहती। दुख अुठाने, धन गवाने और जेल जानेमे यह भय या शका नही होनी चाहिये कि कुटुम्बका क्या होगा। जिसने दात दिये है वह खानेको अन्न भी देगा। साप, बिच्छू, बाघ और भेडिये वगैरा भयानक पशुओ अथवा प्राणियोको जो अुनका भोजन देता है, वह मनुष्य-जातिको नही भुला सकता। हम जो हाथ-पैर पीटते है वह सेरभर बाजरी या मुट्ठीभर चावलके लिअे नही, बल्कि खट्टे-मीठे स्वादके लिअे, ठडमे बचने लायक कपडोके लिअे नही, बल्कि रेशम और कीनखाबके लिअे। अगर हम अिस लोभको छोड दे तो कुटुम्बके भरण-पोषणकी चिन्ता बहुत थोडी रह जाती है।

अिस प्रकार यह विचार करते हुअे कि सत्याग्रही कौन हो सकता है, अन्तमे यह बात आती है कि जो धर्म पर—दीन पर—सच्ची आस्था रखता हो, वही सत्याग्रही हो सकता है। 'मुखमे राम बगलमे छूरी' यह आस्था नही है।

धर्मका नाम लेकर धर्मसे अुलटे काम करना धर्म नहीं है। परन्तु जो लोग धर्म, दीन या अीमानको हृदयसे पालन करते हैं, अुन्हींसे सत्याग्रह हो सकता है। यानी जो मनुष्य खुदा या अीश्वर पर ही सब कुछ छोड़ देता है, अुसे किसी संसारमें हारनेकी बात रह ही नहीं जाती। लोग अुसे हारा हुआ कहें, जिससे वह हारा हुआ नहीं माना जा सकता। लोगोंका जीता हुआ कहनेमें अुसकी जीत भी नहीं है। अिसे तो जो समझता है वही समझता है।

यह सत्याग्रहका सच्चा स्वरूप है। अिसे दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंने कुछ हद तक जाना है। जानकर अुसका थोड़ा-बहुत पालन भी किया है। अुससे भी हम सत्याग्रहका अमूल्य रस चख सके हैं। जिसने सत्याग्रहके खातिर सब कुछ छोड़ा है, अुसने सब कुछ प्राप्त किया है। क्योंकि वह सन्तोष मानता है। सन्तोष ही सच्चा सुख है। दूसरा सुख किसने देखा है? दूसरा सुख तो मृगतृष्णाकी तरह है। जैसे-जैसे हम अुसके पास जाते हैं, वैसे-वैसे वह दूर ही दूर दिखाअी देता है।

हम चाहते हैं कि अिस तरह विचार करके प्रत्येक हिन्दुस्तानी सत्याग्रही बने। यह हथियार हाथ लग जायगा, तो अन्यायमात्रसे होनेवाले सारे दुःखोंको दूर करनेके काममें अुसका अुपयोग हो सकेगा। यह हथियार यहीं नहीं, हिन्दुस्तानमें भी अुपयोगी होगा। और वहां अधिक अुपयोगी होगा। सिर्फ अुसका सच्चा स्वरूप समझ लेना चाहिये। अुसे समझना आसान भी है और कठिन भी है। शरीरसे बलवान भी कुछ ही लोग होते हैं, और सत्यका बल रखनेवाले तो अुनसे भी कम होते हैं।

मो० क० गांधी

४

जेलमें कौन जा सकता है?

थोडेमें हमने अिस प्रश्न पर विचार कर लिया कि सत्याग्रही कौन हो सकता है। परन्तु सत्याग्रह जेलमें जानेसे ही पूरा नही हो जाता। सत्याग्रहीको सूली पर चढना पडा है, धधकते हुअे लोहेके खभेका आलिगन करना पडा है, पहाड परसे गिरना पडा है, अुवलते हुअे तेलकी कडाअीमें तैरना पडा है, जलते हुअे जगलमे चलना पडा है, राजपाट वेचकर नीचके घर विकना पडा है, और सिहोकी गुफाओमे रहना पडा है। अिस तरह सत्याग्रहियोकी परीक्षा दुनियाके जुदा जुदा हिस्सोमे अलग अलग तरीकेसे हुअी है।

अिसी तरह दक्षिण अफ्रीकामे सत्याग्रहियोकी परीक्षा जेल जानेमे ही सीमित हो गअी है। अिसलिअे यह प्रश्न अुपयोगी है कि जेल कौन जा सकता है? कुछ हिन्दुस्तानी जेल जानेके लिअे तैयार थे, फिर भी किसी न किसी कारणसे नही गये—नही जा सके। अैसे क्या कारण, होगे? अिस प्रश्नका अुत्तर जेल कौन जा सकता है अिस प्रश्नके पूछनेसे और अुसका अुत्तर जाननेसे मिल सकता है।

तो सत्याग्रहीमे जो गुण होने चाहिये और जिनका हम विचार कर चुके है, वे सव थोडी-वहुत मात्रामे जेल जानेवालेमे होने चाहिये। परन्तु नीचे लिखी शक्तिया भी अुसमे होना जरूरी है

(१) व्यसनोसे दूर रहना।
(२) शरीर अच्छा कसा हुआ होना।
(३) सोने-वैठनेमे आरामतलव न होना।
(४) खाने-पीनेमें विलकुल सादगी होना।
(५) झूठा अभिमान न होना।
(६) धीरज होना।

ये छह गुण (अिन्हें मै जेलकी षट्सपत्ति कहूगा) खास तौर पर जेल जानेवालोमे होने जरूरी है। अव हम अिन पर जरा गहरा विचार करें। अनुभव यह हुआ है कि बीडी, शराव, सुपारी या चाय तकके व्यसनसे जेल जानेवाले घवरा

गये है। अैसा होनेके कारण अुन्होंने जेलमें सोग्गिया की है, यानी सत्यको छोडा है या दूसरी बार जेल जानेका नाम नहीं लिया है। अिसलिअे सभी व्यसनोंसे दूर रहना चाहिये। जेलमें अेक ही व्यसनकी छूट हो सकती है और वह है अीश्वरके नामकी रटन।

सत्याग्रह नामर्दोसे नहीं हो सकता। जिसी प्रकार कमजोर शरीरवाले जेलके कडी मेहनतके काम नहीं कर पाते। शारीरिक शक्ति न होने पर भी मनोबलसे गिने-गिने लोगोंने संकट झेले है। अैसे अुदाहरण असाधारण ही माने जा सकते है। साधारण नियम तो यही है कि शरीर नीरोग और दृढ होना चाहिये। अैसा न होनेसे कभी लोग घबरा गये है। सत्याग्रही समझता है कि अुसका शरीर अुसे किरायेपर मिला है। अुसे साफ और तेजस्वी रखकर अच्छा किरायेदार साबित होना अुसका फर्ज है।

जिसे रंगीले पलंग और नरम गद्दे वगैरा सोनेके लिअे चाहिये, वह आदमी अेकाअेक जमीन पर नहीं सो सकता, यह समझमें आ सकता है। अिसलिअे अैसी आरामतलबी भी छोडनी चाहिये।

भोजनका सवाल लगभग बरसोंसे बडा सवाल बन गया दीखता है। परन्तु अिसमें आश्चर्यकी बात नही है। जिसने बोलनेमें और स्वादमें जीभको जीत लिया है, अुसने बहुत कुछ जीत लिया है। अैसे बहुत ही कम लोग होते है, जिन्हे स्वादिष्ट भोजन नही चाहिये। गरीब हब्शी तक खानेके लिअे मरे जाते है। यह छोटा-मोटा सवाल नही है। फिर भी जो परमार्थ करनेके लिअे जेल जाना चाहते है, अुन्हें स्वादेन्द्रियको जीतना ही पडेगा। जो मिल जाय अुसके लिअे अीश्वरका आभार मानना चाहिय। हर हिन्दुस्तानीको यह विचार करना है कि हिन्दुस्तानमे बीस करोड हिन्दुस्तानियोको अेक ही बार खानेको मिलता है। और वह भी रोटीके अेक टुकडे और नमकके सिवा दूसरा कुछ नही होता। तब जेलमें तीन तीन बार बदलनेवाला खाना मिले तो अुससे गुजर कर लेना कोअी बडी बात नही होनी चाहिये। भूखमें सब कुछ अच्छा लगता है। हो सकता है कि थोडे दिन ठीक मालूम न हो, परन्तु बादमें जेलकी खुराक भाने लगती है। जो हिन्दुस्तानी सत्याग्रही बनना चाहता हे, अुसे सादे भोजनकी आदत डालनी चाहिये।

झूठा अभिमान रखनेवाला जेलमें नही जा सकता। वहा दारोगोके अधीन रहना पडता है। जो हलके माने जाते है, वे काम करने पडते है। अैसे काम

करनेमें अिज्जत चली जायगी, अुन्हें हमने कभी किया ही नही, अैसा सोचकर जेलमें भी अुन्हें न किया जाय तो नतीजा बुरा होता है। पराधीनता या अपराधीनता मनके कारण होती है। जिसका मन आजाद — स्वतंत्र — है, वह *मैलेकी बालटी अुठाते हुअे भी राजाके समान है। बालटी अुठानेमें वह परा*-धीनताके बजाय जेलमें अपनी प्रतिष्ठा समझता है।

अन्तमें रही धीरजकी बात। जेलमें पहुचते ही सब लोग दिन गिनने लग जाते है। अैसा करनेसे दिन लम्बे मालूम होते है। बाहर बर्सो बीत जाते है और हम अुन्हें नष्ट कर देते है, फिर भी वे भारी नही लगते। पर जेलके तीन दिन भी तीन साल जैसे लगते है। यह क्यो? जवाब यह है कि जेल जाना पसन्द नही आया। सत्य बात यह है कि जेल जानेमें सुख मानना चाहिये। जैसे मा बच्चेके लिअे दु ख अुठाकर सुख मानती है, वैसे ही हमें देशके खातिर — सत्यके खातिर — दु ख अुठा कर सुख मानना चाहिये। जैसे दिन जेलमें बीतेंगे वैसे बाहर नही बीत सकते थे, हमेशा अैसा विचार करके और धीरज रखकर जितनी *जेल मिली हो अुसे भुगत लें और वहा समयका अच्छा अुपयोग करे — यानी* अीश्वरके भजनमे, अच्छे विचारोमें और अपनी कमिया ढूढनेमें दिन बिताये। अिस प्रकार अेक पथ दो काज हो जायगे।

अिसलिअे ये छह गुण तो जेल जानेवालोमे होने ही चाहिये। बादमे दूसरे गुण भी अपने-आप सूझ जायेंगे।

मो० क० गाधी

सूची